अमर गाथा

जयाचार्य निर्वाण शताब्दी के अवसर पर

जय वाङ्मय : ग्रन्थ-८

अमर गाथा

प्रवाचक

युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी

प्रधान सम्पादक

युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ

जैन विश्व भारती

लाडनूं (राजस्थान)

सम्पादक

मुनि नवरत्नमल

मुनि मधुकर

साध्वी कल्पलता

साध्वी जिनरेखा

श्रीचन्द रामपुरिया

प्रकाशक :
जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

अर्थ-सौजन्य :
जयाचार्य निर्वाण शताब्दी समिति

प्रबन्ध-सम्पादक
श्रीचन्द रामपुरिया
अध्यक्ष, जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

द्वितीय संस्करण : १९८१

मूल्य : पच्चीस रुपये

मुद्रक :
माडर्न प्रिंटर्स
दिल्ली-३२

प्रकाशकीय

श्री जयाचार्य निर्वाण शताब्दी समारोह के अवसर पर जैन विश्व भारती की ओर से जय वाङ्मय के अष्टम ग्रथ 'अमर गाथा' को जनता के हाथों में सौपते हुए हमे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

श्रीमज्ज्ययाचार्य का जन्म नाम जीतमलजी था। आपने अपनी कृतियों मे अपना उपनाम 'जय' रक्खा, इसलिए आप जयाचार्य के नाम से प्रख्यात हुए। आप श्वेताम्बर तेरापथ धर्मसघ के चतुर्थ आचार्य थे।

श्रीमज्जयाचार्य की जन्म-भूमि मारवाड़ का रोयट ग्राम था। आपका जन्म सं० १८६० की आश्विन शुक्ला १४ की रात्रि वेला मे हुआ था। आप ओसवाल थे। गोत्र से गोलछा थे। आपके पिता श्री का नाम आईदानजी गोलछा और मातुश्री का नाम कलूजी था। आप तीन भाई थे। दो वड़े भाइयों के नाम सरूपचन्दजी और भीमराजजी थे।

आपके जेष्ठ भ्राता सरूपचन्दजी ने स० १८६९ की पौप शुक्ला ९ के दिन साधु-जीवन ग्रहण किया। आपने उसी वर्ष माघ कृष्णा ७ के दिन प्रव्रज्या ग्रहण की। दूसरे वडे भाई भीमराजजी की दीक्षा आपके वाद फाल्गुन कृष्णा ११ के दिन सम्पन्न हुई और उसी दिन माता कलूजी ने भी दीक्षा ग्रहण की। इस तरह स० १८६९ पौप शुक्ला ८ एव फाल्गुन कृष्णा १२ की पौने दो माह की अवधि मे माता सहित तीनो भाई द्वितीय आचार्यश्री भारमलजी के शासनकाल मे दीक्षित हुए।

साधु-जीवन ग्रहण करते समय जयाचार्य नौ वर्ष के थे। दीक्षा के वाद आप शिक्षा के लिए मुनि हेमराजजी को सौपे गए। वे ही आपके विद्या-गुरु रहे। आगे जाकर आप एक महान् आध्यात्मिक योगी, विश्रुत इतिहास-सृजक, विचक्षण साहित्य-स्रष्टा एव सहज प्रतिभा-सम्पन्न कवि सिद्ध हुए।

स० १९०८ माघ कृष्णा १४ के दिन तृतीय आचार्य ऋषिराय का छोटी रावलिया गांव मे देहान्त हुआ। आप चतुर्थ आचार्य हुए।

आचार्य ऋषिराय के देवलोक होने का समाचार माघ शुक्ला ८ के दिन वीदासर पहुचा, जहा युवाचार्य जीतमलजी विराज रहे थे। स० १९०८ माघ सुदी १५ प्रात काल पुष्य नक्षत्र के समय आप पदासीन हुए और वडे हर्प के साथ पट्टोत्सव मनाया गया। आचार्य ऋषिराय ने ६७ साधुओ एव १४३ साध्वियो की धरोहर छोडी।

आपने श्वेताम्बर तेरापथ धर्मसघ के चतुर्थ आचार्य पद को ३० वर्षो तक सुशोभित

किया। आपका निर्वाण सं० १९३८ की भाद्र कृष्णा १२ के दिन जयपुर मे हुआ। सं० २०३८ भाद्र कृष्ण ११ के दिन आपको निर्वाण प्राप्त हुए १०० वर्ष पूरे हुए हैं।

श्रीमज्जयाचार्य ने अपने जीवन-काल में लगभग साढ़े तीन लाख पद्य-परिमाण साहित्य की रचना की। जैन वाङ्मय के पंचम अंग 'भगवई' का आपका राजस्थानी पद्यानुवाद 'भगवती-जोड़' राजस्थानी साहित्य का सबसे बड़ा ग्रन्थ माना जाता है। यह ५०१ विविध रागिनियों में गेय गीतिकाओं मे निबद्ध है।

श्रीमद् जयाचार्य की साहित्यिक रुचि बहुविध थी। तेरापंथ धर्मसंघ के संस्थापक आदि आचार्य श्रीमद् भिक्षु के बाद आपकी साहित्य-साधना बेजोड़ है। आप महान् तत्त्वज्ञानी थे। जन्म-जात कुशल इतिहास-लेखक थे। सजीव संस्मरणात्मक जीवन-चरित्र लिखने की आपकी प्रवीणता अनोखी थी। आप बड़े कुशल संघ-व्यवस्थापक और दूरदर्शी आचार्य थे। आपकी कृतियों का सौष्ठव, गांभीर्य एवं संगीतमयता—ये सब मनोमुग्धकारी हैं।

प्रस्तुत ग्रंथ 'अमर गाथा' जयाचार्य द्वारा रचित अत्यन्त महत्वपूर्ण निम्न १४ कृतियों का संग्रह है।

सतजुगी चरित
हेम नवरसो
हेम चोढालियो
सरूप नवरसो
सरूप विलास
भीम विलास
मोतीजी रो पंचढालियो
शिवजी रो चोढालियो
कर्मचन्द गीतिका
शांति विलास
उदयचंद जी रो चोढालियो
हरख चोढालियो
हस्तूजी कस्तूजी रो पंचढालियो
सरदार सुजश

परिशिष्ट मे अन्य कृत निम्न दो कृतियां संगृहीत हैं :

सतजुगी रो पंचढालियो
वेणीरामजी रो चोढालियो

इन कृतियों के द्वारा संघ के मूर्धन्य मुनि खेतसीजी, हेमराजजी, सरूपचंदजी, भीमजी, मोतीचन्दजी, शिवजी, कर्मचन्दजी, सतीदासजी, उदयचन्दजी, हरखचन्दजी एवं स्वनामधन्य साध्वी हस्तूजी, कस्तूजी एवं जयाचार्य के युग की साध्वी प्रमुख श्री सरदार सती की विस्तृत जीवन-कथा प्रस्तुत की गयी, जो अपने-आप में अद्भुत और अत्यन्त प्रभावशाली और प्रेरणादायक है। परिशिष्ट की दोनों कृतियां मुनि हेमराजजी रचित हैं। दूसरी कृति में आचार्य भिक्षु के युग के मुनि वेणीराम जी का जीवन चरित्र प्रस्तुत किया गया है। यह अपने विषय की एक ही कृति है।

इस तरह ग्रंथ ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ आध्यात्मिक चेतना को स्फूर्त करने में परम सहायक है।

इस ग्रंथ को प्रकाशित करते हुए जैन विश्व भारती अत्यन्त गौरव का अनुभव करती है।

श्री जयाचार्य जैसे पुनीत पुरुष की निर्वाण शताब्दी के अवसर पर जय वाङ्मय एव तत्सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण साहित्य प्रकाशित करने की विशाल योजना जैन विश्व भारती के सम्मुख है और हमें पूरा विश्वास है कि आप सबके सहयोग से यह संस्था उसे पूरा कर पाएगी।

श्रीमद् जयाचार्य निर्वाण शताब्दी समारोह के उपलक्ष मे मित्र परिषद्, कलकत्ता ने जैन विश्व भारती प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना हेतु दो लाख रुपयों की राशि प्रदान करने की कृपा की है। उक्त मुद्रणालय जैन विश्व भारती को साहित्य-प्रकाशन के क्षेत्र मे द्रुतगति से वढने मे सहायक होगा। इस अवसर पर हम मित्र परिषद् के पदाधिकारियों एवं सदस्यो के प्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन करते है।

श्री जयाचार्य निर्वाण शताब्दी समारोह समिति के सयोजक श्री धर्मचन्दजी चौपड़ा एव सदस्यो को भी उनके आर्थिक सौजन्य के लिए हम अनेक धन्यवाद ज्ञापित करते है।

लाडनूं (राज०)
१ सितम्वर १९८१

—श्रीचन्द रामपुरिया
अध्यक्ष, जैन विश्व भारती

सम्पादकीय

जयाचार्य मे मति, बुद्धि और प्रज्ञा की त्रिवेणी प्रवाहित थी। केवल मनन और केवल बुद्धि यथार्थता का स्पर्श करती है पर उसके पार तक नही पहुच पाती। पार-दर्शन का माध्यम है अन्तर्दृष्टि या प्रज्ञा। जयाचार्य ने अपनी प्रज्ञा से सत्य का अनुभव किया और उसे वाङ्मय मे नियोजित किया। उनकी अन्तर् भाषा है प्रज्ञा और वाहर की भाषा है राजस्थानी। उन्होने वहुत लिखा। सत्य को वहुत अभिव्यक्ति दी। कोई भी व्यक्ति जितना जानता है उतना उसे अभिव्यक्त नही कर पाता। अनुभूति और अभिव्यक्ति—ये दो स्तर भिन्न-भिन्न है। जयाचार्य की अनुभूति प्रवल थी, इसलिए अभिव्यक्ति मे भी प्रवलता आ गई। अव तक उनकी वाणी वहुत कम प्रकाश में आई थी। वह केवल हस्तलिपियो के भडार मे सुरक्षित पड़ी थी। वह जन-जन तक पहुंच सके, ऐसी व्यवस्था नही हो सकी। हम उपादान और निमित्त—दोनो मे विश्वास करते है। उपादान होने पर भी यदि निमित्त न मिले तो क्रियान्विति नही हो सकती। जयाचार्य की निर्वाण शताव्दी एक निमित्त वना उनके साहित्य को जनता तक पहुचने का।

लगभग तीन दशको से हमारे धर्मसंघ मे साहित्य की अजस्र धारा वही है। उसमे चार वड़े कार्य किए हैं—

१. आगम साहित्य का सपादन

२. तेरापंथ द्विशताव्दी का साहित्य

३ कालूगणी की शताव्दी का साहित्य

४. जयाचार्य का साहित्य

आचार्यश्री तुलसी के सुदीर्घ शासनकाल मे मेरुदड जैसे कार्य सम्पन्न हुए और हो रहे है। आचार्यश्री प्रेरणा के स्रोत है। वे नए-नए आयाम उद्घाटित करना चाहते है। ये सारे कार्य अधिकाशतया साधु-साध्वियो के श्रम से सम्पन्न हुए है। किञ्चित् मात्रा मे गृहस्थ विद्वानो का भी योग रहा है। साधु-साध्वी समाज अध्ययननिष्ठ होने के साथ-साथ अनुशासननिष्ठ और श्रमनिष्ठ भी हैं। यही हमारे कार्य की सुविधा है। इस सुविधा के अभाव मे ये सारे श्रमसाध्य सपादन के कार्य अल्प अवधि मे सम्पन्न नही किये जा सकते थे।

जयाचार्य के साहित्य संपादन का कार्य वहुत वडा है। उनके साहित्य की सूची काफी वड़ी है—

जयाचार्य-वाङ्मय

अनुशासन :

१. जय अनुशासन (हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती)

साधना :

२. आराधना

साहित्य :

३. उपदेशरत्नकथाकोष (अनुमानित दस खण्ड)
४. आख्यान-संग्रह (दो खण्ड)
५. संस्मरण

जीवन-वृत्त :

६. तेरापंथ के तीन आचार्य

इतिहास :

७. कीर्तिगाथा
८. अमरगाथा

विधि (LAW) :

९. तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

आगम-भाष्य :

१०. उत्तराध्ययन की जोड़
११. आचारांग की जोड़
१२. आचारांग को टब्बो
१३. ज्ञाता री जोड़
१४. भगवती की जोड़ (अनुमानित आठ खण्ड)
१५. आगम : प्रकीर्ण विन्दु

तत्त्व-दर्शन :

१६. तत्त्व चर्चा
१७. चर्चा-रत्नमाला
१८. भिक्खु कृत हुण्डी की जोड़ (भिक्खु कृत हुण्डी सहित)
१९. भ्रम विध्वंसनम्
२०. प्रश्नोत्तर तत्त्व बोध (वृहत्)
२१. जिनाज्ञामुखमण्डन, कुमतिविहंडन
२२. सन्देहविषौषधि, प्रश्नोत्तर सार्द्धशतक
२३. [illegible]
२४. भिक्षु ग्रंथ : आगम समन्वय

न्याय, व्याकरण, काव्य :

२५. न्याय, व्याकरण और काव्य

जयाचार्य के जीवन और साहित्य से सम्बद्ध ग्रन्थ :

२६. प्रज्ञापुरुष जयाचार्य
२७. जय-सुजश
२८. श्रद्धांजलि-संस्मरण

साहित्य-समीक्षा :

२९. जयाचार्य साहित्य मूल्याकन

जयाचार्य स्मृति-ग्रन्थ :

३०. आगम-मथन

साधना :

३१. लोचन और आत्मालोचन

जीवन-वृत्त :

३२. चित्रावली

जयाचार्य निर्वाण शताब्दी के अवसर पर आचार्य भिक्षु और तेरापंथ से सम्बद्ध ग्रन्थ :

जीवन-वृत्त :

३३. आचार्य भिक्षु जीवन-कथा
३४. आचार्य भिक्षु धर्म-परिवार

इतिहास :

३५. शासन-समुद्र

तत्त्व-दर्शन :

३६. जय तत्त्व वोध

आगम-मथन, मूल्याकन, श्रद्धांजलि-सस्मरण और प्रज्ञापुरुष . जयाचार्य (जीवन-वृत्त)—ये चार ग्रथ उनके साहित्य और जीवन से सवद्ध है। ये सव मिलकर ३६ ग्रन्थ हो जाते है। इतना वड़ा कार्य वहुत थोडे वर्षो मे सपादित और कुछ मात्रा मे अनूदित होकर प्रस्तुत हो रहा है। यह श्रमनिष्ठा का एक निदर्शन है। जयाचार्य के ग्रन्थो के मूलपाठ शोधन मे सबसे अधिक श्रम आचार्यश्री ने किया है। नाना प्रकार की सघीय प्रवृत्तियो और साहित्यिक रचनाओ मे सलग्न एक आचार्य अपने पूर्वज आचार्य के साहित्य-सपादन मे इतने श्रम और शक्ति का नियोजन करे, यह कृतज्ञता और श्रद्धा का महान् निदर्शन है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादन मे मुनि नवरत्नमल, मुनि मधुकर, साध्वी कल्पलता, साध्वी जिनरेखा, श्री श्रीचन्द रामपुरिया ने वहुत तन्मयता से काम किया है। मैं उनके प्रति प्रसन्नता प्रकट करता हू तथा उन्हे साधुवाद देता हू और आशा करता हू कि भविष्य मे इस शक्ति का अधिकतम उपयोग होता रहेगा।

—युवाचार्य महाप्रज्ञ

अणुव्रत विहार, दिल्ली
१ अगस्त, १९८१

विषय-सूची

१

सतजुगी चरित

ढाल १

दोहा

१. स्वाम खेतसी सोभता, शिष भीक्खू ना सोय।
उत्पत्ति आखू धुर थकी, हरष अणद सुख होय ।।

२. श्रीजीदुवारा सैहर में, ओसवंस अभिधान।
भोपोसाह तिहां वसै, जाति सोलंकी जान ।।

३. सुंदर हरू सुहांमणी, अंगज अधिक उदार।
नाम खेतसी निरमलो, सोम प्रकृति सुखकार ।।

४. मात-पिता मन वालहो, विनयवंत बडभाग।
पाणिग्रहण करावियो, आंणी अति अनुराग ।।

५. भीक्खू गुरु पाम्या भला, धर्म ध्यांन धुन धार।
सामायक पोसा सुगुन, आचरि हरष अपार ।।

६. काल कितैक त्रिया तणो, विरह पड्यो तिण वार।
बीजो व्याह करावियो, मात-पिता धर प्यार ।।

७. वरस कितै तें पिण त्रिया, काल कियो तिह वार।
तीजी वलि परणावतां, सील आदरियो सार ।।

*सतजुगी साम तणी सुणजो वारता ।।ध्रुपदं।।

८. नित्य प्रति धर्म ध्यांन चित निरमलै, खेतसीजी धर खंत रे, सुग्यानी।
भावै संजम लेवा री भावना, आंणी हरष अत्यंत रे, सयाणा ।।

९. सामायक नित्य सुध चित्त साचवै, पूरो धर्म सू पेम।
उपवास बेला एकंतर आदरै, निरमल पालै नेम ।।

१०. नव पोसा लगता कीया निरमला, आंणी हरष अथाग।
उद्यमी कर्म काटण नैं अति घणा, वारू दिल में वैराग ।।

११. करत व्यापार तो पिण 'जैणां'[1] करै, पूरी दया सूं पीत।
'उत्तरासण कर मुख'[2] वच ऊचरै, नरम प्रकृति वर नीत ।।

---

*लय—वीरमती कहै निसुण गुणावली

१ यतना—हिंसा का बचाव

२. मुंह के आगे वस्त्र लगाकर।

१२. वस्त्र वेचै तो पिण वाउकायनी, अजैणा तणो भय आंण।
वस्त्र झाटकवो वरजै विशेप थी, पाप थी 'वीहता'[1] पिछांण॥

१३. हेम सहोदर निरमल हिया तणो, वहिन उभय वुद्धिवांन।
खुसालांजी रूपांजी दिल खुसी, जुग लघु भगनी जान॥

१४. रावलियां व्याही विहुं रंग सूं, सैणी महा सुखदाय।
'साल रूंख परिवार सुसाल'[2] नो, अधिक मिल्यो जोग आय॥

१५. खेतसीजी जावै तिहां 'खांति'[3] सूं, देवै वर उपदेश।
जन वहु समजावै अति जुक्ति सूं, रूडी वतावी रेस॥

१६. दांन दया भिन-भिन दीपावता, ओलखावता आचार।
धर्मवुरा नव तत्त्व धरावता, इम करता उपगार॥

१७. वहिन वैनोइ आदि वहु थया, प्रिय दृढ़धर्मी पेख।
धर्म वृद्धि रावलियां में धुर थकी, वपराई सुविसेख॥

१८. पाप तणो भय तो पोते घणो, अवरां नैं उपदेश।
विविध पणै देवै जनवृंद नैं, काटण कर्म कलेश॥

१९. चरण तणी अभिलापा चित्त मझै, दिन-दिन अधिकी देख।
विरक्तपणै करि इम व्रत पालता, सम दम गुण संपेख॥

२०. पहिली ढाल विषै सतजुगी तणी, धुर उत्पत्ति कही धीर।
'खात'[4] गुणे 'जयजश' वृधि खेतसी, अघ हणवा वडवीर॥

ढाल २

दोहा

१. समकित सहित श्रावकपणो, पालै दिन-दिन प्यार।
अतिचार अलगा करै, मन में हरप अपार॥

२. समकित तरु भणी, सवेग जल सींचंत।
खम दम सम गुण खेतसी, दिढधर्मी दीपत॥

---

१. डरते।
२. दोनों वहिनों के ससुराल का परिवार साल वृक्ष की तरह विशाल था।
३. सावधानी।
४. क्षांति—क्षमा।

३. 'रसकूपिका'[1] ग्रहवा भणी, विषम मार्ग जन जाय।
'चराक'[2] तेले सीचिया, इम मारग देखाय ॥

४. सिव रस कूपिक ग्रहण कूं, संवेग रूपी तेल।
समकित चराक सींचता, खेतसीजी धर खेल ॥

५. भाव चरण लेवा तणा, पिण न्यातीला सू नेह।
आज्ञा लैणी आवै नही, जांणै किम द्यू यांनै छेह ॥

*संत सिरोमणि सोभता, मुनिंद मोरा धिन-धिन भीक्खू स्वाम हो ॥ध्रुपदं॥

६. इह अवसर तिण पुर मझै, मुनिंद मोरा, करता उग्र विहार हो।
पूज भीखनजी पधारिया, मुनिद मोरा, महा मोटा अणगार हो ॥

७. गैहरा सागर सारिखा, मुनिद मोरा सुर गिर जेम सधीर।
सूरा सिंघ तणी परै, मुनिंद मोरा कर्म काटण वडवीर ॥

८. अप्रतिबंध वायु जिसा, क्षम्यावान गुणखांन।
शीतल अमृत सारिखो, वारू वरसत वान ॥

९. पाखंड धूजै धाक सू, 'आतपकारी'[3] आप।
औजागर गुन आगला, मेटै घणां रा सताप ॥

१०. आनंदकारी ओपता, समंण सत्यां सिरमोड।
आचार्य इण काल मे, अवर न एहनी जोड ॥

११. धोरी जिनमत थापवा, साहसीकां सिरदार।
उत्पत्तिया बुद्धि आपरी, अधिक अनूपम सार ॥

१२. सूरत मुद्रा स्वाम नी, अति सुखकारी अैन।
परम गुरां नैं पेखतां, चित माहै पांमै चैन ॥

१३. भारीमाल आदि महा मुनी, टोकरजी हरनाथ।
सुवनीतां सिर सेहरां, जोड खडा रहै हाथ ॥

१४. मैणांजी आदि दे महासती, समणी गण सिणगार।
सेव करै स्वामी तणी, 'आण'[4] अखंडत धार ॥

१५. नरनारी हरण्या घणा, पूज भीखनजी नैं पेख।
दर्शण करी दयाल ना, हिवडो हुलसै विसेख ॥

---

१. सार पदार्थ युक्त कुई।
२. विराग।
*लय—सिहल नृप कहै चंद नै
३. तेजस्वी।
४. आज्ञा।

१६. पूज भीखनजी रै आगले, च्यार तीर्थ रा थाट।
जाणक मेलो मडियो, होय रह्यो गहघाट ।।

१७. रंगूजी तिहां संजम लियै, जाति पोरवाल जांण।
दिख्या महोछव दीपता, मंडिया वहु मंडाण ।।

१८. दूजी ढाले श्रीजीदुवार में, 'समोसर्‌या'[1] भीक्खू स्वाम।
सतजुगी भाग्यवली तणै, मिलियो 'जोग्य'[2] 'अमांम'[3] ।।

ढाल ३

दोहा

१. भोपासाह रा डील में, कांयक कारण देख।
रंगूजी संजम लियै, निसुणी वात विसेख ।।

२. कहै वोलावो खेतसी भणी, ते सांभल आया ताह।
विनय करी ऊभा रह्या, जद पूछै भोपोसाह ।।

३. स्यूं भाव थारा चरण लैण का, सतजुगि कहै कर जोड।
साधपणो लेवा थकी, मुझ मन अधिको कोड ।।

४. भोपोसाह इण विध भणै, तू सुख लै संजम भार।
कहै महोछव दिख्या तणा, इणरा हि करो अपार ।।

५. इण विध देवै आगन्या, ते तो विरला जांण।
खेतसीजी सुण हरपिया, रोमराय विकसांण ।।

*प्राणी गुण रसियो—जेह सुगुण नरनार, जेहने मन वसियो ।।ध्रुपदं।।

६. हरप सहित दीधी आगन्या रे, सूरि जन, भोपैसाह तिण वार।
प्रांणी गुण रसियो।
सरल भद्र गुण आगला रे, सूरि जन, उत्तम जीव उदार ।।
प्रांणी गुण रसियो ।।

७. दिख्या महोछव बिहुं तणा, सूरि जन हुआ अधिक अपार।
स्वमुख भीक्खू स्वामजी, सूरि जन दीधो संजम भार ।।

---

१. पधारे।
२ जोग—योग।
३. श्रेष्ठ।
*लय—म्हानै मांडव्यो रे

८. समत अठारै अडतीसे समै, चैत्री पूनम जांण।
खेतसीजी सजम आदर्‌यो, पाया परम किल्यांण।।

९. धर्म उद्योत हुओ घणो, जिन मारग जयकार।
शिष सुविनीत मिल्यां थकां, सुगुरु लहै सुखसार।।

१०. जश कीरत जग में घणी, लोक करै गुण ग्रांम।
शिष मिल्या सतजुगि सरिसा, भागवली भीक्खू स्वाम।।

११. प्रबल पुन्य गुण पोरसा, खेतसीजी वड़भाग।
गुरु मिल्या भीक्खू सरिखा, फेल्यो जश सोभाग।।

१२. जोडी तो जुगती मिली, गुरु चेला 'मह्रीमंड'[1]।
जग मांहै पिण इम कहै, खीर मांहै जिम 'खंड'[2]।।

१३. श्रीजीदुवारा, सैहर थी, खेतसीजी भीक्खू साथ।
विहार करी आघा चालिया, लारै तो चल गयो तात।।

१४. गांम कोठारीये पधारिया, तिणहिज दिवस सुजोग।
खेतसीजी सुणी वारता, जनक पौहता परलोग।।

१५. पूछै भीक्खू स्वामजी, तू मन में म आंणजै कांय।
खेतसीजी कर जोड नै, वांण वदै सुखदाय।।

१६. मोनै तो आप आवी मिल्या, जो चल्या संसारी बाप।
म्हारै तो विरह पडियो नही, हूं क्यां नै करूं सताप।।

१७. हूं संसार मांहै रह्यो हुंतो, तो रोवणो पडतो मोय।
सो हूंतो छूटो दुख थकी, इम वोल्या अवलोय।।

१८. पुन्य प्रबल सतजुगी तणा, दुख नहि पाया कोय।
तीजी ढाले खेतसी, संजम लीधो सोय।।

ढाल ४

दोहा

१. खेतसीजी मन चिंतव्यो, आज दिहाडो धन्न।
चरण रयण कर आवियो, तन मन थयो प्रसन्न।।

---

१. पृथ्वी की शोभा बढ़ाने वाले।
२. खाड—चीनी।

२. भीक्खू ऋष रे आगले, पालै संजम भार।
'ग्रहणा नें आसेवना, सीखै सिख्या सार ॥"[1]

३. चरण करण गुण धरण चित, वरण 'अमर-वधु'[2] सार।
मद अघ हरण सुसरण मुनि, तरण भवोदधि पार ॥

४. अमल सुमति व्रत सुध गुप्त सुध, निमल सील निकलंक।
विमल ध्यांन लहलीन वर, कमल जेम 'निरपंक'[3] ॥

५. मूल उत्तर गुण नखण मुनि, मन सुध कीधो मेल।
खरे मते ऋष खेतसी, खेल रह्यो इम खेल ॥

*गुणकारी सुखकारी वंदो मुनी खेतसी ॥ध्रुपदं॥

६. सतयुगी स्वाम सुहामणा-२, अै तो सुवनीता सिरदार ॥
७. इर्या सुमति अति ओपती, अधिक अनोपम सार ॥
८. वांण विचारी वागरै, शीतल महा सुखदाय ॥
९. एषणा सुमति आछी तरै, करै गवेषणा अधिकाय ॥
१०. वस्त्रादिक लेवै मेलवै, करत जैणा अगवांण ॥
११. पजत परठत सुमति थी, जत्न सहित अति जांण ॥
१२. मन वच काया गौपवै, निरमल जेहनी नीत ॥
१३. रक्षा करत षटकायनी, परम दया सू प्रीत ॥
१४. 'सत'[4] 'दत'[5] ममत रहित मुनी, निरमल सील सुगंध ॥
१५. वाडि सहित वर व्रत धरै, महियल मोटो मुनिंद ॥
१६. सुखदायक सहुजन भणी, खेतसीजी गुणखांन ॥
१७. गणवच्छल गणवाल हो, दर्शन अमृत-पांन ॥
१८. चौथी ढाले सतजुगि तणा, गुण कीरत विस्तार ॥

---

१. दोनो प्रकार की शिक्षा-१ ग्रहणा—ज्ञानदिक ग्रहण करना, २ आसेवना—सेवादिक कार्य।
२. शिव-वधू—मोक्ष रूपी स्त्री।
३ कीचड़ रहित।
*लय—समुद्रविजैजी रो लाडलो
४. सत्यवादी।
५ दिया हुआ लेने वाले।

ढाल ५

दोहा

१. सुखदाई सहु गण भणी, खेतसीजी गुणखांन।
भीक्खू ऋष पासे भला, पके मते परधांन॥
२. दमता इंद्री पंच दिल, रमता गुरु वच रंग।
खमता गुणकर खेतसी, समता सखर सुचंग॥
३. नमता गुण सू निरमला, वमता च्यार कषाय।
जमता जिनमत सतजुगी, गमता सहु गण मांय॥
४. प्रकृति विनय गुन कर प्रवर, सतजुग सरिसा संत।
सतजुगि नांम सुहांमणो, मोटा मुनी महंत॥
५. विनय गुणां री वारता, पूरी केम कहिवाय।
थोड़ी सी प्रगट करूं, ते सुणजो चित ल्याय॥

*गावत मै तो सतजुगी ना गुण भारी, ज्यांरी करणी री बलिहारी
ज्यांरी सूरत मुद्रा प्यारी॥ ध्रुपदं॥

६. गुरु भगता गुणवंत गुणागर, खेतसीजी सुखकारी-२।
विविध प्रकारे साता उपजावै-२, विनय विवेक विचारी॥
७. कोमल कठिण वचन करि, भीक्खू शीख दियै अतिभारी-२।
खेतसीजी धारै हरष करी, 'तहत'[1] वचन तंत सारी॥
८. कार्य भलायां बिहु कर जोडी, आदर सहित अपारी-२।
विलंब रहित कार्य मुनि करता, एहवा विनयवंत भारी॥
९. बोलण चालण कार्य में, अन्न पांन वस्त्रादिक विचारी-२।
चित्त अनुकूल चालै सत खेतसी, स्वामी नै महा सुखकारी॥
१०. हरष धरी रहै भीक्खू रै हाजर, अंतरंग प्रीत अपारी-२।
सूक्ष्म बुद्धि सू आलोची प्रवर्त्तै, अग चेष्टा अनुसारी॥
११. जबर स्वाम भीक्खू सरिसा, गुण बुद्धि तीक्ष्ण अधिक उदारी-२।
जबर शिष मिल्या सत खेतसी, चित्त प्रसन्न कीयो भारी॥
१२. पैठ प्रतीत जमाई पूरी, विविध विनय विस्तारी-२।
तन मन करि नैं रीझाया भीक्खू नैं, सो जांण लीया तंत सारी॥

---

*लय—आवत मेरी गलियन में........

1. तहत्—यथार्थ।

१३. कठिण वचन भीक्खू शीख दीधी, तो पिण सतजुगी हरप अपारी-२।
ओछाह सहित धारै भूख न विगाडै, एहवा विनयवंत भारी ॥
१४. ज्ञाता प्रथम भेण मेघ मुनि कह्यो, वे चक्षु मूंकी उदारी-२।
अवशेष शरीर म्है सूंप्यो साधां नें, सतजुगी शीख ए धारी ॥
१५. सर्वभूत नै आधार 'प्रथी'[1] नो, तिम आचार्य नै सुखकारी-२।
सर्व कार्य में आधार विनीत नो, उत्तराधेन मझारी ॥
१६. तिमहिज सर्व कार्य मांहै भीक्खू नै. सतजुगी नो साझ धारी-२।
जे जे विनय गुण आख्या सूत्र में, ते आप कीया अंगीकारी ॥
१७. नमणपणै प्रवर्त्ती विनय साध्यो, मांन अहंकार निवारी-२।
'निज आपो'[2] सूंप्यो स्वाम भीक्खू नैं, तो होय गयो गण अधिकारी ॥
१८. ढाल पंचमी में स्वाम खेतसी नो, फेल्यो विनय जश भारी-२।
याहीज रीत अवर मुनि साधै, सुणिया रो ओहीज सारी ॥

ढाल ६

दोहा

१. संत सिरोमणि सतजुगी, सुविनीतां सिरदार।
दिन-२ गुण वृद्धि दीपतो, सकल संत सुखकार ॥
२. तन नी चंचलता तजै, 'रजै'[3] उत्तम गुण ठाण।
'लजै'[4] दोष थी शांति चित, भजै अमर निरवाण ॥
३. पतिव्रता जिम पिउ तणी, सेव करै दिन रात।
तिम भीक्खू नै आगले, जोड़ खड़ा रहै हाथ ॥
४. रखिया रोहिणी सारिखा, स्वाम सतजुगी सार।
वलभ तीर्थ च्यार नै, पेखत पांमै प्यार ॥
५. दशवैकालिक देखलो, नवमें ज्झयण नीहाल।
शिष सुवनीत सराहियो, श्रीमुख दीनदयाल ॥

---

१. पृथ्वी।
२. अपना सर्वस्व।
३. अनुरक्त होते।
४. सकुचित होते—दूर रहते।

*महा मुनिरायाजी, खेतसीजी गुणवान।
महा सुखदायाजी, खेतसीजी गुणवान ।। ध्रुपदं ।।

६. मूल थकी जिम खंध हुवै वृक्ष नै, खंध थकी हुवै शाखा।
शाखा थकी प्रतिशाख पत्र पुष्फ, फल रस अनुक्रम भाखा ।।

७. इम धर्म तरु नो मूल विनय कह्यो, फल सम सिवपुर जांणी।
निरावाध सुख रस तुल्य कहियै, सतजुगी दिल मांहे आंणी ।।

८. खंध शाखादिक तुल्य स्वर्गादिक, विविध पणै सुख लहियै।
जश नो हेतु विनय वखाण्यो, सतजुगि गुण दिल गहियै ।।

९. ते विनय करी नै कीर्त्त वाधै, एम कह्यो जिनराया।
वलि विनय करी लहै विविध सूत्रार्थ, सतजुगी ए फल पाया ।।

१०. देव मनुष तिर्यच जे अविनीत, विविध दुख पावंता।
विनयवंत सुख पूर्व पुन थी, प्रत्यख ही पेखता ।।

११. तो जेह आचार्य उवभायां नीं, भक्ति 'सूसर्षा'[1] करंता।
ग्रहण आसेवन शिख्या वधै तसु, वच प्रमांण करंता ।।

१२. जल करी वृक्ष भणी जिम सीच्यां, वाधै तरुवर नीको।
तिम विनय करी नै चारित्र निरमल, ग्यांन प्राप्ति सिव टीको ।।

१३. इहलोक निमित्त द्रव्य गुरु पासे, शिल्प विज्ञान सीखंता।
राजपुत्रादिक ललित इंद्रियवंत, वध बंध घोर सहंता ।।

१४. ते पिण शिल्प कलादिक कारण, ते गुरु नै पूजंता।
वलि सत्कार दीयै वस्त्रे करि, वलि नमस्कार करंता ।।

१५. तो सूत्र सीखावणहार गुरां ना, विनय तणो स्यू कहिवो।
अनंत हेत शिवनो अभिलाषी, गुरु नै वचने रहिवो ।।

१६. आचार्य नो वयण न अतिक्रमै, तेहिज शिष सुविनीतो।
ए जिन वच दिल धार खेतसी, आराधै रूडी रीतो ।।

१७. नीचै आसण वैसै गुरु थी, इमहिज शयन करंता।
नमणपणै निज मस्तक करि नै, गुरु ना चरण वांदंता ।।

१८. छट्ठी ढाल विषै कह्या जिन वच, खेतसीजी आदरिया।
जश सोभाग फैल्यो जग मांहे, वारु गुण विस्तरिया ।।

---

*लय-रूडै चन्द निहालै रे

१. शुश्रूषा—सेवा।

ढाल ७

दोहा

१. शिष सुविनीत सुगुर तणो, अंतेवासी जांण।
आराधै गुरु आगन्या, त्यारां जिनवर किया वखांण ॥
२. अग्निहोत्री विप्र अग्नि नै, सेवै रूडी रीत।
इम आराधै गुरु भणी, सुगुणा शिप सुविनीत ॥
३. करै सुस्रषा सुगुर नी, अवलोकै अभिप्राय।
अंग चेष्टा देखी करी, वर्त्तै महा मुनिराय ॥
४. इण विधि पालै आगन्या, ते तो विरला जांण।
संत सतजुगी सारिसा, धरै अखंडत आंण ॥
५. विनय तणा प्रताप थी, गुण वाध्या सुविसेख।
उद्यमी कर्म काटण भणी, दिन-२ अधिका देख ॥

*मोने प्यारा लागो छो जी, सतजुगी स्वाम।
मोने वाल्हा लागो छो जी, सतजुगी स्वाम ॥ ध्रुपदं ॥

६. वारू रे खिम्या गुण तांहरो जी-२, धार्यो अति अभिरांम-२ ॥
७. निर्लोभपणो भल तांहरो जी, सरलपणो गुण धांम ॥
८. नरम प्रकृति गुण निरमला जी, तैं मरद्यो वहुमान ॥
९. हलका कर्म उपधि करी जी, धारी शीख अमांम ॥
१०. सत्य वचन सतजुगी तणो जी, पचख्यो झूठ तमाम ॥
११. संजम सखर सुहांमणो जी, अहिंसा अभिराम ॥
१२. तप गुण निरमल ताहरो जी, अधिक अनोपम तास ॥
१३. दिल 'ओदार'[1] तूं दांन में जी, वस्त्रादिक अनपांन ॥
१४. आंण आपै मुनिवर भणी जी, आलस मूकी आंम ॥
१५. वारू रे ब्रह्मव्रत ताहरो जी, वाडि सहित सुख ठांम ॥
१६. सतजुगि सतजुग सारिखो जी, गुण निष्पन्न तुझ नांम ॥
१७. आणंदकारी ओपतो जी, मुनिवर महा गुणधांम ॥
१८. ढाल सातमी में कह्या जी, खेतसीजी ना गुणग्रांम ॥

---

*लय-म्हारी गति थांसू है जी…
१. उदार—दिलदार।

ढाल ८

दोहा

१. विनय देख सतजुगि तणो, जती धर्म दृढ टेख।
अवर संत ने महासती, सीख्या गुण सुविसेख ।।

२. साताकारी शिष्य मिल्यां, स्वामी नै सुख होय।
भाग्यवली भीक्खू तणै, शिष्य मिल्या खेतसी सोय ।।

३. अग्निहोत्री विप्र अग्नि नैं, नमस्कारे करै धर पीत।
नाना आहुति मन्त्र करि, सीचै अग्नि सुरीत ।।

४. विनीत शिष्य इम सुगुरु नी, करैं भक्ति नमस्कार।
अनंत ग्यांन पाम्यो छतो, सेव करै धर प्यार ।।

५. दसवैकालिक में कह्यो, नवमें झयण दयाल।
तन मन करि नै खेतसी, धार्‌या वयण रसाल ।।

*रे मुनि प्यारा ! नित स्वाम खेतसी भजियै ।।ध्रुपद।।

६. खेतसीजी स्वामी रै प्रसादो, पाया च्यार तीर्थ अहलादो।
मुनी धर्म अमोलक लाधो रे ।।

७. हेम सुता दोलांजी नांमो, सतजुगिनी भतीजी तांमो।
धार्‌यो चरित गुणमणिधांमो ।।

८. दोनू बहिन अमोलक जांणी, रूपांजी खुसालांजी पिछाणी।
पीउ छाड चरण चित आणी ।।

९. स्वाम भीक्खू मिल्यो सुखकारो, रूपांजी लीधो सजम भारो।
पुत्र पीउ छांड व्रत धारो ।।

१०. दिख्या लेतां आग्या दोहरी आई, न्यातीलां घाल्या 'खोडा'[1] माही।
आसरै दिन इकवीस ताई ।।

११. खोडो तूटो है पुन्य प्रमांणो, जग जश विस्तरियो जांणो।
करै गुण उदियापुर राणो ।।

१२. इम आयो है सजम भारो, सतावनै सरीयारी सथारो।
ओ तो सतजुगी नो उपगारो ।।

---

*लय—राणी भाखे सुण रे सूड़ा

१ खोडा उस युग का एक लकडी का बेडा था। उसमे पैर डालकर ताला लगा दिया था, जिससे कैदी स्वेच्छापूर्वक कही घूम न सके।

१३. सतावने खुसालांजी सोयो, ऋषराय साथे अवलोयो।
चैत्री पूनम चरण सुजोयो ॥

१४. ऋषराय वाला ब्रह्मचारो, महा भाग्यवली गुणधारो।
हुआ जिन शासण सिणगारो ॥

१५. भीक्खू आंगूच भाख्यो सुजांनो, ए बालक महा बुद्धिवांनो।
पट्ट जोग अधिक सुप्रधानो ॥

१६. खुसालांजी सुगण सिणगारो, वर्स सतसठै पांम्या पारो।
ओ पिण सतजुगि नो उपगारो ॥

१७. एहवा सतजुगि स्वाम सधीरा, अै तो मेरु तणी पर धीरा।
स्वामी विमल अमोलक हीरा ॥

१८. कही आठमी ढाल उदारो, साल रूंख साल परिवारो।
स्वामी सतजुगी गण सिणगारो ॥

ढाल ९

दोहा

१. सतजुगी स्वामी रा जोग सू, हुओ घणो उपगार।
पुन्यवंत ना परताप थी, आणंद हुवै अपार ॥

२. तिसलादे री कुक्षि में, ऊपजिया व्रधमांन।
सुवर्ण रूप मुक्तिक मणी, वृद्धि हुई असमांन ॥

३. व्रधमान तिह कारणे, नांम दियो मा तात।
इम पुनवंत ना जोग सू, सुख पामै साख्यात ॥

४. तिम सतजुगि चरण लियां पछै, धर्म वृद्धि अधिकाय।
भीक्खू स्वाम तणै भली, चित्त समाधि सवाय ॥

५. झीणी रहिसा अति घणी, स्वाम भीक्खू रै पास।
खेतसीजी सीख्या घणी, अर्थ अनोपम तास ॥

*जय जय जय सतजुगी नमूं रे नमूं,
नमूं रे नमूं हूतो घणी रे खमूं,
जय जय जय स्वाम खेतसी नमूं रे नमूं ॥

*लय—जै जै जै गणपति नमूं रे नमूं

६. दान दया हद न्याय दीपता, विविध प्रकार बतावै।
भीक्खू पास सुणी नै धार्या, तिम भवियण समजावै ।।

७. घणा वर्सा लग संत खेतसी, भीक्खू गुरु रै पासो।
तन मन सेती सेव करंता, मन में अधिक हुलासो ।।

८. तप बहु करता पातक हरता, चौथ छट्ठादिक जांणी।
उष्ण काल में लियै आतापन, ऊजम अधिको आंणी ।।

९. पांच-पांच ना पवर थोकड़ा, कीधा वोहली वारो।
वले आठ दिन पचख्या लगता, मन में हरष अपारो ।।

१०. उतकृष्टा मुनि दिवस अठारै, कीधा महा सुखदायो।
एक वार पांणी आधारे, तपसा कर तन तायो ।।

११. दस पचखांण कीया मुनि दिल सूं, ते पिण वार अनेको।
बहु विगै छांड आतम नै 'वाली'[1], वारू अधिक विवेको ।।

१२. शीत काल में शीत सह्यो अति, काटण कर्म करूडो।
सार करंता संत सत्यां नी, कर्म काटण नै सूरो ।।

१३. ऊभा रहिवा री तपसा करि, एक पोहर उनमांनो।
ते पिण घणा काल लग कीधी, खेतसीजी गुण खांनो ।।

१४. लघु वृद्ध समणी संतां नै, उष्णकाल जल आंणी।
विविध समाधि पमावै स्वामी, धर्म निर्जरा जांणी ।।

१५. आसरै वर्स बावीस भीक्खू नी, सेव करी धर पीतो।
हाजर रैहता मन गहगहता, सुखदाई सुविनीतो ।।

१६. सरयारी में भीक्खू स्वामी, साठे कीयो संथारो।
कह्यो सतजुगि ना साझ थकी म्है, पाल्यो संजम भारो ।।

१७ इण विधि भीक्खू आप प्रसंस्या, इसा खेतसी स्वामी।
गणवच्छल गणनायक गिरवा, सतजुगि अन्तरजामी ।।

१८. नवमी ढाल विषै सतजुगि ना, आख्या गुण अधिकारो।
भीक्खू ऋष रै पाट विराज्या, भारीमाल गुण धारो ।।

---

१ वश मे की।

ढाल १०

दोहा

१. भीक्खू ऋप भेला किया, सर्व चौमासा सार।
एक चौमासो न्यारो कियो, जाणी लाभ अपार ।।

२. वैणीरांमजी रै वासते, स्वाम खेतसी सोय।
चौमासो वगडी कियो, चमालिसै अवलोय ।।

३. चौमासो ऊतर्‌यां पछै, भीक्खू ऋप रै पास।
पाली में संजम लियो, वैंणीरामजी तास ।।

४. साठा थी अठंतरा लगै, विचर्‌या भारीमाल।
सेव खेतसी साचवी, आंणी भाव रसाल ।।

५. वरस अठारै आसरै, भारीमाल नी जोय।
तन मन सू सेवा करी, स्वाम खेतसी सोय ।।

*स्वाम सतजुगी भजो भाव सू रे, सुगणा० ।।ध्रुपदं।।

६. समत अठारै अठंतरे रे सुगुणा, राजनगर रूडी रीत रे।
अणसण भारीमाल आदर्‌यो रे सु०, सतजुगी पाली पूरण पीत रे ।।

७. पाट थाप्या ऋपरायजी, धीर गंभीर गिरवा जांण।
पुन्य सरोवर पोरसो, शीतल सुधा समी वांण ।।

८. आण अखंडत आदरै, सतजुगि धर' चित धीर।
मान अहंकार अलगो मेलनै, 'विडंद'[1] निभावता वडवीर ।।

९. जुगती जोडी जो आवी मिली, संसारी मांमो नें भांणेज।
खेतसीजी नें ऋपरायजी, दीप रह्यो तसु तेज ।।

१०. गुण्यासे चौमासो पाली कियो, हुओ अधिक उपगार।
मृगसिर विद एकम रै दिने, सैहर पाली थी कियो विहार ।।

११. कांयक असाता तन ऊपजी, गिणत न राखै मुनिराय।
सहै समभावे स्वामि सतजुगी, क्या ही न बैठा 'थाणो'[1] ठाय ।।

*लय—लाखो फूलाणी सुन्दर ले रह्यो ए

१ कर्त्तव्य

१२. विचरत-विचरत आविया, सैहर जैपुर सुखवास।
लाला हरचंद आदि परषदा, पाम्या है परम हुलास ॥
१३. दर्शण कर हरष्या घणा, जाणी अमोलक जिहाज।
उत्तम पुरुष गुण आगला, प्रत्यख भवोदधि पाज ॥
१४. असीये चौमासो जैपुर कियो, सतजुगि पुज रायचंद।
संत घणा थी समोसर्‌या, मेटण भव-भव फंद ॥
१५. उपगार हुओ तिहां अति घणो, समज्या घणा नरनार।
धर्म उद्योत हूओ घणो, जैपुर सैहर मझार ॥
१६. उष्ण उदक ना आधार सू, तपसा करी है व्रधमांन।
दिवस तियालीस दीपता, अधिक अनोपम जांन ॥
१७ आवै छै पूरण परषदा, आणंद अति घन आंण।
सतजुगि पुज रायचन्दजी, वरपत अमृत वांण ॥
१८. ढाल दसमी कही दीपती, छेहला तो दर्शण दीध ॥
साताकारी स्वामी सतजुगी, सुजश तिलक जग लीध ॥

ढाल ११

दोहा

१. जैपुर सैहरे सतजुगी, अधिक कीध उपगार।
निमल संत सोभंत नव, नव नी ओल श्रीकार ॥
२. मुरधर नें मेवाड महि, मालव देश उदार।
हाडोती ढुंढार ना, आया वहु नरनार ॥
३. दर्शण किया दयाल ना, लोक सइकडां सोय।
जांणक मेलो मडियो, हरप घणो मन होय ॥
४. परम पूज ऋपरायजी, सतजुगि सरिसा संग।
तसु वचनामृत सांभली, उपनो अधिक उमंग ॥
५. त्याग वैराग वध्यो घणो, पाया जन चिमत्कार।
हिव चउमासो ऊतरया, मुनिवर कियो विहार ॥

*सुखकारी खेतसी ॥ ध्रुपदं ॥

६. जैपुर सूं करी विहार हो, सुखकारी खेतसी, आप औजागर गागर सागर गुण तणो रे लो।
विचरत-विचरत सार हो, सुखकारी खेतसी, 'हरिदुर्ग'[1] मुनि आया सुखपाया घणो रे लो ॥

७. कृष्णगढ सैहर माहि, दिवस केतायक तिहां रहि विहार कीयो वली।
रूपनगर होय ताहि, सैहर वोरावर आप पधारचा रंग रली ॥

८. सुण हरख्या नरनार, सतजुगि नें ऋपराय पधारचा सांभली।
सइकडां गमैं जनसार, सुखकारी हो स्वामी, वंदै कर जोडी मान मरोडी वलि वली ॥

९. मंगलसींग राठोड, सतजुगि पूज पधारचां सुण हरषावियो।
वंदै वे कर जोड़, मौटै मंडांण करी नै वंदन आवियो ॥

१० वारु अमृत वांण, 'घन सारंग जिम'[2] सांभल हरख पायो घणों।
परम पूज पहिछांण, जग जश गायो छायौ गुण गिरवां तणों ॥

११. च्यार तीर्थ ना थाट, दर्शण करवा संत सती वहु आविया।
होय रह्यो गहघाट, स्वाम दीदार देखत परम सुख पाविया ॥

१२. चौपन ठांणां उनमांन, विविध प्रकार प्रमोद हरप सुख पावता।
ध्याय रह्या धर्म ध्यांन, सतजुगी ने ऋपराय तणा गुण गावता ॥

१३. वोरावर थी कियो विहार, विचरत-२ सैहर वाजोली पधारिया।
हरख्या लोक अपार, धर्मोपदेश देइ नै वहुजन तारिया ॥

१४. चौवीस ठांणां मुनिराय, साधवियां पिण दर्शण काज आवी घणी।
च्यार तीर्थ चित चाय, कीरत जाभी स्वाम तणी जग में घणी ॥

१५. हेम जीत दिल खोल, सतजुगी नै कर जोड़ पूछै वर वारता।
आपै अर्थ अमोल, विविध प्रकारना दृष्टांत दे ओलखावता ॥

१६. भीक्ख ऋप रै पास, विविध जूंनी-२ सूत्र नी रहिसां सीख्या घणी।
आपै आंण हुलास, ग्यांन पींजरो सतजुगी महा गिरवौ गुणी ॥

१७. एहवा सतजुगी स्वाम, दर्शण देखत पेखत परमानंद हुवै।
उत्तम पुरुप अभिरांम, परम दयाल ना समरण थी सुख अनुभवै ॥

---

*लय—जोधांणा री वाडी नीम्बू नीपजै

१. किसनगढ।

२. मेघ और चातक की तरह।

१८. एकादसमी उदार, ढाल विशाल मनोहर महा मुनिवर रट्या।
सतजुगि स्वाम श्रीकार, चौथा आरा जिसा पंच में प्रत्यख परगट्या ॥

ढाल १२

दोहा

१. एक मास रै आसरै, रह्या वाजोली स्वाम।
सतजुगि पूज प्रताप थी, हूआ अधिक हंगाम ॥

२. खेतसीजी स्वामी तणै, कारण न मिट्यो कोय।
स्वाम सतजुगी सूरमा, गिणत न राखै सोय ॥

३. सूत्र भगवती में कह्यों, महा मोटा मुनिराय।
समभावें वेदन सही, खिण में कर्म खपाय ॥

४. कष्ट पड्यां दिल 'विमन'[1] नहि, वहुश्रुती बुद्धिवंत।
सांहमी वृद्धि आई सही, इम चितवै मतिमंत ॥

५. इण विधि सहै परिसहा, ते तो विरला जांण।
स्वाम खेतसी सारिखा, मोटा ऋष गुण खांण ॥

*धिन-धिन-धिन स्वामी सतजुगी रे ॥ध्रुपदं ॥

६. हारे लाला विहार कियो वाजोली थकी रे, सतजुगी ऋषराय साथ जो।
ईडवै होय पादू पधारिया रे, छेहला दर्शण दिया स्वामी नाथ जो ॥

७. हांरे० आणंदपुर आया विचरंत, वलूंदे पधार्‌या महा मुनिद।
दर्शण दीनदयाल ना, कीधा पांमै परम आनद ॥

८. हांरे० संतां सघाते मुनि सतजुगी रे, अनुक्रम आया सैहर पीपाड।
नरनारी हरष पाया घणा, वलि-२ वदै देखै स्वामी नो दीदार ॥

९. हांरे० मांडी सलेखणा स्वामजी, तन मन सेती काटण कर्म जंजीर।
उवास थी लेइ नै चोला लगै, खेतसीजी स्वामी साचेला सूरवीर ॥

१०. हांरे० आराधक पद पावण तणी, स्वामी तणै मन अति उमेद।
परभव नी चिता अति घणी, आलोइ निंदी 'निसल'[2] हूआ तज खेद ॥

---

१. उद्विग्न।

*लय—हांरे लाला गढ सूं

२. निःशल्य—अधिक सरल।

११. हांरे० वलि-वलि कहै ऋषराय नै, संसारी लेखे हूँ मांमो थे भाणेज।
पद आराधक मुझ हुवै, तिमिज करो जद जांणू थारो हेज ॥

१२. हांरे० स्वाम सीमंधर जिनेसरू, प्रत्यख वदै इम वच सार।
हूओ आराधक खेतसी, तिमज वतावो जद जांणू थांरो प्यार ॥

१३. हांरे० पूज कहै सतजुगि भणी, सल रहित नै कह्यो आराधक स्वाम।
एह कही सतजुगि तणा, विविध प्रकार करी चढ़ावै परिणाम ॥

१४. हांरे० आसाढ विद नवमी तणो, चोलारो पारणो कीयो आप उदार।
अल्प आहार मुनी आचरी, वेलो कीधो दसम नें इग्यार ॥

१५. हांरे० वारस दिन कीये स्वामी पारणो, तेरस चवदस वेलो दीयो ठाय ॥
स्वाम परिणाम सैंठा घणा, खेतसीजी अै तो महा मुनिराय ॥

१६. हांरे० चवदस दिन ऋपरायजी, सतजुगी नै वोलै इण विध वाय।
अवसर आयो दीसै आपरो, जावजीव देउं संथारो पचखाय ॥

१७. हांरे० सतजुगी हंकारो भरियो सही, ऋपराय करायो तिविहार संथार।
पूज कहै संथारो सरध्यो तुम्हे, तो म्हारै माथे हाथ देवो इण वार ॥

१८. हांरे० सतजुगी हाथ माथे दियो, सावचेत इसा मुनि गुण माल।
अणसण इम स्वामी आदरयो, ए खेतसी स्वामी नी कही वारमी ढाल ॥

ढाल १३

दोहा

१. अणसण स्वामी आदरयो, च्यार तीर्थ ओछाय।
धिन-धिन लोक करै घणा, सेवा करै मुनिराय ॥

२. दिढ परिणाम स्वामी तणा, धर्म ध्यान धुन धार।
जनम सुधारै इण विधै, ते विरला संसार ॥

३. अरिहंत सिद्ध साधु धर्म नो, देवै सरणा च्यार।
अधिक परिणांम चढावता, परम पूज धर प्यार ॥

४. अनमति स्वमति देख नै, पाया बहु चिमत्कार।
ज़ांणक मेलो मंडियो, आवै घणा नरनार ॥

५. इण विध स्वामी खेतसी, पंडित मरण सकांम।
आदरियो उचरंग सू, मोटा ऋप गुण धांम ॥

*सतजुगी आप वड़ा उपगारी, चरण करण गुण धारी रा।
सतजुगी आप वड़ा उपगारी ॥
थांरी करणी री वलिहारी रा, खेतसी आप वड़ा उगगारी॥ध्रुपदं॥

६. आसरै दोय पोहर रो आयो, संथारो सुखकारी।
'सूस'[1] 'आखडी'[2] हूआ अधिका, पीपार सैहर मंझारी ॥

७. समत अठारै ने वर्स असीये, आसाढ मास उदारी।
कृष्ण चतुर्दशी वार सनेसर, चाल्या जनम सुधारी ॥

८. आसरै पोहर रात्रि गयां, स्वामी परभव कीध संचारी।
जीत नगारो दीधो खेतसी, त्यांरा गुण गावो नरनारी ॥

९. गुणतीस खंडी मांहडी कीधी, देव विमांण सी भारी।
सोना रूपा रा फ़ूल उछाल्या, पेखत लागै प्यारी ॥

१०. दाग दीयो चंदण रै मांहै, रोकड लागा कहै तीन सौ तिवारी।
एतो किरतब संसार तणा छै, नही संवर निर्जरा लिगारी ॥

११. वर्स तेतीस आसरै, सतजुगी रह्या गृहस्थावास मंझारी।
जाझो वयाली वर्स चारित्र पाल्यो, करणी कीधी भारी ॥

१२. सर्व आउ वर्स पचत्र आसरै, पाल्यो आप उदारी।
घणां जीवां नै समाधि पमाई, हूआ औजागर भारी ॥

१३. विनयवंत मुनि सतजुगि सरिखा, पंचम काल मंझारी।
वलि व्हैणा महा दुर्लभ जांणो, उत्तम पुरुष अवतारी ॥

१४. भीक्खू संथारो कीयो सरियारी, भारीमाल राजनगर मंझारी।
स्वाम खेतसी परभव पौहता, परगट सैहर पीपारी ॥

१५. विनयवंत सुध प्रकृति विवेकी, सकल संघ हितकारी।
काम पड्यां याद आवै खेतसी, गणवच्छल गणधारी ॥

१६. समण सत्यां नै जनक सरीखा, सतजुगि महा सुखकारी।
संत सत्यां थांनै निश दिन संभरे, आप इसा साताकारी ॥

१७. सतजुगी स्वाम तणा गुण गाया, उगणीसै पांचे विचारी।
वैसाख सुदि एकम दिन वारू, उपनो हरप अपारी ॥

१८. तेरमी ढाल माहै सतजुगिना, गाया गुण अधिकारी।
जय जश आनंद करण खेतसी, वीदासर सैहर मंझारी ॥
होय जो म्हारो नमस्कारी ॥

---

*लय—भरतजी भूप भया छो भारी

1. नियम।
2. आखिरी।

२

हेम नवरसो

ढाल १

दोहा

१. अरिहंत सिद्ध साधू प्रणम, सरस वात सुखकार।
हेम नवरसो हरष धर, आखूं अधिक उदार॥

२. भला सीस भीखू तणा, भारिमाल सुवनीत।
खेतसीजी वेणीरांमजी, हेम हूया सुवदीत॥

३. समत अठारै साठे समै, भीखू गुण भंडार।
सात पोहर रै आसरै, सरियारी संथार॥

४. अठंतरे अणसण भलो, नव पोहर उनमांन।
भारीमाल नै आवियो, राजनगर सुभ स्थांन॥

५. खेतसीजी अणसण कियो, प्रगट सैहर पीपार।
अडतीसे दिख्या ग्रही, असीये उतर्‌या पार॥

६. चमालीसे संजम लियो, वेणीरांमजी जोय।
सैहर चासटू में सही, सित्तरे पोहता पर लोय॥

७. संवत अठारै तेपने, हेम चरण चित धार।
उगणीसै चोके भलो, अणसण अधिक उदार॥

८. सरियारी में जनमियां, सरियारी व्रत धार।
सरियारी नेत्र खुल्या, सरियारी संथार॥

९. त्यांरी वात विस्तार छै घणो, पूरो कह्यो न जाय।
थोडो सो परगट करूं, सांभलजो चित ल्याय॥

*सोम मुद्रा अति प्यारी जी सुखकारी हेम मुनीश्वरू॥ध्रुपदं॥

१०. सैहर भलो सरीयारी जी सुखकारी मुरधर देश में, कांइ ओसवंस सुविहांण।
बड़ै साजन 'नख'[1] आछाजी वागरेचा जाति वखांणियै, तिण कुल अवतरिया आंण॥

११. अमरोजी तात विख्याताजी कांइ माता सोमा दीपती, कांइ देख्यो देव विमांण।
कर जोड़ी कहै वांणीजी मुझ पुत्र सुता जीवैं नही, कह्यो दोय जीवसी जांण॥

१२. एहवो सुपनो निरखीजी कांइ हरखी माता अति घणी, स्वामी हेम गर्भ अनुसार।
जनम्या उत्तम प्रांणीजी सुखदांणी पुण्य सरोवरु, हूओ आणंद हरप अपार॥

---

*लय—सामाई सुखदाई जी चित लाई…

१. किसी न्याति के अन्तर्गत पूर्व न्याति के वंश का सूचक शब्द।

१३. संवत अठारै गुणतीसेजी कांइ माह सुदि तेरस जांणियै, कांइ पुष्य नखत्र वलवांन ॥
योग आयुष्मन आयोजी सुखदायो वार मुकर भलो, कांइ जनम्या हेम सुजांन ॥

१४. वर्स कितै हुइ वाईजी सुखदाई रत्तू नांम थी, वेहन भायां री जोड ।
भीखू गुरु भल मिलियाजी रंग रलिया हेम तणै घणी, कांइ धर्म ध्यान थी कोड ॥

१५. वरस पनरै आसरै वधियाजी कांइ 'सधिया चेत खड़ा हुया',[1] किया परनारी ना पचखांण ।
संत सत्या नी सेवा जी नित्यमेवा सामायक करै, वहु पाप तणो भय जांण ॥

१६. उतपतिया बुद्धि भारी जी सिरदारी हेम तणी घणी, कांइ चरचावादी जांण ।
कठ कला अधिकारी जी समजावै नरनारी भणी, कांइ वाचै सरस वखांण ॥

१७. वणिज करण नै जावै जी पाली बीलाडै आदि दे, त्यां पिण देवै उपदेश ।
चरचा कर जन समजावै जी अदरावै व्रत श्रावक तणां, घालै दांन दया री रेस ॥

१८. करै भेषधार्‌यां सूं चरचाजी कांइ थानक मांहि जायने, विविध न्याय थी जोय ।
इम पाखंडियां नै हठावैजी सुध जाव न आवै तेहनै, ते सुणियांइ इचरज होय ॥

१९. सुवनीत पणै सुखदायीजी नरमाई हेम तणै घणी, कांइ भीखू सूं बहु प्रेम ।
त्यांरो विरह खमणो अति दोहरोजी नहीं सोरो संग तसु छांडणो, हीयै निरमला हेम ॥

२०. प्रथम ढाल थइ पूरी जी अति रूडी वातां हेमनी, कांइ सांभलज्यो सुखकार ।
श्रावक ना व्रत पालै जी उजवालै आतम आपणी, कांइ परम सुगुरु सूं प्यार ॥

ढाल २

दोहा

१. धीरपणै श्रावक धर्म, पालै हरष थी हेम ।
भावै चारित्र नी भावना, परम गुरां सूं प्रेम ॥

२. 'चरण'[2] तणी अभिलाष चित, 'अति हित'[3] अधिक उमेद ।
वरस घणां इम वीतिया, 'क्षांति'[4] धरै तज खेद ॥

३. संवत अठारै तेपने, भीखू गुण भंडार ।
सोजत चौमासो सरस, अधिक कियो उपगार ॥

---

१. सज्जित एव सावधान हुए ।
२. चारित्र ।
३. अति हेत—अधिक स्नेह ।
४. क्षमा ।

४. विहार करी मुनि विचरता, मांढे करि मंडाण।
संत घणा थी समोसर्‌या, ऊजम अधिको आंण।।

५. सरियारी थी स्वामना, हरष धरी नै हेम।
दर्शण किया दयालना, पाम्या अधिको पेम।।

६. पोल चोतरे पूज जी, शयन संत संग संच।
हेम शयन हेठे कियो, महितल ढाली मंच।।

७. स्वाम बात संतां थकी, करै विविध पर जोय।
क्षेत्रां में मेलण तणी, सत सत्यां नै सोय।।

८. और गांम मुनि आरज्यां, मेलण री करी वात।
सरियारी मेलण तणी, न करी बात विख्यात।।

९. जब हेम कहै म्हाराज नै, संत सत्यां नै सोय।
सरियारी मेलण तणी, वात हि न करी कोय।।

१०. जब भीखू कहै साधां विचै, कांइ बोलण रो कांम।
ग्रहस्थ सुणतां वात ही, मूल न करणी तांम।।

११. इत्यादिक वचनै करी, घणां निषेध्या ताहि।
हेम सुणी बोल्या नहीं, सीख धारी दिल मांहि।।

*स्वाम सुहामणा।। ध्रुपदं।।

१२. हिवै हेम प्रभाते, वदी ऋषरायो।
निज पुर चालिया, मन भीखू मांह्यो।।

१३. मुनि पिण विहार कीधो, कुसलपुर कांनी।
भीखू ऋष भला, वहु जांण सुज्ञानी।।

१४. हिवै आगल जातां, अपशकुन जणाणा।
तब पाछा फिरचा, स्वांमी महा स्यांणा।।

१५. शीघ्र चाल स्वांम नी, हेम पूठ सुहाया।
हेलो पाडियो, हेमडा म्हेइ आया।।

१६. भीखू नै देखी, हेम अति हरषांणां।
तन मन हूलस्यो, रूं रूं विगसाणा।।

१७. तब उभा रहिनै, दोनूं कर जोडी।
वांद्या स्यांम नै, निज मान मरोडी।।

*लय—हिवै आगै जाता अटवी

१८. तव भीखू बोल्या, वच सरस सुहाया।
आज तो इण परै, थां ऊपर आया ॥

१९. हेम सुण नै हरख्या, मुनि वच दिल धारचा।
कर जोड़ी कहै, आप भलाई पधारचा ॥

२०. तव भीखू पूछै, स्यू तुझ परिणांमो।
संजम लेण स्यूँ, कहै वात तमामो ॥

२१. हूं चारित्र लेसू, इण पर ललचावत।
तीन वरस थया, हिवै करौ पकावत ॥

२२. पाली चौमासो, छांड्यो म्है आगै।
तुझ काजे कियो, सरियारी सागै ॥

२३. हिवै समाचार मुझ, पका तूं कहिदै।
वात सांची कहो, मत राखो पडदै ॥

२४. कर जोडी हेम कहै, आंणी हरप अभितर।
चरण लेवा तणा, मुझ भाव खराखर ॥

२५. तव भीखू बोल्या, मुझ जीवत लेसी।
के 'चलियां पछै'[1], वर चरण वरेसी ॥

२६. इम सुणी हेम नै, करड़ी अति लागी।
स्वांम भीखू तणा, अै तो महा अनुरागी ॥

२७. स्वांमी नाथ इसी वात, मुझ कांय सुणावो।
शंका हुवै आपरै, तो त्याग करावो ॥

२८. नव वरसां पाछै, ब्रह्म व्रत अदरावो।
कुशील सेवा तणां, पचखांण करावो ॥

२९. इम सुण नै भीखू, झट 'सूंस'[2] कराया।
कहै 'तुझ त्याग है', वच सरस सुहाया ॥

३०. पचखांण करावी, बोल्या वर वांणो।
भीखू ऋप भला, अवसर ना जांणो ॥

३१. नव वर्ष तें राख्या, परणवा निमत्तो।
हेम कहै सही, तुम वच ए 'सत्तो'[3] ॥

३२. तव भीखू स्वामी, तसु न्याय वतावै।
लेखो तेहनो, भिन-भिन दरसावै ॥

---

१. मरने के बाद।
२. नियम।
३. सत्य।

३३. एक वरस आसरै, परणीजत लागै।
आठ वरस रह्या, सुण लेखो आगै ।।

३४. एक वरस आसरै, पीहर रहै नारी।
तब पाछै रह्या, वर्स सात विचारी ।।

३५. तिण में दिन रा त्याग तुझ, दिल मांहै परखो।
तब पाछै रह्या, साढा तीन वरषो ।।

३६. साढा तीन वरस में, त्याग पंच तिथ तासो।
तब पाछे रह्या, दोय वर्स चिउंमासो ।।

३७. इक पोहर मठेरो, चिउं पोहर निश मांयो।
पाप कुशील, पट मास इण न्यायो ।।

३८ षट मास आसरै, रह्यो वाकी कुशीलो।
तिण रे वासते, किम कीजै ढीलो ।।

३९. नव वरस रो चारित्र, तू कांय गमावै।
किंचित सुख कारणें, इम मुनि समजावै ।।

४०. वली भीख वोल्या, परण्यां पछै धारी।
इक बे वालक हुवां, मर जावै नारी ।।

४१. जद सर्व आपदा, अति विपत अथागी।
पोता रै गले पडै, हुवै दुख नो विभागी ।।

४२. पछै चारित्र आंवणो, अति कठण विसेसो।
इम समझाय नै, वलि दे उपदेशो ।।

४३. जावजीव आदरलै, सुध शील सुचंगो।
विहुं कर जोडलै, आंणी उचरगो।

४४. तव स्वामी खेतसी, कहै वात अमांमी।
तू हाथ जोडलै, वार-वार कहै स्वामी ।।

४५. सतजुगि नी वांग सुण, हेम जोड्या हाथो।
तब पूछै वली, भीखू स्वामी नाथो ।।

४६. शील अदराय देउ, पूछ्यो वारंवारो।
भीखू गुरु भला, तसु उंडो विचारो ।।

४७. तव हेम वोलिया, शील अदराय देवो।
त्याग कराविया, स्वामी स्वमेवो ।।

४८ पंच पदां री साख कर, पचखांण कराया।
व्रत जावजीव रो, मन हरप धराया ।।

४९. तब हेम बोलिया, अब वेग पधारो।
सरियारी मझै, मुझ आतम तारो॥

५०. जब भीखू बोल्या, मुख वांणी वारू।
हीरांजी भणी, म्हेला छां अवारू॥

५१. साधू नो पडिकमणो, सीखो चित ल्यायो।
इम कही आविया, नीवली मांह्यो॥

५२. ए बीजी ढाल में, संजम सुखकारी।
आदरवा भणी, हेम होय गया त्यारी।

ढाल ३

दोहा

१. मांढा नें नीवली विचै, ए उभा करी सर्व वात।
हिवै आया नीवली मझै, स्वामी हेम संघात॥

२. भारीमाल सूं भीखू कहै, हिवै थे हुवा 'नचीत'[1]।
आगै थांरै म्हे हुंता, अवै हेम 'अगजीत'[2]॥

३. जे कोइ पाखंडी थकी, पडै चरचां रो कांम।
तो छै थारै हेमजी, इम कहै भीखू सांम।

४. हेम कहै म्हे शील आदरचो, ते प्रसिद्ध न करणी वात।
भीखू कहै हूं नहीं करूं, स्वामी बुध उतपात॥

५. कन्हे आहार थो सूझतो, करी वीनती हेम।
स्वाम व्रत निपजावियो, पाम्या अधिको प्रेम॥

६ हेम सरीयारी आविया, भीखू ऋप नै वद॥
चेलावास पधारिया, स्वामी म्हा सुखकंद॥

७ वेणीरामजी नै कही, सगली वात विख्यात।
हेम शील व्रत आदरचो, पिण कह्यो प्रसिध न करणी वात॥

८. वेणीरामजी सांभली, हरख्या घणां मन मांय।
घणां प्रसंस्या सांमनै, आप कीधी बात अथाय॥

---

१. निश्चिन्त।
२. विजय प्राप्ति में अग्रणी।

९. शील अदरायो हेम नै, कीधो उत्तम कांम।
म्है तो 'खप'[1] कीधी घणी, पिण 'टिप न लागी'[2] तांम ।।

१०. कह्यो वात प्रसिद्ध करणी नही, तो आप प्रगट म करो वात।
इम कही नै वेणीरामजी, प्रसिध करी विख्यात ।।

११. वाइ भाइ चेलावास ना, सुण नै हरषत थाय।
म्है तो पहिलाई जाणंता, हेम दिख्या लेसी ताय ।।

१२. पूजभीखनजी पधारिया आनदा, सरियारी सैहर मझार कै।
आज आनंदा ।।

१३. दिख्या देवा हेम नै आज, वहु संतां परिवार कै।
आज आनदा ।।

१४ नरनारी हरष्या घणा, पूज भीखणजी नै पेख।
हेम चारित ले चूप सूं, ज्यां रै मन मांहि हरष विसेख ।।

१५. वैरागी वनडो वन्यो गुणधारी रे, हेम हरप हुसीयार कै।
हेम सुखकारी रे।
महा सुदि तेरस दिन भलो गु०. दिख्या रो महूरत सार कै ।।
हेम सुखकारी रे ।।

१६. वावा रो वेटो भाई रावले, जाय पुकारचो ताहि।
ठकुरांणी भीखू नै कहवावियो, मत रहिजो नगरी माहि ।।

१७. गांम रा पंच भेला थई, हेम भणी लेई साथ।
ठकुरांणी पासे गया, कही दिख्या री वात ।।

१८. वस्त्र गेहणा सहित देखी हेम नै, वोली ठकुरांणी वाय।
म्हांरा दोलतसीग रो सूंस छै, यू को यू देसू परणाय ।।

१९. जव हेम जाव दीधा इसा, थांरै परणावा रो पेम।
(तो) गांम मांहि कु वारा घणां म्हारै तो परणदा रो नेम ।।

२०. इम कही हेम पाछा वल्या, आय वैठा स्वाम पास।
गांम में रहिवा री आगन्या, पंच लेई आया तास ।।

२१ माघ शुकल पूनम पछै, छ काय हणवारा त्याग।
हेम रे नेम पहिली हुता, कीधा आण वैराग ।।

---

१. चेष्टा।
२. असर नही हुआ।

२२. न्यातीला कहै बहन परणाय नै, लीजो संजम भार।
'साहवो'[1] फागण विद बीज रो, पिण हेम न मांनै लिगार ।।

२३. पाछै न्यातीला हठ कीधी घणी, जब हेम कीयो अंगीकार।
पूज भणी कह्यो आय नै, स्वांम निषेध्या तिवार ।।

२४. रे भोला अनर्थ करै, दिवस न लंघणो एक।
न्यातीला तो गोतीला अछै, ए फंद मांहि न्यांखै विसेख ।।

२५. हेम समझ पाछा आय नै, कहै न्यातीला नै एम।
हूं कह्यो न मानूं थांहरो, थे तो भंगावो नेम कै ।।
स्वाम सुखकारी रे ।।

२६. तेरस दिन उलंघू नही, थे क्यांनै करो 'वकवाय'[2]।
लोक हसी नै इम कहै यां नै, भीखनजी दिया समजाय ।।

२७. इकवीस दिवस रै आसरै, जीम्या वनोला जांण।
दिख्या महोच्छव दीपतो, मंडिया वहु मंडांण ।।

२८. हजारां लोक भेला हुवा, वड़ तले दिख्या विचार।
स्वांम भीखू स्वहाथ सू, स्वमुख सजम भार ।।

२९. संवत अठारै तेपने, माह सुदि तेरस जांण।
वृहस्पतिवार वखांणियै, पुष्य नखत्र वलवांन ।।

३०. आयुष्मन जोग आयो भलो, हरष दिख्या मुनि हेम।
जय-जय-जय जन ऊचरै, पांम्या अधिको पेम ।।

३१. महा महीने हेम जनमिया, महा महीने व्रतधार।
सुकल पख नो जनम थो, सुदि पख दिख्या धार ।।

३२. जनम थयो तिथि त्र्योदशी, तेरस दिख्या तास।
पुष्य नखत्र मे जनमियां, पुष्य में दिख्या प्रकास ।।

३३. जोग आयुष्मन जनम में, दिख्या आयुष्मन देख।
भागवली हेम महा मुनि, मिलियो योग विसेख ।।

३४. उत्तरा फालगुनी में जनमिया, भगवत श्री व्रधमांन।
दिख्या उत्तरा फालगुनी मझै, ज्यू यांरै मिल्यो पुष्य आंण ।।

३५. वारै सत आगे हुंतां, स्वाम भीखू रै सोय।
हेम थया संत तेरमा, यां पाछै न घटियो कोय ।।

---

१. विवाह।
२. बकवाद—सारहीन वात।

३६. 'वंकचूलिया'[1] में वारता, चतुरविध संघ नी सोय।
समत अठारै तेपना पछै, उदै-उदै पूजा अति होय॥

३७. तेपने वात आय मिली, हेम दिख्या वृधकार।
चरण समापी हेम नै, स्वामीजी कियो विहार॥

३८. हेम मुनीसर मोटको, हेम वड़ो सुवनीत।
विनै विवेक विचार में, जांणै रूडी रीत॥

३९. हेम हीया रा निरमला, हेम सुगुर सुखदाय।
हेम निपुण बुध आगलो, हेम सरल मुनिराय॥

४०. हेम खिम्या गुण सोभतो, गिरवो हेम गंभीर।
हेम 'दिसावांन'[2] दीपतो, हेम मेरु जिम धीर॥

४१. हेम सुमति ना सागरूं, हेम गुप्त गुणपूर।
हेम वैराग में झूल रह्यो, सुगणो हेम 'सनूर'[3]॥

४२. हेम इर्याधुन ओपती, अमृत हेम रा वेण।
हेम गवेपणा अति घणी, निरमल हेम रा नैण॥

४३. वस्त्र पात्र लेवै मेलवै, हेम जयणा अधिकार।
हेम पंचमी सुमति में, सावधान सुखकार॥

४४. मन वचन काया गोपवै, हेम अधिक हुंसीयार।
हेम तणा गुण देखनै, पामै जन अति प्यार॥

४५ हेम दया रस सागरूं, हेम सतवादी सूर।
आग्या अखंड अराधना, हेम गुणां भरपूर॥

४६ हेम शील माहि रम रह्यो, वारू हेम नव वाड़।
हेम निर्ममत पणा तणो, स्यू गुण कहियै सार॥

४७. साताकारी स्वाम नै गु०, हेम घणो हुसियार।
हेम जांणै अग चेष्टा गु०, भीखू सू अति प्यार॥

४८. सूरत हेम नी सोहनी, अतिसयकारी अैन कै।
मनहर मुद्रा पेखतां गु०, चित में पामै चैन कै॥

४९. ऊडी वुद्धि उतपात नी गु०, चरचा करवा 'चूप'[4]।
सूत्र सिद्धत सीखै मुनि गु०, आछी बुद्धि अनूंप॥

---

१ ४५ आगमो में एक आगम।
२ भाग्यशाली।
३. तेजस्वी।
४. उत्साह।

५०. तीजी ढाल मांहै कह्यो गु०, चारित्र लीधो हेम।
मन चिंतव्या मनोरथ फल्या, पाम्या अधिको पेम॥

ढाल ४

दोहा

१. 'अंतेवासी'[1] ओपता, हस्तमुखी हद हेम।
सेवा करै स्वांमी तणी, पूरो गुर सूं पेम॥
२. भीखू गुर पासे भला, च्यार चोमासा कीध।
सुगुर सीख सूरापणै, पीयूप रस सम पीध॥
३. तन नी चंचलता तजै, 'रजै'[2] उत्तम गुण ठाण।
'लजै'[3] दोप थीं शांत चित, भजै अमर निरवांण॥
४. अमल चरण वर करण धर, निमल सील निकलंक।
विमल ध्यांन लहलीन चित्त, कमल जेम 'निरपंक'[4]॥
५. पढ़त-पढ़त जिम 'समय'[5] रस, चढ़त चढ़त परिणाम।
'उतर-उतर'[6] गुण वढ़त ही मुनी हेम गुणधांम॥
६ तपत ताप संवेग कर, खपत पाप संताप।
जपत जाप ध्यानेश्वरू, थिर चित् आतम थाप॥

*भजो हेम गुणधारी हो॥ध्रुपदं॥
७. प्रथम चौमासो खेरवै, वर्स चौपने विचारी हो।
भीखू नै भारीमालजो, खेतसीजी अधिकारी हो।
हेम हर्ष हुसीयारी हो॥
८. पाली वर्स पचावने, संत चिऊं सिरदारी।
सैंहर केलवा थी आय नै, उदैरांम चरण धारी।
सावण मास मझारी, भजो स्वामी हेम हजारी॥

१. शिष्य।
२. अनुरक्त होते।
३. संकुचित होते—दूर रहते।
४. कीचड़ रहित।
५. आगम।
६ उत्तरोत्तर।
*लय—भजो भीखू ऋषराया

९. श्रीजीदुवारै छपने, संत पंच सुखकारी।
भारीमाल हेम सतजुगी, किया एकंतर भारी।
च्यार मास एकधारी ॥

१०. उपवास आठम चवदस तणा, भीखू कीधा भारी।
छठ छठ आंविल पारणै, उदैरांम तप धारी।
व्यावचियो अणगारी ॥

११. सतावने पुर सोभतो, ए च्यार चौमासा उदारी।
भीखू स्वांम पासे किया, सीख कला गुण धारी।
हुआ ओजागर भारी ॥

१२. अठावने वलि पुर कियो, बडा संत पै विचारी।
वेंणीरामजी रे आगलै, ए पंच चौमासा प्रकारी।
रह्या बडां री लारी ॥

१३. गुण बुधि कठकला भली, भीखू देखी भारी।
कियो सिघाडो हेम नो, जाण्या महा उपगारी।
आप्या सत उदारी ॥

१४ सरियारी में गुणसठे, स्वामी हेम सोभागी।
साठे पीसांगण सैहर में, जिनमत थी मति जागी।
स्वामी दुरमति दागी हो, भजो स्वांमी हेम सोभागी ॥

१५. पाली चौमासो इकसठे, कीधो हरष अथागी।
फागुन में दिख्या ग्रही, जोवणजी वैरागी।
पाखंड जातै भागी ॥

१६. सैहर जैतारण वासठे, नवमो चौमासो सागी।
नरनारी समज्या घणा, जीवणजी अन्न त्यागी।
वावीस पचख्या वैरागी ॥

१७. वावीस मे दिन पचखियो, सथारो वडभागी।
सतरै दिन रो आवियो, दिन गुणचालीस सागी।
जिनमत महिमा जागी ॥

१८. सैहर कटाल्ये त्रेसठे, हेम बडा ऋषराया।
सैहर देवगढ चोसठे, संत च्यार सुखदाया।
स्वामी हेम सवाया हो, भजो हेम महा मुनिराया ॥

१९. सुखजी संथारो कियो, वहु हठ सू मुनिराया।
दस दिन अणसण दीपतो, ते हेम परिणांम चढाया।
चिमतकार जन पाया ॥

२०. सरियारी वर्स पैंसठे, वर्स छासठे आया।
प्रगट पाली सैहर में, 'जाभा'[1] ठाठ जमाया।
सुणज्यो चित्त ल्याया ॥

२१. पीथल 'हरि'[2] वाजोली थकी, चारित्र लेवा आया।
सुसरै लारै आयनै, विविध पणै ललचाया।
रुदन करत अधिकाया ॥

२२. पीथल कहै सुसरा भणी, सांभल तू मुझ वाया।
साधपणो लियां विना, च्यारू आहार पचखाया।
मन वैराग सवाया ॥

२३. सुसरै दीनी आगन्या, पीथल मन हरपाया।
संजम लीधो हेम पै, छांडि त्रिया व्रत ल्याया।
सतां नै सुखदाया ॥

२४. अठावन किया भोपजी, तपसा अधिक विसाली।
उदक आगारे ओपती, तप कर 'कर्म प्रजाली'[3]।
मुनि आतम उजवाली हो, भजो हेम निमल निहाली ॥

२५. करी पारणो हेम ना, चरण ग्रह्या तिण काली।
जावजीव पचखायद्यो, संथारो सुविशाली।
तन मन लागी 'ताली'[4] ॥

२६. वहु जनवृंद भेला थया, ते पिण कहै भोप न्हाली।
हेम संथारो करावियो, च्यार पोहर जाभो भाली।
मांडी खंड इकताली ॥

२७. उपवास कियो कारण थकी, 'सांमजी'[5] सुखकारी।
रात्रि आउखो पूरो कियो, चाल्या जनम सुधारी।
महा मोटा अणगारी ॥

२८. सैहर खेरवै सडसठे, अडसठे अधिकारी।
पच्छिम थली वालोतरे, हूओ उपगार भारी।
समज्या वहु नरनारी ॥

---

१ अधिक।
२ नाहर (वे गोत्र से नाहर थे)।
३. कर्मों का ध्वस कर दिया।
४. इकतारी।
५. मुनि श्री सामजी (क्रम स० २१)।

२९. गूणंतरे कृष्णगढ़ में, सवत्सरी नो निहाली।
एक 'पोसो'[1] पिण न हूओ, पोसा पंच दिवाली।
रोप्यो झंड विसाली॥

३०. भारीमाल जैपुर कियो, तिण ही वरस विचारी।
'कारण'[2] सू अधिका रह्या, फागुण तांई तिवारी।
हूओ उपगार भारी॥

३१. हेम चौमासो उतरयां, दर्शण कीधा तिवारी।
वले आया घणा साध साधवी, जैपुर सैहर मझारी।
सत सकल सिरदारी॥

३२. सरूप भीम ऋष जीत नैं, माता साथ विचारी।
चारित्र दीधो चूंप सूं, दोढ़ मास मझारी।
स्वाम दिशा अति भारी॥

३३. भारीमाल संजम दियो, सरूपचंद नै धारी।
पोह सुदि नवमी रे दिने, दिख्या मोहनबाडी।
महोच्छब हुवा अपारी॥

३४. दिख्या देवा जीत नैं, भारीमाल सुविचारी।
मेल्या ऋष रायचंद नैं, महा विद सातम धारी।
स्वामी गण सिणगारी॥

३५. चरण समापी आपिया, हेम नैं तिण वारी।
हेम पढाय पका किया, सांमी पारस भारी।
ज्यांरी हूं 'वलिहारी'[3]॥

३६ फागुण विद इग्यारस दिने, माता सहित भीम धारी।
भारीमाल संजम दियो, महोच्छब थया अपारी।
ए चोथी ढाल उदारी॥

ढाल ५

दोहा

१. ए सोलै चौमासा कह्या, हिव आगल अधिकार।
चित लगाय नै सांभलो, आलस 'ऊंघ'[4] निवार॥

---

१. पोषध। एक दिन-रात के लिए उपवास पूर्वक प्रवृत्ति से निवृत्ति (श्रावक का ग्यारहवा व्रत)।
२. अस्वस्थता।
३. न्योछावर।
४. नींद।

२. विहार करी जैपुर थकी, आया माधोपुर चलाय।
कोटे बूंदी होय आविया, सैहर इंद्रगढ मांय ॥

*हरप धर हेम नै नितवंदो रे, भव ना पाप 'निकंदो'[1]॥ ध्रुपदं ॥

३. सत्तरे इंद्रगढ चौमासो रे, राम हेम जवान विमासो रे।
पीथल सरूप जीत हेम सुखवासो ॥

४. रामजी 'अठम भक्त'[2] मझारो, परभव पोहता सुखकारो।
काती सुदि दसम तिथवारो ॥

५. पाली इकोत्तरें चउमासो, नानजी हेम जवान विमासो।
पीथल भीम जीत हेम पासो ॥

६ नानजी सेषे काल मझारो, चोला में परभव सुखकारो।
हेम कियो घणां रो उद्धारो ॥

७. वोहिंतरे कंटालीया मांह्यो, हेम संतोजी पीथल सुहायो।
सरूप भीम जीत सुख पायो ॥

८. तीहिंतरे सरियारी वासो, हेम पीथल तीनूं भाई पासो।
लघु पीथल छट्ठो विमासो ॥

९. लाहवां थी फतैचंदजी सोयो, हेम पै वीनती मेली जोयो।
रत्नजी दिख्या अवलोयो ॥

१०. घाटे चढी नै लाहवा मझारो, मिगसर विद पंचम तिथ सारो।
छठ रत्न दिख्या अवधारो ॥

११. अमीचंद गलूडरो वासी, पुत्र 'कलत्र'[3] छांड उदासी।
इण पिण चरित्र थी आतमवासी ॥

१२. त्रिया सहित रत्न दिख्या लीधी, अमीचंद आंचलियो प्रसीधी।
हेम एक दिवस दिख्या दीधी ॥

१३. हूवो अमीचंद ऋष नीको, तपसी तपधारी सुतीखो।
मुनि लियो सुजश रो टीको ॥

१४. सर्व 'सेलडी वस्तु'[4] छंडी, वड वैरागी 'कर्म विहंडी'[5]।
ज्यांरी पीत मुर्गात सूं मंडी ॥

---

*लय—नमीनाथ अनाथां रो नाथो रे।

१. नाश करो।

२. तेला।

३. स्त्री।

४. जिस पदार्थ में चीनी 'शक्कर' गुड़ आदि मिलें हो।

५. कर्मों का विध्वसन करने वाले।

१५. तप कीधो है विविध प्रकारो, दश दिवस तांइ चोविहारो।
थयो जिण सासण सिणगारो ॥

१६. शीतकाल सी सह्यो अपारो, उभा काउसग अभिग्रह उदारो।
तिण में पछेवडी परिहारो ॥

१७. उष्णकाल आतापना लीधी, विकट तप्त 'खंखर'[1] देह कीधी।
मुनि जग मांहि सोभा लीधी ॥

१८. चौथै आरे धनो ऋष सुणियो, पंचम अमीचंद संथुणियो।
एक कर्म काटण तत भणियो ॥

१९. तप रूप सुधा वृष्टि वरषै, घोर तप सुणी कायर धड़कै।
याद आयां हीयो मुझ हरषै ॥

२०. सुधा चंद समो सुविलासो, गुण निप्पन नाम विमासो।
कियो पंचम आर उजासो ॥

२१. तसु भजन करो नरनारो, सर्व दुःख भय भंजणहारो।
मुनि सुख सम्पति दातारो ॥

२२. तिण नै दीधो है संजम भारो, भाव लाय थकी काढ्यो वारो।
ओ तो हेम तणो उपगारो ॥

२३. थोडा दिवस पछै वली जांणी, नंदू कुंवारी किन्या पिछाणी।
तिण पिण चारित री चित आंणी ॥

२४. बाप आग्या देवा साथे आयो, गांम खांरा तणी सीम मांह्यो।
हेम साधपणो पचखायो ॥

२५. गृहस्थ रा वस्त्र पाडिहारो, त्यां सहित संजम दीयो सारो।
तिण में दोष न जाण्यो लिगारो ॥

२६. चिमंतरे गोघूदे चोमासो, प्रथीराज वियासी अभ्यासो।
लघु पीथल पैताली सुरासो ॥

२७. जोधराज किया छयाली, सरूपचंद चवदै दिन न्हाली।
भीम द्वादस दिन सुविसाली ॥

२८. सतीदासजी नै समजाया, घणा त्याग वैराग कराया।
दिख्या लेवा परिणाम चढाया ॥

२९. पाली पचंतरे वर्स जाणी, प्रथीराज तियासी तप ठांणी।
लघ पीथल छतीस पिछांणी ॥

---

१. कृशतम।

हे

३०. विचरत-विचरत मुनिरायो, आया सैहर देवगढ़ मांह्यो।
इतलै कुण विरतंत थायो॥

३१. 'दिशां'[1] थी पाछा आवत पांणो, गाय लगाई अचांणो।
तिण सू गोडा रो 'गटो'[2] टलांणो॥

३२. कांवला में घाली मुनिराया, हेम नैं सैहर में लेई आया।
स्वामी ना परिणांम सवाया॥

३३. मगनीरांम वैद 'दिली'[3] वालो, साधां जाय कह्यो सुविसालो।
वैद सुणनै आयो ततकालो॥

३४. निरवद भाषा थी साध जणावै, तिण में दोष अणहुंतो बतावै।
तिण नैं 'दर्शनमोह'[4] धकावै॥

३५. वैद निपुण उपचार बतायो, तिण सूं गटो ठिकाणै आयो।
चौमासा पहिला ए सहूं थायो॥

३६. त्यां रह्या आसरै नव मासो, वर्स छिहंतरे चउमासो।
पीथल एक सौ पट तप रासो॥

३७. तिहां थयो उपगार सवायो, विविध उपदेश दे मुनि रायो।
पांचा रा परिणाम चढायो॥

३८. जावजीव सील अदरायो, वर्स उपरंत त्याग करायो।
घर की रोटी व्यापार छोडायो॥

३९. धेपी करवा लागा हाहाकारो, रावजी कनैं कीधी पुकारो।
त्यां कह्यो हूं तो न वरजूं लिगारो॥

४०. साधा नै रावजी कहिवायो, खुसी थका रहजो सैहर मांह्यो।
पिण आप मन में म आणजो कायो॥

४१. रह्या तीन जणा दिढ सारो, न्यातीला हूवा काया जिवारो।
जव आग्या दीधी श्रीकारो॥

४२. रावजी दिख्या महोच्छव करायो, दो-दो रुपया दिया कर मांह्यो।
म्हारी तरफ सू पतासी वंटायो॥

४३. चोखो पालजो जोग श्रीकारो, गोकलदासजी रा वैण धारो।
हेम दीधो है संजम भारो॥

---

१. पचमी (शौचार्थ)।
२. घुटना।
३. दिल्ली।
४. दर्शन मोहनीय कर्म।

४४. कर्मचंद छांड्या मा तातो, वालपणै वैरागी विख्यातो।
त्रिया छांडी रत्न सिव साथो ॥

४५. एक दिन लियो संजम भारो, ज्यांरा मेट्या है दुःख अपारो।
ओ तो हेम तणो उपगारो ॥

४६. दिख्या दे पूज पासे ल्याया, भारीमाल हरष बहु पाया।
जांण्यां हेम उपगारी सवाया ॥

४७. सरूपचंद तणो तिण वारो, भारीमाल कियो सिघारो।
चौमासो करायो न्यारो ॥

४८. उदियापुर धर्म उजासो, संततरे कियो चौमासो।
'हिन्दुपति'[1] हूयो अधिक हुलासो ॥

४९. भीमसींघ भगत हद कीधी, नमस्कार वंदणा प्रसीधी।
तिण सूं हुइ घणी धर्म वृधी ॥

५०. वरधमान तपसी तप धारो, एक सौ च्यार धोवण आगारो।
हुओ धर्म उद्योत अपारो ॥

५१. चौमासो उतरियां मुनिंदो, आया गोधूदे आण आणंदो।
मेट्या सतीदासजी रा फंदो ॥

५२. वागजी रो पुत्र सतीदासो, संसार थी थयो उदासो।
घर कां रे परिणवा रो हुलासो ॥

५३. व्याह वनोलो जीमी एको, पछै आयो वैराग विसेखो।
हेम पास चरण सुविवेको ॥

५४. वसंत पंचमी दिख्या लीधी, प्रीत पय जल जेम प्रसोधी।
जावजीव तांइ सेवा कीधी ॥

५५. भारमाल दर्शण कीधा रे, वचनामृत प्याला पीधा रे।
जब बछित कारज सीधा रे ॥

५६. तिणइज वर्स पूज तन जाणी, कांइ वेदना अधिक जणांणी।
हेम आदि मिल्या संत आंणी।
भारीमाल री मुरजी पिछाणी, मुनि बोल्या अमृतवाणी ॥
रायचंदजी छै गुण खांणी ॥

५७. हेम सुदर वांण वदीजै, रायचंदजी नै पट दीजै।
म्हारी तरफ सू संका न राखीजै ॥

५८. आखं डावी जीवणी विचारो, तिण में फरक नही है लिगारो।
तिम हूं रायचंद सारो ॥

---

१. महाराणा।

५९. हेम वांणी सुणी पूज हरख्या, यांनै तन मन सूं विनीत परख्या।
निकलंक हेम इम निरख्या।

६०. एहवा हेम सुवनीत गंभीरा, ए तो मेरू तणी पर धीरा।
हेम निमल अमोलक हीरा ॥

६१. रायचंदजी नै पट आप्यो, आचार्य पद थिर चित थाप्यो।
त्यांरो जग जश चिहूं दिस व्याप्यो ॥

६२. अठंतरे आमेट चौमासो, प्रथीराज निनाणूं अभ्यासो।
पछै आया भारीमाल पासो ॥

६३. पछै महा विद आठम जोयो, भारीमाल पोहता परलोयो।
'ऋषि राय वडा संत दोयो'[1] ॥

६४. गुणांस्ये वर्स गुणवंतो, सैहर पीपाड सोहंतो।
असीये पाली हेम महंतो ॥

६५. इक्यासीये जैपुर जांणी, चौमासो उतरियां पिछांणी।
ऋष रायचंद थकी मिलिया आंणी ॥

६६. ऋषराय वडा ब्रह्मचारी रे, ज्यांरी सूरत री'वलिहारी'[2] रे।
पूज सासण ना सिणगारी ॥

६७. गण वछल महा गुणवंतो रे, तीजे पाट जंवू ज्यूं सुहंतो रे।
वहुश्रुती घणा वुधिवंतो ॥

६८. हेम ना चित में अहलादो रे, ऋषराय [उपाई समाधो रे।
टाली विविध प्रकार नी व्याधो ॥

६९. तीज पोह सुदि पाली मझारो रे, ऋष जीत भणी मेल्यो न्यारों रे।
स्वामी आप्या चिहुं संत उदारो ॥

७०. जीत विनति करि जोडी रे, वहु भक्ति करी मांन मोडी रे।
पूज हेम तणी 'पांती'[3] छोडी ॥

७१. मेवाड देश पधारचा रे, उत्तमचंदजी ने हेम तारचा रे।
चारित्र देय नै कारज सारचा ॥

७२. खीवारां नो वासी प्रसीधो रे, त्रिया सुत छांडी संजम लीधो रे।
उत्तमचंद उत्तम काम कीधो ॥

७३. उदैपुर में वडो उदैचंदो रे, तिण नै चारित्र दियो आणंदो रे।
हेम मेटया घणा रा फंदो ॥

---

१. मुनि श्री खेतसीजी और हेमराजजी।
२. विशेषता।
३. भोजन विभाग।

७४. गोघूंदे कीयो चौमासो रे, वियासीये वर्ष हुलासो रे।
हेम मेटी घणा री त्रासो ॥

७५. ए कही पंचमी ढाल विसालो रे, हेम गुण 'जय जश' सुरसालो ॥
हिय धार विमल गुण मालो रे ॥

ढाल ६

दोहा

१. ए गुणतीस चौमासा कह्या, तिण में आयो घणो अधिकार।
बावीस वले बाकी रह्या, ते सुणजो विस्तार ॥

२. लघु उदैचंद गुण आगलो, दिख्या दीधी ऋषराय।
हेम हजूरी विजय गुण, तपसी महा सुखदाय ॥

*गावत मैं तो हेम तणा गुण भारी।
ज्यांरी करणी री वलिहारी, त्यांरी सूरत मुद्रा प्यारी ॥ ध्रुपदं ॥

३. सैहर आमेट में कियो चौमासो, वरस तयासीये धारी।
परगट वरस चोरासीये पुर में, हेम सरण सिरदारी।

४. वरस पच्यासीये पाली सैहर मे, उत्तम उदैचंद भारी।
तप मास तणो तंत कीधो, तो हेम नी इधिक 'हीयाली'[1] गा० ॥

५. वागावास रो मोती सावण में, हेम हस्त चरण धारी।
आछ आगारे कियो तप अधिको, दिवस छिहंतर भारी ॥

६. सैहर पीपाड़ में वरस छीयासीये, मास उदैचंद धारी।
दिवस एकसौ छीयासी दीपजी, कीधा है आछ आगारी ॥

७. सित्यासीये वरस श्रीजीदुवारे, दीप पांणी रै आगारी।
दिवस इगतीस किया चित उजल, मास उदै अधिकारी ॥

८. वरस अठासीये सैहर गोघूदे, उत्तम उदै दीप न्हाली।
हेम प्रसादे कियो तप सखरो, चोतीस तीस पैताली ॥

९. नव्यासीये पाली चित निरमल, नेउवे सैहर पीपाडी।
मास खमण तप कियो उदैचंद, हेम तणै उपगारी ॥

---

*आवत मेरी गलियन में······

१. वत्सलता।

१० बालोतरे एकाणूअे चोमासो, वांणूअे पाली मझारी।
हेम तणी सेवा करै उदैचंद, तीस किया तंत सारी॥

११. सैहर पीपाड चौमासो त्राणूअे, निरमल हेम निहाली।
तन मन सेव करतो उदैचद, कीधा है दिवस तयाली॥

१२. चोराणुंवे लाडणू चोमासो, रामजी तीस उदारी।
असल विनीत उदै गुण आगर, सैतीस पांणी आगारी॥

१३. पाली पंचाणुवे रांम कियो तप, एकचालीस उदारी।
तीस उदै किया उदक आगारे, हेम तणो आग्याकारी॥

१४. छन्नुअे सैहर पीपाड़ चोमासो, कीधो है हेम 'हजारी'[1]।
तीस उदैचंद उदक आगारे, स्वाम भणी सुखकारी॥

१५. सताणुवे वरस महा सुखदाई, चोमासो सैहर सरियारी।
उदै अनूंप पचास पाणी रा, हेम भणी हितकारी॥

१६. तिण हिज गांम वेसाख में नेत्रा रो, कीधी हीन्दू संत कारी।
तेहनो विस्तार विशेप पणै सहु, है चोढाल्या मझारी॥

१७. पुणा च्यार वर्स रे आसरै, रह्यो निजला रो रोग तिवारी।
पुण्य प्रवल स्वामी हेम तणा, तिण स्यूं, नेत्र खुल्या तंत सारी॥

१८. वर्स अठाणुवे पाली सैहर में, सतीदास सुखकारी।
दिन इकतीस सू आछ आगारे, उदय गुणतीस उदारी॥

१९. वरस निनाणुअे सैहर गोघूदे, भैरजी इक्कीस धारी।
सरस विनय गुण रत्न उदै किया, तीस पांणी रै आगारी॥

२०. श्रीजीदुवारै उगणीसै चौमासो, भेरजी वीस विचारी।
तीस उदैचद उदक आगारे, व्यावच्चियो अधिकारी॥

२१. उगणीसै एके पुर चौमासो, हेम तणो आग्याकारी।
दिवस सतंतर किया उदैचंद, धोवण पाणी आगारी॥

२२. संवत उगणिसै बीये चौमासो, उदैपुर सैहर मझारी।
तीस उदैचंद उदक आगारे, हेम स्यूं प्रीत अपारी॥

२३. विचरत-२ आया अटाटये, हरषचंद हितकारी।
मा तात भाई वैन छांडिया, मिलिया हेम हजारी॥

२४. गैहणा सहित चारित उचराई, पाछा दिया तिण वारी।
केवल पांमी गैहणा खोल्या भरतजी, जंवूद्वीप पन्नती मझारी॥

---

[1] एक हजार वर्ष की आयु वाला, आशीर्वाद एवं शुभकामना प्रकट करते हुए कहा जाता है—
तुम्हारी हजारी उम्र हो।

२५. समत उगणीसै तीये चौमासो, कीधो है श्रीजीदुवारी।
हेम जीत आदि वारा साधां थी, वरत्या है जय जय कारी॥

२६. कर्मचंद एगतीस पांणी रा, कीधा हरष अपारी।
परम विनीत उदय गुण आगल, तीसं उदक आगारी॥

२७. विविध हेतु न्याय जुक्त वर, भीखू रा दिष्टंत भारी।
जीत लिख्या स्वामी हेम लिखाया, और ही विविध प्रकारी॥

२८. चरम चौमासो आमेट सैहर में, उगणीसै चोके विचारी।
दोय मास किया आछ आगारे, उदय विनयवंत भारी॥

२९. राम तणै मुख आगल हणुमत, सेवग महा सुखकारी।
हेम तणै मुख आगल उदैचद, पूरो है प्रतीतकारी॥

३० सतंतरा सू चोका विचै जाणो, वर्स अठावीस भारी।
त्रिकर्ण सेव मै लीन पणै अति, सतीदास सुखकारी॥

३१. सोम्य प्रकृति अरु पुण्य सरोवर, सुवनीतां सिरदारी।
एहवा सतीदास मिलिया हेम नै, पूरव पुण्य प्रकारी॥

३२. चालण बोलण कारज में, अन्न पान वस्त्रादिक विसाली।
विविध साता उपजाई सतीदासजी, प्रीत भली परपाली॥

३३ हरष उदयचंद सेव करी हद, सामी नै साताकारी।
संत विनयवत मिलिया हेम नै, भाग दिशा अति भारी॥

३४. तेरा चौमासा बहु खप करनै, सूत्रादि अर्थ उदारी।
विविध कला सिखाई जीत नै, हेम इसा उपगारी॥

३५. सैहर अठारै किया चौमासा, पाली चौमासा इग्यारी।
दोय खैरवे नै दोय कटाल्ये, च्यार चौमासा सरीयारी॥

३६ पांच पीपाड ने दोय बालोतरे, तीन आमेट मझारी।
च्यार गोघूदे ने च्यार किया पुर, च्यार किया श्रीजीदुवारी॥

३७. दोय चौमासा किया उदियापुर, दोय देवगढ निहाली।
द्वादस सैहरा में हेम मुनि, किया सर्व चौमासा पैताली॥

३८ इद्रगढ कृष्णगढ पीसांगण, जैपुर सैहर मझारी।
लाडणू सैहर जैतारण में कियो, एक २ चौमासो धारी॥

३९. मुरधर देश में तीस चौमासा, किया दस सैहर मझारी हो।
देश मेवाड किया उगणीस छै, सैहर मांहि सुविचारी हो॥

४०. एक हाडोती कियो इंद्रगढ, एक ढूढार मझारी।
ए सर्व चौमासा एकावन समचित, कीधा है हेम हजारी॥

४१. ए छठी ढाल में हेय मुनी ना, कह्या जय जश गुन भारी हो।
विमल हेम सम महा मुनीसर, सासण ना सिणगारी गा० ॥

ढाल ७

दोहा

१. एकावन चौमासा मझै, बहुत कियो उपगार।
हेम ऋषी गुण आगला, आप तिरै पर तार ॥
२. वले गांमां नगरां विचरता, दियो विविध उपदेस।
नरनारी समझावता, मेटचा भरम कलेस ॥
३. केकां नै दियो साध पणो, केकां नै श्रावक व्रत दीध।
केकां नै सुलभबोधी करी, जग मांहे जश लीध ॥
४ उतपत्तिया बुधि अति घणी, आछी अधिक अनूंप।
दान दया ओलखावता, सखरी भांत सरूप ॥
५. व्रत अव्रत मडावता, विविध जुक्ति वर न्याय।
स्वाम भीखू पै सांभल्या, तिम हिज हेम वताय ॥
६ कला चतुराई देखतां, पांमै जन बहु प्यार।
अन्यमती स्वमती सांभलै, ते पिण लहै चिमतकार ॥
७. मिथ्यात रोग मेटण भणी, हेम वैद हद जांण।
घणां जीवां नै काढिया, पांखंड मत सू तांण ॥
८. चरचा करण कला घणी, दियै विविध दिष्टंत।
वले सूत्र सिद्धंत रा न्याय कर, दीपायो प्रभु नो पंथ ॥
९. घणां भेखधारचा सू चरचा करी, कीधा कष्ट अथाय।
हेम तणो नांम साभल्यां, 'धडक'[1] पडै मन मांय ॥
१०. सरस कठ वांणो सरस, सरस कला सुविहांण।
भिन्न - भिन्न करी भला, वांचै सरस वंखांण ॥

हेम ऋषी भजिये सदा रे ॥ ध्रुपदं ॥

११. मुनिवर रे उपवास वेला वहुला रे, किया तेला चोला तंत सार हो लाल।
पांच-पांच ना थोकडा रे, कीधा बहुलो वार हो लाल ॥

---

१ धाक

*लय—भाग बड़ो नृप·····

१२. मु० षट दिन कीधा खंत सूं, पूरो तप सूं प्यार ।
आठ किया उछरंग सूं, हेम बड़ों गुणधार ॥
१३. मु० रस नो त्याग कियों ऋषी, बहु विगै तणो परिहार ।
हेम वैराग सुं देखनैं, पांमै अधिको प्यार ॥
१४. मु० सीतकाल बहु सीखम्यो, एक पछेवडी परिहार ।
घणां वरसां लग जांणज्यो, हेम गुणा रा भंडार ।
१५. मु० उभा काउसग आदरचो, सीतकाल में सोय ।
पछेवडी छांडी करी, बहु कष्ट सह्यो अवलोय ॥
१६. मु० सज्झाय करवा स्वांमजी, तन मन इधिको प्यार ।
दिवस रात्रि में हेम नो, योहिज ऊदम सार ॥
१७. मु० काउसग मुद्रा थापनै, ध्यांन सुधारस लीन ।
नित प्रते ऊदम अति घणो, मुगत साहमी धुन कीन ॥
१८. मु० स्त्रीयादिक ना संग नै, जाण्या विष फल जेम ।
हास कतोहल नै हणी, हीये निरमला हेम ॥
१९. मु० सील धरचो नववाड सू, 'धुर वाला-ब्रह्मचार'[1] ।
ए तप उतकृष्टो घणो, सुरपति प्रणमै सार ॥
२०. मु० उपशम रस मे रम रह्या, विविध गुणां नीं खान ।
एकंत कर्म काटण भणी, सवेग रस गलतांन ॥
२३. मु० साम गुणा रा सागरू, गिरवो अति गंभीर हो लाल ।
ओजागर गुण आगलो, मेरू तणी पर धीर हो लाल ॥
२२. मु० कठण वचन कहिवा तणो, जांणक कीधो नेम ।
बहुलपणै नही वागरचो, वचनामृत सू पेम ॥
२३. मु० विविध कठण वच सांभली, ज्यांरे मन मे नहीं 'तमाय'[2] ।
तन मन वच मुनि वस किया, ए तप अधिको अथाय ॥
२४. सु० चौथे आरे सांभल्या, खिम्या सूरा अरिहंत ।
विरला पांचमें काल में, हेम सरीखा सत ॥
२५. मु० निरलोभी मुनि निरमला, आर्जव निर अहंकार ।
हलका कर्म उपधि करी, सत वच महा सुखकार ॥
२६. मु० संजम में सूरां घणा, वर तप विविध प्रकार ।
उपधि अन्नादिक मुनि भणी, दिल रो हेम दातार ॥

---

१. बाल्य वय से ब्रह्मचारी ।
२ कोप ।

२७. मु० घोर ब्रह्म मुनि हेम नो, स्यूं कहियै बहु वार।
'अष्ठिल'[1] व्रत उचरंग सू, पाल्यो अधिक उदार॥

२८. मु० इर्या धुन अति ओपती, जाणै चाल्यो गजराज।
गुण मूरत गमती घणी, प्रत्यख भवदध पाज॥

२९ मु० मोसू उपगार कियो घणो, कह्यो कठा लग जाय।
निश दिन तुझ गुण संभरू, वस रह्या मो मन मांय॥

३०. मु० सुपने सूरत आपरी, पेखत पामै पेम।
याद आयां हियो हुल्लसै, कहणी आवै केम॥

३१ मु० हूं तो बिंदु समांन थो, तुम कियो सिंधु समांन।
तुम गुण कवहूं न वीसरूं, निश दिन धरूं तुझ ध्यांन॥

३२. मु० साचो पारस थे सही, कर दे आप सरीस।
विरह तुम्हारो दोहिलो, जांण रह्या जगदीस॥

३३. मु० जीत तणी जय थे करी, विद्यादिक विस्तार।
निपुण कियो सतीदास नै, वले अवर संत अधिकार॥

३४. मु० आप गुणां रा आगरु, किम कहियै मुख एक।
ऊडी तुझ आलोचना, वारूं तुझ विवेक॥

३५. मु० अखंड आचारज आगन्या, तें पाली एकधार।
मान मेट मन वस कियो, नित कीजै नमस्कार॥

३६. मु० साज घणां संता भणी, तें दीधो अधिकार।
गणवच्छल गणवालहो, समरै तीरथ चार॥

३७ मु० सुखदाई सहु गण भणी, कर्म काटण तू सूर।
तन मन रज्यो आप सू, तू मुझ आसापूर॥

३८ मु० हेम ऋषी इण रीत सूं, लीध जनम रो लाह।
हेम तणा गुण देख नै, गुणिजन कहै वाह वाह॥

३९. मु० चरम चौमासो आमेट में, आप कियो उचरंग।
ध्यांन सुधारस ध्यावतां, सखरी भांत सुरंग॥

४०. मु० सातमी ढाल मांहे कह्यो, हेम तणा गुण सार।
हेम गुणा रो पोरसो, याद करै नरनार॥

---

१. यहां अस्खिल शब्द प्रतीत पौंता है जिसका अर्थ अस्खलित होता है।

ढाल ८

दोहा

१. चरम चौमासो उतर्‍यो, विहार कर्‍यो तिण वार।
विचरत-विचरत आविया, कांकडोली सैहर मझार ॥

२. परम पूज सुण हरषिया, संत घणा ले संग।
साहमा आया हेम रै, उपनो अधिक उमंग ॥

३. बे कर जोडी वंदना, देखै बहु जनव्रंद।
नरनारी हरष्या घणा, पाम्या अधिक आणंद ॥

४. केइ दिन कांकरोली रह्या, बहुं संता सू स्वाम।
हेम संघाते पूज जी, आया धोइदे गांम ॥

५. दीपधीग वैरागियो, छांडी माता भ्रात।
दिख्या महोच्छब वहु थया, चरण दियो ऋपराय ॥

६. सूंप्या स्वामी हेम नै, दीप हेम हितकार।
विनय विवेक विचार में, स्वामी नै सुखकार ॥

७. श्रीजीदुवारा ना घणां, श्रावक दरसण कीध।
करी वीनती हेम सू, जब सांमी माने लीध ॥

*महाराज धिन धिन स्वामी हेम नै ॥ध्रुपदं ॥

८. हेम दयाल कृपा करी होजी, आया श्रीजीदुवार।
मास खमण रहि त्यां थकी काइ, मुनीवर कीधो विहार ॥

९. सीसोदे दर्शण देई करी, करता उग्र विहार।
काकरोली भाणै तासोल होयनै, आया केलवा सैहर मझार ॥

१०. जीत जैपुर चौमासो करी, भीलोडे होय तिवार।
दरसण कीधा दयाल ना, उपनो हरष अपार ॥

११. हेम दीदार देख्यां छतां, पाम्यो परम संतोष।
वच सुण चित प्रसन्न हुवो, परम हेम नो पोष ॥

१२. विविध जूनी वारता, हेम लिखाई ताय।
हेम ग्यांन गुण पीजरो, समुद्र जेम सोभाय ॥

१३ दिवस तेरे स्वामी हेम नी, सेवा करी ऋप जीत।
विहार कर्‍यो मुरधर दिसा हो, परम हेम सू प्रीत ॥

---

*लय—धिन धिन पूज भारीमाल...

१४. विहार कियो केलवा थकी, विचरत जिम 'गजराज'[1] ।
लाहवे होय आमेट पधारिया, हेम 'गरीब-नवाज'[2] ॥

१५. मुरधर देश जावा तणां, मन रा अधिक परिणांम ।
दरसण देणा जाय नै, ढील तणो नहीं कांम ॥

१६. नरनारी वरजै घणा, वरजै संत बहु तांम ।
पिण कह्यो न मांन्यो केहनो, हेम अडग परिणांम ॥

१७. विहार कियो आमेट थी, रह्या कमेडी रात ।
दोय दिवस कुवाथल रह्या, कृपा करी स्वामी नाथ ॥

१८. दोलांजी रे खेडें रही, आया देवगढ स्वाम ।
उष्णकाल अति आकरो, तो पिण मुरधर सूं परिणांम ॥

१९. श्रीजीदुवारा थी आयनै, सुत मयाचंद सुविनीत ।
फोजमल दर्शण किया, परम हेम सूं प्रीत ॥

२०. अरज करै कर जोड़ नै, हेम बोल्या इम वाय ।
काल रा खांचिया जावां छां, ते पिण खबर न कांय ॥

२१. सात रात रही देवगढ मझै, कीधो हेम विहार ।
पीपली फूलाज होय आविया, सरियारी सैहर मझार ॥

२२. सुखे सुखे घाटो उत्तरया, विच बहु न लियो विसरांम ।
फूलाज रात रह्या तिहां, उभो पडिकमणो कियो स्वांम ॥

२३. जेठ विद चोथ दिन भलो, सरियारी पधारया हेम ।
नरनारी हरख्या घणां, पाम्या अधिको प्रेम ॥

२४. हेम सरियारी पधारिया, सुण हरख्या बहु साध ।
साधवियां हरषी घणी, श्रावक श्राविका पाम्यां समाधि ॥

२५ नरनारी पाली तणा, दरसण कीधा आय ।
हेम वचन सुण हरषिया, स्वांमी सकल सुखदाय ॥

२६. जाझा एकावन वरस आसरै, विचरया हेम संपेख ।
वृध पणै पिण स्वामी, कियो उभो पडिकमणो विसेख ॥

२७. जेठ विद बारस तांइ सामजी, उभो पडिकमणो कीध ।
उदमी कर्म काटण तणा, जग मांहि जस लीध ॥

२८. तेरस रे दिन हेम रें, किंचित कारण जणाय ।
पिण बहुल पणै जाण्यो नहीं, हेम अडिग मुनिराय ॥

---
१. हाथी ।
२. दयालु ।

२९. तेरस दिन प्रभात रा, दिशा पधारचा गामवार ।
पुन्य प्रबल स्वामी हेम ना, हेम गुणां रा भंडार ।।

३०. चवदस स्वामी हम ना, जीत दरसण किया आय ।
स्वामी दीदार देख्यां छतां, रूमराय विकसाय ।।

३१ आठमी ढाल माहै कह्या, छेहला दरसण दिया हेम ।
मुरघर देश पधारिया, पाम्या अधिको खेम ।।

ढाल ९

दोहा

१. जीत साता पूछी हेम ने, बोल्या स्वामी वाय ।
किचित कारण सांसनो, विशेष पणै न जणाय ।।

२. चवदश दिन ऋष जीत सू, बातां करी विसेख ।
धर्म ध्यान समदाय नी, स्वामी अधिक विवेक ।।

३. जीत कहै साठे वरस, भाद्रवा सुदि तेरस ।
भीखू ऋष परभव गया, भू धूजी चवदस ।।

४. जेठ विद अष्टमी निशा, महि धूजी तिण वार ।
कारण पूछ्यो जीत ऋष, बोल्या हेम तिवार ।।

५. जबर संत चल्यां पछै, धरती धूजै सोय ।
अथवा भू धूजै प्रथम, इम बोल्या अवलोय ।।

६. दिन रा तो साता रही, राते सास विसेख ।
अमावस रा प्रभात रा, फिर साता सपेख ।।

७. बे फलकां रै आसरै, प्रभात समै कीधो आहार ।
एक फलका रै आसरै, आथण आहार विचार ।।

८. रात्रि सांस फिर वाधियो, एकम दिन प्रभात ।
फिर साता हुई स्वाम नै, बातां करै विख्यात ।।

९. पडिकमणो बेहूं टक तणो, बैठा सांम करत ।
निज मुख पाठ उचारता, आंणी हरष अतंत ।।

*हेमनो सुजश घणो ॥ ध्रुपदं ॥

१०. चवदस दिन सांमी हेम ना हो, सरदारांजी दरसण कीध ।
हेम वातां करी आणंद सूं हो, सीख अमोलक दीध ॥

११. विहार पाछिला पोहर नो, घणो न करणो कोय ।
वले साथ विना करणो नही, दीधी सिखामण दोय ॥

१२. वले कहै जीतमल मो भणी, 'रखे'[1] कारण में मेल्न जाय ।
तो म्हारा मन में रहै घणी, तिण सूं तोनैं कह्या छा ताय ॥

१३. जद सिरदारांजी कहै हेम नैं, आप संका म राखो कांय ।
आप नैं कारण में मेल नैं, विहार करता दीसै नांय ॥

१४. इम कही स्वामी हेम नैं, सूंपै पछेवडी जीत निश्राय ।
हेम कहै थारा हाथ नो, छेहलो लेवां छा ताय ॥

१५. इम रात्रि रहि विहार करतां छतां, वरजै स्वामी वारूंवार ।
इसा कारण में अटकै नहीं, वले कहै वचन विचार ॥

१६. जो मन नहिं रहिवा तणो, पाछा दरसण कीजै एक वार ।
बीज रै दिन वेगी आवजै रे, इम कही करायो विहार ॥

१७. अमावस दिन मेवाड थी, आयो आदमी एक ।
चौमासा री वीनती कारणे, मेल्यो 'गंभीरचंद'[2] सुविवेक ॥

१८. ते चरपटीये पूज पासे जई, कीधी वीनती सार ।
वले हेम नो कारण सांस नो, कह्या सर्व समाचार ॥

१९. इम सुण पूज भलावियो, चौमासो भीलाडे सैंहर ।
सुविनीत सेवग जांण नैं, परम पूज करी मेहर ॥

२०. हेम नैं कारण सांसनो, सांभल नैं ऋषराय ।
जब कपूरजी नैं मेलियो, एकम रै दिन ताय ॥

२१. कपूर हेम नैं वंद नैं, कह्या पूज तणां समाचार ।
हेम सुणी हरख्या घणां, स्वामी महा गुणधार ॥

२२. दिन चढ्यो सवा पोहर आसरै, ऋप जीत सूं वातां करंत ।
आणंद रंगरली तणो, निसंक पणै चित 'संत'[3] ॥

---

*लय—राम को सुजस घणो ।

१. कदाचित् ।

२ भीलवाडा के श्रावक गंभीरमलजी मोघी ।

३. शांत ।

२३. ऋप जीत कहै स्वामी हेम नै, सैहर सरियारी मांहि।
अवको चोमासो भेलो करां, पनरै साधां सूं ताहि॥

२४. जो संकडाई जाणा आहार नी, तो हूं घणा साधां सहीत।
सावण भाद्रवे एकंतर करूं, तन मन सूं धर प्रीत॥

२५. आसोज काती मास में, रसता चोखा होय जाय।
और गांम सूं आहार मंगायल्या हो, जीत वोल्या इम वाय॥

२६. इम सुण हेम हरष्या घणा, बोल्या एहवी वाय।
उपवास इकतीस म्हैं ही करां, या तो आछी विचारी ताय॥

२७. साध आहार करंता छंता, हेम बोल्या इम वाय।
म्है तो आहार करा नहीं, आहार सूं सांस वधाय॥

२८. जब जीत कहै स्वामी हेम नै, आप 'जाबक'[1] म छोड़ो आहार।
अल्प आहार तो लीजियै, जव हेम कियो अंगीकार॥

२०. एक लूखा फलका रै आसरै, आहार कियो मुनिराय।
कहै आहार विशेष करयां थकां, रात्रि सांस दोहिरो आय॥

०. तीजै पोहर कपूर नै, हेम वोल्या इम वाय।
वेगो जा रायचंदजी आगले, उवांरै मन में रहिला ताय॥

३१. आज रा आज दरसण करै, जो आज करणी आवै नाहि।
तो काल पोहर पहली आवै सही, इम कही मेल्यो ताहि॥

३२. पछै सांस काइक वधियो, वेदन रही किंचित वेल।
चोथे पोहर साता हुई, वलि वातां करै 'रंग रेल'[2]॥

३३. आंथण का आहार धामियो, त्याग किया तिण वार।
रात पडिकमणो बैठा कियो, निज मुख शब्द उचार॥

३४. वखांण री वेलां किण ही कह्यो, जो स्वामीजी रे खेद है सोय।
कारण कांई वखांण नो, जब हेम बोल्या अवलोय॥

३५. ऋष जीत भणी स्वामी इम कहै, मांड तूं वेगो वखांण।
वखांण तो चाहिजै सही, इण में कारण कांई जांण॥

३६. ऋषि जीत बखांण मांड्यो तदा, सतीदासजी नै मेल्या जांन।
कंठ मिलावा कारणै, स्वामी इसा सावधान॥

३७. पाछिली निशा स्वामी भणी, सतीदासजी नें उदयचंद।
चवदै ढालां चोवीसी तणी, सुणाई अधिक आणंद॥

---

२. बिल्कुल।

१. सानद।

३८. हेम पोते अभिग्रहो कियो, कारण मिटियां तांम।
म्हे पिण चोइसी मूहढै करां, एहवा वैरागी स्वांम॥

३९. पछै ऋष जीत, सू वात वैराग नी, करवा लागा स्वामी हेम।
त्याग वैराग तणो घणो, हेम तणै अति पेम॥

४०. ऋष जीत मन में विचारियो, आउखा री तो खबर न काय।
हिवडां तो वैहम दीसै नही, तो पिण वरत देउं उचराय॥

४१. इम चितव जीत वोलियो, आपरै ईर्या सुमत रै मांहि।
कोइ अतिचार लागो हुवै, मिच्छामि दुक्कडं ताहि॥

४२. ऊंची त्रिछी दिष्ट जोई हुवै, चालंता करी हुवै वात।
इत्यादिक 'खामी'[1] तणो, मिच्छामि दुक्कडं साख्यात॥

४३. इमहिज भाषा सुमति में, वोल्या हुवै विना विचार।
करडो काठो वचन वोल्यो हुवै, तो मिच्छामि दुक्कडं सार॥

४४. क्रोध मान माया लोभ सूं, हास भय कर सोय।
जे कोई शब्द काढचो हुवै हो, मिच्छामि दुक्कडं जोय॥

४५. हेम पिण निज मुख सू कहै, ऊंचे शब्द उचार।
मिच्छामि दुक्कडं मांहरै हो, एहवा सावधान गुण धार॥

४६. इम पाचूइ भेद में, लागो हुवै अतिचार।
मिच्छामि दुक्कडं तेहनो, कह्या जूजूवा भेद उचार॥

४७. मन वचन काया गुपत में, लागो हुवै अतिचार।
जूजूवा भेद करी कह्या, मिच्छामि दुक्कडं विचार॥

४८. प्रथम महाव्रत नै विषै, लागो हुवै अतिचार।
जो हिंसा लागी हुवै आपरै, मिच्छामि दुक्कडं उदार॥

४९. गया काल रो मिच्छामि दुक्कडं, तस थावर नी कांई घात।
पचखांण आगमिया काल में, त्रिविधे त्रिविधे विख्यात॥

५०. इम छहुंइ व्रता मझै, अतिचार जुवा जुवा जांण।
गया काल रो मिच्छामि दुक्कडं, आगमिया काल में पचखांण॥

५१. छहुं व्रतना अतिचारां मझै, हेम वोलै ऊंचै स्वर वांण।
म्हारै गये काल रो मिच्छामि दुक्कडं, आगमिया काल में पचखांण॥

५२. पाप अठारा आलोविया, जुदा जुदा ले नांम।
पचखांण आगमिया काल में, त्रिविध-त्रिविध कर तांम॥

---

१. स्खलना।

५३. इण रीत महाव्रत आरोपिया, आलोवणा अधिकार।
भाग वली हेम महा मुनि, योग मिल्यो श्रीकार॥

५४. हेम कहै आज रात का, 'अजक'[1] रहि घणी ताय।
तिण सू निद्रा पिण पूरी आई नही, इम कहै जीत नै वाय॥

५५. वलि जीत कहै स्वामी हेम नै, सांभल जो महाराज।
या वेदना सम परिणामै सह्यां, योहीज तप समाज॥

५६. ठांणा अंग चोथा ठांणा तणो, पाठ कह्यो तिण वार।
कष्ट वेदना आयां छता, इम चितवै अणगार॥

५७. तीर्थंकर वेदन सहै समपणै, त्यांरो शरीर रोग रहित।
ते पिण कष्ट लेवै उदैड नै, घोर तप करै हरख सहित॥

५८. तो कष्ट लोचादिक तथा रोग नो, हूं किम न सहूं समचित जांण।
सम परिणांम भोगव्या विना, एकंत पाप पिछांण॥

५९. कष्ट लोचादिक तथा ब्रह्मचर्य नो, तथा रोगादिक वेदन जोय।
सभ परिणांम भोगव्या, म्हारै एकत निर्जरा होय॥

६०. इण विध साध चिंतवै, कह्यो ठांणा अंग मझार।
हेम नै सर्व सुणावियो, स्वामी पाम्यां हरष अपार॥

६१. वले उत्तराध्येने पांचमा मध्ये, सकाम मरण अधिकार।
गाथा सुनाई हेम नै, अर्थ सहित विस्तार।

६२. मरण आयां थकां महा मुनि, राखे अधिक 'उमेद'[2]।
भय कर रू उभा करै नहीं, वांछै शरीर नो भेद॥

६३. सीलवंता जे 'बहुसूती'[3], मरण थी त्रास न पाय.
पहिलां परिणांम हुंता जिसा, अत समै अधिकाय॥

६४, तप सूं शरीर वखेर नैं, सकाम मरण मरै जांण।
पादूगमण इंगतमरण सूं, अथवा 'भातपचखांण'[4]॥

६५. उत्तराध्येन पांचमा मझे, एम कह्यो व्रधमांन।
हेम सुणी हरष्या घणा, वैराग रस गलतांन॥

६६., वली जीत कहै स्वामी हेम नै, जिनकल्पी अणगार।
ते तो लेवै कष्ट उदेर नै, भय नही आणै लिगार॥

---

१. बेचैनी।
२. उल्लास।
३. बहुश्रुत।
४ भक्त पचखाण—भक्त प्रत्याख्यान।

६७. आंख थी 'फाटो'[1] काढै नही, कांटो पग थी न काढंत।
घणो कष्ट लेवै उदेरनै, जिनकल्पी महा संत ॥

६८. इसी वेदना तो दीसै नही, जब हेम बोल्या इम वाय।
इसी वेदना तो म्हारै नही, जिनकल्पी सरीखी ताय।

६९. मेघ जिसा मुनिवर किया, पादुगमण संथार।
ते आंख पिण टमकारै नही, एक मास तांइ एकधार ॥

७०. ए तन महिना पछैइ छोड्यो, तो जांणै छोड्यो महिना पहली एह।
खोली में जीव छतां शरीर नी, सार संभाल तजेह ॥

७१. इसा कष्ट सह्या छै महा मुनि, ते वेदना नै तुछ जांण।
हेम सुणी हरष्या घणां, वैराग रस गलतांन ॥

७२. ए मरण छै सो तो महोच्छव अछै, छूटै 'असूच'[2] तन एह।
सोच करै किण वात रो, आछी वस्त तो नहीं जेह ॥

७३. आगे असंख्याता काल में, इसा कष्ट तणो नहीं काम।
नींव लागे सिवपुर तणी, तिण स्यूं मृत्यु महोच्छव अभिराम ॥

७४. जब हेम हरष धर पूछियो, मृत्यु महोच्छव है तांम।
जीत कहै मृत्यु महोच्छव सही, पिंडत मरण सकांम ॥

७५. ए शरीर विणसै हिवै, इण रो तो इचरज नाय।
इता वरस तांई ए तन रह्यो, तिण रो इचरज कहिवाय ॥

७६. देस देस तणा मनुष्य आय नै, लाख मनुष्य भेला हुआ जांण।
ते मेलो मास रही नै वीखरचो, गया आपरै ठिकांण ॥

७७. ते मनुष्य विखरिया तेहनो, इचरज नहीं छै लिगार।
एक मास भेला रह्या, ते इचरज अवधार ॥

७८. ज्यूं अनंता परमांणु भेला थई शरीर बंध्यो छै एह।
इता वरस पुद्‌गल रह्या, हिवै विणसै छै तेह ॥

७९. पुद्‌गल रो गलण मलण स्वभाव छै, ते विणसै तिण रो अचरज नांय।
पिण इतरा वरस पुद्‌गल रह्या, ते इचरज कहिवाय ॥

८०. तिण कारण तन छूटै तेहनो, सोच नही छै लिगार।
इत्यादिक घणी वातां सुणी, हेम पाया वैराग अपार।

८१. घणो हरष धरी नै इम कहै, सुण-सुण रे सतीदास।
सांभल वैराग री वारता, वलि कहै जीत विमास ॥

---

१ तिनका आदि।
२. अपवित्र ।

८२. "सुचिन्ना कम्मा सुचिन्ना फला", भली करणी रा भला फल होय।
"दुचिन्ना कम्मा दुचिन्ना फला", भूडी करणी रा भूडा फल जोय॥

८३. इम सुण हेम बोल्या तदा, इम तो कहितो जैपुर वालो जाण।
देख जीतमल गृहस्थ स्याणा किसा, किसी विचारणा पिछांण॥

८४. वले जीत कहै स्वामी हेम नैं, आप बडा गुणवांन।
भारी खिम्या गुण आपरो, आप बडा धीर्यवान॥

८५. निरलोभ पणो भलो आपरो, आप भला सरल सुखकार।
वले निरअहंकार पणो भलो, भलो ब्रह्मचर्य उदार॥

८६. सत्य प्रग्या भली आपरी, बडा ओजागर आप।
परभव री खरच्यां पलै बांधी, भली मेटचा घणां रा संताप॥

८७. इत्यादिक गुण किया घणा, हेम तगा ऋष जीत।
वैराग तणी वाता थकी, हेम तणै अति प्रीत॥

८८. पडिकमणा री वेला आविया, स्वामी आगन्या मांगी सोय।
ऋष सतीदास नैं इम कहै, निद्रा आवै छै मोय॥

८९. ऋषि सतीदास कहै सोय नैं, निद्रा लीजै स्वांम।
जब हेम मुनीश्वर इम कहै, पडिकमणो करणो छै तांम॥

९०. जब सतीदास कहै आप रै, कारण सरीर रै माय।
कारण में अटकै नही, जब हेम बोल्या इम वाय॥

९१. पडिकमणो तो करणो सही, इण मे कारण काई होय।
इम कही पडिकमणो वैठा करचो, ऊंचै 'सुर'[1] अवलोय॥

९२. पछै साध पडिलेहण कियो, जद वडो मोती आयो पास।
दिसा जावा री मांगी आगन्या, जब माथे हाथ दियो तास॥

९३. साधां पूछचो आपरै साता अछै, जद कह्यो देव गुरां रा प्रसाद।
ऊंचै सुर इम बोलतां, आणी मन अह्लाद॥

९४. पछै वाजोट थी हेठा उतरी, दिसा पध्धारचा स्वांम।
पछेवडी बाधी करी, सत सेवा में तमाम॥

९५. किण ही सांस रो ओषध बतावियो, ते ओषध वांटै मुनिराय।
ए सांस है वाय रा जोग थी, ओषध थी मिटी जाय॥

९६. सतीदासजी आदि साधां भणी, जीत बोल्यो इम वाय।
आपे दिसा जाय पाछा आयनै, ओषध देवांलां ताय॥

---

१. स्वर।

९७. इम कही हाट थी उत्तरी, ओढी पछेवडी जीत।
'ओगो'[1] लेई दिसा नै त्यारी थया, साधु आय उभा मुवदीत ।।

९८. वले जीत मन में विचारियो, स्वामी दिसा पधारया ताय।
कदा खेद थी सास वधै वली, तो ओषध देई पछै दिसा जाय ।।

९९. इम चिंतव बैठा हाट नै विर्षे, स्वामी पिण दिसा जाय सुरीत।
पाछा बैठा बाजोट ऊपरे, इतलै आयो आउखो अचीत ।।

१००. तन मांहि 'परसेवो'[2] घणो, वाध्यो सास विसेख।
बैठा बाजोट रैं ऊपरै, 'उटीगण'[3] विना संपेख ।।

१०१. हाथ सू सांनी करी तदा, 'अमल'[4] मांग्यो जीत पास।
जीत दियो अमल हाथ में, आप मुख मांहि मेल्यो विमास ।।

१०२. मुख में मेल 'चिगलता'[5], पुद्गल हीणा पड्या पेख।
अणसण जीत उचरावियो, स्वामी सुध विवेक।

१०३. ऋप जीत कहै स्वामी हेम नै, होजो आपनै सरणा च्यार।
अरिहंत सिध साध धर्म नो, कहै ऊंचै स्वर विस्तार ।।

१०४. वले वैंराग री वारता, सुणावै विविध प्रकार।
थोडी वेलां रो कष्ट रह्यो, भारी सुख पामंता दीसो सार ।।

१०५. पछै च्यांरूं आहार पचखाय नै, वले दे सरणा सुख साज।
आसरै घडी में चलता रह्या, हेम जांणै गजराज ।।

१०६. ऋप सतीदास करमचंद नै, हस्त सारे मुनि हेम।
समाधि मरण लह्यो भलो, निरमल ज्यांरा नेम ।।

१०७. समत उगणीसै चौके समै, जेठ सुद बीज सनवार।
दिन चढयो बे मुहूर्त्त आसरै, हेम पोहता परलोक मझार ।।

१०८. साधु शरीर वोसराय नै, उपवास किया ताय।
नाथू वैरागी नै भोलाय नै, काउसग दीधा ठाय ।।

१०९. धिग-धिग ए संसार नै, काल आगै नहीं जोर।
थोडा मांहि चलता रह्या, हेम गुणा करि घोर ।।

११०. उपसम खम दम सील में, हेम सरीसा संत।
चौथे आरे पिण विरला होसी, साधु महा गुणवंत ।।

---

१. रजोहरण।
२. पसीना।
३. सहारा।
४. अफीम।
५. गले के नीचे उतारते समय।

१११. नाम हेम रो सांभली, पांमै मन अहलाद।
विविध वैराग री वात मे, हेम आवेला याद ।।
११२. विरहो पड्यो स्वामी हेम रो, दोरी लागी अथाय।
कै मन जांणै मांहरो, कै जाणै जिण राय ।।
११३. हेम जिसा मुझ किम मिलै, इण भव एहवा संत।
दिसावांन गुण आगला, मोटा हेम महंत ।।
११४. आसरैं दोय मुहूर्त्त पछै, आया पूज ऋषराय।
हेम सरीर देखी करी, उपनों विरह अथाय ।।
११५. भीखू भारीमाल सतजुगी चल्या, जद इसडी करडी लागी नांय।
पिण हिवडां करडो लागो घणो, इम बोल्या ऋषराय ।।
११६. साध साधवी साठरै आसरै, तिण दिन भेला हुआ जांण।
केइक मांहढी अवसरे, कोइ पहिलां पछै जांण ।।
११७. गुणतीस खडी मांडी करी, जाणक देव विमांण।
ते तो किरतव संसार ना, कीधा बहु विध जांण ।।
११८. चन्दण पीपल रा काठ में हो, दाग दीयो तिणवार।
सोना रूपा रा फूल उछालिया हो, महोच्छव विविध प्रकार ।।
११९. ए सावज्ज काम संसार ना, तिण में म जांणजो धर्म।
हुंता जिसा बतावता, बंधै नही पाप कर्म ।।
१२० भीखू कटालीये जनमीया, वेणीरामजी वगडी माहि।
हेम सरियारी सैहर में, ए तीनूं जोडै छै ताहि ।।
१२१. मुरधर देश आवा तणी, हुंती घणी मन मांय।
सो मुरधर मांहि आवी करी, काल कियो मुनिराय ।।
१२२. सेव करी साचै मने, सतीदास सुखकार।
चित समाधि दीधी घणी, व्यावच विविध प्रकार ।।
१२३. परम पूज जीत नै कह्यो, करो नवरसो सार (त्यार)।
इम पूज तणी आज्ञा थकी, जोड्यो हेम नवरसो उदार ।।
१२४. ए हेम नवरसो जोडियो, अधिको ओछो कह्यो हुवै कोय।
वले विरुध वचन आयो हुवै, तो मिच्छामि दुक्कडं मोय ।।
१२५. हेम तणा गुण ओलखी, गावै हेम विलास।
भणै गुणै सुणै सांभलै, ते पांमै सिव वास ।।
१२६. समत उगणीसै पांचे समै, श्रावण विद ग्यारस बुधवार।
हेम विलास जोड्यो भलो, उदियापुर सैहर मझार ।।
१२७. ए नवमी ढाल विषै कह्यो, हेम पंडित मरण सार।
जयजश आनंद गुण निलो, सुख सम्पत दातार ।।

३

हेम चोढालियो

ढाल १

दोहा

१. समत आठरै सताणूअे, चउमासो सुखकार ।
सरियारी में हेम ऋषी, हद कीधो उपगार ॥

२. दरसण करवा कारणे, आया वहु नरनार ।
'सिंघी भोपजी'[1] आविया, गंभीरचंद सुत लार ॥

३. दरसण देख हरष्यो घणो, इतलै 'नस्तरी वेद'[2] ।
आणंदराम तिहां आवियो, जाणै भिन भिन भेद ॥

४. हेम तणे बिहुं आंख में, 'निजलो'[3] देखी सोय ।
सिंघी भोपजी वेद विहु, करै वीणती जोय ॥

*हिवै अरज सुणीजै मांहरी ॥ ध्रुपदं ॥

५. 'कारी'[4] आंख्या तणी कियां, तुरत हुवै निकलंक हो स्वामी ।
धर्म उद्योत हुवै घणो, मिट जावै सहु वंक हो स्वामी ।

६. हेम कहै नहि करावणी, कारी ग्रहस्थ पास हो भवियण ।
थे कहो जिम साधु करै, तो दोष नही मूल तास हो भवियण ।
धिन-धिन हेम मोटा मुनी ॥

७. भोप भणै सतीदासजी, पासे कारी कराय हो स्वामी ।
विधि कारी करवा तणी, देसी वेद बताय हो स्वामी ॥

८. वैद नें सिघी भोपजी, आय बैठा हेम पास हो ।
साहज कारी करवा तणा, ततक्षिण कीधा तास हो ॥
धिन-धिन हेम मोटा मुनी ॥

९. वैद कहै सतीदासजी, कारी कीजै सोय हो ।
पिण साहज माहरोइ रहिसी सही, आगल मुज कर होय हो ॥

---

१. भीलवाड़ा के निवासी ।

२ शल्य चिकित्सा करने वाला वैद्य ।

३. सिर मे उष्णता के कारण होने वाला एक रोग, जिसमे मस्तिष्क का विकार युक्त पानी भिन्न-भिन्न अगो मे ढ़ल कर विकार उत्पन्न कर देता है । वह आख मे उतर जाता है तब उसे 'मोतिया' कहा जाता है ।

***सामी म्हांरा राजा नें······**

४. शल्य चिकित्सा ।

१०. पछेवडी बांधी सही, बैठा वैद सुजाण हो।
'नस्तर'[1] बाहिर काढिया, कारी करवा जाण हो॥

११. हेम तदा मन जाणियो, वेद तणा परिणाम हो।
'पोतै'[2] कारी करवा तणा, ते नही कल्पै ताम हो॥

१२. दृढ परिणाम महाराज रा, निरमल चारित्र नी नीत।
मतो मेट दीयो तिण समै, संयम तप सू प्रीत हो॥

१३. हिवै चउमासो ऊतरचो, विहार कीयो मुनि हेम।
आगल संत सुहामणा, 'यत्ने'[3] चालै सुप्रेम॥

१४. ऋषि जीत आयो मेवाड थी, हेम मुनि पै तास।
दरसण कर हरष्यो घणो, हीन्दू ऋषी त्यां पास॥

१५. सरियारी में भेला हुवा, संत घणा सुखकार।
वैद दोय आया तिसै, हेम कनै तिणवार॥

१६. चतुर विचक्षण वैद बिहुं, आणदराम रूपचंद।
कला ते जाणै खरी, मेटण निजला मंद॥

ढाल २

*कांय न मांगां २ कांय न मांगां हो, स्वामीजी वैद वदै इम वाय।
म्हे तो कांय न मांगां हो॥ ध्रुपदं॥

१. निरमल आंख्या दीसै तुमारी, निजला सू थई वंद।
कारी कीयां तुरत मिट जावै, निजला रूप्यो फंद॥
म्हे तो कांय न मांगां हो।

२. ग्रहस्थ पासे कारी न करावणी, हेम कहै इम वाय।
हीदू ऋषी कहै वैद वतावै, तो हूं करसू चित्त लाय॥

३. वैद कहै हीदू पास करावो, म्है नही मांगां दाम छदाम।
वारू विधि वता म्है देस्यां, होसी तुरत आराम॥

४. पर उपगार रे वासते, म्है वात कहां छां एह।
हीदू साधु पासे करावो कारी, मत आंणो मन संदेह॥

---

१ शल्य चिकित्सा में प्रयुक्त होने वाला एक प्रकार का छोटा और तेज चाकू जिसके दोनों ओर धार होती है और जो आगे से नुकीला होता है।

२. स्वय।

३ यतना पूर्वक।

*कांय न मांगा

ढाल ३

दोहा

१. हेम मान लीधी वीणती, वैठा वैद तिवार।
नस्तर वाहिर काढिया, थया कारी करवा तयार ॥

२. हीदू ऋषि वोल्यो तदा, नस्तर दो मुज हाथ।
विधि तो तुमै वताय दो, म करो 'लच-पच'[1] वात ॥

*हीदू हद कीधी २, जग में सोभा लीधी ॥ ध्रुपदं ॥

३. नस्तर वेद देवै नही रे, हीदू ऋषी रे हाथो।
हीदू सत कहै वेदा नै, निसुणो म्हारी वातो ॥

४. थानै हाथ लगावा नहीं देवू, कारी तो हूं करसूं।
वारु विधि वताय देवो तुम्है, बात ठेहराइ धुरसूं ॥

५. म्हारे हाथे नस्तर दीधां, कारी हुवै उदारो।
नही तो म्हे सेव करा स्वाम नी, अवर वात म धारो ॥

६. मांहोमांहै वेद हीदू रे, 'वाद'[2] हुवौ तिण वारो।
रूपचंद कहै नस्तर देसू, होसी ज्यू होणहारो ॥

७. आणदराम ने रूपचद बिहुं, नस्तर हीदू नै दीधा।
वारु कला वताई विध सू, ततक्षिण कार्य सीधा ॥

८. थट परगट आख थइ निरमल, हेम तणी तिण वारो।
आंगुली नासिका श्रवण वताया, हरष्या घणा नरनारो ॥

ढाल ४

दोहा

१. वेद प्रसंसा करै घणी, हीन्दू नी तिणवार।
'अरक'[3] वेदना हाथ सूं, थई आंख श्रीकार ॥

---

१ लचीली।

*लय—हस्तु हद कीधी कांइ...... ।

२. वहस।

३ अनजान।

२. ए तो आश्चर्य छै घणो, पिण प्रबल पुण्य परताप।
रत्न अमोलक पामिया, टलिया सर्व संताप॥

३. इण विध वेद प्रसंसता, हरण्या घणा तिणवार।
वली कुण-कुण राजी हुवा, ते सुणज्यो विस्तार॥

*आज आनंदा रे॥ ध्रुपदं॥

४. संत सुणी हरण्या घणा, आणंदा रे, विगस्या तन मन नैण कै।
साधवियां पिण हरपी घणी, आनंदा रे खुलिया हेम रा नैण कै॥

५. श्रावक श्रावका सांभली, पाया परम संतोप।
सुलभवोधी हरण्या घणा, पाम्या सुख नो पोप॥

६. केइ धर्म तणा रागी अन्यमती, ते पिण हरप्या विशेप।
धर्म उद्योत होसी घणो, हरप हुवो वहु देश॥

७. हेम नेत्र थया निरमला, सांभल हरप्या सैण।
भलो-भलो भाखै घणा, वोलै अमृत वैण॥

८. सेव करी साचै मने, सतीदास चित सांत।
पुण्य प्रबल पोतै घणा, 'गिरवो'[1] नै गुणवंत॥

९. पुणा च्यार वर्स आसरै, रह्यो निजला रो रोग।
वैसाख विद छठ दिने, नैण थया 'आरोग'[2]॥

१०. पुन्य प्रबल पुज ऋपीराय ना, गण नायक गुणवान।
हस्तमुखी हीये निरमला, पूज्य परम गुणवान॥

११. सुखकारी सहु गण भणी, अमृत वाणी अमोल।
गण प्रतिपालक सामरो, दिन-दिन अधिको तोल॥

१२. पूज याद आयां थकां, पामै मन विसराम।
नेत्र देख्यां श्रीनाथ नै, उपजै अधिक आराम॥

१३. पूज कह्यो स्वामी हेम नै, 'गाथा चंदपन्नती नी सार'[3]।
एक वर्स गुणवी सदा, पूज वचन जयकार॥

१४. हेम मान्यो पूज वचन नै, गुणी चदपन्नती नी गाह।
'वर्स जाजेरो'[4] फल्यो सही, ए पूज वचन वाह वाह॥

---

*लय— अनंत नाथ जिन········।

१. गहरा।

२ स्वस्थ।

(३) नमिउण असुर-सुर-गरुड-भुयग परिवदिए।
गयकिलेसे अरिहे, सिद्धायरियउवज्झायसव्वसाहूय॥

४. एक वर्ष से कुछ अधिक।

१५. भिखू पट भारीमालजी, तीजै पाट ऋषीराय।
तास प्रसादे हेम ना, नेत्र खुल्या सुखदाय।।

१६. नीत भली स्वामी हेम नी, ग्रहस्थ पासे कारी न कराय।
मिच्छामि दुक्कडं पाया नही, कोइ संक म राखज्यो काय।।

१७. समत अठारै सताणुए, वैसाख विद दसमी शुक्रवार।
गुण गाया गिरवा तणा, सरियारी सैहर मझार।।

१८. हेम नेत्र कारी करी, हीदू ऋषी चित लाय।
ज्यांरा जीत ऋषी गुण गाविया, सुणियां हरष घणो मन मांय।।

४

सरूप नवरसो

ढाल १

दोहा

१. मुरधर देशज दीपतो, रोयट सैहर सुस्थांन।
ओसवंस आइदानजी, जाति गोलेचा जान ॥

२. कल्लूदे तसु 'भारज्या'[1], सरल भद्र सुविनीत।
तीन पुत्र तेहनै थया, सरूप भीम रू जीत ॥

३. वर्ष पचासे आसरै, सरूप जनम उदार।
वर्ष 'कितै'[2] फुन भीम नो, जनम थयो सुविचार ॥

४. अष्टादश साठै समय, सुदि आसोज सुलेह।
चतुर्दशी निशि जीत नू, जन्म कर्क लग्नेह ॥

५. तन भवने केतु रह्यो, नवमे शशि लग्नेश।
तीजे रवि शनि भृगु गुरु, शसि वर दृष्टि अशेष ॥

६. चउथे मंगल बुद्ध फुन, राहू सप्तम गेह।
नष्ट थकी ए कुण्डली, देखी तिमज कहेह ॥

७. भीक्खू स्वाम पधारिया, दीधो वर उपदेश।
जीव घणा समझाविया, गोलेचादि विशेष ॥

८. भूआ तिण वंधव तणी, अजबू समत अठार।
चमालीसे संजम लियो, आणी हरष अपार ॥

९. तास प्रसंगे धर्म रुचि, गोलेचां रे जान।
अधिक-अधिक ही आसता, पूरण प्रीत पिछाण ॥

१०. अजबू पढ 'परपक'[3] थया, स्वाम भीखनजी सार।
'अज्जा'[4] सूपी नै कियो, सिघाडो सुखकार ॥

११. त्रिहुं वंधव में जीत रै, वाल पणा रै मांय।
गले वेदना ऊपनी, जीम्यो सुखे न जाय ॥

---

१. पत्नी।
२. स० १८५५ में।
३. निपुण।
४. साध्विया।

*वारू वतका सांभलो रे लाल ॥ ध्रुपदं ॥

१२. गामां नगरां विचरता रे, समणी अजवू सार रे।
सुगण जन ॥
रोयट सैहर पधारिया रे, सतिया नै परिवार रे।
सुगण जन ॥

१३. 'परपद वंदन परवरी'[1], अजवू[2] नी तिण वार।
वाण सुणी हरप्या घणा, नित्य आवै नरनार ॥

१४. पभणै अजवूजी सती, कल्लू नै पहिछांण।
धर्मोद्यम अति राखियै, सुणियै नित्य वखांण ॥

१५. कल्लू कहै सुण म्हासती, तीजा सुत रै तास।
धान गले नहीं ऊतरै, जीवण री नही आस ॥

१६. तिण कारण थी मांहरै, चित मांहे अति चिंत्त।
सेवा पिण थोडी हुवै, आर्त्तध्यांन अत्यंत ॥

१७. तव उपदेश दीयै 'अजा'[2], जो कारण मिट जाय।
जीवतो रहै दिख्या ग्रहै, तो मत दीजो अंतराय ॥

१८ त्याग करो वरजण तणां, तांम किया पच्चखांण।
कारण मिट्यो तुरत ही, खावण लागो धान ॥

१९. मात पिता हरप्या घणां, हरप्या सज्जन जोय।
भली थई रह्यो जीवतो, ते साधां रा भाग्य रो जोय ॥

२०. करी सगाई सरूप नी, भीम तणी फुन जोड।
पुत्र परणावण प्रेम सूं, तात तणै मन कोड ॥

२१. इतले 'लसकर'[3] आवियो, लूट्या घर अधिकाय।
'धसका'[4] थी आइदानजी, तेसठे परभव मांय ॥

२२. जनक चल्यां पाछै थई, जीत सगाई जान।
गांम धूधारा नै विषै, तिहां 'मामाल'[5] पिछांण ॥

२३. 'वल्लभ'[6] संत लागै घणा, जीत भणी तिण वार।
चारित्र नो पूछ्या कहै, लेसू संजम भार ॥

---

*लय—धीज कर सीता सती रे।

१. परिषद् (जनता) वंदना करने के लिए उमड़ पड़ी।

२ साध्वी अजबूजी।

३. लुटेरे।

४. धक्का।

५. ननिहाल (मामा का घर)।

६. प्रिय।

२४. संत तथा सतियां तदा, बोलै एहवी वाय।
बालक छै तिण कारणे, हिवडां कल्पै नांय।

२५. संत सत्यां नै देख्यां थकां, मन में हर्षंत थाय।
बार-बार पूछा करै, अब कल्पू के नांय।।

२६. बालक वय मे पिण इसो, संत सत्यां सू प्रेम।
हर्ष चरित्र लेवा तणो, तसु चेष्टा पिण एम।।

२७. घाली पला में वाटकी, काका नै घर जाय।
साध पणो म्हे आदरचो, सूजतो मुज वहिराय।।

२८. इण विध कोड चारित्र तणो रे, धर्म करण आह्लाद।
पहली ढाल विषै कही रे, जन्मोत्पत्ति इत्याद।।

ढाल २

दोहा

१. 'विरहो'[1] पडयां वर्स केतलै, मात त्रिहूं सुत लेह।
कृष्णगढ आया वही, विणज सरूप करेह।।

२. बिहुं बंधव माता भणी, म्हेली 'हरिगढ'[2] मांहि।
दिवस कितै रोयट विषै, सरूप आयो ताहि।।

३. दिवस किते त्यां रहि करी, पाछा आवत पाण।
सासरिया तिण अवसरे, तुरत दिराई 'आण'[3]।।

४. परणायां विण तुज भणी, म्है जावादयां नांय।
मुज पुत्री मोटी हुई, घर मे नही खटाय।।

५. सरूप कहै म्हे सांभल्यो, ज्यां मुझ बंधव माय।
रोग चालो तिण देश में, तिण स्यू रह्यो न जाय।।

६. फिर पाछो आवी करी, करिस्यू व्याह मंडाण।
'कांमदार'[4] सू मिल करी, हरिगढ आया जाण।।

---

१. विरह।
२ किशनगढ़ (कृष्णगढ)।
३. शपथ।
४. प्रमुख कर्मचारी।

*सुगण जन सांभलो रे ।। ध्रुपदं ।।

७. कृष्णगढ आया वही, भारीमाल ने हेम ।
बहु मुनि थकी पधारिया, सेव करी धर प्रेम ।।

८. भेषधारी तिण अवसरे, करण कदाग्रह ताहि ।
जणा पैतीस रै आसरै, आया बगीची मांहि ।।

९. भारीमाल ने खेतसी, हेम अने ऋषिराय ।।
आदि बगीची आविया, चरचा करवा ताय ।।

१०. आश्रवनी चरचा थई, भारीमाल दै जाव ।
भेषधारी हाको करी, उठ्या तुरत 'सताव'[1] ।।

११. झूठो ही 'गिलो'[2] करी, आया जिण दिश जाय ।
संता समभावे करी, सह्यो परिसह ताय ।।

१२. वर चौमासो हेम नै, सैहर माधोपुर सार ।
आप भलावी आविया, जयपुर सैहर मझार ।।

१३. हेम माधोपुर नी दिशा, विहार कियो सुविमास ।
घणा कोश रै ऊपरै, आवी नदी बनास ।।

१४. नदी देख मन चिंतव्यो, हरिगढ मांहि प्रसीध ।
झूठा रे झूठा सही, इण विध गिलो कीध ।।

१५. तो हिव तिणहीज सैहर में, चौमासो द्यूं ठाय ।
इम चिंतव आया वही, कृष्णगढ रे मांय ।।

१६ हेम ऋषि चिहुं संत सूं, असाढ छैहडै आय ।
उपगारी गुण आगला, दीयो चौमासो ठाय ।।

१७. भेषधारी तिण अवसरै, क्रोध चढ्या अधिकाय ।
हेम समीपे आयनें, 'अगल डगल'[3] कहै वाय ।।

१८. पंडित साधू मांहरा, विहार करि गया तास ।
थे छल करने आविया, इहां करवा चउमास ।।

१९. के तो विहार इहां थकी, परहो कीजो ताहि ।
नहीं तर पात्रा थांहरा, 'रुलसी'[4] चौहटा मांहि ।।

---

*लय—राजग्रही नगरी ।

१. शीघ्र ।

२. झगड़ा ।

३. अंट-सट ।

४. तितर बितर हो जायेंगे ।

२०. हेम क्षमा रा सागरू, गिणत न राखै काय।
जायगा ऊतरवा तणी, दुर्लभ सैहर रै मांय॥

२१. दुकान दोय जणां तणी, झगडो माहो मांहि।
आज्ञा ले तिण हाट में, कीयो चौमासो ताहि॥

२२. स्हामो आवै तावडो, सह्यो कष्ट अधिकाय।
बहु जनवृंद सुणै सही, 'देशना'[1] निशा मांय॥

२३. संवच्छरी नो एक ही, पोसह न हुवो कोय।
दीवाली ना दीपता, पोसह पंच सुयोय॥

२४. दूजी ढाल विषै कह्यो, चरचा वर्णन आदि।
प्रबल भाग्य थी पांमियै, संत संयोग समाधि॥

ढाल ३

दोहा

१. मात सहित त्रिहुं बंधवा, आया जयपुर मांय।
जबर दिशा वडभाग्य थी, मिलै 'जोग्य'[2] सुखदाय॥

*भव जीवां रे, वंदो पूज्य भारीमाल॥ध्रुपदं॥

२. जयपुर सैहर विषै तदा रे, लाल, भारीमाल चउमास।
संवत अठार गुणंतरे, लाल, नित्य प्रति सेवा तास॥

३. हरचंदलाला जवहरी, परषद में अगवांण।
प्रात समै भारीमालजी, वाचै सूत्र वखाण॥

४. रात्रि समै ऋषिरायजी, रामचरित्र नै आद।
वारु वखाण वाचता, सुण जन लहै आह्लाद॥

५. मात सहित त्रिहुं बंधवा, सखरी सेव करेह।
भारी जोग्य मिल्यो भलो, भाग्य प्रमाणै एह॥

६. प्रात समै व्याख्यान में, निसुणै हरचंद आद।
तिहां जीत पिण सांभलै, सुण पामै अह्लाद॥

१. व्याख्यान।
२. जोग (योग)।
*लय—सकल द्वीप सिरोमणि।

७. पचीस बोलां रो थोकडो, तिण में चउवीस बोल।
तेरे द्वारां माहिला, सीख्या प्यार अमोल॥

८. चरचा पिण सीखी घणी, चारित्र लेण उमंग।
हरचंद कहै अच्छा हुसी, ए साधु सखर सुचंग॥

९. हिवै चौमासो ऊतरयो, भारीमाल तन मांहि।
कारण थी इधका रह्या, विहार हुवो नहीं नांहि॥

१०. दर्शण करवा आविया, कृष्णगढ थी हम।
हीरां अजबू महासती, गुरु दर्शण सूं प्रेम।

११. हस्तु नें किस्तु भली, बिहुं भगनी गुणकार।
प्रीत छांड व्रत आदरया, आवी घर अति प्यार॥

१२. परम पूज्य भारीमालजी, सत सत्यां रा थाट।
जयपुर सैहर विषै घणो, होय रह्यो 'गहगाट'[1]॥

१३. लोक घणां समज्यां जिहां, श्रावक ना व्रत धार।
जीत चरण लेवा भणी, त्यार थयो तिणवार॥

१४. सरूपचन्द नैं चरण रो, दै अजबू उपदेश।
विविध प्रकार करी तदा, वारु रीत विशेष॥

१५. इतरै हस्तु महासती, वचन वदै सुविचार।
दै जश तू भूआ भणी, कर बंधो इहवार॥

१६. वचन सुणी सतियां तणा, चढिया अति परिणांम।
ततक्षिण त्याग कीया तदा, मास आसरै आम॥

१७. तीजी ढाल सुहामणी, सरूपचंद ने जीत।
चरण लेण त्यारी थया, वर जश हरष पुनीत॥

ढाल ४

दोहा

१. पभणै भारीमालजी, पहिलां संजम भार।
दैणो सरूपचंद नै, वारू करी विचार॥

२. तव दीख्या देवा तणी, अनुमति दीधी माय।
चारित्र नां महोछव तदा, हरचंद करै सवाय॥

---

१. रगराग।

३. पीठी मंजन प्रमुख ही, प्रवर वस्त्र सोभंत।
गहणा विविध प्रकार नां, तिण करि तनु 'द्युतिमंत'[१] ॥
४. 'शिव रमणी'[२] वरवा भणी, अधिक हरष धर हित।
वेरागी वनडो वण्यो, सरूपचद सुभ चित्त ॥

*आज आनंदा रे ॥ ध्रुपदं ॥

५. दिख्या महोछव दीपता, आनदा रे बहु जनवृंद मझार कै।
वर रथ मे वैसारीया, सरूपचंद नै सारकै ॥
६. पंच 'कोतल हय[३] 'परवरा'[४], गज 'अंवावाडी'[५] सहित।
फुन 'पलटण'[६] मुख आगले, पेखत पांमै प्रीत ॥
७. वाजंत्र विविध प्रकार ना, पवर नगारा निसाण।
'चित-हरणी'[७] पूठे चलै, गावत गुण जश जांण ॥
८. चारित्र लेवा चूप सूं, मझ बाजार मझार।
धीरै - धीरै संचरै, जनवृंद हरष अपार ॥
९. ए गाजा वाजा आदि दे, सावद्य कार्य धार।
धर्म पुन्य नही तेहमें, ओ संसार नो व्यवहार ॥
१०. 'ज्ञाता'[८] में थावच्चा पुत्र नां, चरण महोछव बहु ख्यात।
हुई जिसी बात वर्णव्यां, दोष नही तिल मात ॥
११. मोहनवाडी आविया, भारीमाल तिण वार।
दिख्या देवा कारणे, संतसती बहु लार ॥
१२. संवत अठार गुणंतरे, पोह सुदि नवमी पेख।
स्वहत्थ भारीमालजी, चरण दीयो सुविसेख ॥
१३. चरण समायक आपियो, बड तरु तल सुविधान।
तांम मोदक वहु वाटियां, दीयो संसार नो दांन ॥

१- दीप्तिमान्।
२. मोक्ष रुपी स्त्री।
***लय—बाडी फूली अति भली।**
३ सजा सजाया घोड़ा जिस पर कोई सवार न हो, जुलूसी घोड़ा।
४. श्रेष्ठ।
५- हाथी की पीठ पर रखा जाने वाला हौदा (आसन विशेष)।
६ पैदल चलने वाले सिपाहियो का दल।
७ सुहागिन बहिनें।
८ ज्ञाता, अध्ययन ५।

१४. धर्म उद्योत हुवो घणो, पाम्या जन चिमत्कार।
संजम स्वाम समाप नै, आया सैहर मझार।।

१५. दिख्या देवा जीत नै, भारीमालजी स्वांम।
मेल्या ऋषिरायचंद नै, घाट दरवाजे आंम।।

१६. महा विद सातम दिने, जीत चरण सुखकार।
वड तरु तल ऋषिराय जी, दीधो संजम भार।।

१७. अति उच्चरंग आणी करी, मात कल्लू धर खंत।
अनुमति दै बिहुं सुत भणी, लीधो लाभ अत्यंत।।

१८. तांम स्वाम भारीमालजी, बिहुं बंधव नै जांण।
सूप्यां हेम ऋषि भणी, परम विनीत पिछांण।।

१९. दिवस किते जयपुर थकी, स्वाम करायो विहार।
'माधोपुर' 'बूंदी' थई, आया 'कोटा' मझार।।

२०. बिहुं बंधव चरण लीयां पछै, भीम तणा परिणांम।
चारित्र लेवा ऊठिया, मात संघाते ताम।।

२१. फागुण विद एकादसी, स्वहत्थ भारीमाल।
मात संघाते भीम नै, चरण दीयो सुविशाल।।

२२. दिख्या महोछव दीपता, धर्म उद्योत उदार।
वर समणी अजबू भणी, सूंपी कल्लू ने तिणवार।।

२३. च्यारूं चारित्र आदरचो, चौथी ढाले चंग।
दिशा सासण नी दीपती, गण निरमल जल गंग।।

ढाल ५

दोहा

१. अति उपगार करी गणि, कारण मिटिया ताय।
विहार करी 'जयपुर' थकी, 'माधोपुर' में आय।।

२. हेम कोटा थी आविया, भारीमाल रै पास।
गणपति नी आज्ञा थकी, 'इंद्रगढ़' चउमास।।

३. भीम भणी 'दिख्या वडी'[1], च्यार मास थी दीध।
जीत भणी पट मास थी, भीम 'दीर्घ'[2] इम कीध॥

४. भारीमाल पै भीम ऋषि, तसु बंधव जे दोय।
हेम ऋषि पासे भणै, अमल चित्त अवलोय॥

*सरूप सुहामणा साधूजी ॥ ध्रुपदं ॥

५. ईर्या भाषा एषणा साधूजी, 'तुर्य पंचमी समित हो'[3] ॥
॥ जशधारी ॥
जयणा सहित रूडी रीत सू साधूजी, फुन मन वचन तनु गुप्त हो।
॥ जशधारी ॥
सरूप ऋषि सोभता साधूजी ॥

६. दयावत अति दीपता, सत्य व्रत फुन 'दत्त'[4] हो।
रमता 'ब्रह्म'[5] विषै ऋषि, वलि मन छांडी ममत्त हो॥

७. जती धर्म दश विध धरै, ब्रह्मचर्य नववाड।
अष्ट प्रवचन माता विषै, रमता चित्त अति प्यार॥

८. विनयवंत सतगुरु तणा, निरमल चारित्र नीत।
अति सासण नी आसता, परम सुगुरु सूं पीत॥

९. जयणां करता जुगत सू, धरता सिर गरु आण।
हरता पाप भणी ऋषि, चतुर अवसर नां जांण॥

१०. द्वितीय चौमास वोरावडे, भारीमाल रै पास।
भीम जीत ऋषि हेम पै, पाली सैहर प्रकाश॥

११. दशवैकालिक सूत्र नै, वलि उत्तराभ्रयण अमोल।
अमल चित्त सीखै मुनि, भीणी चरचा वहु वोल॥

१२. पुस्तक लेख अक्षर भला, अल्पकाल में आय।
सखर सिद्धान्त नी वाचणी, ऊडी विचारणा ताय॥

१३. विविध विनय व्यावच करी, अहनिश भक्ति विशाल।
रूडी रीत रीझाविया, प्रसन्ना थया भारीमाल॥

---

१. छेदोपस्थापनीय चारित्र।
२. वडा
*लय-घोड़ी आई थांरा।
३. चौथी—आदान निक्षेप समिति—पांचवी परिष्ठापन समिति।
४. अचौर्य।
५. ब्रह्मचारी.

१४. पभणै भारीमालजी, ए शिष्य थंभव नाम ।
हेम समीपे भेला रह्यो, इम कहि सूंप्या ताम ॥

१५. तीजो चौमासो कंटालिये, हेम ऋषि रै पास ।
सैहर सरियारी ने विषै, तुर्य निमन्त्रे वास ॥

१६. सैहर गोगूंदे निमंत्रे, हेम करै हितकार ।
दूजो आचाराग सीखियो, अति निज उद्यम अपार ॥

१७. मुरधर देश विषै कियो, पंचिमो पाली सैहर ।
छिहंतरे देवगढ विषै, पवर हेम नी मैहर ॥

१८. लिखणो पढणो वाचणो, नित्त चरचा नी 'चूप'[1] ।
विनय वैयावच्च करण में, अति 'उजमाल'[2] अनूप ॥

१९. अधिक रीझाया हेम नैं, सखर साचवी सेव ।
झीणी रहिस्य सिद्धान्त नी, सीखाई स्वमेव ॥

२०. सहु चौमासा ऊतर्यां, दर्श करवा आवै हेम ।
जद सरूप स्वाम भारीमाल नी, करै व्यावच्च धर प्रेम ॥

२१. जबर सासण नी आसता, परम पूज्य सूं प्रीत ।
प्रबल पंडित बुद्धि सागरू, सतगुरु ना सुविनीत ॥

२२. कला घणी चरचा तणी, अन्य मति नें आप ।
बंध करै इक बोल में, 'साचीवंता'[3] चित्त स्थाप ॥

२३. प्रवर ढाल ए पंचमी, सरूप चौमासा मात ।
तेह संक्षेप करी कह्या, हिव आगल 'अवदात'[4] ॥

ढाल ६

दोहा

१. नव साधां सूं हेम ऋषि, 'मुरगढ'[5] में चउमास ।
तीन संत दिख्या ग्रही, अधिको धर्म उजास ॥

---

१. उमग ।
२ तेज ।
३. धृति युक्त साहस ।
४ वृत्तान्त ।
५. देवगढ ।

२. रत्न अने शिवजी लियो, रमण छांड चरित्त।
कर्मचंद दिख्या ग्रही, तजी पिता मा 'वित्त'[1]॥

३. बारै ऋषि सू हेम ऋषि, गणपति दर्शण कीध।
स्वाम प्रशंस करै तदा, वर उपगार प्रसिद्ध॥

४. भारीमाल स्वामी तदा, वारू करी विचार।
अति प्रसन्न चित्त सूं कियो, सरूप नो 'सिंघाड'[2]॥

५. सरूप भाखै स्वामजी, निसुणो मुझ अरदास।
हेम सेव करवा तणो, मो मन अधिक उल्हास॥

६. भारीमाल कहै हेम थी, बोलण रा पचखांण।
हेम भणी पिण त्याग ए, स्वाम कराया जांण॥

७. भाखै जीत सरूप नै, पूज्य तणी ए 'आण'[3]।
अंगीकार कीजै सखर, लीजै संत सुजाण॥

८. तांम सरूप अंगी करी, स्वाम आण सुखकार।
इम चित्त प्रसन्न थी कियो, सरूप नो सिंघाड॥

९. पंच संत आप्या प्रवर, पुर सैहरे चउमास।
संवत अठार सितंतरे, अधिको धर्म उजास॥

*भजो भव्य प्राणी रे, स्वाम सरूप अनूप सदा सुखदानी रे ।।ध्रुपदं।।

१०. 'पुर' सू विहार करी मुनि रे, 'गंगापुर' में आय।
जीव ऋषि ने सोभतो रे, चरण दियो सुखदाय।

११. पूज समीपे आय नै, दर्शण कर हरषाय।
दिवस कितै भारीमाल नी, सेव करी सुखदाय॥

१२. इतलै बंधव जीव नो, दीप सजोडै न्हाल।
चरण लेण त्यारी थयो, सांभलियो भारीमाल॥

१३. तांम सरूप नै म्हेलियो, चारित्र देवा सार।
वलि म्हेली समणी भणी, भारीमाल तिणवार॥

१४. तांम सरूप आवी करी, बिहुं ने दिख्या दीध।
दर्शण कीधा पूज ना, जग माहै जश लीध॥

१५. 'कांकडोली' पंच मुनि थकी, अठंतरे चउमास।
बहु सीखाया बोल थोकडा, ज्ञान ध्यान गुण-राश॥

---

१ धन।

२ अग्रगण्य (दो तीन आदि साधुओ के दल मे प्रमुख)।

३. आज्ञा।

*लय—अनत नाम जिन।

१६. महा विद अष्टम नी निशा, भारीमाल परलोग।
पाट बेठा ऋषिरायजी, प्रवल दिशा वर जोग॥

१७. तांम स्वाम ऋषिरायजी, आंणी अति उच्चरंग।
थली देश में मेलिया, प्रवर पंच मुनि संग॥

१८. गुण्यांसीये वर्प लाडणु, गुरु दर्शण कर ताहि।
असीये वर्ष चौमासो कियो, सैहर 'वोरावर' मांहि॥

१९. अति उपगारी जाण नैं, 'मालव' देश मझार।
स्वाम सरूप नैं म्हेलिया, पंच सत सुखकार॥

२०. समत अठार इक्यासीये, सैहर 'उजीण' चौमास।
ऋषि पूजा ने चारित्र दियो, अधिक महोछव तास॥

२१. कोदर नै वंधो कराय नैं, 'वडनगर' में आय।
चारित्र उभय भणी दियो, महोछव तसुं इवकाय॥

२२. वर्स इक्यासीये जीत नो, स्वाम कियो सिंघाड।
विचरत-विचरत आविया, 'श्रीजीदुवार' मझार॥

२३. इतरै अष्ट संता थकी, स्वाम सरूप तिवार।
'मालव' देश थी आविया, 'श्रीजीदुवार' सुखकार॥

२४. उभय वंधव मिल पूज नां, दर्शण कीवा ताय।
वड उपगारी जांण नैं, हरष्या पूज्य ऋषिराय॥

२५. इतरै 'मालव' देश थी, कोदर आवी तास।
दिख्या लीवी दीपती, रायऋषि रे पास॥

२६. तांम सिंघाडो भीम नो, स्वाम कियो सुविचार।
इम गणपति नै रीझावियां, उभय भवे सुखसार॥

२७. 'कांकडोली' वयासीयै, सखर कियो चउमास।
तंत वर्प तयांसीयै, वोरावर सुखवास॥

२८. चौरासीयै रतलांम में, अधिक कियो उपगार।
पच्यासीयै वर्प प्रेम सूं, सखरो श्रीजीदुवार॥

२९. 'उदियापुर' वर्प छंयासीयै, सत्यासीयै 'रीणी' मांय।
क्षेत्र ते कालवादी तणो, वहुजन नै लिया समझाय॥

सोरठा

३०. कल्लूजी तिणवार, सत्यासीये श्रावण मझै।
अति तप करी उदार, पोहता परभव खैरवे॥

३१. छठी ढाल विषै कह्या रे, स्वरूप चौमासा एह।
देश परदेशे दीपता रे, अति उपगार करेह ।।

ढाल ७

दोहा

१. सैहर बोरावर नै विषै, अठ्यासीये उदार।
वर चउमास नव्यासीये, कीधो 'श्रीजीद्वार' ।।

२. गोगूंदै वर्स नेउअे, कन्या 'मोतां' सार।
सखर सगाई छोड नैं, लीधो संजम भार ।।

३. गंगापुर एकाणुअे, वडा संत संग तास।
वर्ष बाणुअे वलि कियो, गगापुर चउमास ।।

४. चैत मास में चूंप सू, श्रीजीद्वारे आय।
'अनोप' नै चारित दियो, वड तपस्वी मुनिराय ।।

५ आछ आगारे ओपतो, पट मासी चिहुं वार।
सवा सात मासी वलि, अन्य तप विविध प्रकार ।।

६. कांकडोली वर्स त्राणुंअे, चौमासो सुखकार।
धर्म उद्योत कियो घणो, ज्ञान ध्यान गुण धार ।।

७. इतरा वर्षा ने विषै, शेषे काल उदार।
सेव पूज्य ऋषिराय नी, कीधी विविध प्रकार ।।

८. परम वेयावच्च पूज्य नी, अह निश में अधिकाय।
रीजाया विध-विध करी, स्वाम भणी सुखदाय ।।

९ थली देश मे विचरतौ, जीत ऋषि तिण वार।
'पाली चौमासो करण, आवै हरष अपार ।।

१०. आण अखंडत पूज्य नी, जीत अराधै जाण।
चित्त अनुकेडै चालतां, अधिक हरष मन आण ।।

११. 'श्रीजीद्वार' सरूप नै, आसाढ मास मझार।
अति ही प्रसन्न चित्त थई, भाखै वचन विचार ।।

*धन्य-धन्य स्वाम सरूप नै ॥ ध्रुपदं ॥

१२. श्री मुख हुकुम फुरमावियो, सांभल सीस स्वरूप । सयाणा ।
जीतमल्ल भणी स्थापियो, पद युवराज अनूप ॥ सयाणा ॥

१३. ए कांम कियो स्वमत थकी, इण में अन्य तणो जश नांय ।
इम वहु विध लिख सूंपियो, सरूप भणी ऋषिराय ॥

१४. जीत परपूठे स्वामजी, स्थाप्यो पद युवराज ।
सुगुरु रीजांया उभय भवे, सीझै वंछित काज ॥

१५. श्रीजीद्वार चोराणुंअे, पूज संघाते चौमास ।
चोमासो उतर्‌यां चेत में, जीत आयो पूज्य पास ॥

१६. पचाणवे वर्ष लाडणु, छन्नुअे 'कांकडोली, सैहर ।
'वोरावर' सत्ताणुंअें,, परम पूज्य मैहर ॥

सोरठा

१७. सताणुवे वर्स धार, सैहर 'विसावू' ने विषै ।
आसाढ मास मझार, परभव पोहता 'भीम' ऋषि ॥
१८. अठाणुंअे वर्ष लाडणु, पूज्य संग चउमास ।
निनांणुअे चुरु मझै, सइके 'रीणी' विमास ॥
१९. उगणीसै एके समै, उदियापुर सैहर मझार ।
एकसौ आठ 'मोती' किया, वर तप उदक आगार ॥
२०. वीये कृष्णगढ़ में कियो, जीत संग पहिछांण ।
तीये चोमासो लाडणुं, चोके वीदासर जांण ॥
२१. पांचे सुजाणगढ मध्ये, छके चुरू मझार ।
वीकानेर साते समै, जीत संग सुविचार ॥
२२. आठे वीदासर सैहर में, जीत संग चउमास ।
चारित्र लैण मघराज नै, त्यार कियो सुप्रकास ॥

सोरठा

२३. मृगसर मास मझार, विद वारस तिथ लाडणुं ।
स्वहथ जीत उदार, चरण दियो मघराज नै ॥
२४. मघ भगनी ने माय, तसु दिख्या देवा भणी ।
आयो जीत चलाय, सरूप संग वीदासरे ॥
२५. इह अवसर रै मांहि, देश मेवाड थकी तिहां ।
कागद आया ताहि, समाचार लिखिया इसा ॥

*लय—स्वार्थ सहु नै

२६. महा विद चवदस जान, लघु रावलिया नै विषै।
रायऋषि गुणखान, परभव मांहै 'पांगस्या'[1] ॥

२७. 'अजाणचक'[2] रा धार, समाचार सुणियां थकां।
तीरथ च्यार मझार, दोरी लागी अति घणी ॥

२८. पंडित महा पुन्यवांन, दिशावांन अति दीपता।
हस्त मुखी गुणखांन, तीर्थ मुकुट शिरोमणि ॥

२९. सकल संघ सुखदाय, गुण गिरवा गेहरा घणां।
हुंता पूज्य ऋषिराय, पिण किण रो जोर न काल थी ॥

३०. महा सुदि पूनम पेख, जय पट बीदासर विषै।
संत सती सुविसेख, सरूप आदि हुंता तिहां ॥

३१ फागुण विद छठ आंम, मघ 'भगनी'[3] 'माता'[4] सहित।
तीजी हस्तू ताम, जय कर दिख्या दीपती ॥

३२. सरूप नै तिण वार, असणादिक पांती विना।
जय वर वगसी सार, वलि अति कुर्व वधावियो ॥

३३. उगणीसै नव के समै, लाडणु सैहर चउमास।
नव संतां सू निरमला, पूरो पुन्य प्रकास ॥

सोरठा

३४. स्वरूप गुण भंडार, 'सिणगारांजी' नै तदा।
मृगसर मास मझार, दिख्या दीधी दीपती ॥

३५. आया देश मेवाड, 'सरूप' 'नवलां' बिहु भणी।
जय वर मेल्या सार, मोखणदे 'खेमा'[5] दिख्या ॥

३६. दशके उदियापुर विषै, चौमासो सुखकार।
ग्यारा वर्ष वखतगढे, सत इग्यार इग्यार ॥

३७. द्वादश मुनि द्वादश समै, श्रीजीद्वार चौमास।
विचरत पादू आय नै, 'हंस'[6] दिक्षा सुप्रकास ॥

---

१. पधार गये।
२. अकस्मात्।
३. साध्वी गुलाबाजी।
४. साध्वी वनाजी।
५. साध्वी खेमाजी।
६. मुनि हसराजजी (१७२)।

३८. उगणीसै तेरे समै, जयपुर सैहर चउमास ।
एकादश मुनि ओपता, स्वरूप नो विसवास ।।

सोरठा

३९. शेषे काल मभार, 'लिछमा नैं दिख्या दई ।
जय आज्ञा थी सार, सूपी 'मोतांजी' भणी ।।

४०. ढाल भली ए सातमी, वारता विविध प्रकार ।
सरूप गुण ना सागरू, अधिक कीयो उपगार ।।

ढाल ८

दोहा

१. थली देश में आविया, जय वर स्वरूप स्वांम ।
चवदै वर्षे लाडणु, द्वादश मुनि गुण धांम ।।

२. पनरे वीदासर कियो, सोले चूरु सार ।
सतरै वर्षे लाडणु, तेरै संत उदार ।।

३. अष्टादश वीदासरे, संत ग्यार गुणकार ।
शेषे काले 'ज्ञान' नै, चरण दियो सुविचार ।।

४. उगणीसे चूरू वली, ग्यारा सत उदार ।
वृद्ध पणै तनु खेद फुन, शक्ति घटी तिण वार ।।

५. धीरै-धीरै विहार कर, सैहर लाडणु मांय ।
वीसा थी पणवीस लग, चौमासा पट थाय ।।

६. गुणंतरे दिख्या ग्रही, पण वीसा लग पेख ।
ज्ञांन ध्यांन तप जप अधिक, कियो स्वरूप विसेख ।।

*धिन-धिन स्वाम स्वरूप नै ।। ध्रुपदं ।।

७. वार अनेक ही वाचिया, सूत्र वत्तीस उदार हो । मुनिद ।
जाण भीणी रहिसां तणां, वारू न्याय विचार हो ।। मुनिद ।।

८. नियंठा नें वलि संजया, वंद्वी लद्वी वहु भंग ।
समोसरण गमा वलि, चरम पद अति चंग ।।

*लय—धिन-धिन जंवू स्वाम······।

९. महाडंडक मुहडै कियो, खंडा जोयण ना जांग।
पुद्गल ने गगेय तणा, भागा नी वहु छांण।।

१०. वलि पोता नी बुद्धि थकी, थोकड़ा किया अनेक।
पनरै लड़ियां परवरी, ते पिण कीधी विसेख।।

११. वलि सैतीस सैहरयां तणां, जाण्या भिन-भिन भेद।
उदियादिक षट भावनां, भेदानभेद सवेद।।

१२. पुद्गल-परावर्त्तन वलि, चिहुं पाला ना जाण।
कंप मानादिक आदि दे, वहु विधि यंत्र पिछांण।।

१३. भांगा गुणपचास में, इक-२ भागानी नव-२ जोय।
च्यार सौ इगताली सेर्या हुवै, तिकै रूडी रीत अवलोय।।

१४. इत्यादिक बहु थोकड़ा, जाण्या स्वाम सरूप।
च्यार तीर्थ नै सीखायवा, उद्यमी अधिक अनूप।।

१५. वहुनैं बोध पमावियो, वले बहु जन नै समजाय।
श्रावक कीधा सुन्दरु, बहु नै चरण दियो सुखदांय।।

१६. शीतकाल माहै मुनि, एक पछेवडी उपरंत।
बहुल पणै ओढी नहीं, वर्ष घणै मतिवंत।।

१७. आठा ना वर्ष पछै मुनि, इक पछेवडी परिहार।
प्रवर सभाय निशा विषै, करता अधिक उदार।।

१८. चोथ छठादिक तप वलि, पनर दिवस लग कीध।
कर्म काटण उद्यमी घणा, जग मांहै जश लीध।।

१९. भारीमाल ऋषिराय नी, हेम व्यावच विध रीत।
विध-विध सू रीझाविया, पूर्ण त्यासू प्रीत।।

२० देश परदेशे विचरिया, प्रात निशा मे वखाण।
विविध हेतु दिष्टत सुणी, रीझै चतुर सुजाण।।

२१. चरचा पाखडियां थकी, करता थिरता जोग।
पोतै तो झलकै नही, त्यां नै कष्ट करै सुप्रयोग।।

२२. अधिक सासण नी आसता, जिला नी 'चिड'[१] अधिकाय।
कोइ 'कटमी'[२] वात करै गणतणी, तिण नै जेहर सरीखो जाणै ताय।।

२३. सम्यक्त में सेठा घणां, ए गुण अधिक अमोल।
खामी देख भयभ्रंत होवै नही, 'मदर'[३] जेम अडोल।।

---

१. नफरत।
२. निन्दात्मक।
३. मेरु पर्वत।

५. पणवीसे फुन जोधपुर, चउमासो कर सार।
सैहर लाडणुं आवता, सरूप कनै जिवार ॥

६. जोधाणां सू लेइ करी, वाजोली लग ताय।
श्रावक वहु वृंद मेवाड़ ना, दर्शण कर विकसाय ॥

७ कृष्णगढ 'नवैनगर' ना, बोरावर ना देख।
इत्यादिक वहुग्रांम ना, आया लोक अनेक ॥

८. वाजोली थी लेइ करी, सैहर लाडणु वट्ट।
लोक सैकडां आविया, थली देश ना थट्ट ॥

९. 'भंडारी वादर-सुतन'[1], जशवंत आदि 'उमग्ग'[2]।
दर्श किया जोधाण थी, सैहर लाडणुं लग्ग ॥

१०. स्वरूप स्हामा म्हेलिया, तीन संत तिण वार।
दर्श 'डेगाणे' कर कह्या, सरूप ना समाचार ॥

सुगणा भजलै स्वाम सरूप ॥ध्रुपदं॥

११. महा विद बीज पुष्य गुरु जय गणी, सैहर लाडणु सार।
सरूप सुण नै स्हामा आया, श्रमण वहू लै लार ॥

१२. बहु जनवृंद मध्य जय प्रणमै, सरूप ऋपि ना पाय।
जवर मिलाप तणो ए मेलो, देख-देख हरषाय ॥

१३. अधिक हरप आनन्द ऊपनो, सरूप नै मन कोड।
गणपति नै सुखसाता पूछै, वार-वार कर जोड ॥

१४. मांहोमांहि करै मुनि वंदणा, नमस्कार सिरनाम।
वहु जनवृंद लह्या अति चित्त में, चिमत्कार अभिराम ॥

१५. गणपति संग स्वाम हिव आवै, सैहर लाडणु मांय।
लोक हजांरा कहै लोक में, पेखत ही सुख पाय ॥

१६. सिरदारांजी आदि सत्यां वहु, सरूप नै सुखकार।
वेकर जोडी मान मरोडी, प्रणमै हरष अपार ॥

१७. जन हुलसंता मन विकसंता, प्रणमंता मुनि पाय।
गुण गावंता सुख पावंता आवंता पुर मांय ॥

---

१. बादरमलजी भण्डारी के पुत्र—किशनमलजी।
२. उमग।
*सीता आवै रे घर राम······।

१८. 'सुसर'[1] कंठ थी वृंद साधां ना, गावै गुण जय सार।
इह विध स्वामी जन हित कारी, आया सैहर मझार।।

१९. पंचायती नै नोहरे आवी, आप विराज्या स्वाम।
वखाण वारु अति हित चारु, नित्य प्रति ह्वै हंगाम।।

२०. धर्म उद्योत तणी बहु वार्ता, समय रहिस्य फुन सार।
पूछंता कहिता फुन सुणंता, गणपति नै सुविचार।।

२१. उत्तराध्ययन सूत्र ना उत्तम, आदि अध्ययन इग्यार।
फुन गुणतीस समत्त पराक्रम, कायक तीसमो सार।।

२२. दशवैकालिक सूत्र तणा वलि, च्यार अध्ययन उदार।
वीरथुइ फुन द्वितीय अंग नो, इम अध्ययन अठार।।

२३. दिवस निशा में नित्य प्रति गुणता, कदेयक बे-बे वार।
कदहिक सतर सोल पनरै दश, कद द्वादश तेर इग्यार।।

२४. महा विद तेरस वमन थइ नैं, प्रगटी मस्तक पीड।
पिण समभावै सहिता स्वामी, भांजण भव दुख भीड।।

२५. महा सुध सातम चरम मर्यादा, तणो महोछव मंडाण।
समण सत्यां निज जोड 'कोड'[2] करि, गावत ही गुण खाण।।

२६. महोछव मांहि विराज्या पोतै, सुण-सुण नै हरपाय।
मन विकसावै अति सुख पावै, धर्म वृद्धि अधिकाय।।

२७. दिन गुणतीस रहि जय गणपति, सुजानगढ विहार।
नव दिन रहि बीदासर आया, संत सत्यां परिवार।।

२८. दिवस वीसमें हिचकी निसुणी, सरूप रै अधिकाय।
एक रात्रि रसते रहि आया, सैहर लाडणु मांय।।

२९. दर्शण कर सुखसाता पूछी, थयो तुरत आराम।
अचरज लोक पांमिया अधिको, हरष्या तीरथ तांम।।

३०. जय गणपति नव दिवस रह्या त्यां, कदेहिक हिचकी आय।
पिण आगा वाली वेदन नाही, थई अन्नत रुचि ताय।।

३१. मस्तक नी पिण वेदन थोड़ी, जय गणपति तिण वार।
तन में समाधि जांणी कीधो, सुजानगढ़ विहार।।

३२. सप्तवीस दिन सुजाणगढ में, इक निश बाहिर ताय।
एक रात्रि वलि रही 'खांनपुर', सैहर लाडणु आय।।

---

१. सुस्वर—मधुर स्वर।

२. उत्साह।

३३. दर्शन कर सुखसाता पूछी, आप अधिक हरषाय।
तन समाधि पण शक्ति घटै अति, पिण नित्य करूं सूत्र सझाय ।।

३४. सूत्र सझाय तणो अति सखरो, सरूप रै अति प्यार।
दिवस निशा में अध्ययन बहुला, नित्य प्रति गुणै उदार ।।

३५. स्वाम स्वरूप भणी भाखै मुनि, जय गणपति नै आम।
आप अर्ज करनै इहां राखी, विहार करै नही तांम ।।

३६. सरूप संत भणी इम भाखै, जो मानै मुझ वाय।
तो जय ना पग पकडी राखू, पिण जावा द्यू नांय ।।

३७. सिरदारांजी समणी भाखै, दिन-दिन शक्ति घटाय।
आप तणी मुरजी ह्वै तो, जय गणपति रहै ताय ।।

३८. सरूप भाखै नही भरोसो, तब भाखै सिरदार।
आप इसी किण लेखे भाखो, राखो हरष अपार ।।

३९. आप तणै तो कारण नजीक, रहै पूज्य महाराय।
जोधाणां थी विहार करी नै, आया शीघ्र चलाय ।।

४०. समाचार सहु जय गणपति नै, कह्या सती सिरदार।
तांम सरूप कनै जय आवी, बोल्या वचन उदार ।।

४१. आप तणै पासै मुज रहिवू, वलि भेलो चउमास।
सरूप एहवो वचन सुणी नै, पाम्या अधिक हुलास ।।

४२. विविध प्रकारै वचन कही नै, उपजाई परतीत।
जब मन माहि अति हि हरष्या, जाण्यो रहियै जीत ।।

४३. दिन-दिन शक्ति घटै अधिकेरी, कद सिर पीडा थाय।
कदहीक साता हुवै सर्वथा, पिण सूत्र सझाय सवाय ।।

४४. सिर पीडा नो पूछचा भाखै, इहा विराज्या आप।
तिण सू चित्त समाधि घणी मुझ, थिरता पद मन थाप ।।

४५. आलोवण आछी करी रे, बार-बार कर याद।
चारू कलस चढावियो रे, अति मन धर अह्लाद ।।

४६. महाव्रत आरोपाविया रे, पाप अतिचार आलोय।
पाप अठारै पचखिया रे, त्रिविधे-त्रिविधे जोय ।।

४७. खमतखामणां सहु थकी रे, स्वाम किया धर 'खंत'[1]।
न्हाय धोय नै निमल हुवै तिम, आतम शुद्ध अत्यंत ।।

---
१ इच्छा।

४८. तीज प्रात जय पूछ्यां बोल्या, साता सुख तनु मांय।
आछी तरह आहार गिण कीधो, आहार ठिकाणै आय॥

४९. दोय पोहर दिन चढ्यो आसरै, लघु 'भवांन' प्रति 'वाय'[1]।
पूज कनै रहितां किण ही सूं, ताण म कीजै ताय॥

५०. पूज्य तणी मुरजी आराधै, करै भलायो कांम।
पिण कार्य में नटणो नाहीं, उत्तम सीख 'अमांग'[2]॥

५१. किण ही सूं 'परचो'[3] मत कीजै, घणो बोलणो नांय।
कालू संत कहै मुझ 'सिख्या'[4], आपोजी महाराय॥

५२. स्वाम कहै तुज आगै सिख्या, दीधी बहु सुखदाय।
पछै मुनि मघराज आवियो, साता पूछी ताय॥

५३. कांयक जीव अछै मुझ दोरो, 'उणारत'[5] मन माय।
गणपति म्हारै कांय न राखी, निमल थया जिम न्हाय॥

५४. सिर वेदन पूछ्यां कहै नाहि, 'सांन'[6] थकी दी शीख।
कांयक फेर अछै हिव मुझ तनु, 'सखरा'[7] वचन सधीक॥

५५. पछै शाला थी ऊठी आया, ओरा पासै स्वाम।
तमाखू मसली फिर आया, रात्रि शयन तिण ठाम॥

५६. इतरै जय गणपति पिण आया, वलि सती सिरदार।
साता पूछ्यां 'जंतू'[8] दोरो, आज रह्यो अवधार॥

५७. हिवडां तो मुझ जीव सोरो छै, कर जोडी पूछंत।
सुखसाता छै आप तणै, तनु, इसा सचेत अत्यंत॥

५८. प्रात आहार नो पूछ्यां बोल्या, रुच सूं कीधो ताहि।
हिवडां रुच छै इम पूछ्या कहै, विशेष तो रुच नांहि॥

५९. जय गणी भाखै वेदन मांहै, 'अति सैंठा'[9] दृढ़ आप।
धीर्यपणो आपरै अधिको, इत्यादिक वच स्थाप॥

---

१. वचन।
२. श्रेष्ठ।
३. स्नेहात्मक परिचय।
४. शिक्षा।
५. ऊनायत (कमी)।
६. इशारा।
७. सुचारु।
८. जीव।
९. बहुत मजबूत।

६०. इतरै आहार लेई मुनि आयो, लियो अल्प सो आहार।
पुद्गल हीणा पडवा लागा, विशेष थी तिण वार॥

६१. उदक टोपसी थी बहु वेला, पायो कालू संत।
इम आछी तरै आप पीयो जल, इतरै निशा पडंत॥

६२. महुर्त्त निश उनमान गयां थी, सागारी संथार।
जय उच्चरावी पूछ्यां भरियो, दोय वार हूंकार॥

६३. सुखे बेठा कर नै कालु ऋषि, राख्यो कर आधार।
थेट तांइ आधार राखियो, निज तनु नो सुविचार॥

६४. जिम-जिम पुद्गल हीणा पडवा, लागा निशा मझार।
विशेष थी 'घोचो नही उठ्यो'[1], शरीर मे तिण वार॥

६५. अधिक उतावल पणै सास नही, जय गणपति तिण वार।
विध-विध सूं परिणांम चढावै, देवै सरणा च्यार॥

६६ नरक निगोद तणा दुख भाखै, खंदक गज सुखमाल।
चक्री सनत्कुमार खदक शिष्य, वेदन सही 'असराल'[2]॥

६७. जिनकल्पी लै कष्ट उदेरी, वलि भगवत महावीर।
त्यां पिण कष्ट सह्या बहु वर्षे, तोड्या कर्म जजीर॥

६८. सूको पूलो अग्नि विषै जिम, बिदु तप्त तवेह।
एरड लकडी वलवंत काटै, मुनि रे तिम 'अघ'[3] छेह॥

६९. थोडा काल नो कष्ट अछै ए, भारी सुखा रे माहि।
उपजता दीसो छो इह विध, वार-वार कहै ताहि॥

७०. कोडी साटे कोड रूप्यां रो, खत वलै छै एह।
आप घणा नै साझ दियो छै, इधको लाभ सुलेह॥

७१. आप घणा नै दिख्या दीधी, चरण घणा वर्ष पाल।
इत्यादिक जय गणपति फुन, मघराज कहै सुविशाल॥

७२. मुहुर्त्त दिवस आसरै चढियै, पोहता परभव मांय।
चिहु लोगस नो काउसग कीधो, साधु तन वोसराय॥

७३. माडी खंड इगतीस तणी जे, जाणक देव विमाण।
सोना रुपा रा फूल उछाल्या, टका रुपइया जाण॥

---

१ बाधा उपस्थित नही हुई।
२ भयकर।
३. पाप।

७४. वाजा विविध कोतल मुख आगे, वलि आगे नीशांण।
घन जिम शब्द नगारां ना फुन, मंडिया बहु मंडाण॥

७५. ए किरतव संसार तणा है, सावद्य आज्ञा बार।
धर्म पुण्य नो अंस नहीं छै, लीजो न्याय विचार॥

७६. लोक हजारां तणै आसरै, मध्य बाजार मझार।
पूठे जश गावंती बायां, जन कहै जै जै कार॥

७७. दाग देइ जन पाछा आया, सरूप नै निणवार।
याद करंता नयण झरंता, हिवडै हेज अपार॥

७८ जेठ कृष्ण सनि चौथ प्रभाते, पंडित मरण उदार।
पंचम विहार करी जय गणपति, गुजाणगढ विहार॥

७९. बहु वर्षा लग छेड़ा सूधी, 'भवान' कानू' आदि।
तन मन सेती सेव करि अति, विविध प्रकार समाधि॥

८०. कायक वात सुणी जिम आखी, कांयक प्रत्यक्ष जाण।
कायक वात कही उनमाने, ज्ञानी वदै प्रमाण॥

८१. आघो पाछो कोइ आयो ह्वै, विरुध आयो हुवै कोय।
कहितां झूठ लागो हुवै कोइ, तो मिच्छामि दुक्कडं मोय॥

८२. संवत उगणीसै पणवीसे, जेठ कृष्ण धर कोड।
तेरस मंगल वार तणै दिन, जय गणी कीधी जोड॥

५

सरूप विलास

ढाल १

दोहा

१. प्रणमूं सिध साधु प्रते, भिक्षू भारीमाल।
रायऋषि प्रणमू वली, 'जंवू'[1] जेम दयाल॥

२. मरुधर 'जनपद'[2] नै विषै, रोयट सैहर वखांण।
आइदांनजी त्यां वसै, जाति गोलेछा जांण॥

३. कल्लू कूक्षे ऊपना, सरूपचन्दजी स्वाम।
वर्ष पचासे आसरे, जन्म थयूं अभिरांम॥

४. वर्ष कैतलै भीम नू, जन्म थयू सुविधान।
अठादस साठे समय, जन्म जीत नू जांन।

५. चतुरदशी आसोज सुदि, कर्क लग्न मे केत।
तृतीय च्यार गुरु शुक्र ग्रह, रवि शनि ए चिहुं तेथ॥

६. चोथे मंगल वुद्ध फुन, राहू सप्तम गेह॥
धर्म भवन में चंद्रमा, ए लग्नेश कहेह॥

७. चरण ग्रह्यु 'अजवू' भुआ, वर्ष चौमाल विचार।
तास प्रसगे अधिक ही, धर्म तणी रुचि सार॥

८. *त्रिहुं वंधव में जीत नै रै, वालपणा रे मांय॥
गले वेदना ऊपनी, सुखे जीम्यो नही जाय।

९. अजवूजी तिहां आविया, कल्लू दर्शण कीध।
धर्मोद्यम अति राखियै, सतिय कहै सुप्रसीध॥

१०. कल्लू कहै सुण महासती, तीजा सुत रै तास।
धांन गले नही ऊतरै, जीवण री नही आस॥

११. सतीय कहै रहै जीवतो, दिख्या लैवै जाण।
त्याग करो वरजण तणा, तांम किया पचखांण॥

१२. तुरत कारण मिटियो तदा, मात पिता हरपाय।
जीव्यो साधां रा भाग रो, सजन कहै इम वाय॥

---

१. भगवान महावीर के तीसरे उत्तराधिकारी जवू स्वामी।
२. देश।
*लय—भविक जन सांभलो

१३. ताम जनक सगाइ करी, 'सरूप' 'भीम' नी पेख।
इतलै लसकर आवियो, लूंट्यो गांम विसेख॥

१४. धसका थी आइदांनजी, कियो तेसठे काल।
जनक चल्यां पाछै थई, जीत सगाई मांमाल॥

१५. संजम लेसूं इम कहै, संत सत्यां नै वाय।
बालक छै तिण कारणे, हिवडां कल्पै नांय॥

१६. मुनि अज्जा देखी करी, मने अति हरषाय।
वार-वार पूछा करै, अब कलपू कै नांय॥

१७. घाली पला में वाटकी, मुंहपति वांधी ताय।
काका रे घर जाय नै, कहै सूझतो मुज वहिराय॥

१८. साधपणो मैं आदरयो, वोलै इह विध वाय।
वालपणा में पिण इसी, धर्म रुची अधिकाय॥

१९. विखो पड्यां वर्स केतलै, त्रिहुं सुत मात तिवार।
'कृष्णगढ' आया वही, करै सरूप व्यापार॥

२०. दिवस कितै 'रोयट' मझै, सरूप आयो चलाय।
हरिगढ जातां सासरया, आंण दिराई ताय॥

२०. मुझ पुत्री मोटी हुई, परणायां विण ताय।
म्हे जावा देवा नहीं, ताम सरूप कहै वाय॥

२२. हरिगढ रोग चालो सुण्यो, बे बंधव मुज मात।
त्यां जइ फिर आवी करी, सुविवाह विख्यात॥

२३. इम कही मिल कामदार सूं, कृष्णगढ फुन आय।
जोर क्षयोपसम नो घणो, फंद विषै पड्या नांय॥

ढाल २

दोहा

१. दिवस कितै त्रिहुं बंधवा, मात सहित धर प्यार।
जयपुर सैहरे आविया, भाग्य प्रमांण तिवार॥

२. संवत अठार गुणंतरे, भारीमाल चउमास।
हरचन्दलाला आदि जन, सेवा करै हुलास॥

३. मात सहित त्रिहुं वंधवा, पूज सेव धर प्यार।
करता हरता अघ प्रते, अधिक प्रीत अवधार।।

४. भारीमालजी प्रात हीं, वाचै सूत्र वखांण।
रात्रि समय ऋषिराय नी, निसुणै जनवृंद वांण।।

५. भारीमाल नूं प्रात ही, निसुणै जीत वखांण।
चारित लेवा अधिक चित, पर्म धर्म पहिछांण।।

६. पणवीस-बोल नो थोकडो, तिण में चउवीस बोल।
तेरे द्वारा मांहिला, सीख्या ग्यार अमोल।।

*सुगणा थईयै जी रे ।। ध्रुपदं ।।

७. चौमासो उतरीयां पाछै, भारीमाल तनु मांह्यो जी रे।
कारण सेती विहार हुवो नही, फागुण तांई ताह्यो रे।।

८. कृष्णगढ थी हेम आदि मुनि, आया दर्शण काजो जी।
हीरां अजबू हस्तू कस्तू, सतियां अवर समाजो।।

९. अजबू हस्तू सरूपचन्द नै, संजम नो उपदेसो जी।
अधिक दियो तब बंधो कीधो, आणी हरष विशेषो।।

१०. चारित लेवा त्यार थयो इम, सरूपचन्द सुखदायो जी।
हरष धरी नै हरचंदलालो, मोहछव करत सवायो।।

११. पीठी मंजन प्रवर वस्त्र ही, गैहणा विविध प्रकारो जी।
तनु द्युतिमंत अधिक ही दीपत, पेखत पांमै प्यारो।।

१२. सिव रमणी वरवा नै वनडो, वणियो सरूपचंदो जी।
सुन्दर वर रथ में बैसांण्या, जनव्रंद लहै आनंदो।।

१३. कोतल पंच प्रवर हय आगल, गज अंबाडी सहीतो जी।
पलटण विविध वाजंत्र वाजता, पेखत पांमै प्रीतो।।

१४. पूठे सुन्दर गुण जस गावै, मुख आगल सुखकारो जी।
घुरै नगारा प्रवरनी सांणज, चालत मझ वाजारो।।

१५. ए गाजा-बाजा सावद्य कार्य, संसार नो ववहारो जी।
धर्म पुन्य नो अंस नहीं छै, श्रीजिण आणा बारो।।

१६. भारीमालजी चरण समाप्यो, व्याप्यो जग जश सारो जी।
पोह सुदि नवमी मोहनवाडी, वांट्या मोदक तिवारो।।

*सुगणा थइयै जी रे

१७. जीत भणी दिख्या देवा नै, भारीमाल सुविचारो जी ।
रूडा रायऋषि नै म्हैल्या, घाट दरवाजे सारो ॥

१८. माघ कृष्ण पख प्रवर सप्तमी, जीत दिख्या जयकारो जी ।
बड तरु तल ऋषिराय समाप्यो, उत्तम चरण उदारो ॥

१९. बिहुं सुत प्रति अनुमति देइ नै, लीधो लाभ अपारो जी ।
सुखदाता माता 'कल्लूहद', आ सुत थी अति उपगारो ॥

२०. परम विनीत प्रीत गणपति सूं, जाणी भारीमालो जी ।
हेम भणी सूंप्या बिहु बंधव, आणी हरप विशालो ॥

२१. माता सहित 'भीम' नै संजम, भारीमाल सुविचारीजी ।
फागुण विद ग्यारस दिन दिधो, महोछव मोहर वाडी ॥

२२. अजबू ग्यांन करीनै गजबू, तास भणी धर प्यारो जी ।
कल्ल सूपी गुणरस कूंपी, नणद भोजाई उदारो ॥

२३. धर्म उद्योत थयो इम अधिको, जयपुर सैहर मजारो जी ।
मात सहित त्रिहुं बंधव दिख्या, थयो जबर उपगारो ॥

ढाल ३

दोहा

१. बडी दिक्षा चिहुं मास थी, प्रवर भीम प्रति दीध ।
जीत भणी षट मास थी, भीम दीर्घ इम कीध ॥

२. प्रथम चौमासो हेम पै, सरूप जीत सुजांण ।
भारीमाल पै भीम ऋषि, वारु विनय वखांण ॥

३. द्वितीय चौमासो हेम पै, भीम अनें ऋषि जीत ।
भारीमल पै सरूप ऋषि, अधिक विनय सुविनीत ॥

४. दशवैकालक सीखिया, उत्तराध्ययन पढंत ।
सरूप ऊपर स्वांमनी, मुरजी मैहर अत्यंत ॥

५. तृतीय चौमासो बंधू त्रिहुं, हेम भणी संपेह ।
रायचंदजी स्वाम तब, अर्ज करै गुण गेह ॥

६. इक बंधव राखो इहां, तब भारीमाल कहै ऐम ।
तिहुं बंधव भेला रहो, करां विछोहो केम ॥

७. 'बोहितरा सूं लेकरी'[1], छीहंतरा लग' एम ।
त्रिहुं बंधव भेला रह्या, हेम कनै धर प्रेम ॥

८. हेम पढाय पक्का किया, वारु सूत्र सिधंत ।
झीणी झीणी रहस बहु, सीखाई 'धर खंत'[2] ॥

९. शेषे काले हेम ऋषि, भारीमाल रे पास ।
'बहु अधा'[3] भेला रहै, परम प्रीत गुण रास ॥

१०. भारीमाल तणी तदा, व्यावच विविध प्रकार ।
स्वांम सरूप करै घणी, अह निशि में अवधार ॥

११. अधिक विनय व्यावच करी, भारीमाल नै ताय ।
स्वाम सरूप रीझाविया, सुप्रसन्न थया सवाय ॥

*महा गुणधारी रे ॥ ध्रुपदं ॥

१२. संवत अठारै छिहंतरे, गुणधारी रे, कांइ शेषे काल विचार ।
भारीमाल स्वामी कियो, कांई सरूप नों सिघाड ॥

१३. पुर चौमास भलावियो, श्रमण पंच थी पेख ।
गणि चित्त केडै चालतां, कांइ कार्य सरे अनेक ॥

१४. गणपति भणी रीझाविया, कांइ सर्व कार्य सिध होय ।
इह भव पर भव सुख लहै, कांइ समय वचन अवलोय ॥

१५. आचारज री आगन्या, कांइ पालै रूडी रीत ।
परम प्रीत अनुकूल रहै, ते गया जमारो जीत ॥

१६. रामचरित्र दिन नै विषै, कांइ मूढै करी तिवार ।
रात्रि समय व्याख्यान दे, कांई एहवी बुद्धि उदार ॥

१७. धर्म उद्योत थयो घणो, कांई चौमासा मांय ।
हिव चौमासो ऊतर्यां, काई विहार कियो मुनिराय ॥

१८. 'गंगापुर' आवी करी, कांइ जीव ऋषि नै ताय ।
दिख्या दे भारीमाल रा, काइ दर्श करी हरषाय ॥

१९. दिवस कितै भारीमाल नी, कांई सेव करी गुण गेह ।
इतरे बंधन जीव नो, कांई चरण सजोडै लेह ॥

---

१. चीमतरा. रे बर्स दूजो आचाराग गोघुदे सीख्या ।
२. स्वेच्छा ।
३ बहुत समय।
*लय—आज आनंदा रे ।

२०. पूज मेल्या स्वाम सरूप नै, कांई वलि समणी नै ताहि।
सरूप चरण समाप नै, कांइ आया पूजरै 'पाहि'[1]॥

२१. अठंतरे भारीमाल जी, कांइ पोहता परभव मांय।
पट ऋपिराय विराजिया, कांइ सरूप मेव सवाय॥

२२. रीझाया ऋपिराय नै, कांइ अधिक वधायो तोल।
सरूप नै विचरावता, कांई आपी संत अमोल॥

२३. संवत अठार इक्यासीये, कांइ सैहर 'उजीण' चौमास।
चरण दीयो 'पूंजा' भणी, कांई अधिक महोछव तास॥

२४. कोदर नै वंधो कराय नै, कांई मुनी 'वडनगरे' आय।
चारित्र उभय भणी दियो, कांइ महोछव थया सवाय॥

२५. तिणज वर्प पाली मजै, ऋपिराय करी सुविचार।
करी सिंघाडो जीत नो, मेहेल्यो देश मेवाड॥

२६. विचरत - विचरत आविया, कांइ श्रीजीदुवार मझार।
इतरै अप्ट संतां थकी, आया सरूप भीम तिहवार॥

२७. विहार करी त्रिहुं वंधवा, मरुधर देश मझार।
ऋपिराय तणा दर्शण किया, हरप्या पूज तिवार॥

२८. पूज दिख्या दे कोदर भणी, कांई भीम तणो सिंघाड।
कीधो अधिक कृपा करी, वर्प इक्यासीये अवधार॥

२९. सरूप भीम ऋपि जीत नो, त्रिहु सिंघाडा करि तांम।
देश प्रदेश विचराय नै, कांइ अधिक जमाया स्वांम॥

ढाल ४

दोहा

१. देश प्रदेश कियो घणो, भीम ऋपि उपगार।
चरचा वोल सिखाय नै, तार्‌या वहु नरनार॥

२. प्रकृति भद्र पेखी करी, स्वमति अन्यमति सोय।
गुण गावै अति भीम ना, देश - देश अवलोय॥

३. देवै वर व्याख्यान में, अति हेतू दृष्टन्त।
झीणी चरचा धारणा, भीम ऋपी गुणवंत॥

---

१. पास।

४. वर्णन भीम तणो अछै, 'भीम विलास' मजार।
इहां संक्षेप थकी कह्यो, उपगारी अणगार॥

५. अजबू पै कल्लू सती, सुखे रहै गुणधांम।
पांच आठ पनरै सतर, तप वीस पचीस अमांम॥

६. पंच वर्ष में मास पंच, अल्प उदक आगार।
बहु वर्ष इम विचरती, अधिक विनय अवधार॥

७. छेहडै करी सलेखणा, तसु बहुलो विसतार।
पहिलां अधिक उणोदरी, कीधी धर अति प्यार॥

८. तेलै - तेलै तप वली, पारण अल्प आहार।
पचास तेला आसरै, मासखमण वलि सार॥

९. आठ इग्यार किया वली, एकंतर अवधार।
तीन मास रै आसरै, खंखर तन तिह वार॥

१०. आयु अचित्यो आवियो, सागारी संथार।
अजबूजी उच्चरावियो, आसरै पोहर उदार॥

११. संवत अठार सत्यासीये, सुदि श्रावण तेरस सार।
सैहर खेरवा में सती, चाली जनम सुधार॥

१२. *मुनी भद्र सरल सुख दांणी जी, भीम भजी भवो प्राणी जी।
ज्यांरी जग में कीरत जाणी जी, भीम भजो भवि प्राणी जी।
ओतो शासण तिलक पिछाणी जी, भीम भजो भवि प्राणीजी॥

ओ तो पांडव भीम सरीखो, ओ तो भीम ऋषीश्वर नीको जी।
बहु वर्ष चारित पाली, मुनि आतम उजवाली जी॥

१३. छठ अठम दशम तप पंचो, अठ द्वादश पनर सुसंचो।
वलि मास खमण तप सांरो, कोइ जल कोई आछ आगारो॥

१४. वरस बार आसरै सारो, मुनि शीतकाल सुविचारो।
दोय पछेवडी परिहारो, बहु शीत सह्यो गुणधारो॥

१५. उष्णकाल अवधारो, ली आतापन वहु वारो।
नित्य दोय विगै उपरंतो, बहु अधा त्याग धर खंतो॥

१६. संवत अठार सत्ताणूं, विद असाढ वखाणूं।
सातम परलोक सिधायो, ओ तो आउ अचिंत्यो आयो॥

१७. वलि भागचन्द अणगारो, आठम परलोक मझारो।
रह्यो भीम कनै बहु वासो, तिण रैं भीम तणो विश्वासो॥

---

*लय—भजन किया दुख भाजै।

१८. हिव सरूपचन्द गुण सागर, उपगारी अधिक ओजागर।
स्वाम सरूप सोहंदा, चित निमल विमल जिम चंदा ॥

मुनि हस्तमुखी गुण व्रंदा जी, स्वाम सरूप सोहंदा।
पेखत ही परमानंदा जी, स्वाम सरूप सोहंदा ॥ध्रुपदं॥

१९. चरचावादी अति चारु, उत्पत्तिया बुधि उदारू जी।
वहु वार सूत्र वतीसं, मुनि वाच्या हरप वरीसं जी ॥

२०. संजया नियंठा सारं, लधी वंधी अवधारं।
महादंडक गमा प्रसीधा, गंग भंग कंठाग्रे कीधा ॥

२१. समोसरण चरम पद चारु, कंठाग्र कीयो उदारु।
निज बुधि थकी सुप्रसीधा, थोकडा नवा वहु कीधा ॥

२२. पनर लड्यां पिण कीधी, सेर्यां सैतीस प्रसीधी।
तेहना पिण भिन-भिन भेदं, मुनि जाण्या सखरं सुवेदं ॥

२३. ऋपिराय तणी वर सेवा, मुनि करी अधिक स्वयमेवा।
ऋपिराय तणै मुख आगै अधिकारी सरूप सागै ॥

२४. ऋपिराय भणी रीझाया, जद सुप्रसन्न थया सवाया।
जय युवपद पत्र समृद्धो, पूज सरूप नैं लिख दीधो ॥

२५. जय मरुधर देश मजारो, 'नृपइंदु'[1] श्रीजीदुवारो।
ऋपि सरूप करतो सेवा, लिख दीयो पत्र स्वयमेवा ॥

२६. उगणीसै आठे वासो, माह विद चवदश तिथि तासो।
ऋपिराय परलोक सिधाया, महा उपगारी मुनिराया ॥

२७. माह सुदि पूनम जय पाटं, थिर च्यार तीर्थ रा थाटं।
जद सरूप नो वहु तोलो, जय कुडव वधायो अमोलो ॥

२८. ऋपि सरूप नैं तिण वारो, विण पांती च्यारूं आहारो।
वलि अवर ही कुरव समाजो, जय अधिक वधायो जाझो ॥

२९. जय आंण अराधै अखंडित, ऋपि रूप गुणमणि मंडित।
अवसर का जांण 'सधीका'[2], अै तो प्रीत निभावण नीका ॥

३०. कला संत निभावण केरी, ते पिण अति अधिक घणेरी।
'निज खाता पणो मिटाई'[3], हित सूं देवै समजाई ॥

३१. आसता सांसण री तीखी, ऊंडी आलोचन नीकी।
त्रिहुं काल विचारणा ताह्यो, ते पिण दिल में अधिकायो ॥

१. आचार्य रायचंदजी।
२. विशेष।
३. सीर साझा—स्वार्थ भावना को मिटाकर।

३२. वर वखांण में समभावै, सासण नै इधिक दृढावै।
करै 'कटमी'[1] वतका कोई, जाणै जैहर सरीखो सोई ।।

३३. समकित में दृढ अत्यंतोजी, स्वामी देख न हुवै भयभ्रंतो।
जिला नी 'चिड'[2] अधिकायो, एहवा सरूप महा मुनी रायो ।।

३४. खमता दमता वर समता, ऋषि रहै शासण में रमता।
वलि बालपणा रे मांह्यो, मुनि सीत खम्यो अधिकायो ।।

३५. चौथ छठादिक सीधों, जीत पनर दिवस लग कीधो।
भारीमाल हेम ऋषिरायो, समचित्त सु सेव सवायो ।।

३६. बहु मुनि अज्जा नै सारो, वर चरण दीयो सुखकारो।
वलि बहु मुनि नै सुखदायो, ऋषि पंडित मरण करायो ।।

३७ बहु श्रावक श्रावका कीधा, मुनि जग मांहै जश लीधा।
बहु सुलभबोधी नरनारो, कीया सरूप अधिक उदारो ।।

३८. वर शिख्या दे चित्त धामी, बहु जन नी मिटाई 'खामी'[3]।
उवज्झाय समा अणगारो, अै तो सरूप गण सिणगारो ।।

३९. ज्यांरे परभव री अति चिंता, अै तो गुणग्राही गुणवंता।
जय गणपति सूं अति प्रीतं, ज्यारी विमल निमल अति नीतं ।।

४०. अह निशि में सूत्र सज्झायो, करै सरूप ऋषि सुखदायो।
इत्यादिक अधिकायो, गुण सरूप मांहि सवायो ।।

४१. शक्ति घटी इम जाणी, जय गणी रहै निकट पिछांणी।
वार-वार ही दर्शण करंतो, चित्त समाधि उपजावंतो ।।

४२. जय गणी पणवीसे वासो, चउमास करी गुण रासो।
आया सैहर लाडणू सीधा, दर्श सरूप ना जय कीधा।

ढाल ५

दोहा

१. निसुणी जय गणी आवता, सरूप साहमा आय।
जनव्रंद पेखत जयगणी, वंदणा करी हरषाय ।।

---

१. निन्दात्मक।

२. नफरत।

३. कमी।

२. मुनि मेलो महिमा निलो, देख-देख जनव्रंद।
हुलसै चित्त विकसायवै, पांमै परमानंद॥

३. गणपति संगे सरूप ऋषि, आया सैहर मजार।
सति सिरदारांजी आदि वहुं, वंदै वारंवार॥

४. मासखमण तिहां रही करी, विहार कियो जय ताय।
सुजाणगढ वीदासरे, वली लाडणू आय॥

५. नव दिन दरसण करी, कियो सुजाणगढ विहार।
दिवस तीसमै आविया, सैहर लाडणूं सार॥

६. दिन-दिन प्रति वैराग नी, वतिका अधिक विसेख।
सांभल सरूप हरपता, वारू चित्त विवेक॥

७. आलोवण आछी करी, वार-वार कर याद।
सखरो कलस चढावियो, अति मन धर अह्लाद॥

८. महाव्रत आरोपाविया, अतिचार आलोय।
पाप अठारे पच्चखिया, त्रिविधे-त्रिविधे जोय॥

९. खमत खांमणा वलि किया, निमल चित्त निकलंक।
न्हाय धोय नै जिम हुवै, तिम करि आत्म अवंक॥

*सुगुण सनूरा गुणनिध रूडा, सरूपचन्द ऋपिराया।
'भवदधिपाज'[1] जिहाज जगतारक, सांसण तिलक सोभाया॥ ध्रुपदं॥

१०. तीज प्रात जय गणपति पूछ्यां, कहै मुज तनु में साता।
आहार-स्थान आवी आहाराज कीधो, दिने मुनि शीख आख्याता॥

११. मघ मुनि साता पूछ्यां वोल्या, कांयक दोहरो जीव ताह्यो।
गणपति म्हारे कांय न राखी, 'ऊणारत'[2] मन मांह्यो॥

१२. आथ्रण रा तमाखू मसली नै, शयन स्थान तिहां आया।
जय गणी सिरदारांजी साता पूछै, इम वोलै मुनिराया॥

१३. आज तो दोहरो रह्यो जीव म्हांरो, हिवडां तो छै साता।
सुखदाता छै आप तणै तनु, इण विधि वोलै विख्याता॥

१४, इतलै आहार लेइ मुनि आया, करत अल्प सो आहारो।
पुद्गल 'हीणा'[3] पडवा लागा, उदक पायो तिह वारो॥

*लय—लाल हजारी रो जामो।

१. संसार समुद्र की पुल (सेतु)।
२. ऊनायत (कमी)।
३. कमजोर।

१५. आसरै मुहुर्त्त रात्रि गयां, पच्चखायो सागारी संथारो।
जय गणपति पूछ्यां थी भरियो, दोय वार हुंकारो॥

१६. सुखे बैठा करि नै ऋषि कालू, राख्यो कर आधारो।
जय गणपति परिणांम चढावै, देवै सरणा च्यारो।

१७. नरक निगोद तणा दुख भाखै, चक्री सनत कुमारो।
गज सुखमाल नें चरम जिनेश्वर, कष्ट सह्यो धर प्यारो॥

१८. सूको तृण पूलो अग्न विषै जिम, सिघ्र भस्म होय जावै।
तप्त तवे जल बिंदु विध्वंसै, तिम मुनि कर्म खपावै॥

१९. अल्प काल नो कष्ट अछै ए, भारी सुखां रे मांह्यो।
उपजता दीसो इम गणपति, वार-वार कहै वायो॥

२०. कोडी साठे कोड रूपइया रो, खत वलै छै एहो।
समभावै कर कष्ट सह्यां थी, बहु 'अघबंध'[१] कटेहो॥

२१. आप घणा नै दीख्या दीधी, चरण पाल्यो बहु वासो।
घणा नै चरण नो साज देई, बहु लाभ कमायो हुलासो॥

२२. इत्यादिक जय गणपति नें, मघराज वदै वर वायो।
मुहुर्त्त आसरै दिवस चढ्यां थी, पहुंता परभव मांह्यो॥

२३. उगणीसै पणवीसे जेठ विद, चोथ अनें सनिवारो।
जन्म सुधार्‍यो कार्य सार्‍यो, सरूपचन्द अणगारो॥

२४. मुहुर्त्त एक 'मठेरा'[२] पाछै, चिहुं लोगस नो चारु।
काउसग्ग करी नै तनु बोसरायो, मुनिवर अधिक उदारु॥

२५. इकतीस खंडी मांढी कीधी, जाणक देव विमांणो।
सोना रूपा ना फूल उछाल्या, टका रुपइया जांणो॥

२६. विविध वाजित्र कोतल मुख आगल, घुरै नगारा नीसांणो।
किरतब ए संसार तणा छै, धर्म पुन्य मत जाणो॥

२७. लोक हजारां तणै आसरै, पूठे वायां गुण गावै।
'दग्ध क्रिया'[३] कर लोक आया घर, सरूप याद बहु आवै॥

२८. शासण भार धुरा जेह नै भुज, शासण तिलक सोहतो।
गणाधार गणस्तम्भ गुणीवर, एहवो सरूप सुसंतो॥

---

१. पाप कर्म का वधन।
२. कुछ कम।
३. दाह सस्कार।

२९. सुखदाई चिहुं संघ भणी फुन, शिक्षा सुमति दातारो।
मिष्ट वचन करि 'खोड'[1] मिटावत, एहवो सरूप अणगारो॥

३०. चिहुं तीर्थ नो हित सुख वंछक, सुद्धगति म्हेलण कांमी।
संशयतिमिर-हरण जिम भांनु, एहवो सरूप सुस्वांमी॥

३१. विविध दृष्टांत हेतू करि नै फुन, वचनामृत करी जानी।
शासण दीपावक गण सोभावक, एहवो सरूप सुज्ञानी॥

३२. परम प्रीति गणपति सूं तिण रे, पय जल जेम पिछांनी॥
अधिक 'नेठाव'[2] तुरत नहीं झलकै, एहवो सरूप सुध्यानी॥

३३. इत्यादिक गुण सरूप स्वामना, कहिता पार न आवै।
चित हुलसावै तन विकसावै, सुगुण तणै मन भावै॥

३४. ए विस्तार कह्यो छै तिण में, विरुध आयो हुंवै कोई।
अरिहंत सिद्ध तणी शाखे मुज, मिच्छामि दुक्कडं जोई॥

३५. उगणीसै पटतीसे जेठ विद, चोथ अनें गुरुवारो।
जैपुर सैहर में जोड रची ए, जय गणी हरप अपारो॥

---

१. स्खलना।
२. धैर्य।

६

भीम विलास

ढाल १

दोहा

१. अरिहंत सिध नै आयरिया, उवज्झाय अणगार।
ए पांच पद प्रणमी करी, कहुं भीम चरित सुखकार॥

२. वासी रोयट सैहर ना, पिता आइदांनजी 'वदीत'[1]।
कल्लू कूखे ऊपना, सरूप भीम अरु जीत॥

३. चमालीसे संजम लियो, 'अजबू' भूवा पहिछांण।
तेह परसंगे अति घणो, प्रेम धर्म सू जांण॥

४. समत अठारै गुणंतरे, जयपुर सैहर मझार।
भाग जोगे गुरु भेटिया, हुवा संजम नै त्यार॥

५. सगायां छिटकाय नै, बधव तीन तिवार।
मात सहित च्यारूं जणा, लीधो सजम भार॥

६. पोस सुदि नवमी दिन, सरूपचन्द नै देख।
भारीमाल संजम दियो, महोछव थया विसेख॥

७. दिख्या देवा जीत नै, भारीमाल बहु जांण।
मेल्या ऋषिरायचंद नै, ऊजम अधिको आंण॥

८ महा विद सातम रै दिन, ऋषरायचद रै हाथ।
जीत संजम लियो वैराग्य सू, मिलिया सुगुरु सुनाथ॥

६ फागुण विद इग्यारस दिने, 'भारीमाल ऋपिराय'[2]।
माता सहित ऋपि भीम नै, दिख्या दीधी ताय॥

*भीम सुखकारी॥ ध्रुपदं॥

१०. भारीमाल ऋपिरायजी, गुणधारी रे विहार जैपुर सू कीध।
भीम सुखकारी रे।
बडी दिख्या पहली दीधी भीम नै, गुणधारी पछै जीत नै दीध॥

११. भीम मुनीसर मोटका, भीम बडो सुविनीत।
विनय विवेक विचार में, जांणै रूडी रीत॥

---

१. प्रसिद्ध।
२. भारीमालजी स्वामी।
*लय—आनंदा रे

१२. सेव करै साचै मने, सुगुर तणी धर पेम।
व्यावचियो मुनि वाल हो, निरमल पालै नेम॥

१३. साताकारी स्वाम नै, करै व्यावच विविध प्रकार।
वारू विनय करतो थको, मन मांहि हरप अपार॥

१४. संतां नें सतियां भणी, साज देवै धर खंत[1]।
आहार पांणी दे आण नै, गिरवो नें गुणवंत॥

१५. भीम सरल हीया नो धणी, भीम प्रकृति नो भद्रीक।
कार्य करवा उदमी घणा, सूरपणें माहसीक॥

१६. गुरकुलवासे रहतो छतो, सीखै सूत्र सिवंत।
कोड घणो चरचा तणो, सोम प्रकृतिचित 'संत'[2]॥

१७. तीन सूत्र मूंहढै सीखिया, वले सीख्या घणा वखांण।
उपगारी गुण आगलो, थयो घणां सूत्रां नों जांण॥

१८. वहु क्रोध मांन माया नही, वहु लोभ तणो परिहार।
सुखदाई सहु गण भणी, दिन-दिन अधिको प्यार॥

१९. सरधा में संठो घणो, पकी देव गुरां री प्रतीत।
धोरी जिनमत थापवा, निरमल लज्या नीत॥

२०. परभव री चिंता घणी, किया विविध उपवास।
'जाभेरा'[3] वर्स वारा लगै, रह्या वडां रे पास॥

२१. समत अठारै इक्यासीये, ऋपराय वधारयो तोल।
'टोलो सूंप्यो'[4] भीम नैं, आप्या संत अमोल॥

२२. आज्ञा ले ऋपराय नी, भीम ऋषि तिण वार।
गांमा नगरां विचरता, आप तरै पर तार॥

ढाल २

*ऋप भीम भारी, उधारण जशधारी॥ ध्रुपदं॥

१. भीम सुगरनो वडो सुवनीत, आज्ञा पालै रूडी रीत।

१. स्वेच्छा।
२. शांत।
३. कुछ अधिक।
४. सिघाड़ा वनाया।
*लय—ब्रजबासी लाला।

६. मुनिवर रे ! बारै पनरै तप भलो, मासखमण श्रीकार ।
कोई तप आछ आधार सूं, कोइ तप उदक आगार ॥

७. मुनिवर रे ! वर्स बारै रै आसरै, शीतकाल में सोय ।
पछेवडी दोय परहरी, सीत सह्यो अवलोय ॥

८. मुनिवररे ! उष्णकाल आतापना, लीधी बोहली बार ।
सम दम सत सुहामणो, भीम गुणां रो भंडार ॥

९. मुनिवर रे! रस नों त्याग कियो ऋषी, नित विगै दोय उपरंत ।
उत्तम करणी आदरी, ध्यांन सज्झाय रमंत ॥

१०. मुनिवर रे! समरण जाप सदा धरचो, पंच पदां नों जांण ।
नेम अभिग्रह निरमला, भीम गुणां री खांन ॥

११. मुनिवर रे! सील धरचो नववाड सू, धुर बाला ब्रह्मचार ।
ए तप उत्कृष्टो घणो, सुरपति प्रंसंसै सार ॥

१२. मुनिवर रे ! 'पंच सुमत सुमतो'[1] सदा, गुप्तधारी वलि तीन ।
पंच महाव्रत निरमला, ध्यांन सदा लहलीन ॥

१३. मुनिवर रे ! भीम ऋषी इण भांत सूं, लियो जनमनो लाह ।
भीम तणा गुण देख नें, गुणिजन कहै वाह-वाह ॥

ढाल ४

दोहा

१. घणा वर्सा लग भीम ऋषी, विचरचा जन पद देश ।
'चूप'[2] घणी चरचा तणी, मेटै भर्म कलेश ॥

*ऋष भीम गुणां रो भंडार, भजो तुम भाव सू जी ॥ध्रुपदं॥

२. मुरधर देश मेवाड, मांहि मुनि विचरियो जी ।
वलि मालव देश मझार, उपगार आछो कियो जी ॥

३. वली देश हाडोती ढूंढार में, धर्म दीपावतो जी ।
हरियांणा देश मझार, जिनमत जमावतो जी ॥

---

१. पच समिति के पालन मे सावधान ।

२. उमग ।

*लय—धनू रो नाचणो

४. कियो थली देश में थाट, भीम ऋष आय नै जी।
मत पातसा नों दियो दाट, लोका नै समझाय नै जी॥"[1]

५. घणां बायां भायां नै ताय, चरचा में पक्का किया जी।
सेरयां थोकडा सिखाय, घट में ज्ञान घालिया जी॥

६. तेतो जप रह्या भीम रो जाप, उपगारी जाण नै जी।
भीम मेटया घणा रा संताप, हरष मन आंण नै जी॥

७. वली तप रा थोकडा थाट, कराया घणा भणी जी।
भीम कियो थली में 'घहघाट'[2], कीरत जग में घणी जी॥

८. पछै चरम चौमासो श्रीकार, वाजोली में करयो जी।
तठै कियो घणो उपगार, सुमतारस थी भरयो जी॥

९. चौमासो उतरयां तांम, भीम पादू आय नै जी।
नंदोजी नै दिख्या तिण ठांम, दीधी समझाय नै जी॥

१०. पछै विहार करीनै ताय, पूज पासे आविया जी।
दरशण करनै हीयो विगसाय, परम सुख पावियो जी॥

ढाल ५

दोहा

१. पूज दयाल कृपाल गुर, जाण्यो भीम नो मन्न।
नंदो सूप्यो भीम नै, तन मन थयो प्रसन्न॥

२. भीम घणो हरषत हुवो, गुण बोलै वे कर जोड।
ऋषराय विना कहो भीम ना, कुण पूरै मन-कोड॥

३. दिवस घणा ऋषराय नी, सेव करी ऋष भीम।
परम पूज ना पोप थी, हिवडो होय गयो हीम॥

---

१ स्वामीजी के समय गण से वहिर्भूत साधु तिलोकचदजी, चद्रभाणजी ने स्थली प्रदेश में पातसा' (बादशाह) की तरह अपना प्रभाव जमा रखा था। अधिकाश लोग उनके अनुयायी बन गये थे। मुनि भीमजी ने अनेक लोगो को समझाकर भिक्षु शासन का अनुयायी बनाया। क्रमश. उनका प्रभाव घटता गया और तेरापथ धर्म सघ का विस्तार होता गया।

२. रगरली।

४. *परम पूज गुण जांण, भीम भणी 'सुविहांण'[1] आछै लाल ॥
साहज संजम नो आछो दियो जी ॥ध्रुपदं ॥

५. ऐसा आचार्य जोय, ज्यांरै 'उणारत'[2] किम होय ।
पूज तणो जस छावियो जी ॥

६. भाग बली ऋषराय, ज्यांरा गुण पूरा कह्या न जाय ।
हस्तमुखी हीयै निरमला जी ॥

७. सुखदायक महाराज, संजम तपनों साज ।
च्यार तीर्थ नैं सुहामणा जी ॥

८. पूज तणा गुण देख, आवै हरख विसेख ।
वचनअमृत 'वाला'[3] घणा जी ॥

९. मेट्या घणां रा फंद, पेखत पांमै आनंद ।
गुण भारी गिरवा तणां जी ॥

१०. भीम चित में 'समाध'[4] पूज करी निरावाध'[5] ।
भारी कुरब बधारिया जी ॥

११. भागचंद पूंजलाल, वलि नंदो आप्यो सुविसाल ।
चुरू चौमासो भलावियो जी ॥

१२. विचरत-विचरत सोय, 'पडियारे' 'रतनगढ' होय ।
'चुरू' भीम पधारिया जी ॥

ढाल ६

दोहा

१. मास खमण चुरू रह्या, भीम ऋष सुवदीत ।
उपगार तो आछो कियो, हुइ जिन मार्ग नी जीत ॥

२. चौमासा आडा दिन जांण नै, विहार कियो तिण वार ।
'विसाउं' 'मैंणसर' होय नैं, आया रामगढ सैहर मझार ॥

---

*लय—आछै लाल

१. उत्तम ।

२. ऊनायत ।

३. प्रिय ।

४. समाधि—शांति ।

५. साता (निर्विघ्न सुख) ।

*धिन-धिन भीम ऋषीसर भारी ।। ध्रुपदं ।।

३. मास खमण 'रामगढ' मांहै कीधो, भीम ऋष संत च्यार सहीत ।
निरमल भावना भाय रह्या छै, संजम तप सूं पूरण प्रीत ।।

४. सैहर 'रांमगढ' सू विहार करी, पाछा 'विसाउ' में आया चलाय ।
आसाढ विद छठ तिथ रै दिन, जितरै आउ अणचिन्त्यो आय ।।

५. छठ रै दिन असाता उठी, परगट पीडीजै कायो ।
भीम ऋषी सहै सम परिणांमै, निज कृतकर्म जांणै मुनिरायो ।।

६. ज्यांरै संजम तप रो जोर घणो छै, वली सूत्र सिद्धंत रा जांण विसेखो ।
ते वेदना आयां 'समो अहियासै'[1], भीम ऋषीसर एहवा देखो ।।

७. वमन थई तन बेदन वाधी, वली दसतां लागी तिण वारो ।
'बलण'[2] पिण शरीर में उपनी परगट, पिण सम प्रणांमै सहै गुणधारो ।।

८. सातम दिन पिण वेदन न मिटी, भीम तणा पिण चढता परिणांमो ।
आलोइ निंदी नै 'निशल'[3] हुवा, खमत खामणा करै ले ले नांमो ।

९. महाव्रत फेर आरोपै मुनिवर, ऋष 'पूंजा' नै कहै करावो संथारो ।
शरीर वेदन अधिक जांणी, संथारा रो कहै वारूवारो ।।

१०. सागारी अणसण ऋष 'पूजै' करायो, खमत खामणा करता साधू पाय पडिया ।
लुल-लुल लटका करै वारूंवार, हेज तणां ज्यांरै हीया भरिया ।।

११. पोहर रै आसरै अणसण सागारी, पाछलो दिन थोडो रह्यो सोय ।
निरमल भावनां भावता मुनिवर, तिण वेला आउखो आयो जोय ।।

१२ समत अठारै वर्स सताणुअे, असाढ सातम दिन जोय ।
पाछलो महूरत दिवस आसरे, भीम ऋषी पोहता परलोय ।।

१३. धिग-धिग ए संसार भणो रे, काल आगे किण रो मूल न जोर ।
थोडा में काल कियो अणचिन्त्यो, भीम ऋषी गुणकर महा घोर ।।

१४. सांभल नैं करडी घणी लागी, साध श्रावक सुलभवोधी नै सोय ।
सुखदाई सुवनीत नैं सुगणो, भीम नै आदर करै बहु लोय ।।

१५. भीम ऋषी आउखो पूरो कियो, मांभल नैं श्रीपूज महाराज ।
मन मांहै 'करडी'[4] अति लागी, भीम उपगारी हुंतो गुण जिहाज ।।

***लय—आ अनुकंपा श्री जिन भाखी**

१. समभाव से सहन करना चाहिए ।
२. जलन ।
३. निशल्य (सरल) ।
४. कष्टप्रद ।

१६. भीम तणा गुण अति घणा कीधा, श्रीमुख पूज कृपाल दयाल।
शिप सुवनीत हुवै सुखदाई, कीरत तेहनी कीधी कृपाल॥

१७. जाझो अठाइस वर्स संजम पाल्यो, चवदै वर्स आसरै रह्या घर मांहि।
सर्व आउ बयालीस वर्स आसरै, भीम ऋषीसर पायो ताहि॥

१८. आठम दिन आउखो पूरो कीधो, भागचंद ऋष ओ पिण भारी।
तपसी त्यागी वैरागी छै सुगणो, वर्स घणां विचर्‌या भीम लारी॥

ढाल ७

दोहा

१. भीम ऋषीश्वर मोटको, जश फेल्यो संसार।
निरमल चारित अराधियो, गुण गावै नरनार॥

२. ज्यां-ज्यां विचरयो भीम ऋषी, उपगार कियो ठांम-ठांम।
नरनारी याद करै घणां, ले ले भीम रो नांम॥

*भजियै भीम मुनी सदा साधुजी॥ ध्रुपदं॥

३. भारी भीम गुणा रा भंडार, धारी सतगुर सीख उदार।
सुखकारी अणगार, जाउं थांरी वलिहार॥

४. कीधो थे तो जनम कल्यांण, दीधो थे तो जग अभैदान।
सुमति गुप्त सुध ध्यांन, 'धोरी'[1] भीम वृपभ समांन॥

५. वारूं थांरी अमृत वाय, चारु धरयो चरण सुखदाय।
सोभा गण में सवाय, गुण पूरा कह्या न जाय॥

६. वांच्या थे तो सूत्र वतीस, राच्या चरचा ग्यांन जगीस।
प्रतीत विसवा वीस, सूरा भीम सिंघ सरीस॥

७. आछी थांरी प्रकृति अमोल, तीखो थांरो गण मांहे तोल।
धीरजवांन अडोल, मेटचा थे तो भय भर्म पोल॥

८. घाल्यो थे तो घणां रै घट ग्यांन, धरै ते तो भीम रो ध्यांन।
रात दिवस सुध मांन, एहवो हुंतो भीम सुजांण॥

---

*लय—मोक्ष मार्ग मुसकिल······।

1. मुखिया।

९. दीयो थे तो घणा नै उपदेश, मेटचा ज्यांरा अधिक कलेश।
थे उपगारी विशेष, जाप थांरो जपै हमेश॥

१०. भारी थांरी मुद्रा उदार, प्यारी सूरत वांण सुखकार।
याद करै नरनार, 'असा'[1] हुंता भीम अणगार॥

११. दीधी थे तो घणा रै समाध, टाल्या थे तो घणा रा अपराध।
नांम जप्यां ही अह्लाद, करै थानैं बहुजन याद॥

१२. पोहता थे तो परलोक मजार, लागी करली घणानैं तिणवार।
धिग-धिग ए संसार, आणै यां री 'आरत'[2] अपार॥

१३. पाया सतगुर पूज रायचंद, मणधारी मोटा मुणंद।
तास प्रशाद सुखकंद, पाया भीम अधिक आणंद॥

१४. कीयो भीम चरित उदार, भर्म भय मेटण हार।
सुख संपत दातार, एहवा भीम बाल ब्रह्मचार॥

१५. अठांणूअे समत अठार, वैशाख विद सातम सनवार।
भीम चरित सुखकार, रच्यो चूरू सैहर मझार॥

---

१. ऐसे।
२. दुःख।

७
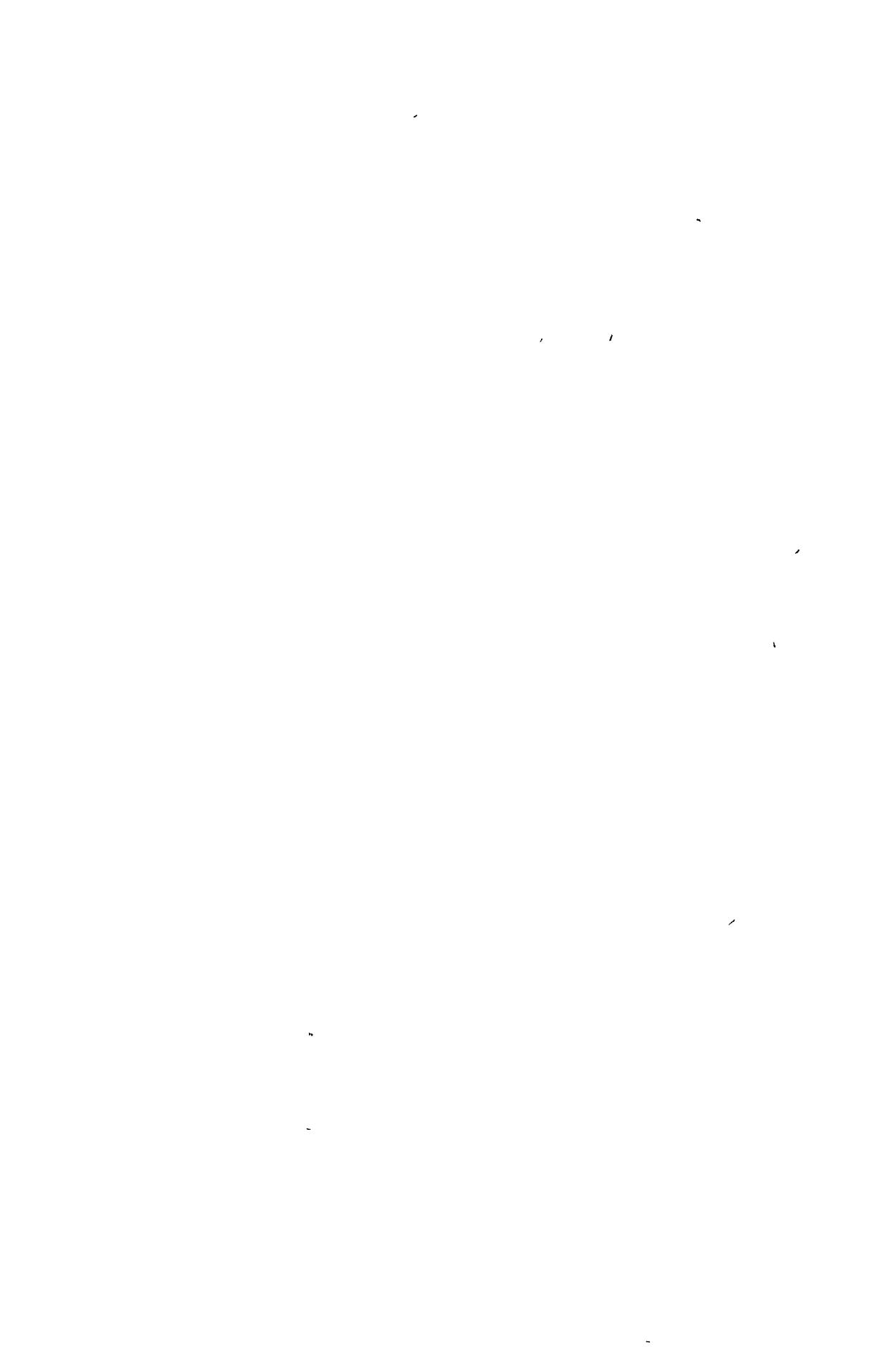
मोतीजी रो पंचढालियो

ढाल १

दोहा

१. वासी 'सीवा' ग्राम नो, 'मेघ - सुतन'[1] सुविधान ।
बड मोती महिमानिलो, उत्तम जीव सुजान ।।

२. सालेचा वोहरा भली, जाति तास अवधार ।
ओसवंश में अवतरयो, वडै साजन सुविचार ।।

३. धर्म मांहि समझै नहीं, संत न सेव्या कोय ।
भेषधारयां रा जोग सूं, तसुं गुरु कीधा सोय ।।

४. काका तणी दुकांन थी, दक्षिण मांहै ताम ।
'पीतरिया'[2] पासे तदा, मोती रहितां आम ।।

*मोती संत बडो सुखकारी रे, तिण री 'श्रमण-मुद्रा'[3] हद प्यारी रे ।
वारू नीत निपुण गुणधारी रे ।।ध्रुपदं।।

५. एक दिवस बैंगण लेइनैं, आवंता अवधारो ।
'खंड्या'[4] नो एक श्रावक बैठो, देख लियो तिहवारो रे ।।

६. मोती नैं बोलावी नैं, इह विध बोलै वायो ।
थे वेंगण 'नीलोती'[5] खावो, एह में पाप अथायो ।।

७. विविध पणै समझायां मोती, पाप तणो भय पायो ।
जावजीव वैंगण खावा रा, त्याग किया मन ल्यायो ।।

८. केइक अवसर नीलोती ना वलि, त्याग किया तिण वारो ।
पछै आयो पीतरिया पासे, सुणिया तिण समाचारो ।।

९. पीतरियै तब 'बैदो'[6] कीधो, मोती नैं कहै एमो ।
थे बैंगण रा त्याग कीया किम, ए किम निभसी नेमो ।।

१०. तब मोती मन मांहि विचारयो, झगडो कीधो काकै ।
जावजीव नीलोती सहुना, कीधा त्याग 'झडाकै'[7] ।।

---

१. मेघराजजी के पुत्र ।
२. चाचा ।
३. साधु-मुद्रा (साधु का रूप) ।

***लय—एतो जिन मार्गरा राजा**

४. स्थानकवासी ।
५. हरियाली (सब्जी) ।
६. झगड़ा ।
७. तुरन्त ही ।

११. 'सामायिक नी पाटी'[1] पिण, मोती नै मूहढै नावै।
ते खंडी ना श्रावक पै वैसै, तव तेह करावै ॥

१२. इह विध द्रव्य सामायिक करतो, नित्य प्रति तिण पै आवै।
धर्म ध्यांन करणो मोती रे, हिवडै घणो सुहावै ॥

१३. तब काकै वलि भगडो कीधो, तूं सामायिक करतो।
दुकांन रो तो काम करै नही, धेप मोती सूं धरतो ॥

१४ तब मोती चिंतै ए देवै, धर्म तणी अंतरायो।
तो हिवै मुझनै संजम लेणो, नहीं रहिणो घर माह्यो ॥

१५. एम विचारी बात दिख्या री, प्रगट करी तिह वारो।
ठांम-ठांम रा लोक आवीनै, वरजै तास अपारो ॥

१६. पिण मोती रो मन 'चरण'[2], लेवा थी मूल न भागो।
ए तो जीव हलूकर्मी छै, चढ़तो तसुं वैरागो ॥

१७. लोक कहै दिख्या थे लेवो, जो घर में नहीं रहेवो।
तो थे तेरापंथी साधां पासे, दिख्या लेवो ॥

१८. अवर टोला तो ढीला छै अति, त्यां में चरण म धारो।
ए वचन सुणें नैं मोती रै मन, वैठी नही तिवारो ॥

१९. जव वार-वार मरुधरियां लोकां, मोती नैं समजायो।
जद मोती रे मन में वैठी, हलुकर्मी ए ताह्यो ॥

२०. वात दिख्या नी अति ही विस्तरी, इह अवसर रै मांह्यो।
जीमणवार थयो किण ठांमे, जन वहु जीमण जायो ॥

२१. अश्व जाति ऊपर वैसी नै, मोती पिण तिण वारो।
जीमण वार विषै जीमण नैं, जावै छै जिह वारो ॥

२२. किण ही लोक कह्यं तिण अवसर, ए जावै इहवारी।
दिख्या लेवा त्यार थयो छै, वलि हय नी असवारी ॥

२३. ए वचन मोती सांभल नै, हय थी तुरत उतरियो।
जावजीव सहु असवारी ना, त्याग किया गुणदरियो ॥

२४. किणहिकजन वलि इहविध आख्यूं, ए चारित्र लियै विदेशी।
पिण पग मांहि 'पांनही'[3] पहिरै, ए स्यूं चारित्र लेसी ॥

---

१. एक मुहूर्त तक सावद्य कार्य का त्याग करने को सामायिक कहते, हैं उसे ग्रहण करने की विधि।
२. साधुत्व।
३. जूता।

२५. इम सुण मोती जेह पानही, पग थी तुरत उतारी।
जावजीव पगरखीं पैहरण, त्याग किया तिह वारी॥

२६. जीमणवार में 'निश भोजन'[1], करतां कोयक जन भाखै।
चरण लेण नैं त्यार थयो ए, वलि निश भोजन चाखै॥

२७. ए लोक नो वचन सुणी नैं, मोती तुरत उमंगे।
निश में च्यारूं आहार भोगवण रा, त्याग किया 'चित चगे'[2]॥

२८. इम वैराग वाधतू दिन-दिन, पाप थकी ह्वै 'कांनै'[3]।
ठांम-ठांम जन बहु वरजै, मोती मूल न मानै॥

२९. काको थाको कहै मोती नै, थे निज देशे जावो।
तुज मात पिता बंधव रै आगै, पिण मोनै क्यूं संतावो॥

३०. तब मोती दक्षिण थकी चालियो, 'पग अलवाणै'[4] ताह्यो।
'चौविहार'[5] वलि रात्रि विषै पिण, मन में नही 'तमाह्यो'[6]॥

३१. आसरै कोस तीन सौ इह विध, आयो पाली मांह्यो।
तिहां भारीमालजी आदि संतां रा, दर्शण मोती पायो॥

३२. सोलह वर्स आसरै वय तसुं, दिल में अति वैरागो।
कहै हूं दिख्या लेसूं स्वामी, घर रहिवा मन भागो॥

३३. इम कही निशे रही तिहां थी चाल्यो, 'सीहा' ग्रामे आवै।
मात पिता बंधव भूआ नै, समाचार संभलावै॥

३४. पहिली ढाल विषै मोती नो, त्याग वैराग वखांण्यो।
दक्षिण थइ निज ग्रामे आयो, जग सहु भूठो जाण्यो॥

ढाल २

दोहा

१. भारीमालजी तिण समय, वारू करी विचार।
दिख्या देवा म्हेलिया, हेम भणी तिण वार॥

---

१. रात्रि भोजन।
२ शुद्ध मन से।
३ दूर।
४ नगे पैर।
५. चारो प्रकार का आहार (अशन-पान-खादिम-स्वादिम) न करना।
६. रोष।

२. हेम जीत मुनि आदि दै, आया 'सीवा' ग्राम।
मोती रै घर 'चोतरो'[1], तिहां उतरिया ताम ॥

३. तब भूआ आवी करी, 'अगल 'डगल'[2] बहु वाय।
उतावली बोली घणी, पिण हेम तणै न 'तमाय'[3] ॥

४. मोती नैं सीखावियो, जाण पणो बहु ताय।
पछै 'खीमारै' आविया, हेम महा मुनिराय ॥

मोती जन प्यारे ॥ ध्रुपदं ॥

५. *दीर्घ मोती प्यारे, तिण रै दिल वसियो वैरागो ॥
'सीहवाथी 'खीवारो' ग्रामो, ओ तो कोस मठेरो तांमो।

६. तिहां हेम रा दर्शण काज, ओ तो आवै मोती समाज।
तिण रा मन माहि हरप अतंतो, मोती अधिक जाणपणो सीखंतो ॥

७. तिण 'खीवाडा' मांहै वसै, जवर राज में तांम।
रांमस्नेह्यां रा मत मझै, कूंपाराम तसु नांम ॥

८. कूंपाराम कहै तिह वारी, तू थयो दिख्या लेवा नैं त्यारी।
थारै मस्तक 'मोहलियो'[4] भारी, आछा वस्त्र पहिरण उदारी ॥

९. वर मूंगिया री ए माला, गले सोहै अति सुविशाला।
वारु वींद सरीखो दीसै, देखता हिवडो 'हींसै'[5] ॥

१०. तूं धुर वय संजम लेवै, घर का इम किम आग्या देवै।
थारै चरण लेणो 'शिव मागो'[6], तो तू न्हाख दै शिर नी पागो ॥

११. वारू गेहणा वस्त्र 'उतारी, कर साधू नो रूप उदारी।
पछै मांग खावै सुविख्यातो, इम आज्ञा देवै मा तातो ॥

यतनी

१२. मोती सांभल नै तिण वार, वारू वस्त्र गेहणा उतार।
साधू रूप कियो सुविचार, मांग खावै ग्राम मझार ॥

---

१. चबूतरा।
२. अट-संट।
३. गुस्सा।
*लय—ज्यांरे सोभे केसरिया साडी
४. रगरगीली पगड़ी।
५. उल्लसित होता है।
६. मोक्ष मार्ग।

१३. तब घरकां आज्ञा नहीं दीधी, तात अधिक अजोग प्रसीधी।
पछै ग्राम 'खीवारा' थी सारो, हेम विहार कियो तिण वारो ॥

१४. मोती रा चढता परिणामो, दिख्या लेवा हरष अति तामो।
दूजी ढाल विषै सुवृतंतो, मोती आज्ञा नो उद्यम करंतो ॥

ढाल ३

दोहा

१ मोती खावै मांग नै, तब कोप्या घर का ताहि।
पकडी नै आण्यां तदा, घाल्यो 'बेडी'[1] मांहि ॥

२. एक मास रै आसरै, रह्योज बेडी बंध।
पिण चढता परिणाम अति, मोती तणा सुसंध ॥

*सुणजो बात मोती तणी ॥ ध्रुपदं ॥

३. एक दिवस तिण ग्राम में, मंड्यो तमासो ताम।
तेह तमासो देखवा, बहु लोक आया तिण ठाम ॥

४. मोती ना घरका तदा, ते पिण देखण ताय।
तेह तमासै आविया, मोती अवसर पाय ॥

५. दीर्घ पत्थर सूं मोती तदा, तोड़ न्हाखी तिण वार।
तत्क्षिण बारै नीकल्यो, मांग खायै जिह वार ॥

६. दिवस घणा लग मांगतां, पकडी आण्यो फेर।
जनक दिया दुख अति घणा, अति दृढ मोती सुमेर ॥

७. वलि ऊंचा चोतरा थकी, 'पटक्यो'[2] मोती नै ताम।
पकडी नै 'घीसालियो'[3], तो पिण दृढ परिणांम ॥

८. मोती मन में विचारियो, मांग खांधा थी ताय।
आज्ञा देता दीसै नही, तो करिवू 'कवण उपाय ॥

१. कैदियो के पावो मे डाली जाने वाली लोहे के छल्लो की जोडी।

***लय—ज्यांरे शोभे केसरिया साडी**

२. गिराया।

३. घसीटा।

९. घर की रोटी खावूं सदा, न करूं काम लिगार।
इम जो जनक 'कायो', हुवै तो आज्ञा देवै सार।।

१०. एहवी करी विचारणा, रोटी घर की खाय।
किंचित काम करै नही, बैठो जम ज्यूं ताय।।

११. लोटी जल की भरै नही, घर का अर्थे तांम।
वलि वालक राखे नहीं, इत्यादिक वहु कांम।।

१२. घर में 'ढाढा'[२] आंवता, वाहिर काढै नाहि।
'उजाड़,'[३] देखै घर तणो, ते पिण नहीं कहै ताहि।।

दोहा

१३. एक दिवस मोती भणी, जनक कहै इम वाय।
वार वर्ष लग हूं तुजे, आज्ञा देउं नाय।।

यतनी

१४. तव मोती कहै इम वाय, तेरमा वर्ष में तो ताय।
मुझ आज्ञा देसो अवलोय, जद चारित्र लेसूं सोय।।

१५. पिण घर मांहै तो रहूं नाहि, इसी पकी धारी मन माहि।
एतो हलुकर्मी जीव ताम, तिण रा दृढ घणा परिणांम।।

१६. दोढ वर्ष आसरै, नीकलिया इह रीत।
पिण परिणाम मोती तणा, दिन-दिन अधिक पुनीत।।

१७. तीजी ढाले दाखियो, मोती उज्जल मन्न।
चारित्र लेवा कारणे, उद्यम अधिक सुजन्न।।

ढाल ४

दोहा

१. मोती मन में चिंतवै, जो आज्ञा दै मात।
तो संजय लेणो सही, सखरी रीत सुजात।।

---

१. तग।
२. पशु गाय, भैंस आदि।
३. नुकसान।

२. जावजीव मा तात जो, आज्ञा न दियै ताम।
तो इम हिज रहिणो मुझे, घर को न करूं काम।।

३. दिवस किता इम नीकल्या, मोती ना जिह वार।
दृढ़ परिणाम जाणी करी, तूटी आस तिवार।।

४. तब कागद आज्ञा तणो, लिख मोती रे हाथ।
दीधां मोती चिंतव्यो, हिव जासूं परभात।।

५. निश छाने कागद भणी, काढलियो निज माय।
प्रात थयां दीठो नही, तब चिंतातुर थाय।।

६. कागद मात दियै नहीं, मोती करै विचार।
हेम तणा दर्शण मुझे, करिवा थइ हुसियार।।

७. *समत अठारै चीमतरे, हेम जीत चउमास।
सैहर गोगूदे नव मुनि, अधिको धर्म उजास।।

८ मोती दर्शण कारणे, आयो छै तिहां चाल।
हेम तणा दर्शण करी, तन मन हुओ खुसाल।।

९. 'करडी प्रकृति'[1] रा धणी, देख्या संत जिवार।
तिण चउमासे मुनि भणी, हेम कहै सुविचार।।

१० मांहोमांहि उतावला, ग्रहस्थ सुणतां बोलेह।
तेह तणो जे 'खूचणो'[2], कोइ ग्रहस्थ काढेह।।

११ ते दोनूइ साधां तणै, एक मास लग एथ।।
छहूं विगै रा त्याग छै, रहिजो अधिक सचेत।।

१२ तव मोती दर्शण किया, एक दिवस अवलोय।
बे साधां नै उतावला, देख्या बोलता सोय।।

१३. हेम भणी आवी कह्यो, तब बिहुं मुनि नै हेम।
एक मास छहूं विगय नै, छोडावी धर प्रेम।।

१४. दिवस कितै दर्शन किया, हेम तणा धर प्यार।
पछै मोती मरुधर आवियो, सीहवा ग्राम मझार।।

१५. घर को कांम करै नही, पिण आज्ञा दै नाहि।
एक वर्स रै आसरै, इम वलि नीकल्यो ताहि।।

***लय-प्रभव मन मांही चिंतवे**

१ उग्र प्रकृति।

२ दोप।

१६. एक दिवस मोती रो तात, आयो रीस में अधिक विख्यात।
कहै मोती नै आंम, तोनै कागद लिख देउं तांम ।।

१७. इम रीस वसै अवलोय, आज्ञा रो कागद सोय।
निज जनक लिखी नै दीधो, मोती रो कार्य सीधो ।।

१८. तुरत मोती तिहां थी नीकल्यो, सैहर कंटाल्या मांय।
जवान ऋषी ना दर्शण करी, चरण लियो सुखदाय।

१९. वर्स अढाइ रै आसरै, आज्ञा लेतां ताय।
चिमंतरे चारित्र लियो, पायो हरप अथाय ।।

२०. ईर्या भापा एपणा, चउथी पंचमी समित।
सावद्य मन वचन काय नै, गोपवै त्रिहुं गुप्ति ।।

२१. दया सत्य दत्त शील में, निश्चल मोती संत।
निर्ममत्व पायो घणो, समण मुद्रा सोभंत ।।

२२. वारु विनय गुण आगलो, सोम्य प्रकृति सुखदाय।
पाप तणो भय अति घणो, मोती रै दिल मांय ।।

२३. चउथी ढाल विषै कह्यो, मोती चारित्र सार।
आदरियो उचरंग सूं, हिव आगल अधिकार ।।

ढाल ५

दोहा

१. आठ वर्स रै आसरै, ऋपी जवांन री सेव।
मोती ऋषि हद साचवी, अलगो कर अहमेव ।।

२. पछै मोती नैं सूंपियो, जीत भणी ऋषिराय।
'समय-रहिस'[1] बहु सीखवी, विनय करी रीझाय ।।

३. पहिला मोती नी प्रकृति, हुंती संकीली सोय।
जीत कनै आयां पछै, समय रहिस बहु जोय ।।

४. सखर नियंठा संजया, आदि समय ना बोल।
मोती ऋषि बहुं धार नै, थयो सुअधिक अडोल ।।

१. आगमों का काम।

५. मोती संका पर तणी, काढै विध-विध रीत ।
जाणक जन्म दूजो थयो, मोती तणो पुनीत ।।

६. 'टांची'[1] लागा पथर री, प्रतिमा हुवै वदीत ।
तिम कठिन वचन वहु शीख दे, प्रकृति सुधारी जीत ।।

७. समभावै मोती सही, कठिण शीख मृदु जेम ।
अग्नि करी प्रेरचो थको, हुवैज 'कुंनण'[2] 'हेम'[3] ।।

८. विध-विध मोती विनय करि, लियो जीत रीझाय ।
सूत्र तणी बहु धारणा, जीत कराई ताय ।।

९. वहुश्रुती मोती थयो, वलि गण में वहु तोल ।
वर संगत थी गुण अने, वाधै सुजश अमोल ।।

*१०. उचरंगा जी जिम गुण गंगा, सुविनीत प्रकृति फुन सत्संगा ।
जो तो धिन-धिन मोती संत, 'प्रशम'[4]वर रस रंगा ।।
तयासीया थी तांम, चउमासा अति चंगा ।
बहुलपणै जय पास, किया अति उचरंगा ।।

११. साताकारी संत, श्रमण नै सुखदाई ।
मधुर वचन मतिवंत, अधिक ही नरमाई ।।
नरमाई वलि गुणग्राही, क्रोधाधिक तास प्रवल नाही ।
जो तो धिन-धिन मोती संत, प्रवर शोभा पाई ।।

१२. उगणीसै , वर्स आठ, रायऋषि परलोगं ।
तव जयवर तसु पाट, पुण्य गुरु शुभ जोगं ।।
शुभ जोगं अति आरोगं, पूनम तिथि माघ सुप्रायोगं ।
ओ तो धिन-धिन मोती संत, सेव तसु 'निरमोघं'[5] ।।

१३. मोती नो धर प्रेम, सिंघाडो सुखकार ।
आप्या सन्त अमोल, सेव में हुंसियारं ।।
हुंसियारजी आज्ञा सार, पालै मोती नी धर प्यारं ।
ओ तो धिन-धिन मोती सन्त, शांत गुण भंडारं ।।

---

१ हथोड़े के समान एक औजार जिसका आगे का भाग नुकीला होता है ।
२ स्वच्छ स्वर्ण ।
३ सोना।
*लय—धिन-धिन भीखू स्वाम
४ उपशम (शात) ।
५. अविफल ।

१४. शासण ऊपर दृष्टि, 'श्रिष्ट' अधिकी' तीखी।
गणपति सूं अति प्रीत, नीत अति ही नीकी ॥
अति ही नीकी जी कांइ तहतीकी, 'कर्मची रंग'[2] सम मोती की।
ओ तो धिन-धिन मोती संत, प्रीत जग में जीकी ॥

१५. च्यार तीर्थ नैं सार, शीख दै सुखकारी।
गणपति नी मति करो, 'आशातन'[3] दुखकारी ॥
दुखकारी जी अघ-दातारी, अबोध तणो कारण धारी।
ओ तो धिन-धिन मोती संत, शिख्या तसु हितकारी ॥

१६. 'टालोकर'[4] नो संग, सुगुण जन मति कीजो।
जाणी तास 'भुयंग'[5], अलग सूं तज दीजो ॥
तज दीजो जी कोइ मत रीजो, अपछंदा सूं कोई मति भीजो।
ओ तो धिन-धिन मोती संत, सुधामृत रस पीजो ॥

१७. गण सूं टलनैं एह, वदै अवर्णवादं।
स्वाम लिखत नी सार, तजीयां मर्यादं ॥
मर्यादं लोपी वाधं, तसु संग कियां हुवै असमाधं।
ए तो मोती मुनि, नी शीख सुगण धर अह्लादं ॥

१८. भिक्षु गण समुदाय, एहिज जिन तीर्थ सही।
एहिज शिव मग्ग सार, एहिज सुखदायक ही ॥
सुखदायक ही गुणग्राहक ही, गणपति चिउ तीर्थ नायक ही।
ओ तो धिन-धिन मोती संत, तास ए वाय कही ॥

१९. समिति गुप्ति व्रत माहि, मुनि अति ही तीखो।
शील तणो घर सार, तीर्थं वच्छल नीको ॥
वच्छल नीको जी अति जश जीको, वर विनय तणो तसु
शिर टीको।
ओ तो धिन-धिन मोती संत, वीद शिवरमणी को ॥

२०. चोथ छठादिक विचित्र, प्रकारे तप कीधो।
इम सैंताली लग सरस, तप रस पीधो ॥
तप रस पीधो जी जग जश लीधो, भद्रिक मुनि सरल हृदय सीधो।
ओ तो धिन-धिन मोती संत, जीत डंको दीधो ॥

---

१. उत्तम।
२. एक प्रकार का विशेष (गहरा) रंग।
३. अवहेलना।
४. संघ से बहिर्भूत साधु।
५. काला नाग।

२१. शीतकाल में शीत, परिसह प्रति खमतो ।
उष्ण ऋतु में उष्ण, सहै समता रमतो ।।
समता रमतो जी परिचयवमतो, मन इन्द्रिय पंच भणी दमतो ।
ओ तो धिन-धिन मोती संत, तीर्थ नै मन गमतो ।।

२२. शक्ति घटी अधिकाय, चरम ही चउमासं ।
पंच मुनि थी पेख, अधिक धर्म उजासं ।।
उजासं अति सुख वासं, परिणाम दृढ़ अति ही तासं ।
ओ तो धिन-धिन मोती संत, अमर पद नी आसं ।।

२३. त्रिहुं साधा थी तांम, 'तेजसी'[1] तिहवारं ।
मृगसर मास मझार, किया दर्शण सारं ।।
दर्शण सारं कांइ धर प्यारं, तसुं सेव करै अति हुसीयारं ।
ओ तो धिन-धिन मोती संत, तीर्थ चिहुं सुखकारं ।।

२४. चीमंतरै वर्स सार, चरण मुनि आदरियो ।
उगणीसै गुणतीस, प्रवर अणसण धरियो ।।
अणसण धरियो जी गुण नो दरियो, पंचपदरे पंच पैहर वरियो ।
ओ तो धिन-धिन मोती सत, सिद्ध कार्य करियो ।।

२५. जिण परिणामा लीध, चरण अति सुखदायो ।
तिम हिज पांम्या पार, सुगण वर मुनिरायो ।।
मुनिरायो जी जन मन भायो, सुद्धप्रवरआराधकपद पायो ।
ओ तो धिन-धिन मोती संत, सुजश जग में छायो ।।

२६. उगणीसै इकतीस, द्वितीय आसाढ़ मही ।
विद बारस 'भृगुवार'[2], बीदासर सैहर सही ।।
सैहर सही जी अति सोभ लही, गणपति 'जयजश' भल चित उंमही ।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय, प्रशादे कीर्ति कही ।।

---

१. मुनि श्री तेजपाल जी (१२६)।
२. शुक्रवार।

८

शिवजी रो चोढालियो

ढाल १

दोहा

१. स्वाम तणां सासण मझे, घणा संत सुजांण।
आचारी गुण आगला, वारू तास वखांण ॥

२. हेम हजारी हियै विमल, संवत अठारै तास।
छिहंतरे चित चूंप सू, 'सुरगढ'[1] कियो चौमास ॥

३. जबर वैराग हुयो जदी, तीन वैरागी तंत।
संत हुवा गुण सागरू, मिलिया हेम महंत ॥

४. रत्न खिवेसरो जातवर, मादरेचो शिवमांण।
कर्मचंद कीधी जबर, पोखरणे पहिछांण ॥

५. त्रिय तजी नै रत्न शिव, कर्मचंद सुकुमार।
इक दिन चरण समापियो, हेम हरष हुसीयार ॥

६. अणसण रत्न सु आदर्यो, उगणीसै इधकार।
निंपुण वैरागी निरमलो, परम स्वाम सूं प्यार ॥

७. शिवजी शिवपद साधवा, सखरी करणी सार।
अधिक हरष सूं आदरी, सुणो तास विस्तार ॥

*शिवजी शिवजी होय रह्यो रे, शिवजी सखर सयांण रे।
अधिक ओजागरू ॥ध्रुपदं॥

८. सरल भद्रीक सुहांमणो रे, कांई सुगर तणो सुवनीत रे।
शिव गुण सागरू रे।
विनै विवेक विचार मे रे, ऋष जाणे कडी रीत रे।
शिव गुण सागरू रे।

९. प्रकृति सभावे पातली, मंद 'चोकडी'[2] मांण।
त्रिय संग विप जांणी तज्यो, कांइ पर्म धर्म पहिछांण ॥

१०. हास ख्याल रांमत हणी, 'निरापेही'[3] निकलंक।
इरिया सुमत अति ओपती, वली तज्यो वचन नो 'वंक'[4] ॥

---

१ देवगढ़।

*लय—मालण मोगरो रे

२. चार कषाय-क्रोध, मान, माला, लोभ।

३. निरपेक्ष।

४. वक्रता।

११. अधिक मुनि नी एपणां, उपधि निक्षेप आदान।
सखर पंचमी सुमत में, धुन अति जयणां ध्यांन॥

१२. मन वचन काया गुपत में, कांइ दया घणी दिल मांय।
सतवादी गहा सुरमो, कांइ रूडो माहा ऋपराय॥

१३. अति भय अदत ब्रह्म नों, निर मुरछा निरमांन।
वले वस्त्रादिक नै विषै, तज ममता तोफांन॥

१४. खम्यावंत मुनिवर खरो, कांइ निरलोभी निरमाय।
निरहकार चित निरमले, उभय लाघव इधिकाय॥

१५. सत संजम तप सूरमों, दान ब्रह्म देंदीप।
उत्तम ऋष गुण आदरया, कांइ 'जत'[1] सत'[2] इंद्रयांजीप'[3]॥

१६. संता में सोभा घणी, समणी नें सुखदाय।
श्रावक नें वहु श्रावका, शिव सगलां नैं सुहाय॥

१७. स्वमति में प्रसंसा घणी, कांइ देस प्रदेशे दीपाय।
अन्य मति पिण आय, कांइ शिवजी नां गुण गाय॥

१८. अखंड आचार्य आगन्या, कांइ आराधी उचरंग।
थिर चित सासण थापवा, ऋप दिन २ चढते रंग।

१९. सखर सुवनींता थकी, अतिहित अधिक उमेद।
दीपावण सासण दीपतो, खरे मते तज खेद॥

२०. अपछंदा अवनीतडा, जांण्यां भुजंगी जेम।
परचो तेहनो परहरै, पर्म सुगुरु सूं प्रेम॥

२१. एहवा लक्षण अवनीत रा, स्वार्थ अण पूगां सोय।
अवगुण सूझै ओर ना, तसु जी तब धिग २ जोय॥

२२ दुष्ट अजोग अवनीत नैं, जग फिट २ करता जोय।
निदंक पापी नागडा, त्यांनें शिव ओलखिया सोय॥

२३. निंदक भणी निषेधिया, (सुण) हिये सुगण हुलसंत।
दुमनों हुवै दुरातमा, 'वेदल'[4] मन विलसंत॥

२४. चोर निषेध्यां चोरटा, जार निषेध्यां जेह।
अधिक उदासी आदरे, एह विध जांणों एह॥

१. यतना।
२. सत्यता।
३. इन्द्रिय-विजय।
४. उदास।

२५. अपछंदा नैं ओलखावियां, जबर तास "गुण्ठ"[1] जांण।
सोग संताप समुप्यजै, जांणे पडी विद्युत अचाण ॥
२६. मगलीक हाजरी मझै, अवनीत नैं दीयो ओलखाय।
सुवनीत भणी सरावियो, सुण शिव नैं घणु सुहाय ॥
२७. भीखू स्वाम तणी भली, कांइ मर्यादा महिमांण।
हरष धरी नै हाजरी, कांइ जय जश करी सुजांण ॥
२८. उगणीसै दशके समे, पोह विद नवमी सार।
पवर हाजरी नी थापना, जय गणपति करी उदार ॥
२९. ते मर्यादा पालण तणो, मोद सहित सुमन्न।
हरष धरी सुणै हाजरी, सुण सुण होय प्रसन्न।
३०. तंत हाजरी सुणवा तणो, मन जेहनों मंद।
जबर रोग घट जेहनै, ते जांण रह्या जिण चंद ॥
३१. वर मर्याद सुणवा तणो, वले पालण अति परिणाम।
सखर चित्त ऋप शिव तणो, अधिक अनुपम आम ॥
३२. कालो मुंह कृतघनी तणो, शिव तजै तसु प्रसग।
ओलखियो आछी तरै, कृतज्ञ संग उमंग ॥
३३ लूण हरांमी निरलज्जा, अभिमानी अवनीत।
हेत गोष्टी नही त्यां थकी, पर्म सुगर सूं प्रीत ॥
३४. स्वाम द्रोही सरीसा कह्या, अविनयवत कुपात।
तास प्रसंग तजै मुनि, सामधर्म्या सू हित वात ॥
३५. वर्स घणां इम विचरियो, सखर कियो तप सार।
मास खमण पैंतीस वली, वली एकावन अधिकार ॥
३६. सीतकाल वहु सी सह्यो, उष्णकाल आताप।
थिर चित्त शिव ऋप थाप नैं, जप्या जिनेसर जाप ॥
३७. ध्यांन विमल वर ध्यावता, संजम सरस सुहाय।
दिन २ मार्ग दीपतो, सुगुरु सुगण सुखदाय ॥
३८. सार सिद्धंत वहु वाचिया रे, वर मुख पाठ विनांण।
ग्रंथ हजारां महागुणी रे, शिवजी सखर सुजाण ॥
३९. दीयै मुनि हद देशनां रे, वारू सखर वखांण।
स्वमती ने अन्यमती तणी रे, झीणी चरचा नो जांण ॥

---

१. घनिष्ठता।

४०. मुरधर देश मेवाड में रे, थली देश सुखकार।
मालव कछ गुजरात में रे, वली हाडोती ढूंढाड ।।

४१. समचित एतला देश में रे, विचरचो शिव वडवीर।
पंच इंद्रयां तसुं परवरी रे, धर्म धुरंदर धीर ।।

ढाल २

दोहा

१. 'उगणीसै तेरै समे'[1], जेष्ठ मास जयकार।
जयगणी सुरगढ आविया, वहुं संता परिवार ।।

२. दर्शण करवा कारणें, गांम २ नां लोक।
आया आडंबर करी, जन वहुला ना थोक ।।

३. माणक शिव आदि मुनि, दर्शण करिवा देख।
आया अति आनंद सूं, वारू हरप विसेख ।।

४. प्रात रात्रि दे देशना, पवर वारू वांचै वखांण।
सैकडां लोक सांभलै, उज्जम इधको आंण ।।

५. हरष तीस रे पोहर हद, सरस हाजरी सोय।
मर्यादा महा मुनि तणी, सुणै सैकडा लोय ।।

६. एक दिन न सुंणी हाजिरी, जयगणी वर पूछंत।
वारू मर्यादा नी वारता, क्यू न सुणी शिव संत ।।

७. कहै शिव रुखवाली करण, राख्यो 'माणक' ताय।
मुज मन अति सुणवा तणो, नटूं केम मुनिराय ।।

८. जय कहै अवर मुनि भणी, रूखवाली राखंत।
मुज भणी क्यूं न जतावियो, अब मत कर मन चित ।।

९. पश्चाताप करतो घणो, न सुणी आज मर्याद।
वचन मांहै अति हरष रस, वदै चित्त अह्लाद ।।

१०. दिवस दूसरे हाजरी, जय वाचंता जांण।
शिव भणी याद कियो सही, लियो निकट बैसांण ।।

---

१. यह विक्रम सवत् (चैत्रादिक क्रम से) है।

११. शिव चित्त अति प्रसन्न थयो, याद कियो महाराज।
अधिक कृपा मुज ऊपरे, जांण्यो धिन-धिन आज ।।

१२. गुणग्राही एहवो गुंणी, स्वाम धर्मी सुवनीत।
वैरागी मुनि बाल हो, निपुण न्याय वर नीत ।।

१३. सुरगढ नव दिन आसरै, शिव ऋप सखर सुजांण।
सेव करी सतगुर तणी, अधिक 'उलट चित'[1] आंण ।।

१४. जय गणपत नी आंण ले, विहार कियो तिणवार।
विचरत-२ आवियां, नृपपुर सैहर मझार ।।

१५. जीवराज शिव खूबजी, संत तीन चौमास।
वर उपगार वधावियो, शिव दिल अधिक हुलास ।।

*१६. धोरी धर्म नो ऋषराय, शिव गुण सुदरू जी लाल।
धर्म धुरंदरु जी लाल, परम पुरंदरु जी लाल ।।
सील सुभं करु जी लाल, धोरी धर्म नो ऋषराय।
हिव मास भाद्रव मांही, वारस दिवस तिथ उदार।
दिशां आप गया पुर वार, पाछा आवता खेद विचार ।।
जांण्यो ए तन अधिक असार, पायो परम वेराग उदार।
शिव गुण सुंदरू जी लाल ।। ध्रुपदं ।।

१७. ओ तो दीप सहोदर जीव, तास कहै अणसण मुज उचरावो।
आय लागो दीसे छै अवसान, वारूं चारित कलश चढावो ।।
ओ तो मुजमन अधिक उमावो, ल्हेश पिण मन माहि भय मत ल्यावो।
धोरी धर्म नो ऋपराज, शिव सुख सागरू जी लाल ।।
अधिक उजागरु जी लाल, गुणनिध गागरू जी लाल।
वरवच वागरू जी लाल, धोरी धर्म नो ऋपराज ।।
शिव गुण सागरू जी लाल ।।

१८. ऋप जीव कहै सुण स्वाम, आप चित आतुर पणो मिटावो।
म्हारा साहाज देवा रा भाव, अधिक चित आनंद आप रखावो ।।
अधिक चित राखो आप आनंद, वधावो तपस्या महा सुखकंद।
किया 'सुसता'[2] वर वयण सोहंद ।।

---

१ उत्साहवर्धक मन।

*लय—घनो गुण सागरूजी

२. मस्वस्थ।

१९. पहिली पचखायो उपवास, चौथ मांहे छठ फिर अठम करायो ।
अधिक मन अणसण नो उचरंग, सखर चित उजल हरख सवायो ।।
सखर चित उजल हीयडो हीर, गुणागर गिरवो आप गंभीर ।
धर्मवर मूरत साहस धीर ।।

२०. चवदश पाछली निस पिछांण, अणसण मांगे वारूं वार ।
वहु हठ कीधा 'चेतन'[1] संत, सखरो पचखायो संथार ।
जाव जीव नो अधिक उदार, तीनूं आहार तणो परिहार ।।

ढाल ३

दोहा

१ शिवजी शिवपद साधवा, कठण कीधो अति काम ।
अणसण दिल उचरंग सू, आदरियो अभिराम ।।

२. वात लोका में विस्तरी, गांम-गांम ना जन्न ।
बंदणा कर गुण गावता, प्रसन्न थइ तन मन्न ।।

३. एक दिवस में उदक पिण, तीन पाव उपरंत ।
तन मन सू त्यागन किया, आंणी हरष अनंत।।

गुणीजन शिव ऋषना गुण गावो, फल संपति शिव सुख पावो ।। ध्रुपदं ।।

४. शिवजी ऋष नांम सु जाचो, जस धारक महा मुनि साचो ।।
ऋष आदरचो अणसण आछो ।।

५. वारू देत विविध उपदेशो, पत्र वाचत परष विसेषो ।
अति ऊजम अधिक अशेषो ।।

६. शिव तणो पडिलेहण सागे, मुनि मांगे संतारै आगे ।
धर्म जागरण में मुनि जागै ।।

७. चौरासी जीवा जोन खमावै, आलोवण करने सुध थावै ।
वर संवेग रस वरसावै ।।

८. पंच दिवस अल्प जल लीधो, पछै चौवीहार अणसण कीधो ।
अति उचरंग प्रगट प्रसीधो ।।

---

१. जीवोजी (८६) ।

*लय—नेमीनाथ अनाथा रां नाथो रे ।

९. गांम-गांम ना लोक आवंता, गुण शिव ऋष ना गावंता।
परम आणंद हरख पावंता ॥

१०. वारू वयण प्रगट वदंतो, गुण संतां रा अधिक गावंतो।
गुणग्राही मुनि चित संतो ॥

११. जन अचरज अधिको पाया, वारू सासण सोभ चढाया।
देश-देश माहि सु दीपाया ॥

१२. चढते परिणांम सुजांनो, धरै पंच पदां रो ध्यांनो।
मन कीधो मेर समांनो ॥

१३. सात दिवस तणो चोविहारो, ते विहार पंच दिन सारो।
सर्व वारै दिन सुविचारो ॥

१४. भाद्रवा सुदि बारस भाली, निश सीज्झो संथारो विसाली।
मुनि आतम नै उजवाली ॥

१५. संवत उगणीसै तेरे उदारी, भाद्रवा सुदि बारस भारी।
मुनि पोहंता परलोक मझारी ॥

१६. तन महोछव बारस कीधा, सावज कांम संसार न सीधा।
जिन आंण माहि नहीं लीधा ॥

१७. लाहो मांनव भवनो लीधो, शिव सफल जमारो कीधो।
मुनि जीत नगारो दीधो ॥

१८. भद्र प्रकृति सरस सुहाली, मंद चोकडी वांण विसाली।
आण इष्ट अधिक दिल न्हाली ॥

१९. सिव साधण शिव ऋष गायो, परम आनंद हरख सुपायो।
कांइ उपद्रव्य दूर मिटायो ॥

२०. अधिक ओछो आयो हुवै कोयो, अरिहंत सिद्ध साखे अवलोयो।
कांइ मिछ्यामि दुक्कड मोयो ॥

२१ उगणीसै तेरे मास वसंतो, दसमी सुद पक्ष दीपंतो।
गुण जय जश करण गावंतो ॥

ढाल ४

*सुगणा संतजी, सखरो समण शिवजी ।
जवर जयवंत जी, लगी तास शिवपद सूं लिव जी ।। ध्रुपदं ।।

१. शिवजी संत वडो सुखदायक, चुरगढ वासी साचो ।
छीहंतरे व्रत हेम समीपे, जसधारी मुनि जाचो ।।

२. सरल भद्र गुण अधिक सोभता, मृदु मार्दव मन जीतं ।
एक दृष्टि वर आंणा ऊपर, परम सद्गुर सूं प्रीतं ।।

३. सासण भार धुरा धोरी जिम, अखंड आण पद मंडै ।
पिंडत मरण अंगीकरै मुनिवर, पिण ते गण न विछंडै ।।

४. मास खमण लग कियो मुनीश्वर, चर्म चौमासा मांह्यो ।
ऋप जीव पास अठम में अणसण, वहु हठ करनै ठायो ।।

५. पंच दिवस नीकलियां पाछे, चौविहार संथारं ।
बहु हठ करनै कियो मुनीश्वर, मन मे हरप अपारं ।।

६. प्रथम तीन दिन अठम भक्त ना, पच दिवस तिविहारं ।
चौविहार दिन सात पनरै दिन में, मुनि पोहता पारं ।।

७. निसल थई मुनि जन्म सुधारचो, जश महिमंडल छायो ।
सखर स्वाम मर्याद सुणेवा, शिव नै हरप सवायो ।।

८ इसो गुणी नै विनयवंत शिव, तिसो अंत अधिकारं ।
धन-धन धन-धन करै सुगणजन, शिव संपति दातारं ।।

९. उगणीसै चवदै चौथ सुक्ल पक्ष, द्वितीये जेष्ट गुणराता ।
जयजश गणपत्ति जोड करीए, सुजानगढ सुखदाता ।।

---

*लय—हठीला कांनजी छलो......

९

कर्मचन्द गीतिका

ढाल १

दोहा

१. संवत अठार छिहंतरे, सुरगढ़ सैहर मझार।
हेमजीत नव संत सू, चउमासो सुखकार ।।

२. जाति खींवसरा रत्नचंद, माद्रेचा शिव नाम।
जाति पोखरणा कर्मचंद, ए तीनू अभिराम ।।

३. तात भ्रात त्रिय रत्न तजि, शिवजी त्यागी नार।
वहु हठ करि लेई आगन्या, हेम हस्त व्रत धार ।।

४. अति महोत्सव आडंबरे, उभय 'तुरंग'[1] असवार।
आगल गज वाजित्र ना, वाज रह्या झिणकार ।।

५. गोकलदासजी रावजी, रत्नचंद शिव हाथ।
दोय दोय रुपइया दिया, मंगल अर्थ सुजात ।।

६ रूपा नाणा री बोवणी, म्हांरी तरफ सू ताय।
प्रवर पतासी वांटजो, वर महोच्छव अधिकाय ।।

७. 'जोग'[2] चोखे चित्त पालजो, इह विधि शिक्षा दीध।
मृगसिर में संजम लियो, जग मांहे जश लीध ।।

८. तिण हिज दिन दिक्षा ग्रही, कर्मचंद सुखकार।
मात तात भगिनी तजी, दादो काको धार ।।

९. बहु हठ कर ले आगन्या, लीधो संजम भार।
संक्षेप थी वर्णन करूं, सांभलजो नरनार ।।

घर मांहै नही रहूं रे ।। ध्रुपदं ।।

१० म्है तो हेम तणी सुण वाणी रे, मोनै लागी अमिय समांणी रे।
चित्त चारित्र नी मन आंणी रे, घर मांहै नही रहूं रे ।।

११. वारुवार कहूं सुण तात, घ०, वलि सांभल मोरी मात। घ०।
सुण दादा पीतरिया वात। घ० ।।

१२. मोनै आयो वेराग अथागो, घर मे रहिवा सू मन भागो।
मन शिव रमणी सू लागो ।।

---

१. अश्व।
२. सयम।

१३. जन्म मरण रा दुख थी डरियो, संवेग रसे चित भरियो।
तिण सूं चरण लेवा चित्त धरियो ॥

१४. घर का आज्ञा दे नाहीं, वहु उपसर्ग दीधा त्यांहीं।
कर्मचंद न मांनै क्यांही ॥

१५. दादो हेम समीपे आवै, मोह वसे घणो विललावै।
ओ तो मन मांहि दुख अति पावै ॥

१६. थयो सित्तर वर्ष नो जाणी, 'दोय पछेवडी नो पहिछाणी।
पाहुणो छूं'[1] वदै इम वाणी ॥

१७. म्हारा पोता नै दिख्या म देवो, म्हारी अर्ज हीया में 'वेवो'[2]।
म्हारा करमा नै मति लेवो ॥

१८. थांरो भजन करंता नैं उदारो, मीनैं वर्ष हुआ छै वारो।
माहरी वीनतडी अवधारो ॥

१९. जव हेम कहै इम वायो, थांरो भजन फल्यो सुखदायो।
वारै वर्ष आंवो फलै ताह्यो ॥

२०. पाछो जावतो मझ वाजारो, रोवतो थको जाय तिवारो।
ओ तो करतो अधिक पुकारो ॥

२१. हा ! करमीया रोवै तूं मोनैं, कै हूं रोवूं छूं तोनैं।
इम संभलावै सहु को नै ॥

२२. तात हेम समीपे आयो, मुख सूं वोलै इम ताह्यो।
हेमा वावा सुणो मुझ वायो ॥

२३. म्हारा कर्मां नै मति ल्यो इह वेरो, इम वचन कही मोह केरो।
निज छाती में लेवै 'घमेडो'[3] ॥

२४. रावजी पासे करी पुकारो, म्हांरे एकाएक अवधारो।
म्हारो 'नावगो'[4] उठै छै सारो ॥

२५. रावजी कर्मचंद वोलायो, मुख सूं वोलै इम वायो।
तूं चारित्र क्यूं लै ताह्यो ॥

२६. थारा घर का कहै मुझ पासो, म्हारो नावगो उठै छै तासो।
इम विविध वचन सुप्रकासो ॥

---

१. दो चद्दर जितने कफन का मेहमान हूं, अर्थात् परलोक जाने वाला हूं।
२. धारण करो।
३. घूंसा।
४. नाम।

२७. कर्मचंद वदै इम वायो, मनुष्य मूंआ परभव में जायो।
जव नावगो उठै छै ताह्यो॥

२८. हूं तो भक्ति करूं चित्त ल्यायो, 'सत्त'[1] सती वालो अधिकायो।
वरज्यां आप नैं पिण दोष थायो॥

२९. जब रावजी बोल्या वायो, तोनैं देखवा काज बोलायो।
पिण म्हारै अवर नही मन माह्यो॥

३०. 'आज्ञाकारी पुरुष'[2] नै तिवारो, कहै इण रा घर का ऊभा वारो।
तिण नैं जाय कहो समाचारो॥

३१. इण री गुदी ऊपर भगवानो, आय विराजमान थया जानो।
तिण सू जोग लेवै सुद्ध मानो॥

३२. रावजी तो पोतै ही पिछाणी, गंगाजी जावा रो जाणी।
अै तो 'मतो'[3] करै चित ठाणी॥

३३. इण नै वरजवा नो दोष भारी, म्है तो नही बरजां लिगारी।
थांरो थेइज करो विचारी॥

३४ साधां ऊपर न करणी पुकारो, थांरी आज्ञा बिना अवधारो।
साधू तो नहीं लेवै सारो॥

३५. थांरो घर को मनुष्य सुद्ध साखो, थांरै राखण री अभिलाखो।
थां सूं राखणी आवै तो राखो॥

३६. इम वचन कही नै प्रसीधी, कर्मचंद भणी शीख दीधी।
आ तो जग मांहै सोभा लीधी॥

३७. साधां नैं रावजी कहिवायो, आप खुशी थकां रहिजो ताह्यो।
पिण मन में म आणजो कांयो॥

३८. सदा माला फेरो सुखदायो, तिण हीज रीत चित्त चाह्यो।
माला फेर जो हरष सवायो॥

३९. अधिकी दोय माला सुरीतो, रावजी री तरफ री वदीतो।
आप फेरजो घर अति प्रीतो॥

४०. कर्मचंद भणी घर मांह्यो, राखण न्यातीला किया उपायो।
ओ तो अडिग रह्यो अधिकायो॥

४१. राखण समर्थ नही घर मांह्यो, जव न्यातीला आज्ञा दीधी ताह्यो।
हेम हाथ चरण सुखदायो॥

---

१. सत्त्व।
२. आज्ञानुवर्ती कर्मचारी।
३. विचार।

४२. तीनूं नैं दिक्षा देई विशालो, हेम आया गंगापुर चालो ।
तिहां भेटयां पूज भारीमालो ॥

४३. भारीमाल तीनूं नैं तिवारो, सूंप्या हेम भणी सुविचारो ।
हेम परम विनीत उदारो ॥

४४. कर्मचंद वालक बुधवंतो, ओ तो भणियो सूत्र सिद्धंतो ।
वारु वाचणी अक्षर 'सुतंतो'[1] ॥

४५. हेम पास चौमासा च्यारो, पंचमो छठो अवधारो ।
ऋषिराय समीपे सारो ॥

४६. पछै जीत पास सुविचारो, घणां चौमासा किया उदारो ।
तिण रै जीत सूं पीत अपारो ॥

४७. वहु वार वाच्या सु जगीसो, वर प्रवचन सूत्र वतीसो ।
स्वाध्याय करत 'निशि दीसो'[2] ॥

४८. संवत् उगणीसै आठे वासो, कर्मचंद तणो सुविमासो ।
जय कियो सिंघाडो सुजासो ॥

४९. घणां वर्षा लगै अवधारो, शीतल काल विषै सुविचारो ।
दोय पछेवडी परिहारो ॥

५०. चोथ छठ अठम दशम धारो, पंच पंच ना थोकडा सारो ।
मुनि कीधा है वहुली वारो ॥

५१. मास खमण तांइ तप कीधो, मुनि जग मांहि जश लीधो ।
कांइ जीत नगारो दीधो ॥

५२. नित्य सज्झाय निर्मल ध्यांनो, वारु सवेग रस गलतानो ।
पाप नो भय तसु असमानो ॥

५३. 'थल'[3] कठिन सिद्धान्त ना भारी, जय गणपति पास उदारी ।
थट प्रगट जाण्या सुधारी ॥

५४. शासण आसता निर्मल नीतो, आचार्य सूं अधिक प्रीतो ।
हुवो देश विदेश वदीतो ॥

५५. टालोकर नै निपेधतो त्यांही, मुनि संकै नहीं मन मांही ।
शासण दीपावतो अधिकाई ॥

५६. अवनीतां री संगत टालै, जिलो भुयंग सरीसो भालै ।
मुनि जिन मार्ग उजवालै ॥

---

१. सुंदर ।
२. रात-दिन ।
३. प्रकरण ।

५७. मरुधर देश मालव नै मेवाडो, थली हरियाणो कच्छ ढूंढाडो।
विचरया गुजरात मझारो॥

५८. छेडै शक्ति घटयां गुण रासो, सैहर बीदासर सुखे वासो।
जय गणपति पास चउमासो॥

५९. चउमासो उतरियां तिवारो, जय गणपति कियो विहारो।
वलै आया बीदासर सैहर मझारो॥

६०. आलोइ निंदी सुध थायो, खमत खामणा करै ऋषिरायो।
मुनि निसल थयो जिम न्हायो॥

६१. जय विविध परिणाम चढावै, मुनि सुण-सुण नै हुलसावै।
ओ तो 'कर्मा री कोड'[1] खपावै।

६२. हलुकर्मी जीव तसुं तामो, छैहडै जोग मिल्यो अभिरामो।
फलिया मनवंछत कामो॥

६३. संवत उगणीसै छावीसे ताह्यो, जेठ कृष्ण सातम सुखदायो।
मुनि पोहतो परभव मांह्यो॥

६४. जिण परिणाम संजम लीधो, तिम हिज तसु कार्य सीधो।
आराधक पद डंको दीधो॥

६५. ऋष कर्मचंद थयो रूडो, सखरो गण मांहि सनूरो।
पायो पंडित मरण 'पडूरो'[2]॥

६६. छैहडै पद आराधक पावै, संजम भार तै पार पोहचावै।
तसुं तुल्य कहो कुण आवै॥

६७. संत सतियां ए सीख सुणीजै, गण में थिर पद रोपीजै।
त्यांरा वंछत कार्य सीजै॥

६८. हूंतो सीख देऊं वारुंवारो, कीजो कर्मचंद जिम सारो।
गण पंडित-मरण उदारो॥

६९. संवत् उगणीसै गुणतीसे वासो, महा विद सातम बीदासर हुलासो।
गायो कर्मचंद गुण रासो॥

---

१. कर्मों के वृन्द।
२. पवित्र।

१०

शांति विलास

ढाल १

दोहा

१. सुखदायक लायक सखर, वायक अमृतवान ।
दायक शिव - संपति दमी, सतीदास सुखदान ॥

२. सुखदाई संता भणी, समणी नैं सुखदाय ।
श्रावक नें वलि श्रावका, सहु नै घणू सुहाय ॥

३. शांति प्रकृति सुदर सरस, मुद्रा शांति सुमोद ।
शांति रसे मुनि सोभतो, पेखत लहै प्रमोद ॥

४. उपशम रस रो 'आगरू'[1] हस्तमुखी हृद नैंण ।
प्रबल पुन्य नो पोरसो, वारू अमृत वेंण ॥

५. जशधारी भारी सुजश, इकतारी अणगार ।
जयकारी मुनिजन तणो, अवतरियो इण आर ॥

६. शांति-करण अघ-हरण नै, शरण तरण सुखसाज ।
शिव-वधू वरण 'सुधरण सम'[2], सतीदास ऋषराज ॥

७. तास सरस रस'तंत'[3] वच, जय जश करण सुजांण ।
सुणो सभा सहु सखर चित्त, ऊजम अधिको आण ॥

*सुणजो सतीदासजी नी वारता रे लाल ॥ ध्रुपदं ॥

८. तिण काल नें तिण समै रे, जबूद्वीप मभार रे । सोभागी ।
दक्षिण भरत में दीपतो रे लाल, मोटो देश मेवाड़ रे । सोभागी ।

९. सैहर गोघूदो सोभतो रे, अधिक धर्म उपगार ।
संत हुआ बहु सोभता रे लाल, श्रावक बहु सुखकार ॥

१०. वाघजी कोठारी तिहा वसै रै, जाति वरल्या वोहरा सार ।
ते पावै व्रत श्रावक तणा, नवला तेहनै नार ॥

११. उदरे तेहनै ऊपनो, सतीदास सुखदाय ।
सुख धन वृद्धि होवै सही, पुनवंत सुतन पसाय ॥

---

१. घर ।
२ सुधर्मा के समान ।
३. सार ।
*धीज करे सीता सती रे लाल ।

१२. अनुक्रम अवसर आवियां, स्वजन भणी सुखकंद।
जशधारी सुत जाइयो, ऊपनो अधिक आनंद॥

१३. सतीदास सुहामणो, मात पिता दीयो नाम।
वाधै दिन-दिन वये करी, सोम प्रकृति सुख ठाम॥

१४. सुंदर रूप सुहामणो, देह 'दीपमान'[1] देखाय।
गमतो लागै अति घणो, सगला नैं सुखदाय॥

१५. उभय कोस रे आसरै, गोघुंदा थी ग्राम।
रावलियां रलियामणो, तिहां करी सगाई ताम॥

१६. भीखू स्वाम तणा भला, समणी संत सुहाय।
गोघूंदे आवै घणा, दिन-दिन धर्म दिपाय॥

१७. रावलियां ना ऋपरायजी, तास प्रसंगे ताम।
संत सती आवै घणा, गोघुदे रावलियां ग्रांम॥

१८. श्रावक नें वली श्रावका, जीवादिक नां जाण।
सेव करै साधां तणी, वारू निर्गुणे वखांण॥

१९. थिर चित्त थी वहु थोकड़ा, तपसा ना तंत सार।
सामायक पोसा घणा, करै विविध प्रकार॥

२०. न्यातीला सतीदासजी तणा, वलि अवर नगर ना लोग।
धर्म मांहे समज्या घणा, सुभ तणो संजोग॥

२१. प्रथम ढाल प्रगट पणै, सतीदास नो सुचंग।
जन्म आदि वर्णन कह्यो, सूता जाग्या नव अंग॥

ढाल २

दोहा

१. तिण काले नें तिण समै, भारीमाल महा भाग।
सतजोगी हेम ऋपरायजी, वारू दिल वैराग॥

२. गांमां नगरां विचरता, संत घणा थी स्वांम।
समत अठारै तिमंतरै, 'समोसरचां'[2] तिण ठांम॥

---

१. कान्तिमान्।
२. पधारे।

*सखर गुणां कर सोभता, मुणंद मोरा, भारीमाल महाभाग हो। ।ध्रुपदं ।।

३ भीखू पाट भारीमालजी, मुणंद मोरा, गिरवा आप गंभीर हो।
सत घणा थी समोसरयां, मु०, सुर गिर जेम सधीर हो ।।

४. भद्र प्रकृति भारी घणी, सरल महा सुखदाय।
निर अहंकारी हिये निरमले, नही केहनी परवाह ।।

५. सुंदर मुद्रा सोभती, अतसैकारी अेन।
दर्शण देखी दयाल ना, चित्त मांहै पाम्या चेन ।।

६. घन गरजाख सारिखी, वांण सुधा वरसंत।
सांभल जन हरष्या घणा, ऊपनो प्रेम अत्यंत ।।

७ सतीदासजी तिण अवसरे, बालक वय वुद्धिवान।
पीथल सत पासे सही, सीखवा लागो सुजाण ।।

८. कर्म थोडा तिण कारणे, पूर्ण धर्म स्यू प्यार।
वल्लभ संत लागै घणा, उत्तम जीव उदार ।।

९. वरस वारै रे आसरै, जोग घणा थिर जेह।
वयण मधुर अल्प वागरै, अचरजकारी ऐह।।

१० सहज मांहै पतला सही, क्रोधादिक च्यार कषाय।
प्रकृति सरल भद्र पेखनै, सगलाई रह्या सराय ।।

११ स्वामी भारीमाल तिण अवसरे, के दिन रही तिवार।
चौमासो हेम नै भलाय नै, आप तो कियो विहार ।।

१२ दूजी ढाल कही दीपती, सतीदासजी नै सार।
तत जोग सता तणो, आय मिल्यो अधिकार ।।

ढाल ३

दोहा

१. सैहर गोघूदा में सखर, चीमतरे, चउमास।
हेम आदि नव संत हद, अधिको धर्म उजास ।।

२ हेम ऋषी पासे हुंतो, जीत संत जिहवार।
तास पास सतिदासजी, पढै सु अधिकै प्यार ।।

*लय—मंत्री मोरा राजपुत्र कोई।

३. पीत जीत सूं अति प्रवर, सतीदास कै सोय।
सीख्या विविध प्रकार सूं, बोल थोकडा जोय ।।

४. न्याय सहित चित निरमलै, चरचा विविध पिछांण।
सतीदास सीख्या सरस, अल्प दिवस में जांण ।।

५. अधिक बुद्धि उद्यम अधिक, थिर पद तन-मन थाप।
आवै ग्यांन सु इह विधे, 'पू-घो - चि-गु'[1] प्रताप ।।

६. सकल जोग मिलिया सही, सतीदास नै सार।
जांणपणो अति जुगत सूं, धर्मोद्यम चित धार ।।

*सुण-सुण रे सीख सयांणा, सतीदास सुजस सुविहाणां।
सतीदास सुजश अति नीको, मुनि च्यार तीर्थ नो टीको ।।ध्रुपदं ।।

७. स्वामी हेम आदि सुविचार, गोघूंदे चौमासो गुणकार।
तिहां हुओ घणो उपगार, तपसा हुई अधिक उदार ।।

८. जोधराज छयाली विमासी, वड़ पीथल किया वयासी।
लघु पीथल तप दोढ़ मासो, सरूपचंद चवदै सुविमासो ।।

९. वारू तीनूंइ 'टक'[2] रो वखांणो, समज्या वहु लोक सयांणो।
एक सौ सत्ताइ उनमानों, पोसा संवच्छरी ना प्रधांनो ।।

१०. वायां ना पोसा पिण वहु जांणी, तप थोकडा अधिक पिछांणी।
हेम सरूप जीत मोजीरांम, सीख्या दूजों आचारांग तांम ।।

११. सतीदास विनय गुण ससि, विसवास नो ठांम विमासी।
त्रिहुं टक सुणै 'देशना'[3] तास, हद हेम सूं अधिक हुलास ।।

१२. जीत पास करंत अभ्यास, चारू चीमंतरा नै चौमास।
सीलादिक वहुव्रत सुहाया, आछी रीत करी जीत अदराया ।।

१३. लज्जालु श्रद्धालु दयालु, वारू प्रकृति सोम विसालु।
नित्य सेव साधां री सो करतो, दिल पाप संताप थी डरतो ।।

१४. सामायक पडिकमणा सार, नित्य करतो हरष अपार।
चित चारित नी अति चाय, पिण लज्जा सूं आज्ञा मांगी न जाय ।।

---

१. पू-पूछना, घो-घोखना, चि-चितारना, गु-गुणना।

*सुण सुण रे सीख सयांणा······

२. समय।

३. व्याख्यान।

१५. वलभ-मात तात नै विसेख, भ्रात जेष्ठ 'कनिष्ठ'[1] बंधव देख।
दोय भगनी नै गमतो अत्यत, देख-देख सजन हरषत ॥

१६. सहू समजै धर्म मांहै सार, पूरी प्रतीत हरष अपार।
पालै नेम नैं हेम सूं पेम, जशधारी हेम जनक जेम ॥

१७ चौमासा मांहै कर चिमत्कार, हेम कियो तिहां विहार।
श्रावक धर्म पालै सतीदास, अति चारित्र लेवा उलास ॥

१८. वाघजी कोठारी अवलोय, जनक सतीदासजी नो जोय।
समत अठारै पिचंतरे सोय, ओ तो जाय पोहंतो परलोय ॥

१९. पचंतरे वर्स पहिछांण, सखरा मुनी हेम सुजांण।
चारू सैहर पाली चउमास, पीथल तप तयांसी सुप्रकास ॥

२०. छीहतरे हेम चतुर्मास, सैहर देवगढ सुविमास।
एक सौ षट दिन तप आछो, जशधारी पीथल कियो जाचो ॥

२१. चौमासा उतरया मृगमास, तीनां नै दीख्या दीधी तास।
रतन सिवजी त्रिया तजी ताय, कर्मचंद छांडया 'पिय माय'[2] ॥

२२. पछै आया भारीमाल पास, भारीमालजी हुआ हुलास।
जाण्या हेम नै महा जशधारी, 'उग्रभागी'[3] अधिक उपगारी ॥

२३ तंत ढाल कही ए तीजी, सतीदास नी वात कही जी।
पवर व्रत श्रावक ना पालै, गर्व मोह कर्म नो गालै ॥

ढाल ४

दोहा

१. उदियापुर अडसी तणो, दिपै भीम दीवांण।
तास वीणती तिण समै, आई तेह पिछांण ॥
२ भारीमाल भलावियो, सखर चौमासो सार।
उदियापुर आनंद सू, करो हेम गुणकार ॥

---

१ छोटा।
२. पिता-माता।
३. तेज भाग्य वाला।

३. विहार करी नै विचरता, सैहर गोघूंदे स्वाम।
उष्णकाल में आविया, धर्म-मुरत गुण धांम ।।

४. नर नारी हरष्या घणा, त्रिहुं टक वखांण तांम।
निसुणै वाणी निरमली, शांति अडिग परिणांम ।।

५. सील प्रगट करणो सही, विणज करण नों नेम।
सतीदासजी नै कहै, जीत अनें ऋप हेम ।।

*६. सतीदासजी तिण समै, स्वाम सीख दिल धारी सुखकारी वयण सुहाया।
पिण शर्म लज्जा अति सुंदरु, नेम प्रगट करवा नो अति कठिन पणै अधिकाया ।।

७. 'किंचन ऋष'[1] निश नै समै, सरस वखांण सुणावै भल भावै भिन-भिन 'भेवा'[2]।
जीत कहै सतीदास नै, नेम प्रगट झट कीजै जश लीजै तूं स्वयं सेवा ।।

८. जीत वचन सुण ऊठियो, वहु जन वृंद सुणंता ऊंचै शब्द उचारै।
विणज करण नें कुशील ना, जावजीव लग जाणी पचखांण अछै ए म्हारै ।।

६. इम कहि 'महि'[3] वैठो तदा, तिह समय हेम मुनिरायो सुखदायो सील दिढायो।
'साचो हे सील संसार मे', विमल निमल ए गाथा सुखदाता कलश चढायो ।।

१०. मास एक रही महा मुनि, वड़ी रावलियां आया सुखदाया हेम सवाया।
गोघूदा में सतीदासजी, प्रगट कष्ट तिरखा नो तिण काले अधिको पाया ।।

***लय—पातक छानो न रहे।**

१. मुनि हेमराजजी।

२. भेद।

३. धरती।

११. त्याग काचा पाणी तणा, एम कह्यो घर का नै त्याग विनाई तिवारै।
'अचित पाणी'[1] पीवा न दै मान, 'सचित जल'[2] पावै पिण पीवै नही जिवारै॥

१२. जीम्यां पछै सवा पोहर आसरै, वेदन अति तिरखा री महा भारी सही सयांणै।
पछै मात अचित जल पावियो, अडिग दृढ़ इम जाचो अति साचो वचन प्रमांणै॥

१३. सुद्ध वचन में पिण दृढ़ एहवो, तो त्याग तणो स्यू कहिवो दिढ अधिक उदारु।
सैंठापणो देखी करी, लोक अचंभो पाया हुलसाया महा सुखकारू॥

१४. हेम जीत सुण हरषिया, विहार करी सुखवासो उदियापुर कियो चौमासो।
अष्ट ऋषि गुण आगला, तप जप ग्यान अभ्यासो कांइ अधिको धर्म उजासो॥

१५. सखरो वर्स सततरो, वर्धमांन तप कीधो जश लीधो भरम विहंडी।
दिन एक सौ च्यार किया भला, धोवण उदक आगारे काइ छाछ आछ अन्न छंडी॥

१६ हींदूपति हृद रीत सू, असवारी में आनदै कर जोड हेम नै वंदै।
नित्य प्रति सेवा निरमली, भीमसींग दीवांणो महाराणो मुनि सुख कदै॥

१७ धर्म उद्योत हुओ घणो, भारीमाल पुन तीखा शिष नीका हेम हजारी।
तास मुद्रा देखी करी, चिमत्कार जन पाया मन भाया अधिक उदारी॥

---

१ प्रासुक पानी।
२. कच्चा पानी।

१८. चौथी ढाल विषै कह्यो, सतीदास वच सैंठो उदियापुर हेम 'अवंका'[1]।
हिवै चौमासो ऊतरयो, गोघूंदा कांनी चाल्या मुनि देइ जीत रा 'डंका'[2]॥

ढाल ५

दोहा

१. उदियापुर चौमास में, अधिक हेम उपगार।
गोघूंदे सतीदासजी, पालै व्रत उदार॥

२. मात भ्रात रै मन घणो, परणावा रो पेम।
सतीदास सैंठापणै, निमल निभावै नेम॥

३. एक दिवस मा मोह वस, बोली वचन 'विरूप'[3]।
कै मांनलै परणवो, नहि तो पडसूं कूप॥

४. इण विधि करी डरावणी, चाली पग भर जांण।
सतीदास डरतै छतै, मान्यो वच 'माडांण'[4]॥

५. न्यातीला हरषत हुआ, गाया 'सूहव'[5] गीत।
मूंग ढोलिया सुभ दिने, थाप्यो व्याह पुनीत॥

भवजीवां रे ! रूडो लागै संत सतीदास।
भवजीवां रे ! रूडो लागै ऋषि गुणरास।

६. झट एक वनोलो जीमिया रे लाल, भ्रात मात मन भाय।
सांझ समै सामाई करी रे लाल, श्रावकां भेला ताय॥

७. व्रत पचखांण नी वारता, लोक करै चितल्याय।
'सौगन'[6] भांग्यां दुख सहै, नरक निगोदे जाय॥

८. सतीदासजी सांभली, डर पाम्यो दिल मांहि।
निश्चल नेम चित निरमलै, पालणो आंण ओछाहि॥

---

१ निधड़क।
२. नगारा।
३ भद्दा।
४. न चाहते हुए भी (मन के उपरान्त)।
५ सुहागिन वहिनो ने।
६. नियम।

९. बीजै दिन बोलायवा, तीन धरां मां तांम।
आया मन आणंद सूं, आंण उमंग अभिराम ॥
१०. सतीदासजी इम कहै, मुज माथो दूखै तांम।
पछै साफ उत्तर दियो, नहि परणवा रा परिणांम ॥
११. इतलै मृगसिर मास में, हेम ऋषी संग जीत।
गोघूदे आया गुणी, परम धर्म सूं प्रीत ॥
१२. हलुकर्मी अति हरषिया, वांण सुणी विग संत।
सतीदास नै तिण समै, आयो वैराग अत्यंत ॥
१३. आग्या आवै ज्यां लगै, पाग तणा पचखांण।
जीत कराया जुगत सू, सखर पणै सुविहांण ॥
१४ 'काल कल्पतो'[1] रहि करी, विहार कियो तिणवार।
बडी रावलियां पधारिया, हेम खेम करतार ॥
१५. पाग छांड सतीदासजी, मेडी बाजार मांहि।
सामायक करता सही, चारित नी चित चाहि ॥
१६. सुसरो पिण आयो तिहा, सतीदास नो सोय।
पुरजन भाखै इण परै, तू हीये विचारी जोय ॥
१७. जंबूकुवर कीधी जिसी, करसी ए सतीदास।
कीधा त्याग कुशील ना, परणवो न तज्यो तास ॥
१८. सुंसरो कहै सतीदासजी, मुख सू कहै इम वाय।
हूं घर में रहिसू सही, सजम न लेऊ ताय ॥
१९. तो परणावू माहरी, पवर किन्या प्रधांन।
'मन माडै'[2] परणावै तसू, किम द्यू किन्या दान ॥
२०. तिह अवसर भेला थया, पंच गांम रा पेख।
कारण कोयक ऊपनो, आया बाजार में देख ॥
२१. सतीदासजी तिण समै, मेडी सू ऊतर आय।
अति शर्म पिण साहस धरी, वोल्या एहवी वाय ॥
२२. आग्या दरावो मो भणी, संजम लेणो सार।
झट इम कहि चढिया सही, पाछा मेडी मझार ॥
२३. पवर ढाल कही पांचमी, सतीदासजी नी सार।
सरस कथा सुणियां छतां, चित में लहै चिमत्कार ॥

---

१ एक महीना।
२ जबरदस्ती (बिना मन)।

ढाल ६

दोहा

१. शांति वचन सुणिया सरस, रंच विचार करेह।
'खंच'[1] न कीजै एह थी, 'रंच'[2] न ढील धरेह॥

२. सतीदासजी नो सही, 'वंवेइ'[3] तिण वार।
इकलिंगदासजी नाम तसुं, जाति माद्रेचा सार॥

३. धर्म दलाली में निपुण, पंचां मांहि प्रवीण।
अकल बुद्धि नो आगरू, सरधा सखर सुचीन॥

४. पंच साथ ले आवियो, सतीदास नै गेह।
लोक बहु भेला थया, स्वजन अन्य जन जेह॥

५. सतीदासजी नै तदा, बोलाया घर संच।
सगलाई सुणतां छतां, पूछै इण विधि पंच॥

६. *स्यूं थारा परिणाम, कै पच पूछा करै ललना।
चारित नी चित चाव, कै भाव खरा खरै ललना।
कै परणवा नो प्यार विचार रैहणो घरे ललना।
उत्तर देवो 'सताव'[4] कै, जाव रूडी परै ललना॥

७. सतीदास सुंण वांण, सुजांण सिरोमणी।
संवेग रस गलतांन, सरस लज्या नो धणी।
नर्म प्रकृति निकलंक नें, सर्म हीये घणी।
मौन रह्यो तिणवार, सार जश महा गुणी॥

८. पुनरपि पंच पूछंत, तंत उत्तर कहो सही।
तो पिण धारी मूंन कै, जाव देवै नही।
इह अवसर सतीदासजी नो वनैइ वही।
इकलिगदासजी वचन, कहै अवसर लही॥

९. स्कध लारै देइ हाथ कै, वात पूछै इसी।
स्यू थांरा परिणाम, कहो नी हुवै जिसी।
मून खोलावण 'सैण'[5], करै समजावणी।
अवसर पाय कै, चतुर पुरुष न चूकै अणी॥

---

१ खीचातानी।
२. किंचित्।
३ वहनोई।
*लय—इण सरवरिये री पाल।
४. शीघ्र।
५. समझदार।

१०. परणवा रा परिणाम, अछै स्यूं थारा सही।
वचन सुणी सतीदास, कहै मुझ मन नही।
पंच सुणता साख्यात, वात इण पर कही।
वलि पूछै इकलिंग, सुणो ते चित दई॥

११. लेवा संजम भार, सार मन ताहरो।
कहै सतीदासजी एम, अछै मन मांहरो।
इम खोलाई मौन, चतुर बुद्धि आगलो।
कहै एकलिगजी एम, हुई अति गलगलो॥

१२ राखण नै घर मांहि, उपाय किया घणा।
नही यांरा परिणाम, कै घर रहिवा तणा।
चारित लेवा 'हूंस'[1] यांरा मन में घणी।
कांइ करा म्हे तांम, कहै पंचां भणी॥

१३. जेष्ठ सहोदर सतीदासजी, नो धूलजी।
कहै एकलिगजी तास, वचन अनुकूल जी।
नहि राचै घर मांहि, आज्ञा यानै दीजियै।
कठिन छाती कर आज्ञा नों कागद कीजियै॥

१४. एम कहि नै आज्ञा नो, कागद लिखावियो।
सतीदासजी नो सोच, जजाल मिटावियो।
भगनी मात बे भ्रात, स्वजन नै मोह घणो।
पिण मूल न लागो उपाय कै, घर राखण तणो॥

१५. सवेग रस गलतांन, ध्यांन व्रत लैण सू।
ते गृह राचै केम, न्यातीलां रा कैण सू।
शर्म हीया में अथाग, पिण भाग दिशा घणी॥
सखर आज्ञा नो संजोग, मिल्यो न टली अणी॥

१६ कागद ले इकलिग, रावलियां आविया।
हेम जीत सुण तांम, घणा हरपाविया।
छठी ढाल विशाल कै, सरस सुहामणी।
सतीदासजी नी वात, घणी रलियांमणी॥

१. प्रबल इच्छा।

ढाल ७

दोहा

१. हेम ऋषी नै हरष सूं, वंदै एकलिंगदास।
सहु विरतंत सुणावियो, पाम्या हेम हुलास।।

२. सैहर गोघूंदा नी सही, सखर वीणती सार।
कीधी बे कर जोड नै, आछी रीत उदार।।

३. तिण काले कंचन ऋषी, जीत संग जयकार।
सूत्र पन्नवणा सीखता, वारू बुध विस्तार।।

४. भाग्यवान सतीदास गण, आवत ग्यांन सुवृद्धि।
पुण्यवंत तणा प्रताप थी, वाधै रिध समृद्धि।।

५. संतां ना परिवार सू, हेम ऋषी हद वेस।
गोघूंदे आया गुणी, दै रूडो उपदेश।।

*आज आनंदा रे।। ध्रुपदं।।

६. सैहर गोघूदे समोसरचा, आनंदा रे, हेम जगत हितकार कै।
आज आनंदा रे।।
सतीदासजी रा भाग रा, आज आनंदा रे, भारी गुण भंडार कै।।
आज आनंदा रे।।

७. नर नारी हरष्या घणा, पाम्यां अधिको पेम।
वांण सुणी चित विगसियो, हीये निरमला हेम।।

८. वैंरागी वनडो वण्यो, सतीदास सुखदाय।
पुण्य सरोवर पोरसो, सुंदर रूप सुहाय।।

९. विविध गैहणा वस्त्र पैहर नै, जीमै वनोला जिवार।
नयनानंदन निरखतां, चित पांमै चिमत्कार।।

१०. बैठो अश्व रैं ऊपरे, मझ बाजार मझार।
बहु नर नारयां सू वींटियो, चाल्यो जाय तिवार।।

११. सुंदर लार सुहांमणी, गावै दिख्या रा गीत।
आग लगावै उमंग सूं, जांगडिया[1] जश रीत।।

१२ विविध वाजत्र सु वाजता, जीमी इण विधि आय।
ए किरतब संसार ना, धर्म नहीं तिण मांय।।

---

*लय—आज आनंदा रे

1. ढोलियों की एक शाखा।

१३ बहु नर नार्यां नै तिण समै, इचरज अधिको आय।
केइक कायर कंपता, मोह धरै मन मांय ॥
१४. समजू केइक सरावता, धिन तेहनो अवतार।
इण वय में व्रत आदरै, छांडी विषय विकार ॥
१५ भ्रात मात भगनी भणी, प्रगट सजन परिवार।
द्रव्य हजारां नो छांड नै, ओ लेवै संजम भार ॥
१६. जांगडिया जश गावता, सतीदासजी दै दान।
तत खिण तेह उछाल दै, मोह तणै वस जांन ॥
१७. इण विधि बहु दिवसां लगै, जीम्या वनोला जांण।
दिख्या महोच्छव दीपता, मंडिया बहु मंडाण ॥
१८. लोक हजांरा रै आसरै, बहु ग्रांमा रा आंण।
आय मिल्या तिण अवसरे, दिख्या महोच्छव जाण ॥
१९. हेम ऋषी निज हाथ सू, 'वस्त पंचम"[1] बुधवार।
अंब वृक्ष तल आय नै, संजम दीधो सार ॥
२०. सोलै वरस रै आसरै, सतीदास सुखकार।
भ्रात मात भगनी तजी, लीधो संजम भार ॥
२१. नवलां मात सरल भली, बहिन बे नंदु गुमान।
जेष्ठ सहोदर धूलजी, लघु फोजमल जांण ॥
२२ स्वजन वर्ग अति सांवठो घर मांहि बहु ऋद्धि।
व्याव मंड्यो छिटकाय नै, साधै चरण समृद्धि ॥
२३ केइ सगाई छांडी करी, लीधो संजम भार।
केइक परणी परहरी, पिण यां कीधी अधिकार ॥
२४. मंडियो व्याह वखेरियो, जीम्या वनोलो जेह।
चढती वय चारित लियो, उत्तम पुरस गुण गेह ॥
२५. चौथा आरा सारखी, पंचम आरे पेख।
इचरज वात करी इसी, सुणतां हरष विसेख ॥
२६. धर्म उद्योत हुओ घणो, पाम्या जन बहु पेम।
सखरो वरस सतंतरो, वरत्या कुसल नें खेम ॥
२७. हेम ऋषी तिण अवसरे, पाम्या हरष अपार।
सजम दै सतीदास नै, विहार कियो तिण वार ॥

१. माघ शुक्ला पचमी।

२८. सखर ढाल कही सातमी, चरण लियो सतीदास।
जय जय जय जन ऊचरै, विस्तरी वास सुवास ।।

ढाल ८

दोहा

१. तिणकाले भारीमालजी, राजनगर सुध रीत।
विचरै आतम भावत, संग बहु संत वनीत ।।

२. मुख आगल महिमा निला, खेतसीजी गुणखांन।
वलि रूडा ऋपरायजी, जीवो मुनि महा जांण ।।

३. इत्यादिक साथे घणा, महा मोटा मुनिराय।
सतियां पिण बहु सोभती, राजनगर सुखदाय ।।

४. संजम दे सतीदास नैं, हेमजीत मुनि आदि।
भारीमाल पै आविया, पाम्या परम समाधि ।।

५. परम पूज नैं पेखतां, पाम्या अधिको पेम।
लुल लुल नै लटका करै, हरष सवाया हेम ।।

६. सतीदासजी नैं सही, दीधा पगां लगाय।
भारीमाल हरष्या घणा, कह्यो कठा लग जाय ।।

७. पूज तणी आज्ञा थकी, हेम संग सतीदास।
सखर 'समय'[1] रस सीखतो, वारू ग्यांन अभ्यास ।।

८. सात दिवस बीतां पछै, वारोवार सुन्हाल।
बडी दिख्या सतीदास नै, दीधी भारीमाल ।।

९. दिवस कितै भारीमाल नी, सेव करी ऋष हेम।
सैहर आमेट भोलावियो, चौमासो सुख खेम ।।

*हरष सतीदासजी ऋपवंदो रे, मुनि निर्मल नयणानंदो ।। ध्रुपदं ।।

१०. हेम संग रहै सतीदासो रे, ग्यांन ध्यांन नो करत अभ्यासो रे।
वारू विनय गुणे सुविमासो ।।

११. नित हेम नी व्यावच करतो रे, धर्मानुराग प्रेम सु धरतो रे।
अघ विनय करी अपहरतो ।।

---

१ आगम।

*लय—नेमीनाथ अनाथां रो नाथो।

१२. सोम प्रकृति सखर सुंहाली रे, वारू मधुर वांण सुविसाली रे।
'तत'[1] लागी मुक्ति नी 'ताली'[2] ॥

१३. गर्व मांन गुमांन सुगाली रे, नयणानंद निमल निहाली रे।
भल समण सिरोमण भाली ॥

१४. 'पंक'[3] अविनय रूप परवाली रे, आत्म दमन करै तज 'आली रे'[4]।
कीकी न करै आंख्यां नी काली ॥

१५. प्रवर्त्तै अंग चेष्टा प्रमाणो रे, सुमति गुप्त सखर सुविहांणो रे।
नीको इर्या सुमति नो नीसाणो ॥

१६. वागरै मुनि निरवद वांणो रे, मन गमती ते अमीय समांणो रे।
वारू वाचत सखर वखांणो ॥

१७ सखर एषणा सुमति सुजांणो रे, पूरी पूछा जिन वयण प्रमांणो रे।
पवर चतुराई अधिक पिछाणो ॥

१८. जयणा सू उपधि लेतां मेलंता रे, पकी जयणा करी परठता रे।
रूडी रीत सं सुमत राखंता ॥

१९. तीन गुप्त अधिक तत सारो रे, दया सत दत शील उदारो रे।
वले परिग्रह तणो परिहारो ॥

२०. वल्लभ च्यार तीर्थ ने विसेखो रे, नरनारी हरषै नयणां देखो रे।
पूरो पून्याइवांन सपेखो ॥

२१. भारीमाल सतजुगी ने हेमो रे, ऋषराय तणो अति पेमो रे।
नीको निमल निभावण नेमो ॥

२२. जीत सूं रूडी रीत सुजाणी रे, पीत पय जल जेम पिछांणी रे।
सुदर प्रकृति सखर सुहांणी ॥

२३. पोते पुन्याइवांन अपारो रे, पुन्याइवांनां सू अति प्यारो रे।
दिशावांन दीपंत दीदारो ॥

२४. सीलादिक गुण बुद्धि श्रीकारो रे, वारू व्रत पालै खड्ग धारो रे।
सुजश फैल रह्यो संसारो ॥

२५. गण नै सुखदाई सुग्यांनी रे, पूरा भार निभावण ध्यांनी रे।
सतीदास मुनि सुखदानी ॥

---

१. वास्तविक।
२. धुन।
३. कीचड़।
४. आलस्य।

२६. भणवा तणो उदम भारी रे, वुन एकाग्र चित्त सुधारी रे।
विकथा'वत'[1] वाद निवारी ॥

२७. सीतकाले भणै सीत स्थांनो रे, जन मंकै तिहां सीत जांणो रे।
ग्यांन ध्यांन रमी गलतांनो ॥

२८. आवसग दशवैकालक आंमो रे, उत्तराध्येन वृहत्कल्प तांमो रे।
च्यारूं सूत्र सीख्या अभिरांमो ॥

२९. सूत्रां री हुंडी सीख्या सुचंगो रे, 'तीन सौ षट बोल अभंगो रे'[2]।
रंग्या संवेग नैं रस रंगो ॥

३०. वले सीख्या अनेक वखांणो रे सूत्र सरस वांच्या सुविहांणो।
झीणी चरचा तणा हुवा जांणो ॥

३१. सुखदायक संत सधीरा रे, गुण सागर गैहर गंभीरा रे।
हीये विमल अमोलक हीरा ॥

३२. आठमी ढाल में अधिकारो रे, सतीदासजी ना गुण सारो रे।
पुन्यवांन मुनी जग प्यारो ॥

ढाल ९

दोहा

१. शांति-गुणे कर शांत रूप, दांत दया दिलधार।
क्षांत गुणे मुनिवर खरो, विनयवंत विध वार ॥

२. च्यार वर्स रै आसरै, हेम जीत सतीदास।
संत वहु साथे सखर, रह्या चतुर चौमास ॥

३. समत अठारै इक्यासीये, पोस सुकल तिथि तीज।
कियो सिंघाडो जीत नो, आप्या संत सुचीज ॥

४. सतीदासजी नै सखर, जाण्यां अधिक सुजांण।
हेम तणै मुख आगले, थाप्या आगेवांण ॥

५. हेम भणी हद रीत सूं, सखरी चित्त समाध।
उपजाई विध-विध करी, आंणी अति अहलाद ॥

---

१. वात।
२. स्वामीजी कृत ३०६ बोलों की हुंडी।

६. सरस कंठ वाणो सरस, सरस कला सुविहांण ।
हेम समीपे शांति ऋष, बाचै सरस वखांण ।।

*सुगुण मुनि सतीदास जी ।। ध्रुपदं ।।

७. शांति गुणे सतीदासजी साधु जी, हेम भणी हितकार ।
विनय विवेक विचार में साधु जी, हरष अधिक हुंसियार ।।

८. नित्य प्रत व्यावच निरमली, तैं तन मन सेती कीध ।
विविध साता उपजायवे, जग माहि जश लीध ।।

९. बोलण में मृदु बोलवै, विनय वचन वर वांण ।
चित 'परसण'[1] कियो हेम नो, तू अवसर नो जांण ।।

१०. मन गमतो मुख आगले, चालंतो चित लार ।
जयणा कारण जुगत सूं, हेम तणै अति प्यार ।।

११. सखर भक्ति मन सुद्ध सू, मन गमता च्यारूं आहार ।
साता विविध स्वामी भणी, तैं उपजाइ अपार ।।

१२. शयनासन वस्त्र पात्र सूं, दिल अंग चेष्टा देख ।
हेम भणी तै रीझाविया, ग्यांन गुणे सुविसेख ।।

१३. सखर समय सुणवा तणो, हेम तणै दिल 'वाध'[2] ।
सूत्र अनेक सुणाय नै, तै उपजाई समाध ।।

१४. सुप्रसन्न किया स्वामी हेम नै, सखर पमायो सतोष ।
झीणी रहिसां अति जुक्ति सू, हेम सीखाई निर्दोष ।।

१५. सूत्र बतीस वचाविया, सूक्ष्म चरचा नी 'संध'[3] ।
हेम ऋषी थांनै हेत सू, प्रगट सीखाई प्रबंध ।।

१६. सखर पढाया थांनै सोभता, हेम ऋषी हद रीत ।
भाजन जाणी भणाविया, वले जांण्या घणा सुविनीत ।।

१७. अभाजन मांहि प्रक्षेपियां, ते सूत्रार्थ नो देण हार ।
प्रवचन कुल गण सघ बाहिरै, ज्ञान विनय हीन ते असार ।।

१८. अरिहंत थिवर गणधर तणी, मर्यादा नो लोपणहार ।
तिणसू भणावणो भाजन देख नै, कह्यो सूरपण्णत्ति मझार ।।

*लय—शीतल जिन शिवदायका ।

१. प्रसन्न ।
२. अधिक ।
३. रहस्य ।

१९. परम भाजन थानै परखिया, सखर प्रकृत सुखकार।
अधिक विनय गुण आगला, (तिण सूं) हेम भणाया थांनै सार॥
२०. सुंदर स्वभाव थां सारिखो, मनुष हजांरा रै माय।
वहुल पणै नहिं देखियो, तुझ गुण 'अनघ'[1] अथाय॥
२१. सखर मुद्रा थांरी सोभती, पवर प्रशांत आकार।
प्रशांत रस प्रभूजी कह्यो, देख लो अनुयोग दुवार॥
२२. नवमी ढाले गुण निरमला, अतिसयकारी मुनि अैन।
याद आयां हीयो हुलसै, चित्त मांहै पांमै चैन॥

ढाल १०

दोहा

१. तन नी चंचलता तजै, 'रजै'[2] उत्तम गुणस्थान।
'लजे'[3] दोष थी शांति ऋष, भजै अमर निरवांन॥
२. सप्तवीस जाझो सखर, हेम तणी ऋषी शांति।
सेव करी सांचै मनै, भाजी मन री भ्रांति॥
३. अंत सीम दीधो अधिक, सखरो संजम साझ।
शांति ऋषीसर सूरमो, सुविनीतां सिरताज॥
४. उगणीसै चौके वरस, सरियारी में सार।
जेठ शुक्ल तिथि बीज दिन, अणसण हेम उदार॥
५. सतंतरा सूं च्यार लग, चौमासा सुखकार।
हेम नवरसा में कह्या, इहां न कह्यो अधिकार॥
६. शांति ऋषी नै सूंपिया, सुगुणा संत उदार।
ऋपराय चौमासो भलावियो, परगट सैहर पीपार।
७. पांच थकी आगे पवर, पाँच चौमासा पेख॥
शांति किया सखरो सुजश, सांभलजो सुविसेख॥

---

१. पवित्र।
२. प्रसन्न होते।
३. सकुचित होते।

*धिन-धिन शांति मुनीश्वरू ।। ध्रुपदं ।।

८. उगणीसै पांचे समै, सैहर पीपार चौमास ।
छ संतां सूं ऋष शांति जी, अधिको धर्म उजास ।।

९. सरस कंठ स्वर सूं सही, वाचत सखर वखांण ।
शांति मुद्रा देखी करी, हरखै जन सुविहांण ।।

१०. अन्य मति पिण ऋष शांति नी, मुद्रा देखत पांण ।
तन मन हिवडो हूलसै, वले हरखै साभल वांण ।।

११ जिन धर्म नी महिमा घणी, अधिक हुओ उपगार ।
तपसा पिण हुइ मोकली, पाया जन चिमत्कार ।।

१२. पांच किया ऋषि शांतिजी, कर्मचंद किया सोल ।
आछ आगारे ओपता, प्रात वखांण सुचोल ।।

१३. उदय उदक आगार सूं, सुद्ध तप दिन छयालीस ।
हरखचंद सोलै किया, दीप किया इकतीस ।।

१४. चौथ भक्त मोती मुनी, ग्यांन ध्यान गलतांन ।
शाति विनय वर सांचवै, चरण बडा पहिछांण ।।

१५. उगणीसै छके समै, प्रगट पाली मझार ।
नव मुनी गण आगला, कियो घणो उपगार ।।

१६. छठ कियो ऋष शांतिजी, मोती ग्यांन गलतांन ।
चौथ भक्त वहुला किया, सखरी सीख सुजांन ।।

१७. कर्मचंद तेलो कियो, उत्तमचंद नव दिन ।
मास उदय कियो उदक थी, लोक करै धिन-धिन ।।

१८. हरप अठाई ओपती, दीपजी किया अठार ।
फेर अठाई ओपती, वलि किया नव तंत सार ।।

१९. पांच छोटू तप परवरो, नाथू चौथ उदार ।
शांति सुधा वच सांभली, जन पाया चिमत्कार ।।

२० उगणीसै साते समै, सैहर वालोतरे सोय ।
तिहां उपगार हुओ घणो, समज्या वहुला लोय ।।

२१. लोक सइकडां सांभलै, वर त्रिहु टक वखांण ।
शांति देशना सांभली, जन हरपै सुविहांण ।।

२२. पांच किया ऋष शातिजी, मोती ऋप किया इग्यार ।
कर्मचंद पांच पचखिया, आठ उत्तम अणगार ।।

---

*लय—धिन-धिन जम्बू स्वाम नै

२३. उदय अनोपम उदक थी, पवर किया पैंतीस।
हरखचंद पनरै किया, मुनि गुण विश्वावीस ।।

२४. आछ आगारे दीपजी, दिवस इक्यासी सुमेर।
वलि नव दिन किया निरमला, नाथू ऋप किया तेर।।

२५. उगणीसै आठे समै, पचपदरे चउमास।
अष्ट ऋपी गुण आगला, शांति तणो विसवास ।।

२६. उदयचंद गुण आगलो, उदक आगारे चालीस।
आछ तणा आगार थी, दीप किया इकतीस ।।

२७ हरखचंद तेरै किया, शांति तणै तन मांहि।
कारण अधिको ऊपनो, पिण समभावे सहै ताहि ।।

२८. त्यां उपगार हूओ घणो, तीनूं टक रा वखांण।
लोक सइकडां सांभलै, वारूं अमृत वांण ।।

२९. मास अढ़ाई आसरै ताव रह्यो मन मांय।
कारण मिट्यो साता हुई, पिण तन निवलाई अथाय ।।

३०. मन वलि यो मुनिवर घणो, नहीं रहिवा री नीत।
मृगसिर विद एकम दिने, विहार कियो धर चीत ।।

३१. जसोल होय वालोतरे, आया मुनी चलाय।
विचरत-विचरत आविया, सैहर वाघावास मांय ।।

३२. दिवस पचीस रै आसरै, हूआ वाघावास मांय।
इह अवसर हूई वारता, ते सांभलजो चितलाय।।

३३. दसमी ढाल मांहे कह्या, शांति चौमासा च्यार।
शांति मुनि पुण्य पोरसो, शांति गुणां रो भंडार ।।

ढाल ११

दोहा

१. इह अवसर मेवाड़ थी, आयो कासीद तिवार।
प्रसिद्ध 'पाली' सैहर में, कागद में समाचार ।।

२. पाली थी जन मोकल्यो, सैहर वालोतरे तास।
वालोतरा थी मेलियो, ऊवां दै वाघावास ।।

३. मेवाड ने पाली तणा, बालोतरा ना जोय।
कागद में समाचार ए, ऋषराय पोहुंता परलोय ॥

४. महा विद चवदश रात्रि में, छोटी रावलियां मांहि।
ऋषराय परलोक पधारिया, अचांणचक रा ताहि ॥

५. विशेष वेदन नां हुई, बैठां-बैठां जाण।
आउ अचींत्यो आवियो, सुणियो शांति सुजाण ॥

६. कडली लागी अति घणी, कही कठा लग जाय।
शांति समय रस थी तदा, लीधो मन समजाय ॥

७. ध्रिग-ध्रिग ए संसार नै, काल थी जोर न कोय।
ऋषराय जिसा महापुरुष था, जाय पहुंता परलोय ॥

८ साध साधवी श्रावक श्राविका, वली अनेरा लोग।
स्वांम मरण निसुणी करी, हुओ घणा नै सोग ॥

९. माह सुदि सातम सांभल्यो, शांति ऋषी तिणवार।
चिहु लोगस काउसग करी, पच्चख्या तीनूं आहार ॥

१०. तिण काले ऋष जीत वर, थली देश विहरत।
सैहर बीदासर में सुण्यो, स्वांम मरण विरतत ॥

११. शांति कहै साधां भणी, सुणो सहु मुनिराय।
ऋषराय गया परलोक में, अचांणचक रा ताय ॥

*अहो मुनि धिन-धिन शांति मुनीश्वरू ॥ ध्रुपदं ॥

१२. अहो मुनि जीतऋषि थली देश में, विचरै छै मुनिराज हो।
अहो मुनि पद जुवराज पैहली दियो, वर्स त्रांणूअै समाज हो ॥

१३. अहो मुनि ! सिरै किल्यांण आपां भणी, इहा थी करिवो विहार।
अहो मुनि ! जीत कनै आणो वेग सूं, न करणी ढील लिगार ॥

१४. अहो मुनि ! प्रगट पाली सैहर में, पका ह्वैला समाचार।
अहो मुनि ! जीत थली माहे अछै, अथवा आया मेवाड़ ॥

१५. अहो मुनि ! जिह ग्रांमे ऋषजीत ह्वै तिहां, जाणो आपां नै वेग।
अहो मुनि ! तास आणा सिर पर धरा, छाडी मन नो 'आवेग'[1] ॥

१६. अहो मुनि ! 'बडेरो ऋष'[2] काल कियां छतां, जाणो जोग्य 'तणी'[3] दिशि धार।
अहो मुनि ! आप छादै नहि विचरणो, कह्यो सूत्र ववहार ॥

---

*लय—अहो प्रभु अजित जिनेसर आपरो।

१. अहकार।

२ आचार्यादिक।

३ उस।

१७. अहो मुनि ! आप छांदै रहै तेहनै, प्रसंस्यां डंड आय।
अहो मु० ! नसीत उदेशे इग्यारमै, भाख्यो श्रीजिनराय।

१८. अहो मु० ! उत्तराधेन चौथा अधेन में, छांदो रूंध्यां कही मोख।
गुरू नी आज्ञा मांहै चालंणो, प्रभु वच निर्दोख॥

१९. अहो मु० ! इत्यादिक सूत्र नी वात नो, शांति ऋषीश्वर जांण।
अहो मु० ! विहार कियो पाली दिशा, शांति गुणां तगी खांण॥

२० अहो मुनि ! रोयट मांहे आया ऋपी, इह अवसर रै मांहि।
अहो मु० ! कासीद वीदासर थी मोकल्यो, शांति ऋपी पासे ताहि॥

२१. अहो मु० ! रोयट में ऋप शांति थी, आय मिल्यो तिण वार।
वीदासर जीत विराजिया, कह्या सहू समाचार॥

२२. अहो मु० ! पाली होय नै आवै पाधरा, इह अवसर रै मांहि।
अहो मु० ! संत हुंता जे मेवाड़ में, ते पिण आवै छै ताहि॥

२३. अहो मु० ! केयक चंडावल भेला हुआ, केइ जैतारण मांहि।
अहो मु० ! केयक पादू मांहै मिल्या, सतियां पिण मिली ताहि॥

२४. अहो मु० ! केयक सिरियारी आवता, केइ नवैनगर वाट।
अहो मु० ! केयक कृष्णगढ़ मारगे, सत सत्यांरा आवै थाट॥

२५. इण विधि साधु वहु साधव्यां, थली कांनी आवंत।
अहो मु० ! अचरज लोक पाम्यां घणां, थयो उद्योत अत्यंत॥

२६. अहो मु० ! अन्य मती पिण अचरज हुआ, यांरै 'एकठ'[1] अत्यंत।
अहो मु० ! आज्ञा तणी तीखी आसता, दीप्यो प्रभु तणो पंथ॥

२७ अहो मु० ! स्वमती च्यार तीर्थ सहू, पाया चित चिमत्कार।
अहो मु० ! शक्ति वाला वहु साधु साधवी, आय गया तिणवार॥

१८. अहो मु० ! शांति ऋषीश्वर आदि दे, संत घणा त्यारै लार।
लाडणू आवै आणंद सू, सुणियो जीत तिवार॥

२९. दोय साधु तो पैहलां मोकल्या, शांति ऋपी सांहमा जान।
अहो मु० ! ईडवे जाय भेला हुआ, तीस कोस उनमांन॥

३०. अहो मु० ! लाडणू आवै छै ते दिने, जीत कहै सुणो संत।
अहो मु० ! शांति साहमा शीघ्र जायजो, संत सुणी हरषंत॥

३१. अहो मु० ! सरूपचंद ऋष आदि दे, संत घणा लेइ सोय।
अहो मु० ! सांहमा आया ऋष शांति रै, हरष हीये अति होय॥

---

१. एकता।

३२. अहो मु० ! लोक घणा नगरी तणा, शांति ऋषी सांहमा जाय।
मेलो मंड्यो तिण अवसरे, हूओ हरष ओछाय॥

३३. अहो मु० ! शांति ऋषी बहु संता थकी, प्रणमै जीत ना पाय।
अहो मु० ! लोक सइकडां भेला हुआ, संत सती बहु ताय॥

३४. अहो मु० ! धर्म उद्योत हुओ घणो, सैहर 'लाडणूं' रै मांय।
अहो मु० ! ठांणा चौरासी भेला हूआ, संत सती सुखदाय॥

३५. अहो मु० ! संत चालीस भेला हूआ, समणी चौमालीस न्हाल।
अहो मु० ! गहघट थट परगट पणै, वरत्या मंगल माल॥

३६. अहो मु० ! ढाल भली ए अग्यारमी, शांति ऋषीसर सार।
अहो मु० ! जीत समीपे आया लाडणू, हुओ हरष अपार॥

ढाल १२

दोहा

१. इह अवसर बीदासर थकी, श्रावक वंदन काज।
जीत शांति नै वंदवा, आया अधिक समाज॥

२. चौमासा री वीनती, अधिक करी अवलोय।
शांति ऋषी नै भलावियो, सैहर बीदासर सोय॥

३. सैहर 'लाडणू' में सखर, शांति मुनी नी सार।
पांती छोडी जीत ऋष, जांणी महा गुणधार॥

४. संत पैंतीसां सू सखर, विहार करी तिण वार।
सुजानगढ आया सही, शांति संग जय सार॥

५. प्रात वखांण समय पवर, च्यार तीर्थ रा थाट।
सहु सुणतां ऋष शांति नै, जीत कहै सुध वाट॥

६. इंद्र पास त्रयत्रिंश सुर, दोगुंदक कहिजेह।
तिम म्हांरै ए शांति है, 'तावतीसग'[1] सम एह॥

७. ठांणां गुणंतर आसरै, भेला हुआ तिवार।
सैहर बीदासर आविया, शांति संग जय सार॥

८. इह अवसर बीकानेर थी, सैहर बीदासर आय॥
च्यार बायां चारित लियो, एकण साथे ताय॥

---

१. त्रायस्त्रिंश=मन्त्री या पुरोहित का काम करने वाले देव।

९. त्यां च्यारां में एक मा, पुत्री दोय विसाल।
एक कुवारी किन्यका, परणी इक वय वाल ॥

१०. परणी केरी वात इम, सांभलजो सहु सार।
सील अष्टमी आदर्यो, चारित नी चित धार ॥

११. वात काढी दिख्या तणी, सासू सुसरा पास।
आग्या मांगै चरण नी, मन में अधिक हुलास ॥

१२. नवमी पिउ परदेश में, जाय पोहंतो परलोय।
तीज कागद आयो तदा, जांण लियो जन जोय ॥

१३. अचरज जन पाया घणां, बोलै इण विध वांण।
आगूंच सती नै सूझियो, सील आदरियो जांण ॥

१४. सोलै वर्स रै आसरै, संजम लीधो सार।
वैशाख सुदि सातम चिउं, समकाले व्रत धार ॥

१५. सत चौतीस सुहामणा, गुणपचास समणी सार।
त्यांसी ठांणां भेला हूआ, वीदासर सुखकार ॥

१६. मास खमण रहि त्यां थकी, आया लाडणू मांय।
शांति सग ऋषजीत रै, हिवडै हरष अथाय ॥

१७. शांति भणी त्यां राख कै, कीधो जीत विहार।
'जैपुर' चौमासो करण, साथे वहु अणगार ॥

१८. केयक दिन रहि लाडणू, शांति ऋषी सुखकार।
सैहर बीदासर आविया, आसाढ मास मझार ॥

१९. उगणीसै नवके वर्स, वीदासर चउमास।
पंच मुणी गुण निरमला, अधिको कियो उजास ॥

२०. 'सतंतरा सूं नव तिलक'[1], शांति मुनि सिरदार।
तपसा कीधी किण विधे, ते सुणजो विस्तार ॥

रूडो शांति विलास सुणीजै ॥ ध्रुपदं ॥

२१. चौथ छठ कियो वहु वारो, अठम दशम अधिक उदारो।
मुनि कीधा है हरष अपारो रे ॥

२२. पांच-२ ना थोकडा सीधा, शांति ऋषी वहु वार कीधा।
नर भव ना लाहवा लीधा ॥

---

१. स० १८७७ से १९०९ की साल तक।

*लय—राणी भाखै सुण रे सूडा

२३. सात दिवस किया इक वार, वले दोय अठाई उदार।
शांति ग्यांन गुणां रो भंडार ॥

२४. वर्ष अठाणुअे सुमुनीस, पाली माहे पवर सुजगीस।
आछ आगारे किया इकतीस ॥

२५. मास खमण में शांति सयांण, नित्य हेम नी वियावच जांण।
दिया दोनूइ टंक रा वखांण ॥

२६. त्याग तीन विगै उपरांत, जावजीव किया मुनि शांत (शांति)।
सुखदाइक महा गुणवंत ॥

२७. दिख्या लीधी ते रात्रि मझार, ओढी दोय पछेवडी धार।
ऋष जीत कह्यो तिण वार ॥

२८. एक चदर औढूं हूं सोय, हेम वय नेडा आया जोय।
ते पिण औढै पछेवडी दोय ॥

२९ हिवडां बाल अवस्था मांय, दोय चादर औढै तू ताय।
जीत बोल्यो इण विध वाय ॥

३०. शांति जीत तणी सुण वांण, एक ओढण लागो जांण।
तन सुखे समाधे पिछांण ॥

३१. हेम जीव्या जठा तांई देख, मुनि ओढी पछेवडी एक।
कारण री बात न्यारी पेख ॥

३२. हेम चल्यां पछै ऋषराय, मुनि शांति भणी कहै वाय।
दोयां सू ओढो आज्ञा नाय ॥

३३. तठा पछै ओढण लागा दोय, आचार्य रो वचन अवलोय।
सुविनीत न लोपै कोय ॥

३४ एहवो शांति ऋषि सुविनीत, आज्ञा आराधी रूडी रीत।
एक कर्म काटण री नीत ॥

३५ क्षांत गुणे शांतिऋषि खम, परम नरम वचन धर पेम।
जाणै कठिन वोलण रो नेम ॥

३६. निर्लोभपणै निकलक, आहार उपधि शरीर 'अवंक'[1]।
मुनि कमल जेम निर्पक ॥

३७. सरलपणै शांतिऋप सीर, हीये निमल विमल वर हीर।
जाणै गग सलिल नो नीर ॥

---

१. मूर्च्छा भाव रहित।

३८. लाघव कर्म उपधि लहलीन, सुध संजम मार राचीन।
एक कर्म काटण धुन कीन ॥

३९. मार्दव मान रहीत मुनिंद, चित्त उज्जवल पूनमचंद।
तसु देख्यांइ पांमै आनंद ॥

४०. सत्य वयण शांतिऋप मूर, वर वागरै वांण 'पंडूर'[1]।
कूड कपट कियो दूर ॥

४१. वर संजम शांति मुनी नो, निरतिचार प्राय लहलीनो।
गुनि निर्मल नाथ नगीनो ॥

४२. तप वाह्य अभितर तीखो, सुखदायक संत सधीको।
मुनि जिण सासण रो टीको ॥

४३. दिल रो मुनि शांति दातार, असणादिक देवै उदार।
हद समण भणी हेत कार ॥

४४. 'ब्रह्म'[2] शांति तणो अति घोर, जश धारक सील नो जोर।
नव वाड सहित निहोड[3] ॥

४५. संग छांड शांति सुख साज, पद भवदधि केरो 'पाज'[4]।
यो तो जगत उधारक जिहाज ॥

४६. त्रिय संग तजि जाण वेतरणी, सिव सुंदर प्रीत सुवरणी।
काहा कहियै शांति नी करणी ॥

४७. भला विमल मध्यस्थ सुभाव, हिये हास विलास न हाव।
निकलंक मुगति नीं नाव ॥

४८. निकलंक शांति मुनि निरख्यो, म्हे तो तन मन सेती परख्यो।
गुण गावत हिवडो हरख्यो ॥

४९. वाह-वाह रे शांति सधीरा, सायंर गैहर गंभीरा।
हद विमल अमोलक हीरा ॥

५०. अति सुंदर मुद्रा एन, ऋप याद आवै दिन रेण।
चित मांहै लहै अति चेन ॥

५१. ऋषराज शांति मुनि रटियो, म्हांरो दुरित उपद्रव मिटियो।
मुनि पंचमें आरे प्रगटियो ॥

---

१. निर्मल।
२. ब्रह्मचर्य।
३. निचोड़ (साराश)।
४. सेतु।

५२. करुणानिध शांति सी किरिया, विरला चौथे आरे 'विरिया'[1]।
इण आरे मुनि अवतरिया ।।

५३. बारमी ढाले संत सलूनो, जश धार शांतिऋष जूनो।
मांनू वीतराग नो नमूनो ।।

ढाल १३

दोहा

१. चर्म चौमासो शांति ऋष, सैहर 'बीदासर' सार।
मुनि मुद्रा निरखी सुजन, पाम्या तन मन प्यार ।।

२. शांति तणै मुख आगले, संत च्यार सुविनीत।
उदयचंद गुण आगलो, परम शांति सूं प्रीत ।।

३. हरकचंद निरमल हिये, दीपचंद 'दिल-पाक'[2]।
नाथू नमण गुणे निमल, छांडी 'अविनय—छाक'[3] ।।

४. सुखदाई च्यारूं श्रमण, शांति प्रकृति अनुसार।
वरतै व्यावच विनय में, पूरो पुन्य प्रकार ।।

५. त्रिहुं टक वखांण तृप्त चित, हद परषद हुसियार।
'घन'[4] जन मन आनंदकर, सरस वांण सुखकार ।।

*सुगुणा भजलै रै ऋषि शांति ।।

६. शांति ऋषीसर सुमता सागर, वागर अमृत वांण।
अधिक ओजागर गुण ना गागर, नागर शांति निधांन।

७. शांति तणी वाणी सांभल नै, पाम्या लोक हुलास।
तपस्या करता अघ अपहरता, अधिको धर्म उजास ।।

८. सामायक पोसा पडिकमणा, सखरी रीत सुचग।
धिन-धिन लोक करै धुन देखी, जीत्यो शांति 'अनंग'[5] ।।

---

१. समय।

२. पवित्र मन वाला।

३. अविनय रूप उन्माद।

***लय—सीता आवै रे घर राग**

४ बहुत।

५. कामदेव।

९. अन्यमती पिण मुनि अवलोकी, चित पाया चिमत्कार।
शांति जिसा भीक्खूगण सोभत, सासण रा सिणगार ॥

१०. दसम भक्त स्यूं अकवीस ताइं, सखर थोकडा जांण।
शांति तणी वाणी सांभल कीधा, 'पंच-सयां'[1] उनमांन ॥

११. शांति ऋषी पिण कियो थोकडो, पवर पंच नो एक।
उदयचंद तप उदक आगारे, छप्पन दिन सुविसेख ॥

१२. दोय थोकडा पंच तणा भल, उदक तणै आगार।
शांति तणी सेवा में रमतो, हरखचंद अणगार ॥

१३. पच आठ तप उदक आगारे, तंत तप दिन अरु तेर।
इगसठ आछ आगारे कीधा, दीपचंद दिलमेर ॥

१४. अठम भक्त पंच तप ऊजल, नाथू संत निहाल।
शांति तणै परसाद तपोधन, शांति मुनी गुण माल ॥

१५. इण विध चतुरमास में उत्तम, अधिक हुओ उपगार।
वडभागी वर शांति मुनीसर, सुजश करै संसार ॥

१६. बीकानेर थी आई वीनती, कार्तिक में कासीद।
शांति कृपा कर दर्संण दीजै, वड जश केरा वींद ॥

१७. शांति ऋषीसर इण पर भाखै, सरूपचंदजी स्वाम।
जिण दिश मुझ मेलेसी तिण दिश, विहार करण परणांम ॥

१८. मृगसर विद एकम दिन, मुनिवर 'तंतू'[2] जाच्यो ताम।
जीरण चादर देख शांति रे, साध कहै सुण स्वांम ॥

१९. नवी पछेवडी आप करीजै, अधिक सीत अवलोय।
पवर नीत ऋष शांति तणी भल, उत्तर आपै सोय ॥

२०. सरूपचंदजी स्वांम लाडणू, चौमासो चित चाव।
ते निज कर स्यूं चादर देसी, जद ओढण रा भाव ॥

२१. हरखचंद अति ही हठ कीधां, त्याग किया तिणवार।
शांति मुनि इम जाण रीत नो, नीत प्रतीत उदार ॥

२२. एकम रात रह्या पुर बारै, बीज दिने अभिरांम।
सरूपचंदजी स्वांम पधारया, दर्शण दीधा तांम ॥

२३. सरूपचदजी स्वामी लारै, कल्पै तिण पुर मांय।
सरूप संगाते आया सैहर में, शांति ऋषी सुखदाय ॥

---

१. पाच सौ।
२. वस्त्र।

२४. मुख आगल तंतु सर्व मूक्यो, त्यां आप्यो निज 'पाण'[1]।
आंण अखडित इम आराधै, सखरो शांति सुजांण ॥

२५. बीकानेर तणो 'मनसोभो'[2], बारस करो विहार।
वचन सरूप तणो अति वारू, शांति कियो अंगीकार ॥

२६. नित्य प्रति वखांण देवै निरमल, आठम दिन परभात।
सूत्र सूगडांग कियो संपूरण, कहै हरप नै वात ॥

२७. उत्तराध्ययने मृगापुत्र नो, पत्र राखजो त्यार।
काल प्रात वांचण रै ताई, एम कह्यो तिण वार ॥

२८. नवमी दिन प्रभात शांति नै, कहै सरूप सुजांण।
बीकानेर कल्पता रहिजो, मास एक मंडाण ॥

२९. सेपैकाल 'चौकले'[3] विचरी, मन तीखो हुवै तांम।
वीकानेरे चौमासो कीजो, सरूप भणै अभिरांम ॥

३०. एम कही नै दिशां पधारचा, सरूप शांति ऋषि साथ।
पुर वारै धोरा अति परगट, सुखसाता साख्यात ॥

३१. दिशा वैठतां शांति मुनी रे, तन मांहै तिण वार।
वेदन प्रगट थइ तन ढलियो, उपद्रव हुओ अपार ॥

३२. वाचा वध हुई उण वेलां, पिण तन माहै सचेत।
किंचत वेलां में नाथू मुनि, आवी देख्यो तेथ ॥

३३. स्वांम सरूप भणी वोलाया, आय मिल्या मुनिराय।
संत ऊपाडी नजीक धोरे, आंण सुवाण्या ताय ॥

३४. शाति भणी ऋप सरूप पूछै, स्यू तुझ वेदन सोय।
एक आंगुली ऊंची कीधी, वचन न वोल्या कोय ॥

३५ पुर में खवर हुयां वह आया, जनवृंद वेद तिवार।
नाड़ देख कहै सैहर ले जावो, म करो जेज लिगार ॥

३६. संत आसरै आठ मुनी नै, वस्त्र घाल उपाड।
सैहर वीदासर मांहै ल्याया, हुयो 'प्रवल हाकार'[4] ॥

३७. ओषद मरदन तेलादिक ना, कीया वहु विध जाण।
पिण उपचार कोय न लागो, आय गयो अवसांन ॥

---

१ हाथ।
२ विचार।
३. चातुर्मास क्षेत्र के आस-पास के गावो मे।
४ हाहाकार (वहुत वडी हलचल)।

३८. साढा पांच पौहर रै आसरै, वेदन रही असराल।
वाचा वंध सेन पिण न करै, कर्म महा विकराल॥

३६. किण हि भव में कर्म वांध्या, उदै हुआ तिण 'वेर'[1]।
शांति सरीसा महा पुरस नै, वेदन लीधा घेर॥

४०. महावीर तीर्थंकर त्यांनै, लोहीठांण पट मास।
'उजल'[2] वेदना त्यां 'अहियासी,'[3] तो वीजानो स्यूं तास॥

४१. आधी रात मठेरी आसरै, शांति मुनि कियो काल।
उगणीसै नवके मृगसर विद, नवमी तिथ निहाल॥

४२. धिग-धिग ए संसार भणी रे, काल स्यूं जोर न कोय।
शांति सरीखा महा पुरस ते, जाय पोहंता परलोय॥

४३ तन वोसराय काउसग में, गुणिया लोगस च्यार।
दसम दिन सगलाई मुनिवर, पचख्या तीनू आहार॥

४४ तन महोच्छव दसम प्रभाते, कीधा विविध प्रकार।
ते कारण संसार तणा छै, नही धर्म पुण्य लिगार॥

४५. शांति मुनी ना समाचार सुण, गांम नगर पुर देश।
चित करडी लागी अधकेरी, जांण रह्या सुजिनेश॥

४६. स्वमती अथवा अनमती नै, शांति मुनीसर सार।
सगला नैं मुखदाई अधिको, धर्म - मूर्त गुणधार॥

४७ वडभागी त्यागी वैरागी, सोभागी सुखकार।
ग्यांन गुणे अनुरागी गिरवो, सखर शांति अणगार॥

४८. समता खमता दमता जमता, नमता वचन निहाल।
तमता भ्रमता वमता तन मन, मुनी शांति गुणमाल॥

४६. सुख संपति दायक गुण लायक, दायक अभय दयाल।
वोधि पमायक धर्म वधायक, शांति ऋषी सुविशाल॥

५०. 'चितको चटको मटको छांडी'[4], 'दुरमत खटको पेल'[5]।
'निरुपद्रव्य वटको'[6] 'गुण नो गटको'[7], 'समय सुलटको'[8] झेल॥

---

१. वेला।
२. तीव्र।
३. सहन की।
४ मन की ठसक छोड़ दी।
५ दुर्वुद्धि व चिंता को ढकेल दिया।
६. निर्विघ्न-विभाग।
७ गुण की घूंट।
८ आगमो के प्रति झुकाव।

११

उदयचंदजी रो चोढालियो

ढाल १

दोहा

१. देश मेवाडे दीपतो, सैहर गोघूंदो सोय।
हेमो साह वसै तिहां, ओसवंस अवलोय॥

२. 'मालू मूंहता' जाति तसु, तास कुसालां नार।
तीन पुत्र तेहनैं थया, विचेट अधिक उदार॥

३. जेष्ठ एकलिगदासजी, उदयचंदजी आप।
अमरचंदजी तीसरो, स्थिर भिक्षू गण स्थाप॥

४. अल्प कर्म तिण कारणें, उदयचंद नैं आण।
हेमराजजी महा मुनि, मिलिया भाग्य प्रमाण॥

५. वर वैराग वधावियो, विविध प्रकार विशाल।
जांण 'पासीया'[1] ऊपरै, रंग लागो ततकाल॥

६. लागा भाडा ग्यांन रा, भागा कर्म कपाट।
'तागा तांता'[2] जोडवा, उदय उमंग सिव वाट॥

७. हेम सुधा वच सांभली, थयो दिख्या नै त्यार।
आणंद सूं ले आगन्या, महोछव मड्या अपार॥

८. घणा दिवस जीम्यो गुणी, पवर वनोला पेख।
वैरागी वनडो वण्यो, उदयचद सुविसेख॥

९. दिख्या महोछव दीपता, वर्स वीस उनमांन।
जग भूठो जाणी करी, चरण हरख चित्त आण॥

१०. समत अठार वयांसीये, पोह सुदि पूनम सार।
रायऋषि रा हाथ सू, लीधो संजम भार॥

११. हेमराजजी स्वाम नै, सूंप्या गणि ऋषराय।
विनयवंत गुणवंत अति, गण में सोभ सवाय॥

*गणि के शिष्य प्यारे॥ ध्रुपदं॥
ज्यांरी दिन-दिन सोभ सवाई, आतो विनय थकी अति पाई॥

---

१. पासा (लकड़ी का बना हुआ)।
२. धागा एव तार।
***लय— ज्यांरे सोभे केशरिया साडो**

१२. ओ तो उदयाचल अति नीको, शासन शिर टीको ॥
१३. ज्यांरी इर्या सुमति अमांमी, धुन आतम शिव पद धांमी ॥
१४. अति भाषा सुमति उच्चरतो, ओ तो पाप थकी अति डरतो ॥
१५. ओ तो सुमति एषणा साझी, ज्यांरी गवेषणा अति जाझी ॥
१६. ओ तो उपधि लेतां नें मेलंतो, ओ तो जयणां अधिक करंतो ॥
१७. ओ तो पंचमी सुमति पिछांणी, तिण में जयणा अधिक सुजांणी ॥
१८. ओ तो मन वचन नें कायो, त्रिहुं 'सावद्य गोप'[1] सवायो ॥
१९. पंच महाव्रत अभिलाखै, तसु यत्न घणें करि राखै ॥
२०. 'रखे'[2] पाप लागेला मोय, इम डरतो रहै मुनि सोय ॥
२१. घणो सुगुरु तणो सुवनीतं, तिण रै परम सुगुरु सू प्रीतं ॥
२२. रूडी रीत गुरां नै रीझाया, तिणसू अधिक-अधिक गुण आया ॥
२३. रूडी रीत सुगुरु नैं आराध्या, वारू उत्तरोत्तर गुण वाध्या ॥
२४. अंग चेष्टा प्रमाणे चालंतो, त्यांरी आण अखंड पालंतो ॥
२५. वडा मृदु कठण सीख देवै, मुनि तो पिण समचित 'वेवै'[3] ॥
२६. इण तो पोता रो छांदो रूंध्यो, तिणसू दिन-दिन सवलो सूध्यो ॥
२७. वहु दोष 'अपछंदा'[4] में जाणी, जिग 'छांदो'[5] रूंध्यो गुणखांणी ॥
२८. तिण सूं दिन-दिन गुण परगटिया, त्यांरा अविनय 'उपद्रव्य'[6] मिटिया ॥
२९. तिण विनय तणै सुप्रसादो, इण रा चित में अति अहलादो ॥
३०. जिण रै वारू विनय सुगंधो, तिण रै दिन-दिन अधिकआनंदो ॥
३१. ओ तो विनय सरोवर झूल्यो, गण में रहै फलियो फूल्यो ॥
३२. ओ तो विनय वसे रंगरलिया, तिण सूं मन मनोरथ फलिया ॥
३३. वले च्यार तीर्थ रै मांह्यो, इण री कीर्त अधिक अथायो ॥
३४. ठांम-ठांम सूत्रां रै मांह्यो, जश हेतू विनय कहायो ॥
३५. तिण सू विनय थकी जश वाधै, वलि अविचल शिव सुख साधै ॥
३६. छांदो रूंध्यां रा औ फल जाणी, ओ तो देखो उदय गुण खांणी ॥
३७. ओ तो चालै वडां रै अभिप्रायो, तिण सू रीझया सुगुरु सवायो ॥
३८. सुगुरु रीझयां अधिक गुण आया, सीख सुमति सुधारस पाया ॥
३९. सीख पायां उज्जल ध्यान ध्याया, तिण सू वहुला कर्म खपाया ॥
४०. वहु कर्म क्षये तसु जीवो, ओ तो ऊजल हूवो अतीवो ॥
४१. ओ तो जीव उज्जल थी साधी, तप विनय थकी रुचि वाधी ॥

---

१. पाप सहित कार्यों को रोक कर रखते ।
२. कदाचित् ।
३ ग्रहण करते ।
४. स्वच्छन्द ।
५ स्वाभिप्राय ।
६. उपद्रव ।

४२. रुचि वाध्यां सुगुरू ले आणा, अै तो तप करवा मंडाणा ।।
४३. मंड्यो तप करवा अति भारी, ओ तो उदयराज अधिकारी ।।
४४. अधिकारी उदयचंद नी· चंगी, आखी पैहली ढाल सुरंगी ।।

ढाल २

दोहा

१. उदयराज उदमी थयो, ·तप करवानै त्यार ।
सुदर तपसा सांभली, चित पामै चिमत्कार ।।

२, प्रकृति भद्र उपशांत चित, पतली च्यार कषाय ।
शील तणो घर सुदरु, अमल चित्त अधिकाय ।।

३. विनय तणो तो स्यू कहू, वारूं तास वखांण ।
जिम सूत्रे जिन आखियो, उदयराज तिम जांण ।।

४. हेम ऋषी रा संग सू, वाध्या गुण मणि हेम ।
उदयराज रा घट मझै, हेम वधायो खेम ।।

५. हेम सुपारस सारिखो, हेम साचलो हेम ।
हेम तणा गुण संभरयां, पामै अधिको प्रेम ।।

६ हेम सुमति ना सागरू, हेम क्षमा भरपूर ।
हेम सील नो घर सही, सखरो हेम सनूर ।।

७. हेम ग्यांन नो पींजरो, हेम ध्यांन गलतांन ।
हेम मान मद निर्दली, हेम शाति असमान ।।

८. हेम संवेग रसे भर रह्यो, हेम सुमति दातार ।
कहा कहियै गुण हेम ना, शासण नो सिणगार ।।

९. हेम स्थंभ शासण तणो, सुपने मुद्रा हेम ।
मूर्ति देख सुहांमणी, पांमै तन मन प्रेम ।।

१०. एहवा हेम मुनिद नै, रीझायां अधिकाय ।
विनय करी गुण वाधिया, उदयराज घट मांय ।।

११. उदयराज मुनि हेम ना, विनयवत अधिकाय ।
वैष्णव मत में जिम कृष्ण रै, (ज्यूं) ऊधो भक्त कहाय ।।

१२. तिम हेम मुख आगले, उदयराज अवलोय ।
वैरागी त्यागी बडो, जशधारी अति जोय ।।

१३. तपस्वी पिण तीखो घणो, तसुं तप वर्णन वात।
पूरो तो किम कहि सकै, संक्षेपे अवदात ।।

गुणी गुण गावो रे ।।

*गुणी गुण गावो रे म्हारा उदयराज नै, वारू रीत वधावो रे ।। ध्रुपदं ।।

१४. चोथ भक्त कीधा मुनि बहुला, वलि बहु बेला तेला रे।
चोला अने पचोला बहुला, कीधा अधिक समेला रे।

१५. पट-षट ना बहु किया थोकडा, दिल समता अधिकाई।
सात-सातना तप बहु कीधा, वलि वहु करी अठाई ।।

१६. नव-नव पिणतप दिन बहु नींका, दश-दश वली उदारो।
ग्यारा तप दिन किया मुनीश्वर, पनर किया बे वारो ।।

१७. तेरै मास खमण वलि तप ताजा, ग्यार उदक आगारो।
मास खमण दे आछ आगारे, परम तपे करि प्यारो ।।

१८. एक वार मुनि सोलै कीधा, वलि उगणीस उदारो।
एक वार कीधा चित उज्जल, ए सहु उदक आगारो ।।

१९. वलि इकवीस किया चित उज्जल, तप दिन वलि तेतीसो।
पंच तीस तप दिवस प्रवर मुनि, उदक आगार जगीसो ।।

२०. दोय वार सैंतीस किया मुनि, वलि अडतीस उदारो।
दोय वार तप दिन गुणचाली, ए पिण उदक आगारो ।।

२१. इकचालीस दिवस तप उज्जल, तप दिन वलि पैंताली।
सप्त अनें चालीस किया सुद्ध, इम आतम उजवाली ।।

२२. दिवस पचासज किया दीपता, तेपन दिन वलि ताजा।
छप्पन दोय वार तप छाजै, सुजश नगारा जाझा ।।

२३. ए सहु उदक आगारे मुनिवर, कीधो तप अधिकायो।
परम विनीत क्षमा सुं तसु तप, दीपै अधिक सवायो ।।

२४. दोय मास मुनि आछ आगारे, तप रस प्याला पीधा।
धोवण पानी तणे आगारे, दिवस सितंतर कीधा ।।

२५. संवत अठार नेउआ पाछै, मास-मास में सारो।
एक-एक मुनि कियो थोकडो, आठा तांई उदारो ।।

२६. वरस नेउआ सू आठा लग, शीतकाल रै मांह्यो।
चोलपटा उपरंत न ओढ्यो, सुखे समाधे ताह्यो ।।

---

*लय—गुणी गुण गावो रे······

२७. उगणीसै नवका थी सीयाले, पछेवडी एक पेखो।
शीत काल में ओढी सुध मन, बावीसा लग देखो।

२८. एहवो तप कीधो मुनि उत्तम, बहु कर्म निर्जरा कीधी।
उष्ण काल में घणा वरस लग, आतापन पिण लीधी॥

२९. शांत दांत गुणवंत मुनीश्वर, क्षांति विनय अधिकेरो।
समचित सू वहु कर्म खपाया, झाली 'तप-समसेरो'[1]॥

३०. अचरज कारी भद्रपणो तसु, मुद्रा सोम उदारी।
क्षांति दांति पिण आश्चर्यकारी, वलि तप आश्चर्यकारी॥

३१. घोर तप चौथा आरा ना, मुनिवर नो जिम सुणियो।
पंचम आरे उदैराज नो, प्रगट घोर तप धुणियो॥

३२. एहवो तप काना सुणियां थी, कायर तनु कंपायो।
अति उचरंग थकी 'उदयाचल'[2], ए तप कर 'तन तायो'[3]॥

३३. परम विनीत तपस्वी पूरा, हुआ मुनीश्वर आगै।
तिम हिज अधिक विनीत तपस्वी, ए उदयाचल सागै॥

३४ प्रकृति भद्र उपशांत मृदु अति, सरलपणो चित धारै।
चोथे आरे मुनिवर सुणिया, उदयाचल इण आरै॥

३५. उगणीसै वर्स चोका तांई, हेम ऋषी री सेवा।
पछै हेम परलोक पधारचा, शाति सुधा रस लेवा॥

३६. नवका तांई शांति ऋषी नी, सेव करी अति साची।
शांति ऋषी परलोक सिधाया, जग में कीरति जाची॥

३७ 'षट चउमासा'[4] हरष ऋषी पै, हरष धरी नै कीधा।
सुखदाई सुगुणो गुण गैहरो, सम रस प्याला पीधा॥

३८. गणपति जेष्ठ सहोदर सुगुणा, सरूपचंदजी स्वामी।
'सप्त चउमासा'[5] तसु मुख आगल, कीधा अति हित कामी॥

३९. विविध विनय अरु व्यावच कर नै, रूडी रीत रीझाया।
चरम चउमासो सैहर लाडणू, वर्स बावीसे आया॥

४०. तप वर्णन सुख करण 'घनाघन'[6], अघ हरणन नी आखी।
दूजी ढाल विशाल रसालज, उदयाचल नी भाखी॥

---

१. तप रूप तलवार।
२. मुनि उदैराजजी।
३. शरीर को तपाया।
४. स० १६१० से १५ तक।
५ स० १६१६ से २२ तक।
६. अत्यधिक।

ढाल ३

दोहा

१. सरूपचंदजी स्वाम पै, वारू विनय विलास।
करता धरता ध्यान सुद्ध, हरता अघ दल रास ॥

२. तिण बावीसा वर्स में, जय गणपति चउमास।
प्रगट सुघट पाली नगर, अधिको धर्म उजास ॥

३. दिख्या अष्टज दीपती, समणी नी सुखकार।
अपर उद्योतज अधिक ही, चउमासे चिमत्कार ॥

४. मरुधर नें मेवाड ना, थलवट ने ढूढार।
दक्षिण नें गुजरात ना, दर्शण करण उदार ॥

५. हिव चउमासो ऊतरयां, गणपति कियो विहार।
विचरत सुखे सुखे करी, संत सत्यां परिवार ॥

६. कांठे बहु उपगार करि, नर नार्यां रै झंड।
विचरत पादू आविया, संत सती 'सुख-मंड'[1] ॥

७. इण अवसर मालव थकी, दर्शण काजै सोय।
जन बे सय रै आसरै, आयां अचरज लोय ॥

८. गांम-गांम जन व्रंद अति, ठांम ठांम अति थट्ट।
अधिक 'हगामे'[2] आवता, सैहर लाडणू वट्ठ ॥

९. विहार कियो पादू थकी, सुगुणा संत सुघट्ट।
इतरा मांहै भल कियो, थलवट केरो थट्ट ॥

१०. लोक सईकडां व्रंदजन, तीस कोस उनमांन।
मारग में मेलो जबर, जाणक जबरी 'जांन'[3] ॥

११. महा सुदि सातम लाडणू, सुणियो सरूपचंद।
सनमुख आया गणि मिल्यां, पाया परमानंद ॥

१२. जबर झंड मेलो मड्यो, तेहिज दिन तत सार।
गणिपट महोच्छव दीपतो, उदय हरष अधिकार ॥

१३. सुण शासण महिमा सरस, उदयाचल आनंद।
ए लक्षण सुविनीत ना, 'कुमोदनी'[4] जिम चंद ॥

---

१. सुखकारी।
२. धूम-धाम।
३. बारात।
४. कुमुदिनी (कमलिनी)।

१४. माह सुदि पूनम रै दिनै, 'दिख्या'[1] एक उदार।
दिवस कितै रही तिहां थकी, गणपति कियो विहार ॥

१५. दर्शण सुजाणगढ दे, दिन चउवीस उदार।
आया स्वाम स्वरूप पै, सैहर लाडणू सार ॥

१६. स्वाम सरूप सुसंगते, उदय तणै आरोग्य।
गणि दर्शण चित्त प्रसन्न ह्वै, प्रबल भाग्य वर जोग्य ॥

*उदयाचल गुण आगलो ॥ ध्रुपदं ॥

१७. चैत्र शुक्ल तेरस दिने, कांयक 'ताव'[2] लखायो जी।
बेलो पचख्यो महा मुनि, तेरस चवदश ताह्यो जी ॥

१८. छठ भक्त में महा मुनि, दशम भक्त धर लीधो जी।
गणपति पासे महा गुणी, पारणो बीच न कीधो जी ॥

१९. चोला में नव पचखिया, गणपति पास उदारो जी।
पारणो बीच कीयो नही, अडिग पणै अणगारो जी ॥

२०. पंचमे दिवस गणि कीयो, बीदासर नै विहारो जी।
सातमे दिवस सरूप पै, मांगै उदयराज संथारो जी ॥

२१. अति हठ अणसण नीं कियां, सरूप कहै तिण वारो जी।
गणि समाचार आया पछै, स्थिर चित कीजो संथारो जी ॥

२२. दिवस सातमें तप तणै, कहै अणसण नाहि करावो जी।
तो नव दिन तो आगै पचखिया, ऊपर च्यार वलि पच्चखावो जी ॥

२३. च्यार बलि पच्चखाविया, दिवस थया इम तेरो जी।
वार-वार मागै मुनि, सथारो अधिकेरो जी।

२४. तेरम दिन अति हठ करी, अणसण री अधिकायो जी।
दिन च्यार बलि पच्चखाविया, पारणो वीच न ल्यायो जी ॥

२५. 'सतर'[3] विचाल सता भणी, वचन वदै सुविशाली जी।
संथारा नी सोभती, कोजै अधिक दलाली जी ॥

२६. सत कहै सुविनीत थे, वड वैरागी ने त्यागी जी।
फलता दीसै आप रा, मन रा मनोरथ सागी जी ॥

२७. दिन ऊगै दिवस अठारमै, हठ अणसण री अथायो जी।
वलि चिउं दिन पच्चखाविया, पारणो वीच न ल्यायो जी ॥

---

१. अनुमानतः साध्वी श्री चूनाजी (३६८) 'बीकानेर' की दीक्षा हुई।

*लय—अमर जश गुण आगलो।

२. बुखार।

३. १७ वें दिन।

२८. अणसण विचाले मांगता, तप दिन इम इकवीसो जी।
हरष घणो मुनिवर तणै, दिन-दिन अधिक जगीसो जी।।

२९. दिन ऊगै दिवस बावीसमें, संतां नै शब्द सुणायो जी।
अणसण आज खराखरी, आदरणो अधिकायो जी।।

३०. दोय मुहूर्त्त दिन आसरै, चढियै थकै पहिछाणी जी।
स्वाम सरूप रै आगलै, बोलै इह विधि वाणी जी।।

३१. बोलाया स्वाम सरूप नै, साप्रत हीज संथारो जी।
प्रगट पणै मुझ पचखणो, तिण में 'फेर'[1] न मारो जी।।

३२. तांम सरूप पधारिया, अर्ज करै इह रीतो जी।
आप वडा बहु जाण छो, म्हारै अणसण सूं अति प्रीतो जी।।

यतनी

३३. स्वामी नाथ करूं हूं अरजी, हूं तो चाहूं आपरी मुरजी।
कृपा मुझ ऊपर कीजै, संथारो पच्चखावी दीजै।।

३४. म्हारा मन रा मनोरथ शेष, आप पूरया आगै अनेक।
तिण सूं आप थकी ए अरज, म्हारै संथारा की गरज।।

३५. म्हारी पकी राखो परतीत, वारू निरमल जाणजो नीत।
आप मन में कांइ मत ल्यावो, खराखरी अणसण पच्चखावो।।

३६. लोक आय पूछै छै मोय, आज दिवस किता हुवा सोय।
वार-वार पूछै नही कोई, एहवो काम करूं अवलोई।।

३७. पूछै तो कहूं वचन उदारो, म्हारै जावजीव रो संथारो।
सरूप कहै विचारी थे भारी, थारो सूरा पणो अधिकारी।।

३८. इसडी करो उत्तावल कांय, राखो धीरज अति मन मांय।
केइक दिवस-तणी जेझ कीजै, पछै अणसण आदर लीजै।।

३९. जब तपस्वी बोल्यो तिण वारो, हिवडांज करावो संथारो।
पच्चखाया पछै जावा देसूं, इम हठ करै 'तरै तरै सू'[2]।।

४०. *स्वाम सरूपज तिण समै, भरियो तांम हुंकारो।
उदयाचल तिण अवसरे, पायो हरष अपारो।।

---

१. फर्क।

२. तरह-तरह के (विविध प्रकार के)।

***लय—अमर जश गुण आगलो···**

४१. प्रात वखांण में परखदा, सुणियो शब्द जिवारो।
संथारो देखण आविया, वहु जनव्रंद तिवारो ॥
४२. साधु साधवी श्रावक श्राविका, चिहु तीर्थ हुआ भेला।
उदयाचल अणसण समै, मडिया जवरा मेला ॥
४३. ओरी मांहि सू आयनै, हीमत अति हुंसियारी।
स्वाम सरूप सूं वीनवै, मुझ संथारो सुखकारी ॥
४४. फेर सरूप खरावियां, तपस्वी वोल्यो त्यांही।
दोय मास जो नीकलै, तो पिण अटकै नांही ॥
४५. भिक्षु भारीमाल ऋषिराय नों, 'जय जश' नो सुखकारो।
सरणो लीधो सुदरू, वलि गुण मंगल च्यारो ॥
४६. नमोत्थुणं सिद्धां भणी, वलि अरिहत नै गुणियो।
धर्माचार्य नैं नमी, स्वय मुख तपस्वी थुणियो ॥
४७. च्यार तीर्थ रा व्रंद में, सरूपचंदजी स्वामी।
तीन आहार पच्चखाविया, जावजीव लग धामी ॥
४८ सूरापणो देखी करी, जन पाया चिमत्कारो।
चौथा आरा सारिखो, प्रत्यक्ष एह संथारो ॥
४६ वैशाख सुदि पंचम दिने, तीन मुहूर्त्त उनमानो।
दिन चढियै तपस्वी कियो, संथारो सुविधानो ॥
५०. तंत ढाल कही तीसरी, अणसण अधिक उमंगो।
उदयराज गुण आगलै, धार्‌यो सरस सुरंगो ॥

ढाल ४

दोहा

१. खबर हुई नगरी मझै, संथारो सुण कांन।
वहु नरनारी आवता, धरता तपस्वी ध्यांन ॥
२. अन्यमती पिण आयनै, तपस्वी नो दीदार।
देखी अचरज पावता, वंदै वारंवार ॥
३. केइ आवै केइ जावता, जवरो मेलो जाण।
त्याग वैराग करै घणा, उजम इधको आण ॥

४. नर नारी वहु ग्रांम ना, आवै दर्शण काज।
वंदणा कर नै इम कहै, धिन-धिन-धिन ऋषिराज ॥
५. अणसण सुण गणपति तदा, कागद लिख निज हाथ।
मुनिवर नै दै मोकल्या, विविध वैराग सुवात ॥
६. तपसी सुण हरख्यो घणो, चढियो पोरस पूर।
वैराग री वातां सुणी, वाधै मुख नो 'नूर'[1] ॥
७. तीन वार मुनि मेलिया, कागद दे तसु हाथ।
विविध समय रस वारता, तपसी सुण हरषात ॥

*मुनि प्यारा! उदयाचल अणसण सुण जै ॥ ध्रुपदं ॥

८. उदयराज तणो संथारो, सुणियो देश-देश मजारो।
जन पाया अति चमत्कारो ॥
९. हुवा लाडणूं मांहि हंगाम, उदयराज तणा अभिरांम।
वहु लोक करै गुणग्रांम ॥
१०. धिन-धिन करै वहु जन्न, तपसी तणो कर दर्शन्न।
त्यांरो तन मन होवै प्रसन्न ॥
११. यांतो चोथा आरा जिसी कीधी, इण पंचमे आरे प्रसीधी।
आ तो सांप्रत ही देख लीधी ॥
१२. केइ कहै तपसी रै संथारो, सीजै ज्यां लग निश चौवीआरो।
केइ नीलोतरी परिहारो ॥
१३. केइ करै विगै रा त्याग, केइ आदरै सील सुमाग।
इम वाध्यो त्याग वैराग ॥
१४. सरूपचंदजी स्वामी आद, अति आणी मन अल्हाद।
उपजावै अधिक समाध ॥
१५. वैराग री वातां सुणावै, ज्यांरा भिन-भिन भेद वतावै।
तपस्वी सुण-सुण नै हरषावै ॥
१६. सरूप कहै करणी करी भारी, घणो लाहो लीयो सुविचारी।
छेहडे अणसण अधिक उदारी ॥
१७. ऊपजता दीसो मोटै ठिकांण, सीमंधर स्वामी रा जाण।
दर्शण करता दीसो गुणखाण ॥
१८. गणधर साधु साधव्यां रा झंड, नंदीसर द्वीप महोच्छव मंड।
तुम्हे देखता दीसो अखंड ॥

---

1. तेज।
*लय—राणी भाखे सुण रे सूडा

१९. भिक्षु भारीमाल ऋषिराय, सतजुगी हेम शाति सुहाय।
मिलता दीसो थोडा दिना मांय ।।

२०. तपस्वी कहै पूज म्हाराय, त्यांरै प्रतापे सुखदाय।
वलि आपरा स्हाज सू ताय ।।

२१. विविध गाथा सूत्रा नी सुणावै, वारू समय सुधा वरसावै।
तपस्वी सुण-सुण नै हुलसावै ।।

२२. दोय ध्यांन वैराग रा वारूं, सतरै वार सुणाया उदारू।
सुद्ध आत्म तारण सारू ।।

२३. हेम · नवरसो दोय वार, आचाराग नी जोड उदार।
भिक्षु जश रसायण सार ।।

२४. जोड भगवती नी सुविसेख, तिण रा पाना वतीस संपेख।
वले अवर ही ज्ञान अनेक ।।

२५. तपस्वी नैं सुणावै सार, सुण-सुण नें लहै चिमत्कार।
इतला में आया समाचार ।।

२६. बहु संता तणै परिवार, जय गणपति आप उदार।
बीदासर सूं कीयो विहार ।।

२७. तपस्वी सुण नैं हरष अति पाया, पछै सुणियो 'गुणोडे' आया।
जब तन मन अति हरषाया ।।

२८. प्रथम जेठ विद छठ सार, गणि लाडणू आया तिवार।
सांह्मां आया सरूप उदार ।।

२९. जन पाया घणु| चिमत्कार, पछै आया सैहर मझार।
जनवृंद सइकडा लार ।।

३०. तपस्वी उठी थइ सन्मुख आवी सीधा, गणपति ना दर्शण कीधा।
वचनामृत प्याला पीधा ।।

३१. गणि दर्शण कर गुणखांन, वचनामृत साभल कान।
तपस्वी पायो हरष असमांन ।।

३२. जद हूंतो अडतीसमो दिन्न, वारू वचन वदै प्रसन्न।
म्हारै आज दिहाडो धन्न ।।

३३. तपस्वी रै संथारे न्हाली, सुगणा तिहा सत पैताली।
निनाणु समणी सुविशाली ।।

३४. घणा धारै चौथ भक्त सार, छठ अठम-अठम धार।
जाव पनर लगै सुविचार ।।

३५. घणा संत मुनीश्वर सार, वहु विगय तणो परिहार।
'छजै'[1] मुनि तजिया त्रिहुं आहार।

३६. गांम पर गांम रा जनवृंद, थट प्रगट अधिक आनंद।
ओ तो जबर मेलो सख कंद॥

३७. नित्य प्रत गणपति सुविचारी, सरस संवेग रस सुखकारी।
संभलावै विविध प्रकारी॥

३८. सूत्र पाठ अर्थ सुणावै, जिन वयण सुधारस पावै।
वारू संवेग रस वरसावै॥

३९. उत्तराध्येन रो छठो अज्झयण, वलि तीजो नें अष्टम रयण।
अर्थ सहित सुणावै सुवयण॥

४०. गाथा पंचमज्झयण नीं भारी, पंडित मरण तणी सुखकारी।
अर्थ सहित सुणावै उदारी॥

४१. मरण आयां त्रास नही पाय, भय सू ऊभा न करै रोमराय।
राखै दृढ़ परिणाम सवाय॥

४२. वलि नरक तणा दुःख भारी, उगणीसमज्झयण मझारी।
अर्थ सहित सुणाया तिवारी॥

४३. मरणातिए याद करीजो, दुःख वेदन सु म डरीजो।
मन में समभाव धरीजो॥

४४. भली करणी रा सुभ फल सारी, खोटी करणी रा फल दुःखकारी।
ओ तो कह्या सिद्धान्त मझारी॥

४५. जे नारक नरक रै मांय, सहस्र वर्स में कर्म खपाय।
तेह थी अधिक चौथ भक्त मांय॥

४६. वलि छठ भक्त रै मांय, लक्ष वर्स थकी अधिकाय।
ते तो सौ गुणो लेखो कहाय॥

४७. वलि अठम भक्तज मांय, कोड वर्स थी अधिक खपाय।
इहां पिण कह्यो सौ गुणो ताय॥

४८. वलि दशम भक्त रै मांय, कोडाकोडि थी अधिक खपाय।
इहां कोडि गुणो अधिकाय॥

४९. इम कर्म खपावै मुनिंद, भगवती में भाख्यो जिनचंद।
थारै तो है संथारो अमंद॥

---

१. मुनि छजमलजी (१७५) 'मांढा'।

५०. जावजीव अडिग चित्त रहिवो, थांरी निर्जरा रो स्यूं कहिवो।
समभाव अधिक सुख लहिवो।।

५१. तृण पूलो न्हांख्यां अग्नि मांय, शीघ्रइज भस्म हुय जाय।
मुनि रै इम कर्म खपाय।।

५२. तप्त लोह कडाहला मांय, जल बिंदु प्रक्षेप्यां ताय।
तत्काल विध्वंसज थाय।।

५३. इम मुनिवर नै अवलोय, तप थी क्षय कर्म नो होय।
भगवती में ए दृष्टान्त दोय।।

५४. सुत श्रेणक मेघकुमार, गुणरत्न ने पडिमा बार।
मास पावग मन संथार।।

५५. इम खंधक मास संथार, सुत थावच्चासुत अणगार।
वलि सेलक ऋषि सथार।।

५६. मेघ कुमर नै विजय विमान, 'अच्चू'[1] खंधक सुक सिव जाण।
सिव सेलक थावच्चा माण।।

५७. वलि तीसक कुरुदत्त तास, छठ अठम तप गुण रास।
चरण आठ वर्ष नें छमास।।

५८. यां पिण पाओवगमन सथार, इक मास अर्द्ध मास सार।
गया सुधर्म इसाण मझार।।

५९. सहु पाठ नें अर्थ उदार, जन पर्षद व्रंद मझार।
सुणाया जय गणपति सार।।

६०. वले ज्ञाता नों पाठ प्रसीधो, नेम वांदण अभिग्रह कीधो।।
पंच पांडव मन दृढ़ कीधो।

६१. मास-मास खमण तप करता, 'हत्थीशीर्षपुर' संचरता।
पारणे पुर माहै फिरता।।

६२. जन पास सुण्या समाचार, नेमीश्वर पहुंता मोक्ष मझार।
जद पाछा आया ते बाग मझार।।

६३. जद मन मांहि कीयो विचार, पाया नेम क्षेम सिव सार।
तो हिवै 'सिरै'[2] आपा नै सथार।।

६४. आहार परठ संथारो ठायो, ओ तो पाओवगमन सोभायो।
दोय मास नो अणसण आयो।।

---

१. बारहवा देवलोक।

२. श्रेयस्कर।

६५. पांचूं सिव पद में संचरिया, वर आत्मीक सुख वरिया।
ज्यांरा आत्म कार्य सरिया ।।

६६. सहु पाठ नें अर्थ सुणाया, उदयराज भणी अधिकाया।
वचनामृत प्याला पाया ।।

६७. ओ तो गजसुकुमाल मुनिंद, नव वर्स तणो सुख कंद।
इण तो मेट दीया सव फंद ।।

६८. सिर धरिया है लाल अंगार, समभाव सह्या तिणवार।
मुनि पहुंता है मुक्ति मझार ।।

६९. भव पोट्टिल श्री महावीर, कोड वर्स चरण सुखसीर।
भव छठे गुणमणी हीर ।।

७०. मास-मास खमण सुखदाय, लक्ष वर्स चरण रै मांय।
भव चौथे नंदन राय ।।

७१. पछै थया वीर वर्द्धमान, छद्मस्थ पणै वहु जान।
उपसर्ग सह्या असमान ।।

७२. केवल ऊपना पिण अवलोय, खट मास लोहीठाण होय।
ज्यां सूं बोलणी नायो कोय ।।

७३. सेक्या सकरकंद जूं तास, उज्जले कर्कस दुःख अहियास।
आ तो वेदन महा दुख रास ।।

७४. समभाव सही महावीर, तिण सूं पाम्या है भव दधि तीर।
तपस्वी सुण-सुण हरषै हीर ।।

७५. इत्यादिक वहु वाता अनेक, रस संवेग नी सुविसेख।
तपस्वी सुणै आण ववेक ।।

७६. हिव अल्पकाल रै मांय, जाता दीसो छो सुर पद ताय।
सुख पुद्‌गलीक अधिकाय ।।

७६. सुरव्रंद अधिक तनु जोत, दसु दिश मांहि दीसै उद्योत।
रत्न महिल झिगामिग होत ।।

७८. तिहां काल असंख्याता तांइ, एहवी निर्जरा तो उठे नांहि।
भावना भावता दीसो त्यांहि ।।

७९. हिव पैसठमो दिन आयो, कांयक वेदन इधक जणायो।
तो पिण सावचेत मन मांह्यो ।।

८०. दिन अस्त हुवै तिणवार, जय गणपति सूं सुखकार।
तपस्वी वातां करी अधिकार ।।

८१. सिरदारांजी पूछां कीधी, तिण उत्तर वात प्रसिद्धि।
चढतै परिणामै वृद्धि ॥

८२. दोढ महुर्त्त रात्रि उन्मान, जद पिण वोल्या वच जान।
चट दे मुनि छोड्या प्राण ॥

८३. नहीं वधियो स्वास अधिकायो, हिचकी पिण नाहि जणायो।
इम पहुंता परभव मांह्यो ॥

८४. अल्प वेलां पछै मुनिरायो, तपसी नो तनु वोसिरायो।
चिहुं लोगस्स काउसग्ग ठायो ॥

८५. प्रात महोच्छव अधिक मंडाणो, इकवीस खंडी जाणो।
ओ तो जाणक देव विमाणो ॥

८६. वहु वाजा नगारा नीसाण, सोना रूपा रा फूल पिछाण।
जन कर रह्या कोड किल्याण ॥

८७. अै तो सावद्य कामा सोयो, तिण में धर्म नही छै कोयो।
धर्म तो जिन आज्ञा मे होयो ॥

८८. वात हुइ जिसी ए वताई, इण मे दोष नही छै ताहि।
सावद्य अनुमोदना पिण नाहि ॥

८९. जिन ना जन्मादि किल्याण, निर्वाण महोच्छव जाण।
सूत्र माहि कह्या जग भाण ॥

९०. वहै गाम परगाम रा वट्ट, जन सइकडां वृंद सुथट्ट।
नित्य आनंद हरख गहघट्ट ॥

९१. सइकडां नरनारी प्रभात, तीजे प्रहर सइकडां आत।
संध्या रो मेलो जवर विख्यात ॥

९२. तपस्वी कहै अधिक आनंद, अणसण माहि दिवस जे सध।
तिका खरची म्हारै पले वंध ॥

९३. एक समय आऊखो सोय, ज्ञानी देख्यो जिको अवलोय।
ओ तो घटै वधै नहीं कोय ॥

९४. वंध्या जिसा भोगवणा ताय, समभाव निर्जरा थाय।
तो विषम भाव राखूं किण न्याय ॥

९५. दिन काल को निकल्यो ताय, तिको कष्ट हिवडा रह्यो नाय।
खरची वंधी तिका साथे आय ॥

९६. घणो कष्ट म्हारै छै नाही, क्षुधा पिण नही दीसी काई।
अल्प मात्र उदक पिवाई ॥

९७. तीन मास नो अणसण जो आय, तो पिण म्हारै नहीं छै 'तमाय'[1]।
आप आनंद राखो मन मांय ॥

९८. दोय प्रहरां पछै उदक पीवंत, घणा दिवस लगै इम हुंत।
ते पिण अल्प उदक लेवंत ॥

९९. लोक अन्यमती स्वमती सोय, घणा अचरज पाम्या जोय।
हिन्दू मुसलमान अवलोय ॥

१००. अणसण चौथे आरे अधिकायो, सूत्र मांहि कह्यों जिन रायो।
यां तो पांचमै आरे देखायो ॥

१०१. थयो लाडणूं सैहर उजास, ठाकुरां दर्शण कीया तास।
लक्ष्मण सींग जी हुवा हुलास ॥

१०२. उदयाचल नो अवलोय, अधको ओछो आयों हुवै कोय।
तो मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥

१०३. उगणीसै वावीस श्रीकारं, द्वितीय जेठ कृष्ण नवमी सारं।
सम्पूर्ण करी जोड उदारं ॥

१०४. सैहर सुजानगढ प्रसिद्धि, तिहां जोड सम्पूर्ण कीधी।
सुख सम्पत्ति जय जश वृद्धि ॥

१०५. उगणीसै वावीस तास, द्वितीय जेठ कृष्ण तीज जास।
उदयाचल परभव वास ॥

१०६. ऋष छजमल रै अवलोय, तप दिवस सतावीस होय।
उष्ण उदक आगारे जोय ॥

---

१. खेद।

१२

हरख चोढालियो

ढाल १

दोहा

१. टेकचंद सुत दीपतो, हरखचंद हुंसियार।
तलेसरै तीखी करी, सखरी करणी सार।।

२. वासी मेवाड देश नो, ग्राम 'अटाटचै' माय।
दीक्षा महोत्सव दीपता, किया जनक अधिकाय।।

३. सोल वर्ष रे आसरै, हेम ऋषी रे, हाथ।
चारित्र लियो छांडी करी, तात मात अरु भ्रात।।

४. उगणीसै बीये अमल, चरण लियो चित चंग।
पणवीसे 'पीपाड' में, पंडित मरण प्रसंग।।

*मुनि गुण धारी रे।। ध्रुपदं।।

५. इर्य्या भाषा एषणा जशधारी रे, वर आदान निखेव।
परिठणपूजणसुमतिमें जश धारी रे, कांइ सावचेत स्वयमेव।।

६. मन वच काया गोपवै, दयावंत दीपंत।
सत दत शील निपरिगृही, कांई 'जत्न'[1] करण जशवंत।।

७. ऋषिराय तणी आज्ञा थकी, हेम ऋषि रै पास।
चित्त अनुकेडै चालता, वारु विनय अभ्यास।।

८. रूडी रीत रीझाविया, हेम भणी हरखेण।
प्रसन्न थयां प्राप्ति करै, समय रहिस श्रमेण।।

९. दशवैकालिक सीखियो, आवसग सुविशेष।
वर अनुयोगज द्वार ही, वलि उत्तराध्येन सुदेश।।

१०. उगणीसै चौके समै, हेम ऋषी परलोग।
सतीदास नै सूपियो, सिघाडो सुप्रयोग।।

११. 'सतीदास' जी नी भली, हरखचंद हितकार।
सेव करी साचै मने, तन मन सू धर प्यार।।

१२. 'सतीदासजी' हरख नै, समय रहिस सुविचार।
विविध कराई धारणा, वली झीणी चरचा सार।।

---

*लय—मोजी तुर रा रे

१ यतना।

१३. सूत्र ' सिद्धान्त वचावियां, पर्म धर्म नुं पोष ।
पय जल-सी तसुं प्रीतडी काई, शांति हरप निरदोप ॥

ढाल २

दोहा

१. उगणींसै आठे समै, महा विद चवदश जोग ।
लघु रावलियां नै विषै, राय ऋषि पर लोग ॥

२. पट जय जश गणपति तदा, शांति ऋषि नो तोल ।
पांती छोडी आहार नी, आछो कुरब अमोल ॥

३. उगणीसै नवके समै, मृगसर मास मझार ।
परभव मांहि पांगरया, शांति ऋषि सुखकार ॥

*सुगुण जन सांभलो रे ॥ध्रुपदं ॥

४. हरखचंद ले आवियो, गणपति केरै पाय ।
सूंपी मुनि पोथ्यां भणी, तब जयगणि कहै वाय ॥

५. विचरो मुनि पोथ्यां ग्रही, सिंघाडो तुज सार ।
मन हुवै तो पासे रहो, मुझ वेहुं आज्ञा उदार ॥

६. हरख कहै सेवा आपरी, करवा रा मुझ भाव ।
सूंपै मुनि पोथ्यां प्रतै, सखर विचारण 'साव'[1] ॥

७. जय गणपति रै आगले, हरख रहै हुंसियार ।
तन मन सूं सेवा करै, वारु विनय विचार ॥

८. चित्त अनुकेडै चालतो, दिन-दिन विनय विवेक ।
रूडी रीत रीझावियां, गणपति नै सुविसेख ॥

९. तब गणपति मन जाणियो, हरख तणै हद रीत ।
शासण नें गणिपति थकी, अभितर में प्रीत ॥

१०. परचो स्त्रीयादिक तणो, अवनीता रो संग ।
ए दोनूं इण में नहीं, जाण्यो जय चित्त चंग ॥

११. आण अखंड आराधतो, विनयवंत वड वीर ।
परम दृष्टि जय परखियो, हरख अमोलक हीर ॥

---

*लय—राजग्रही नगरी भली ।

१. बिल्कुल ।

१२. ततक्षिण कुरब बधावियो, च्यार तीर्थ रे माय।
सुप्रसन्न थइ पढावियो, थयो प्रबल पंडित अधिकाय ॥

ढाल ३

दोहा

१. 'सरूप' सिरदारां सती, गणि मुरजी अवलंब।
तसु अनुकूल प्रवरततो, छाडी दिल नो 'दंभ'[1] ॥
२. च्यार चउमासा जय कनै, रह्यो हरख हुंसियार।
उगणीसै तेरे समै, कियो सिंघाडो सार ॥
३. तेहिज पोथ्यां हेम नी, हरख सहित मुनि च्यार।
'बीकानेर' भलावियो, चउमासो सुखकार ॥
४. चउमासे उपगार कर, आया गणपति पास।
निमल नीत जाणी गणी, प्रसन्न थया सुप्रकास ॥
५ जन बहु पूछै जय भणी, सखरो युवपद साव।
किण मुनि नै देवा तणां, आप तणा छै भाव ॥
६. तब जय गणपति उच्चरै, छोग हरप मघराव।
त्रिहुं में पद युव इक भणी, थापण रा छै भाव ॥
७ इम अति कुर्ब वधावियो, छोग हरष नू हीर।
वीसे युव पद 'मघ - नृपति'[1], थाप्यो जाण गभीर ॥

*धिन-धिन हरख मुनि भणी ॥ध्रुपद॥

८. देश परदेशा विचरतां, करता अति उपगार हो, मुनिद।
सूत्र तणी बहु धारणा, समजावै नरनार हो, मुनिद ॥
९. दोय चौमासा किया हेम पै, शाति ऋषि पै पंच।
जय गणपति पासे किया, च्यार चौमासा संच ॥
१०. हिव चवदाना वर्ष थी, पणवीसा लग पेख।
द्वादश चौमासा कीया, हरख सिघाडै देख ॥

---

१. गर्व।
१ मघराज।
*लय—धिन-धिन जम्बू स्वाम।

११. वीकाणै चउदे कीयो, पनर सैहर सिरदार।
उगणीसै सोले समै, सैहर 'फलवधी' मझार॥

१२. दोय चौमासा जोधाणे किया, सतरे बावीसे उपगार सरस।
'श्रीजीदुवारे' सेहर में, अठारे चउवीसे वरस॥

१३. उगणीसे 'जैपुर' कियो, वीसे तेवीसे 'उदैपुर' सैहर।
वर्स इकवीसे 'वालोतरे', पणवीसे 'गंगापुर' मैहर॥

१४. 'गंगापुर' चउमासो करी, आया गणपति पास।
दिवस घणै सेवा करी, आणी अधिक हुलास॥

१५. जोड भगवती नी भली, वाचण रो बहु कोड।
अति उपयोगे जय भणी, पूछै बे कर जोड॥

ढाल ४

दोहा

१. सेवा करतां जय तणी, इक दिन अवसर देख।
'दिशा भूमका'[1] पुर वहिर, जय संग हरख विसेख॥

२. संता नै अलगा करी, आलोवण दिल खोल।
याद करी आछी तरै, कीधी हरख अमोल॥

३. परभव नीं चिन्ता घणी, निमल थया जिम न्हाय।
'निशल'[2] हुवा आगूंच इम, ए अचरज अधिकाय॥

४. वर्ष तेवीसां नै विषै, शीत उष्ण अधिकाय।
चोथ छठादिक तप वलि, समय सिज्झाय सवाय॥

*रूडा हरख जपो हित ल्याय॥ ध्रुपदं॥

५. चोथ छठ अठम बहु दशम, पांच-पांच दोय वार।
पट सत अठ नव वलि चवदै, सोल प्रमुख तप सार॥

६. पोप मास में शीत सह्यो अति, वे पछेवडी परिहार।
शीत उष्ण काल फुन मुनिवर, देश प्रदेश विहार॥

---

१. स्थण्डिल भूमि।
२. निशल्य (सरल)।
*लय—सीता आवै रे घर राग

७. सूत्र बतीस सरस संवेगे, वाच्या बहुली वार।
चउवीसम शत प्रमुख कठन थल, निपुण पणै निरधार।।

८. चरचावादी अधिक चातुरी, जबर समय ना जाब।
परम प्रीति गणपति युव पद सूं, अमल तीर्थ में आब।।

९. जोधाणो चउमास भलायो, जय गणपति जिह वार।
सुखे समाधे विहार करंता, आया सैहर पीपार।।

१०. तिण हिज पश्चिम निशा दस्त, उलटी नो रोगज होय।
दूजै दिन वेदन में समचित, निसला हुवा आलोय।।

११. खमत खामणां ऊंचै 'सुर'[1] सूं, करता ले-ले नाम।
बहुल पणै जीभ्या नही थाकी, अति चढता परिणाम।।

१२. जेठ अमावस दिवस आसरै, घडी थकां परलोग।
एकम मंडी गुणतीस खंडी, जबर महोछव जोग।।

१३. उज्जल मन सूं चरण अनोपम, धार्‌यो धर चित धीर।
लियो भार ते पार पूगायो, हरख 'व्रषभ'[2] हद हीर।।

१४. गणपति पासे रह्या वर्स चिहुं, विचरया द्वादश वास।
वचन असातन रूप सांभल्यो, याद न आवै तास।।

१५. च्यार तीर्थ में कीरति चंगी, रंगी गुण रस हेर।
अविनय रूपी 'भंगी'[3] छेदन, 'जंगी'[4] हरख 'सुमेर'[5]।।

१६. हरख तणो मरणो सांभल नै, च्यार तीर्थ नै ताम।
अति ही दोहरो लागो अधिक ही, सभारै गुणधांम।।

१७. संवत उगणीसै छावीसे, पोह विद बीज उदार।
हरख लडायो अति सुख पायो, जय-जश गणपति सार।।

---

१ स्वर।
२. धोरी (साहसिक)।
३ झाड़ी।
४. मजबूत।
५ मेरु पर्वत।

१३

हस्तूजी कस्तूजी रो पंचढालियो

ढाल १

दोहा

१. चेली भिक्षू स्वाम री, ज्ञान कला गुण धार।
सगी सहोदरी सुन्दरी, प्रगटी शहर पीपाड़ ।।

२. जनक जगूजी जाणियै, गांधी जात गुणवंत ।।
मात 'बदूजी' जाणियै, पुत्री दोय पुनवत ।

३. हस्तूजी हद गुणभरी, हस्तूजी कुलवंत ।
परणावी अति प्रेम स्यू, सुन्दर वर सोभंत ।।

४. मूंहता मोखमदासजी, मोटरमल मतिवंत ।
ए दोनूं वर दीपता, बिहुं बहिनां बुधिवंत ।।

५. ऋध संपत घर में घणी, लखेस्वरी कहिवाय ।
भाग्यवंत बिहुं भामणी, दिन-दिन रही दीपाय ।।

६. समत अठारै सत्यावने, सती वैराग्ये आय ।
संजोग में चेती सती, छता भोग छिटकाय ।।

७. संजम लेवा सुन्दरी, कीधा अनेक उपाय ।
उतावल आज्ञा तणी, कही कठा लग जाय ।।

*साची सती संसार में रे लाल ।। ध्रुपदं।।

८. 'षट् मासे लग खप करी रे लाल, सासू सूसरा सोय हस्तूजी हो ।
जेठ देवर सहु सासरचा रे लाल, अति ही उदासी होय ।।
हस्तूजी हो ।।

९. दियो आदेश दिख्या तणो, पूरी मन री आस ।
हीरांजी हाथे लियो, चारित्र चित्त हुलास ।।

१०. धन-धन लोक कहै घणा, प्रीतम ने सुत दोय ।
सर्व कुटंब छिटकावता, मोह न आण्यो कोय ।।

११. षट वर्ष रे आसरै, अमीचंद बडपूत ।
खूबचंद सोलै मास नो, छोड्या सहु घर 'सूत'[1] ।।

१२. पचमें आरे प्रगटी, चौथा आरा नी चीज ।
बिहुं बाई ना गुण देखतां, रह्या सुग्यानी रीज ।।

---

*लय—जाणपणो जग दोहिलो रे लाल

१. सबध ।

७. पादू पीसांगण शहर में, वाजोली ने राणावासो।
मांढे उदियापुर मे महासती, ल्हावै लागो चौमासो॥

८. उजेण नोलाइ में वीसमो, राजनगर पीपाडो।
पादू बलूंदे बहु तारिया, सिरियारी एक सुखकारो॥

९. रीछेड शिवगढ ने रावल्यां, पुर पीसांगण ठायो।
खाटू कैलवै नें रावल्या, सिरियारी सुख पायो॥

१०. तीलोडी पादू में छतीसमो, इडवे अधिक उमंगो।
सिहोदे नेवली कैलवे, ल्हावे लागो छै रंगो॥

११. जिन मग जोर जमावियो, एहना साचा चौमासो।
उजल कियो जीव आपरो, सतगुरु दीधी स्यावासो॥

ढाल ३

दोहा

१. घणा लोकां गुण किया, ते कहिता नावै पार।
आप चौमासे तप तप्यूं, ते सुणज्यो विस्तार॥

*सुणज्यो वैराग्य सती तणो॥ ध्रुपदं॥

२. हिवै तपस्या करी ते सांभलो, लीज्यो थेट स्यू लेखो रे।
प्रथम तेलो पनरै किया, नव दिन कर पांच पेखो॥

३. सात आठ इग्यारै किया, नव कर चवदै धारो रे।
पांच-पांच नां थोकडा, च्यार-च्यार किया सुखकारो रे॥
सुणज्यो॥

४. नव दिन कर अठाई करी, षट दिन स्यू धर खंतो।
दोय तेला अठाई करी, मेट मन नी भ्रंतो॥

५. बेलो कर तेलो कियो, सर्व धरै वाईसो।
अठारा थोकड़ा आविया, पूरी मन 'जगीसो'[1]॥

६. चौमासे में दोय मास ना, एकांतर एक धारो।
अठाईस वर्ष रे आसरै, कदेय न लोपी कारो॥

---

*लय—चन्द्रगुप्त राजा सुतो

१. अभिलाषा।

७. सियाले में वहु सी खम्यो, एक चदर आधारो ।
बारै वर्ष लग इण विधै, करणी कीधी सारो ॥

८. उपवास बेला तेला किया, सेषे काल मजारो ।
थिर मन षट दिन ठाविया, उजल भाव उदारो ॥

९. ल्हावेगढ़ छेहलो कियो, चौमासो धर चूंपो ।
तप जप खप करणी करी, आछी रीत अनूपो ॥

१०. त्याग वैराग गुणां तणां, कहितां किम लेऊं पारो ।
अणोदरी तप आदरचो, जांणी लाभ अपारो ॥

११. काया माया जांणी 'कारमी'[1], जाण्यो जगत असारो ।
निज आतम नें वस करी, अन्न स्यू भाव उतारो ॥

ढाल ४

दोहा

१. हिवै संथारो चूंप स्यू, सुणज्यो सहु नरनार ।
कार्य सुधारचो किण विधै, कीधो खेवो पार ॥

*भवजीवा रे ! थे नित चित्त ध्यावो रे, या सतिया ना गुण छै साचा रे ॥
॥ ध्रुपदं ॥

२. भादवा सुद बारस दिने रे, उद्यम अधिको धार ।
थिर कर मनडो थापियो रे, अवै नहीं करणो आहार ॥

३. साचा गुण सतियां तणा रे, जो ध्यावै भव जीव ।
इण भव सुख संपति लहै रे, लागै मुगतनी नींव ॥ भवजीवा ॥

४. दोढ पोहर रै आसरै रे, रात गई तिणवार ।
च्यार आहार पचखी कियो रे, सुद्ध मन स्यूं संथार ॥

५. आधी रात के आसरै रे, सीझ गयो श्रीकार ।
सुखे-सुखे चलती रही रे, ध्याती सरणा च्यार ॥

६. निमल भावनां भावती रे, भिखू स्वाम चितार ।
कलजुग मां स्यूं निकली रे, जीत गई जमवार ॥

---

१. नश्वर (अस्थायी) ।
*लय—थे संग म जाज्यो रे ।

७. करी चाकरी चूंप स्यूं रे, नगांजी चित्त ल्याय।
सतगुरु मुख सोभा लही रे, पंडित-मरण कराय।

८. मयाजी मोटी सती रे, रही ग्यान गुण पाय।।
सूत्र सिद्धांत वखाण स्यूं रे, हस्तूजी सुख पाय।।

९. दोलांजी दिल ऊजलै रे, सेवा सखरी कीध।
चित्त समाध उपजाय नै जी, महिमा मोटी लीध।।

१०. नंदूजी नीकी परै जी, थाप्यो मनडो ठीक।
छोटा-मोटा काम में जी, निस दिन रही नजीक।।

११. ए मोटी पाचूंइ महासती रे, जग मां है जस लीध।
लाभ घणो निरजरा तणो रे, अमृत प्याला पीध।।

ढाल ५

दोहा

१. हस्तूजी नी बहनडी, किस्तूरांजी सुखकार।
उगणीस वर्ष रे आसरै, पाल्यो संजम भार।।

*किस्तूरांजी मोटी सती।। ध्रुपदं।।

किस्तूरांजी मोटी सती, भर जौवन में चेती रे।
केसर किस्तूरी सारखी, लोका ने गुण देती रे।।

२. तिरण तारण नावा जिसा, ग्यान ध्यान गुण धरती रे।
चौमासे में दोय मास नां, सदा एकांतर करती रे।।

३. उपवास बेला तेला बहु किया, चोला स्यूं चाली आगे रे।
सतरा सूधी जाणज्यो, तपस्या प्यारी घणी लागै रे।।

४. च्यार किया पांच पचखिया, षट दिनकर सत ठाया।
आठ करी नव दस किया, इग्यारै बाहरै पचखाया।।

५. तेरा किया चवदै किया, पनरै किया जूवा जूवा।
सोलै किया सतरै किया, ए चवदै थोकड़ा हूवा।।

६. विवध प्रकारे तप तपी, मालवै देस मजारो।
नगर उजेणी में कियो, किस्तूरांजी संथारो।।

*लय—सल्य कोई मत राखज्यो

७. सवा पोहर कै आसरें, अणसण सागारी आयो।
जय-जय कार जणावियो, कुल नें कलस चढायो॥

८. पुत्र पिउ सती छोडिया, ऋध संपत अति भारी।
सरणो लियो सतगुरु तणो, तास नमो नर नारी॥

९. सिंह जिम संजम आदरयो, पाल्यो सूरपणा सैं।
त्याग वैरागनी वात नो, भेदू भाव जणा सैं॥

१०. घर में थकां पिण महासती गुणवंती, वुद्ध अकल कर पूरी।
उद्यम कियो आग्या तणो, ते तो वात अधूरी॥

११. नगांजी दोलाजी नै देख नै, पूछी निरणो कीज्यो।
विवध वैरागनी वारता, सुण सुण नै धार लीज्यो॥

१२. म्हें तो संक्षेप जणाय दी, जोड नी आई जेती।
शेप साधवियां नै पूछज्यो, वांरी तो आईज खेती॥

१३. समत अठारै सिताणुवे, वारूं वैसाख मासो।
हस्तू चिरत प्रगट कियो, पूनम दिन हुलासो॥

१४. हस्तूजी गुण हृदय वस्या, जोडया जुगत लगायो।
सतवंती नें समरता, सवल पुरे सुख पायो॥

१५. इम सांभल नर नारियां, धर्म ध्यान में लागो।
सतिया तणा गुण सांभली, कीज्यो त्याग वैरागो॥

१६. इधको ओछो जे आखियो, आघो पाछो जे आयो।
मिच्छामी दुकडं मांहरै, सुणियो जेम सुणायो॥

१४

सरदार सुजश
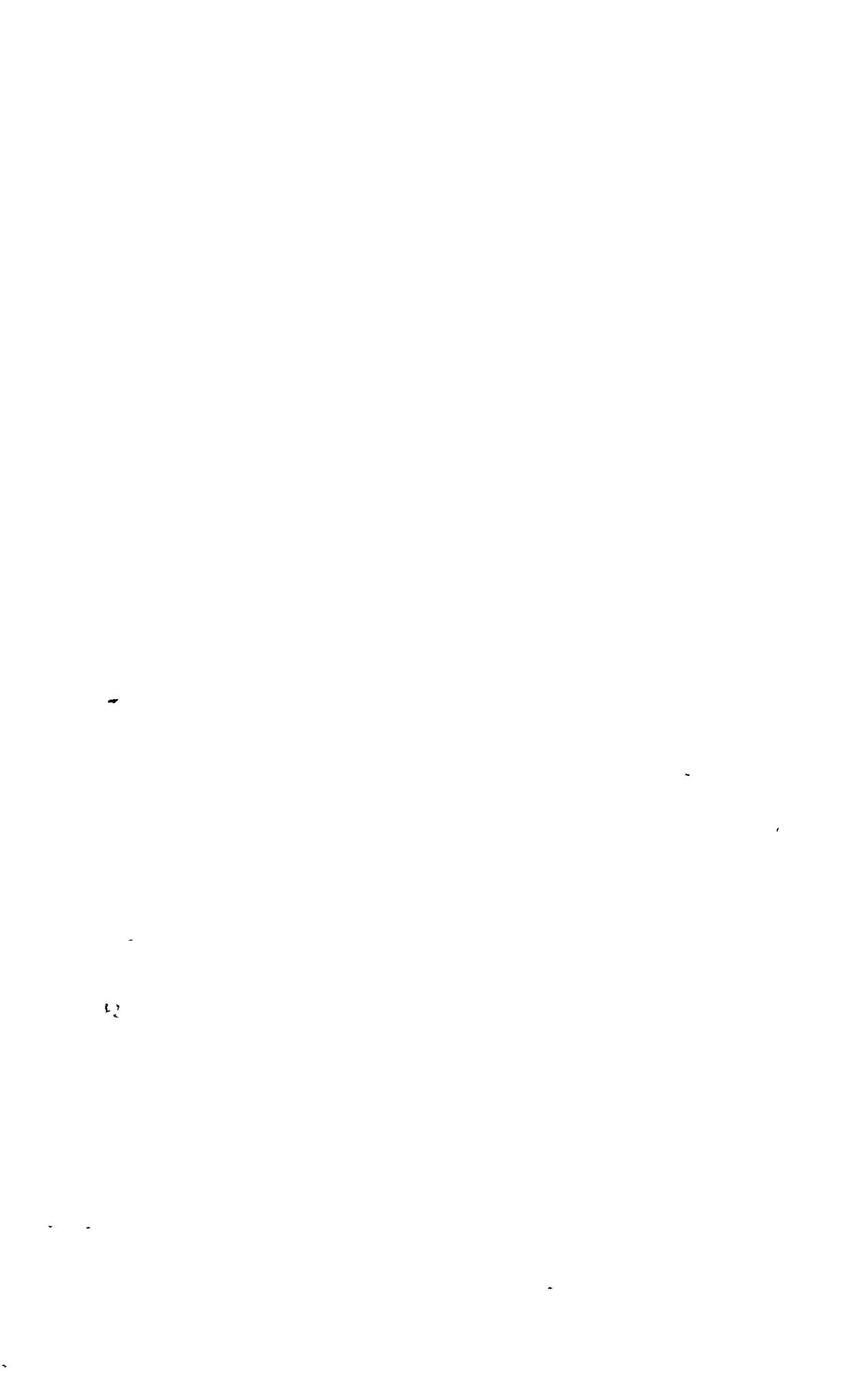
ढाल १

दोहा

१ थली देश में सोभतो, चुरु सैहर सुस्थान।
जाति कोठारी चोपडा, जैतरूप ऋद्धिवान ॥

२. चंदणादे तसु भार्या, सखर सुता सिरदार।
संवत अठारै पैसठे, जन्म आसोज मझार ॥

३. शुभ लगनी भगनी लघु, बड़ लघु बंधव जोड।
जनक तणो अति जन बहु, करै सुजश धर कोड़ ॥

४. करी सगाई फलबधी, ढढ्ढां धरे सुधाम।
जबर सेठ सुलतानजी, सुतन जोरजी नाम ॥

५. कीध विवाह पिछतरे, पच मासे अवधार।
बिजोग पीतम नो पडचो, सती बालब्रह्मचार ॥

६. चंद्रभाणजी गण बहिर, तसु शिष्य सिवजीराम।
तिण काले तेहनी श्रद्धा, थली विषै बहु ग्राम ॥

७. तिण कारण तेहनी श्रद्धा, अनुक्रमै सिरदार।
सामायिक पोसह करै, तप जप विविध प्रकार ॥

८. कीधा त्याग अठतरे, जावजीव चौविहार।
चउदश नो उपवास पिण, जावजीव सुविचार ॥

९. गुण्यासीये नीलोतरी, जावजीव परिहार।
वर वैराग विशेष थी, अधिक-अधिक अधिकार ॥

१० असीये इक दिन - निशि विषै, सीख्या तेरै द्वार।
बलि सीख्या बहु थोकडा, धर्म थकी अति प्यार ॥

*भला नै पधारचा हो पूज ऋषिराय जी रे, थली देश में थट्ट।
बहु सन्त सत्यां ने परिवारै करी रे, वर्ष छयासीये गहगट्ट ॥ध्रुपदं॥

११. तिण काले तिण समय विषै गुणी रे, भिक्षु पाट भारीमाल।
तीजे पट ऋषिराय पधारिया रे, सुदर तेहनी चाल।

---

*लय—भला ने पधार्या हो।

१२. संग जीत आदि मुनि संत सत्यां वहु रे, लाडणुं जिन मग्ग स्थाप।
वीदासर रतनगढ थइ करी रे, आया चूरू आप॥

१३. जैतरूपजी आदि देई करी रे, भायां ना वहु वृंद।
वायां सिरदारां जी आदि दे रे, सुणै वखाण आनंद॥

१४. चन्द्रभाणजी री पख ते भणी रे, सामायिक में ताहि।
वखाण मांड्या ऊभा ह्वै नहीं रे, नहीं वांदै सामायिक मांहि॥

१५. विण सामायिक पिण तिक्खुत्तो गुणी रे, न करै वंदना तेम।
वीजूं सेवा-भक्ति करै घणी रे, तीनूं टक धर प्रेम॥

१६ दिन वावीस आसरै रहि करी रै, विहार कीयो ऋपिराय।
आप चौमासो वीदासर कियो रे, चूरू जीत भलाय।

१७ जीत ऋपि पिण विहार करी तदा रे, केइक दिवस सुहाय।
रामगढ रही चूरु आय नै रे, दीयो चौमासो ठाय॥

१८. सिरदारांजी नित वाणी सुणी रै, प्रश्न पूछै ताहि।
पिण तिक्खुत्तो गुण वंदणा नहीं करै रे, नही वांदै सामायिक मांहि॥

१९. शिवजीरामजी री श्रद्धा मझै रे, जे जे वोलां रो फेर।
ते ते वोल पूछ निर्णय करै रे, सखर सिद्धांत सुहेर॥

२०. आश्रव नैं एकंत सावद्य कहै रे, वलि कहै आज्ञा वार।
निर्जरा में चिहुं भाव उदय विना रे, फेर इत्यादि श्रद्धा मझार॥

२१. चंद्रभाणजी शिवजी रामजी रे, एकण खंड रै मांहि।
वायां नै निश में वेसण तणी रे, एहवी थाप थी ताहि॥

२२. इत्यादिक श्रद्धा आचार में रे, फेर हुंतो अधिकाय।
ते ते वोल तणो निर्णय करै रे, देख सूत्र वर न्याय॥

२३. चंद्रभाणजी गण स्यूं नीकल्या रे, धूर स्यूं उत्पति ताय।
रास विपै भिक्खु जोडी तिका रे, दीधी सर्व सुणाय॥

२४. इह विधि विविध प्रश्न पूछी करी रे, शंका मेटी तेथ।
कार्तिक शुक्ल चौथ तिथि गुरु किया रे, वहु जन वृंद समेत॥

२५. पहिली ढाल विपै प्रगट पणै रे, देव गुरू धर्म सार।
रत्न अमोलक तीनूं आविया रे, लागी नीव उदार॥

ढाल २

दोहा

१. मात-पिता नैं लाडली, सखर सुहागण वेस ।
बालपणा में पहिरती, ते न तज्या सुविशेष ।।

२. साधां री संगति थकी, वारू चित्त वैराग ।
वाध्यो तब चौमास में, कुण-कुण कीधा त्याग ।।

३. कडिया बाजू बोर फुन, गैहणो गल में एक ।
ए उपरंत गैहणा तणा, त्याग किया सुविवेक ।।

४. कर में चूड़ी पंच फुन, सुवर्ण नी तिण माहि ।
दश तीबां उपरंत फुन, पहिरण त्याग सुहाय ।।

५ बले कसूबल वस्त्र ना, जावजीव पच्चखाण ।
पहिला सघला पहिरता, गैहणा वस्त्र प्रधान ।।

६. सचित्त उदक पीवण तणां, मुख उघाडै वाय ।
बोलण रा पच्चखाण वलि, पंच वर्ष लग ताय ।।

७. ए दोनू इ त्याग फुन, जावजीव लग जाण ।
कीधा वर्ष एकाणूअे, बलि नित्य प्रति वर ध्यान ।।

*सुगण जन सांभलो रे ।।ध्रुपदं।।

८. 'असी बेलां रै आसरै,'[1] पिण लगता नहिं तेह ।
आंबिल पारणे जाणियै, फुन 'प्रदेशी रा जेह'[2] ।।

९. ज्ञान दर्शन चारित्र तणां, त्रिण २ तेला तंत ।
इम लगता नव अट्ठम किया, कर्म काटण री खंत ।।

१०. एकाणूअे चौमास में, एकांतर अवधार ।
बिच तेला बेला बहु, चोला तप ततसार ।।

११. केई वर्ष उन्हाल मे, सामायिक नित्य सार ।
चिहुं २ करणी ताबडे, एहवो 'वधो'[3] उदार ।।

---

*लय—राजग्रही नगरी भली—

१ असी वेला धन्ना अणगार ना आठ महीनें मे नवमैं महीने सथारो ने इहा न गिण्यो, अर्थात्--धन्ना अणगार नें आठ महीने मे लगातार ८० बेले किये थे। सरदार सती ने भी ८० बेले किये पर लगातार नही । धन्ना अणगार ने नौवे महीने मे एक मांस का अनशन किया था उसे यहा नही गिना गया है ।

२ १२ वेला १३ वा तेला अर्थात् प्रदेशी राजा ने अन्तिम समय में १२ वेले किये, १३ वे वेले के पारणे के दिन दिवगत हो गया । सरदार सती नें १२ वेले और तेरहवा तेला किया ।

३ नियम ।

१२. शीतकाल निशि पाछली, नित्य तीन सामायक माहि।
एक ओढणा उपरंत ओढचो नहीं, केई वर्ष लग ताहि ॥

१३. पंचांग लेख वर्ष वाणूंअे, वे मास एकांतर देख।
सप्त अठम चोला पंच ही, पट सत अठ इक एक ॥

१४. वाणुआरा कार्त्तिक थकी, एक वर्ष अवधार।
छठ - छठ तप कीधो वली, ते छठ २ चौविहार ॥

१५. इक इक मास विषै वली, इक चोलो वा पंच।
चउविहार करणा सही, एहवो वंधो सुसंच ॥

१६. तिण में केइ मास लग, छठ २ तप सुविचार।
तीन मास रै आसरै, अठम - अठम चौविहार ॥

१७. एक मास रै आसरै, दशम २ चउविहार।
वलि दश कीधा तेह में, चउविहार पट सार ॥

१८. वर्ष त्राणूंआ रा पोस थी, एक वर्ष लग सार।
तप छठ - छठ अंगीकरचो, ते पिण छै चौविहार ॥

१९. चौराणूंआरा पोस में, सैहर फलवधी माहि।
जीत ऋषि दर्शण दीया, हर्ष वैराग्य सवाय ॥

२०. तप नव दिन कीधो तदा, वलि पंचोलो एक।
दोय अठम कीया दीपता, मन में हरप विशेख ॥

२१. पछै दीक्षा री वारता, काढी मुख सूं ताय।
अंतराय आज्ञा तणी, दीधी भ्रात चुरू थी आय ॥

२२. वात दीक्षानी काढचां पछै, तीजे मास तिवार।
काल कियो ससुरै तिहां, जेठ प्रमुख रह्या लार ॥

२३. जेठ दोय देवर त्रिहुं, जेठूत्तरादिक जांण।
वहु परिवार ढढां तणो, घर में अति मंडाण ॥

२४ चौथ छठ अठम वली, दशम पंचोलो देख।
तप विचित्र कीधो घणो, धर्मचक्र फुन पेख ॥

२५. ए सगली तपस्या मझै, 'अमल'[1] तणो आगार।
तयांसीया ना वर्ष थी, पंचाणूं आ लग धार ॥

२६. उपाय तो कीधा घणा, पिण आज्ञा नहिं दीध।
छन्नूअै वर्ष चुरू मझै, जीत चौमासो कीध ॥

---

१. अफीम।

२७. सैहर फलवधी सूं तदा, दर्शण कीधा आय।
तात भ्रात ते पिण दीयै, चारित्र नी अंतराय ॥
२८. आगै पिण दीधी इणे, आज्ञा नी अंतराय।
सतिय बिचारै यां भणी, पहिला देउं समझाय ॥
२९. काका नां सुत नी बहू, रूप कुवर तिण वार।
सती संग ते पिण थई, चारित्र लेवा त्यार ॥
३०. सती कहै म्है बिहुं जण्यां, धवला कपड़ा ताय।
पहिरस जनक सुणी करी, कहै जीत नैं आय ॥
३१. आज्ञा सासरियां तणी, प्रगट चलै पहिछाण।
म्हांरी न चलै आगन्यां, तो म्हां सू क्यू ताण ॥
३२. जीत कहै साची कही, चौमासा रै मांय।
स्वेत वस्त्र पहिरै नही, तिम हूं देइस समझाय ॥
३३. जनक सुणी हरख्यो घणो, मुख सू बोलै वाण।
'दुसमण दानां ही भला'[1], प्रगट ही पहिछांण ॥
३४. पंच - पंच मासा अमल, नित्य प्रति लेता जेह।
तज्यो सर्वथा छन्नूअे, सह्यो कष्ट अधिकेह ॥
३५. दूजी ढाल विषै कही, तपसा विविध प्रकार।
कर्म थोडा तिण कारणै, थइ संजय नै त्यार ॥

ढाल ३

दोहा

१. चौमासा मांहे बध्यो, विशेष थी वैराग।
रामगढ मांहे किया, मृगसिर मासे त्याग ॥
२. आज्ञा आवै ज्यां लगै, तप छठ-छठ सुतंत।
मास-मास एक थोकडो, करणो अति धर खंत ॥
३. बलि पंचोलो तेरमो, धारचो उज्जम आण।
ए सहु तप नै पारणे, पंच विगै पच्चखाण ॥
४. सासर ग्राम गयां पछै, ज्यां लग आज्ञा आय।
निज घर की रोटी तणा, त्यां लग त्याग सुहाय ॥

1. बुद्धिमान दुश्मन ही अच्छा है।

५. एहवी त्याग करी तदा, आया फलवधी पास।
ग्राम बावड़ी छै तिहां, 'आधो चार'[1] विमास ॥

६. घर की तो खावै नहीं, अन्य घरां की ताय।
रोटी ल्यावा दै नही, इम पट दिन तप थाय ॥

७. *सासरिया बोल्या, अन्य घरां की ताहि।
रोटी मंगाय खावो, पिण वारै जावा द्यां नाहि ॥

८. इम सुणी मंगाई, प्रोहित घर नी पेख।
इम कियो पारणो, दिवस सातमें देख ॥

९. पछै छठ करी नैं, इमज मंगाई खाय।
वलि छठ करी नै, पोतै ऊठ्या ताय ॥

१०. संग लेइ 'वडारण'[2], काष्ठ नो पात्रो एक।
इक माटी रो 'पालसियो'[3], इक चांदी रो वाटको पेख ॥

११. ए ठाम तीनूं ई, घाली झोली मांहि।
वडारण रै हाथ दै, आया प्रोहित रै घर ताहि ॥

१२. वहु वालक लारै, मुख सूं वोलै वाय ॥
देखो सेठाणी, मांगण पर घर जाय ॥

१३. इम आहार आणी नै, पारणो कीधो तायो।
घर का नै खवर पड़ी, कहै मांगण मत जायो ॥

१४. दासी रै हाथे, रोटी भलांई मंगावो।
पिण पर घर मांगण, पोतै थे मति जावो ॥

१५. सती कहै मुज ज्यां लग, आज्ञा आवे जाण।
महाजन री रोटी, खावण रा पच्चखाण ॥

१६. वलि वेलो कीधो, तीजे दिवस तिवार।
घर का इम जाण्यो, 'रखे'[4] जावै वलि वार ॥

१७. जव पोल तणा 'पट'[5], जडिया छै जिह वार।
वेसाण्यो पोलियो, यांनै जावा म दीजै वार ॥

---

१. चार अध्व-मार्ग (चौराहा)।
*लय—नमूं अनंत चौवीसी।
२. दासी (दरोगा जाति की स्त्री)।
३. वर्त्तन।
४. कदाचित्।
५. किवाड़।

१८. मांगण नें जातां, जडिया देख्या द्वार ।
कहै खोल कमाडज, जावा दै घर वार ।।

१९. जद पोलियो बोल्यो, घर बाहिर अवलोय ।
जावण रो थांनै, हुकुम नही छै कोय ।।

२०. जद पाछा फिरिया, जीमण वेलां जाणी ।
जीमण नैं बैठा, जेठ प्रमुख पहिछाणी ।।

२१. बड़ा जेठ बादरचन्द, त्यारै अरु-बरु कहै एम ।
हूं तो भूखी बैठी, थे जीमो धर पेम ।।

२२. मौनैं मांगनैं ही थे, लावा नहीं द्यो ताहि ।
महाजन रो घर जाण्यो, पिण कसाई रो जाण्यो नाहि ।।

२३. अब थे जीम्या तो, अशुचि कूता रो जेह ।
खावोला इम सुण, उठ्या सगला तेह ।।

२४. रांध्यो थो जे बहु, न्याख्यो चोक मझार ।
बलि घृतादि ढोल्यो, फोड्या ठाम तिवार ।।

२५. इम विगाड़ करि नै, जडिया रसोई रा द्वार ।
अै काया ह्वै तो, आज्ञा दै इह वार ।।

२६. वलि पोल तणै पिण, तालो मांहिलो ताम ।
ते पिण जड दीधो, कहै कोइ म खोलजो आम ।।

२७. खोल्यां कोढ नीकलसी, भ्रम घाली इह रीत ।
पोतै पोथी प्रति, वाचण लागा पुनीत ।।

२८. माहि रह्या माहिला, बाहिरला रह्या बार ।
आथण री वेलां, आया कमाड उतार ।।

२९. पछै कह्यो रसोइ नो, तालो खोल दो सोय ।
'व्यालु री बेलां'[1], हिवडां ए अवलोय ।।

३०. सती कहै मुझ कर सूं, हुं तो खोलूं नाहि ।
इम सुण नै जेठ अति, रीस चढ्यो मन मांहि ।।

३१. म्हे थांनै घीस नै, घालिस ओरा मांय ।
तालो जड देसां, बोलै इह विधि वाय ।।

३२. पछै दास्यां घीस नैं, घाली दीधी ताहि ।
चांदी नो लोटो, जल भर मेहल्यो मांहि ।।

---

1. सायकालीन भोजन का समय ।

३३ बले घडी चांदी नी, बनात पोथी पेख।
सेत्रूंजी दोवड, तकियो रजाई देख ॥

३४. पूंजणी नें बैठको, वलि पथरणो चारू।
रूई सूं भरियो, मेहल्यो अधिक उदारु ॥

३५. त्रिण नवकरवाली, एक चांदी नी जेह।
मूगीया नें सूत नी, ए तीनूं सूंपेह ॥

वार्त्तिका

चांदी री नवकरवाली, तिण रै दोनूंइ पसवाडे १२ मणिया सुवर्ण रा। एक पसवाडे पट-पट, ते इम एक-एक पासे तीन मिणिया सुवर्ण रा। एक चांदी रो छेहडै, तीन फेर सुवर्ण रा। इम बिहुं पसवाडे सुवर्ण रा १२ मिणियां जाणवा अने सोना रो सुमेर।

पट तालो ढक नैं, सर्व गया तिण वार।
हिव सती विचारयो, करिवो कवण प्रकार ॥
ए तीजी ढाले, अनुमति लेवा काज।
सती उपाय बहु विधि, कीधा अधिक समाज ॥

ढाल ४

दोहा

१. पहिला तकिया नैं विषै 'धवडा'[1] कपडा तेह।
साडी प्रमुख सीव नैं, घाल राख्या था जेह ॥

२. तेह वस्त्र काढी करी, साडी पहिरी स्वेत।
वलि पहिरयो छै कांचूओ, ओढी पिछेवडी तेथ ॥

३. करवा लाग्या लोच फुन, जेठ प्रमुख ना बाल।
'छेकी'[2] में देखी करी, बोल्या ते तिण काल ॥

४. यां तो साधुपणो लियो, एहवो करी विचार।
जेठ प्रमुख पै आय नैं, कह्या सर्व समाचार ॥

---

१. धवल।
२. किवाड़ो के छेद।

*सुगुण जन सांभलो, वारू सतिय तणो विस्तार।

५. जेठ प्रमुख सहु आय नै जी, ततक्षिण तालो खोल।
श्वेत वस्त्र देखी करी जी, बोलै एहवा बोल॥

६. धवला कपडा खोल दो जी, सतिय कहै खोलू नांहि।
जव जेठ कहै जेठानी भणी जी, खोल देवो थे ताहि॥

७. साहसीक पणो आण नै जी, सतिय वदै वच 'रूस'[1]।
जो मांहरै हाथ लगावियो तो, विहुं सुत ना तुझ 'सूस'[2]॥

८. जेठाणी भय पाय नै जी, बोली एहवी वाय।
हूं थांरै हाथ लगाऊं नही जी, सतीय नै सताऊं नांय॥

९. जेठ कहै सूंस केहना जी, एक पुत्र तो जोय।
यांरे हीज नामे कियो, ते तो यांरो हीज अवलोय॥

१०. हूं ऊपर कपडा न्हांख नै जी, वस्त्र लेसूं खोल।
जिसी गुलाब कुवर म्हारै सुता जी, ए छै ते समतोल॥

११. एहवी धमकी सांभली जी, स्वेत वस्त्र दै उतार।
पिण सतिय साहासीकपणो धरी जी, बोलै कवण प्रकार॥

१२. करआज्ञा रो कागद आया विनां जी, राता कपडा जेह।
पहिरण रा पचखाण छै, इम बोलै निसंकपणेह॥

१३. बिना खोल्यां जो थे गया तो, 'सेठजी' रा पावांरी 'आण'[3]।
मुझ बाप रमाई बालापणै जी, जनक समान थे जाण॥

१४. जेठ कहै हूं थांहरै, हाथ लगाऊं नांय।
कपडा पिण खोलूं नही जी, बलि बोलै इम वाय॥

१५. धवला वस्त्र पहिरयां छतां जी, बैठा रह्यो घर मांय।
साधांरा दर्शण कारणे, जन कोस सईकडा जाय॥

१६. बैठी मुज घर साधवी जी, म्है जांणसां मन माय।
ऊठ प्रभातै थांहरा जी, दर्शण करसां आय॥

१७. पिण दीक्षा लेवा तणी जी, आज्ञा तो द्यां नांय।
इम कही सहु तिहां थी गया, ए चौथी ढाल सुहाय॥

***लय—अलड भड रावण इंदा।**

१. रोष पूर्वक।

२. सौगंध।

३. शपथ।

ढाल ५

दोहा

१. सतिय हिवै तिण अवसरे, पहिरचां धवलो वेस।
तप छठ-छठ करे रही, धर्म ध्यान सुविशेष ।।

२. पूर्व कह्या ते ठाम त्रिहुं, दासी नैं दे हाथ।
महाजन बिण अन्य घर तणो, आहार मंगाई खात ।।

३. काके ससुरा नो सुतन, सालम चंद जी एम।
पूछचो ए त्रिहुं ठांम ते, जुआ-जुआ कहो केम ।।

४. ताम सती उत्तर तसुं, न्याय सहित वर रीत।
कहिवायो ते सांभलो, पूरण धरी प्रतीत ।।

*सुण सुखकारी वारु सतिय सैंठापणो भारी। ध्रुपदं।

५. संजम ले सुखकारो, कांई काठरा पात्रा मझारो।
करिवो छै मुझ आहारो, तिणसूं काष्ट नो पात्रो विचारो ।।

६. थानै भूडा देखावण कामो, ओ तो घाल्यो माटी रो ठामो।
चांदी रो ठांम समाजो, थांरो घर बतावण रै काजो ।।

७. घरकां कह्यो जोसण नै, यंत्र मंत्र कामण करि यां नैं।
जो चारित्र लेवै नाह्यो, तोनै दोय सौ रूपइया दिवायो ।।

८. दासी रोटी ले आवतां ताह्यो, रसते जोसण हाथ लगायो।
दासी कह्यो सती नै आयो, जद रोट्यां तो दीधी न्हखायो ।।

९. पछै जोसण नै बोलाए लीधी, लालच देइ नैं पूछा कीधी।
जोसण साच बोल थई सीधी, बीतक बात सुणाए दीधी ।।

१०. पछै अठम कीधो उदारो, धुर दोय दिवस चौविहारो।
दिवस तीसरे ताह्यो, सती पीवण उदक मंगायो ।।

११. आसरै इक गुटको पीधो, अति उष्ण जाण म्हेल दीधो।
ठाम माहि घाली ठारै 'पाणी', इह अवसर आवी जेठाणी ।।

१२. साता पूछी तेला नी ताह्यो, जब सतिय कहै इम वायो।
थांरै भावै साता थायो, भावै असाता थावो तनु मांह्यो ।।

१३. थांरै घर की तो रोटी खावूं नांही, थांरै खरच इतरो ही मिटचो यांही।
'दुचती'[1] होय जेठाणी, आ तो बोलै इह विध वाणी ।।

---

*लय—सुण चरिताली थांरा चरित लिया में भाली।

1. उदास।

१४ प्रत्यक्ष घर में पेखो, सौ मनुष्य जीमै छै विसेखो।
थे तो साची कहो छो वायो, पिण म्हारो न लागै उपायो ॥

१५. म्हे तो आज ही जाणी, कह्यो थांरां जैठजी नै ताणी[1]।
समझाया आधी निशि तांई, पिण म्हारो न मांनै कांई ॥

१६. कहै म्हारै घर की मांग खायो, मौनै सदै नहीं मन माह्यो।
म्हांरी सात पीढचां में सीधो, किण ही साधुपणो नही लीधो ॥

१७. मर जासी तो रोय बेस रहिसूं, पिण आज्ञा तो नहिं देसूं।
आपूं धन री पाती उदारो, लघु पुत्र खोले देऊं म्हारो ॥

१८. हिवै क्यूं न रहै घर माही, साधूपणो लेवा द्यूं नाही।
कह्या जेठाणी समाचारो, जब सतिय बोली तिणवारो ॥

१९. थांरा घर की कांइ मांग खायो, कृष्ण श्रेणकनी राण्या ताह्यो।
त्यां पिण मांगी खाधो विख्यातो, तो थारो घर कितियक वातो ॥

२०. जेठजी सा आज्ञा नहिं दै सोयो, जो मूंआ हीज राजी होयो।
तो आज्ञा दियां विण जाणो, च्यारूं आहार तणा पचखाणो ॥

२१. सैठापणो मन धारी, वारू त्याग किया ए भारी।
ठारचो पाणी न पीधो लिगारी, सती वीर रसे तिणवारी ॥

२२. ए पंचमी ढाल मझारो, कही वारता विविध प्रकारो।
देखो सतिय परिणाम उदारो, सुणियां चित पामै चिमत्कारो ॥

ढाल ६

दोहा

१. जेठाणी दुचती थई, ऊठ गई तिह वार।
घरकां नें आवी कह्यो, यां पचख्या च्यारूं आहार ॥

२. हिव धवला पहिर्‌यां छतां, सती बैठी घर मांहि।
त्याग च्यारूं आहारां तणां, बात विस्तरी ताहि ॥

३. कोइ 'असंधो'[2] मानवी, पूछै इह विध वाय।
ए सांमण बैठी कवण, थांरा घर में आय ॥

---

१. जोर देकर।
२. अपरिचित।

४. तब दादेसासू कहै, मुख सूं इह विध वाय।
फूट गया कर्म माहरा, बहु सांमण हुई ताय॥

*चतुर नर सतिय सिरे सिरदार। ध्रुपदं।

५. अष्ट दिवस इम नीकल्या रे, जेठ प्रमुख सहु आय।
विविध प्रकार कह्यो घणो रे, पिण सतिय न मांने वाय॥

६. दिन नवमें धमकी दीयै सती, म्हांरी पांती रो धन सार।
चाढ देसूं सर्व देहरे, जब जेठ बोल्यो तिण वार॥

७. थांरी पांती रा धन नो, पुन्य करो रे वर्ष-वर्ष में ताहि।
सहस्र-सहस्र रोकड वली, पिण बैठा रही घर मांहि॥

८. मुख मा सू लोही घणुं, नित्य प्रति पडतों जेह।
जेठाणी देराणियां, देखी दुःख धरेह॥

९. म्हे ए भेला जीमता, अै न लीयै अन्न-पाण।
इण विधि मरणो मांडियो, प्रत्यक्ष ही पहिछाण॥

१०. नित्य प्रति म्हे भोजन करां, धिग मुज जीमण जोय।
इत्यादिक वचने करी, 'आरत'[1] करता सोय॥

११. दादे सासू पिण अति ही, दुख धरि बोलै बाण।
म्हारी आज्ञा 'चरित्र'[2] नी, भोगव तूं अन्न-पाण॥

१२. बडो जेठ पिण घर मझै, आवी जीमै नाहि।
बाहिर थाल मंगाय लै, सति बैठी चौक रे मांहि॥

१३. जेठाणी कहै थां भणी, यूं तो आज्ञा दै नांय।
वैसै कचेडी में सहू, जिहां कहो थे जाय॥

१४. इम कही सती नूं कर ग्रही, पोल मूंहढै उभा राख्या आण।
हाथ सती नो झाल्यां छतां, ऊभी जेठाणी पिण जाण॥

१५. देवर पनालाल नै तेडनै, कहै जेठाणी वाय।
अै आवै कचेडी नै विषै, पिण हूं आवा द्यूं नाय॥

१६. थांरा भाईजी भणी, जाय कहो समाचार।
पनालाल कह्यां थकां, उठ्यो जेठ जिवार॥

१७. घर माहै आवी करी, कहै दादी नैं वाय।
साधुपणो लेवा तणी, आज्ञा तो द्यूं नाय॥

---

*लय—चतुर नर वात विचारो एह।

१. करुणा जनक पुकार।

२. चारित्र (सयम)।

१८. आंसूडा झरता कहै, रहो पाली रै माहि।
साधां रा दर्शण करो, मन मानै तिहां जाय ॥
१९. सती भणी संभलाय नै, कही विविध पर बात।
ऊठ गया घर बारणै, हिव दिन दशम विख्यात ॥
२०. ग्राम बावडी नै विषै, होय रह्यो 'हाकार'[1]।
सैहर फलवधी में बहू, जन बोलै विविध प्रकार ॥
२१. अन्न-जल बिण दिन एतला, नीकलिया छै ताहि।
मनुष्य मरै इण रीत सूं, ढढां रा घर मांहि ॥
२२. जेठाणी कहै मुझ केहण थी, यां छोडचो अन्न-पाण।
एह कुजश मुझ आवियो, तो म्हारै पिण पचखाण ॥
२३. अै जीमै वा जल लीयै, तो लेवू अन्न-पाण।
नही तो च्यारूं आहार ना, म्हारै पिण पच्चखाण ॥
२४. दिवस इग्यारमें नै विषै, दादे सासू मंत।
तीन आहार त्यागे दिया, अमल उदक उपरंत ॥
२५. तीन पहर इम नीकल्या, जेठ प्रमुख तिणवार।
एहवूं वृतंत देख नै, करिवा लागा विचार ॥
२६. हिव आज्ञा दीधां विनां, ठीक न लागै कांय।
आहार च्यारूं नहीं भोगवै, ए मुझ नारी तांय ॥
२७. असी वर्ष रे आसरै, दादी पिण जीमै नांय।
तो आज्ञा देऊं हिवै, कलेस सहु मिट जाय ॥
२८. कागद आज्ञा नो तदा, लिखवा नै थया त्यार।
कवण प्रकार थयो तदा, सांभल जो धर प्यार ॥
२९. छठी ढाल विषै कह्यो, दिवस इग्यार 'उछंत'[2]।
दृढ परिणाम सती तणां, चरण लेण चित्त 'खंत'[3] ॥

ढाल ७

दोहा

१. जोडी कासीदां तणी, चूरू सूं इणवार।
आयी ततक्षिण वाचिया, कागद मे समाचार ॥

१. हो हल्ला।
२. वृत्तान्त।
३. अभिलाषा।

२. आज्ञा थे दीजो मती, जो थे दीधी है आण।
तो म्हे थांसूं समझसां, कठिन वचन इम जाण॥
३. 'खंच'[1] करी नैं ए मरै, तो मरवा दीजो सोय।
वेडी पग में घालजो, इत्यादिक अवलोय॥
४. जेठ कहे तुज जनक नां, समाचार छै एह।
दादी नैं पूछा करै, हिव स्यूं काम करेह॥
५. हिव थे तो जीमो सही, तव दादी कहै वाय।
यां अन्न-जल लीधां विना, हुं तो जीमूं नांय॥
६. कागद लिख आज्ञा तणो, चूरू सैहर मझार।
म्हैल दैणा यांनै सही, इम मन मांहै धार॥
७. आज्ञा रो कागद लिख्यो, महा सुदि आठम जांण।
ताम सती पीधो उदक, पूरा थया पच्चखाण॥
८. अष्टम तिथि तिण कारणे, सती न जीमीं ताय।
वारम दिन अन्य घर तणो, पारण कियो मंगाय॥
९. कागद कर आयां विना, स्वेत वस्त्र उपरंत।
अन्य वस्त्र पहिरण तणां, त्याग किया धर खंत॥
१०. छठ-छठ तप तिम हिज करै, दासी हाथे जोय।
अन्य घर तणो मंगाय नैं, करै पारणो सोय॥

*सूरापणो तुम्है जोयजो सती नो। ध्रुपदं।

११. सतिय आज्ञा नो कागद मांगै, जव जेठ कहै इम वायो।
ए कागद शिवराज सिपाई नै सूंप्यो, ते देसी चूरू में जायो॥
१२. कोठारीजी कै अरुवरु ही, ए शिवराज सिपाई।
कागद थांरै हाथे देसी, पिण हिवडां सूंपां नांही॥
१३. सतिय कहै मुझ कागद नापो, चूरू सताव सूं म्हेलो।
कागद सिपाई हाथ देई नै, पिण दिवस 'आधा मति ठेलो'[2]॥
१४. चूरू न म्हेलै कागद नहीं सूंपै, सतिय वदै तव वाणो।
चूरू नैं विदा कियां विण म्हारै, च्यारूं आहार तणां पच्चखाणो॥
१५. सात दिवस इह विधि नीकलिया, सात दिवस में हेवो।
सतिय कहै जूनां डावा रो, गेहणो वही देख संभाली लेवो॥

---

१. आग्रह।
*लय—परनारी नो संग न कीजै।
२. आगे मत खींचो।

१६. जेठ कहै कांइ गैहणो संभालां, थांरै देणो हुवै जिण नै देवो।
सतिय कहै एक बार गेहणा नै, बही देख संभाली लेवो॥

१७. दीपचंदजी देवर नै ले, वृद्ध 'सुमरख' सिपाई।
बही मंगाय सती पै बैठा, जेठ अलगो बैठो जाई।

१८. दीपचंदजी रै हाथ बही छै, ते वाचै तिण कालो।
सुमरखां रै हाथ गेहणो छै, इम लीधो सर्व सभालो॥

१९. लघु 'हथांकला'[1] जवर हार मोत्यां रो, मंडिया बीजक माह्यो।
डाबा में बिहुं रकम न देख्यां, आपस मे बतलायो॥

२०. सतिय कहै बहुजीसा मोनै, बालपणा में सीधी।
बडा हथांकला दीया घडावी, म्है लघु हथांकला दीधी॥

२१. ते न्हाना हथांकला त्यांरा हाथ सू, जद हिज गम गया तासो।
जेठ कहै आ बात साची है, म्है पिण सुणियो मा पासो॥

२२. हार मोत्यां रो टूट गयो थो, पोवावण म्हेल्यो जयपुर मांह्यो।
ते हार पोइ नै पाछो आयो, जद बहुजी सा रा डबा में मेलायो॥

२३. ते बहुजी सा रा बीजक में देखो, तिण में मंड्यो मांहरो नामो।
बीजक में नाम देख्यो सती रो, हार लाधो तिण ठामो॥

सोरठा

२४. जबर मोत्यां रो हार रे, सुणियो तीन सहस्र रै आसरै।
अधिको ओछो धार रे, ते पिण जाणै केवली॥

२५. जेठ कहै ए गेहणा कपड़ा, मेहल्या रूपईया जेहो।
मन मानै तिण नै थे देवो, जब सतिय दीया धर नेहो॥

२६. जेठ कहै थांरै लारै लागता, रुपया चालीस हजारो।
वांटणी आवै जिता कर सू वांटो, जब सतिय वांट्या तिण वारो॥

२७. पनरै सौ रुपयां री हुंडी, सूंपी सूत्रां रै काजो।
साधुपणो लेवा री इह विधि, सांप्रत आज्ञा समाजो॥

२८. जब सतिय कहै मुझ चुरू मेलो तो, सैहर चूरू रै मांह्यो।
जो कागद मुज कर नही दीधो तो, पाछी आसूं चलायो॥

---

1. हाथकडा (हाथ मे पहनने का गहना)।

*लय—पर नारी नो संग न कीजै

२९. थांरी हवेली में तो आवारा त्याग छै, सैहर फलवधी मांह्यो।
कोटवाली चौतरा में बैस सूं, इम वोली निसंक सूं वायो॥
३०. जेठ कहै कोठारी जी रै अरुवरु, ए कागद सूंप सी सिपाई।
फैर अठै पाछा मति आइजो, म्हांनै तो दीया धपाई॥
३१. सतिय कहै म्हारो मन मानैं तिहां, साधुपणो जई लेसूं।
चूरू कै नामैं कागद लिख्यो छै, सो चूरू माहि नहि रहिसूं॥
३२. जव जेठ कहै अठा सूं तो वार इक, चूरू जावो चलायो।
पछै म्हारै भावे तो संजम लीजो, जयपुर उदयपुर मांह्यो॥
३३. आसरै तीन च्यार नै शाखी करे नैं, दूजा पाना रै मांह्यो।
निज कर सूं अक्षर सती लिखिया, इम आज्ञा दीधी सुखदायो॥
३४. स्वेत वस्त्र छतां 'वहिल'[1] वैसीनैं, सैहर फलवधी मांही।
दिवस आठमें कियो पारणो, सती दिवस कितै चूरू आई॥
३५. सातमी ढाले सासरियां सती नैं, त्यार संजम नैं कीधी॥
सूत्र लेवानै हुंडी सूपी, वले वस्तु सभाले लीधी॥

ढाल ८

दोहा

१. कागद कर आया विनां, वंधव सांहमो जाण।
'जोवण रा'[2] पच्चखाण वलि, वोलण रा पच्चखाण॥
२. स्वेत वस्त्र पहिरयां छतां, सती रहै पीयर रै मांय।
अठम अठम पारण आंविल, अन्य घर आहार मंगाय॥
३. शिवराज सिपाई नै तिको, जनक कह्या विण जोय।
सती तणा कर नै विषै, कागद नापै कोय।
४. दिवस घणां इम नीकल्या, इह अवसर रै मांय।
विहाव भतीजी रो मंड्यो, तव सती करै उपाय॥
५. वीकानेर विपै तसु, परणावानै जाय।
गुप्त वीदणी नै पकड़, सती घाली म्हालिया मांय॥
६. कपाट जड तालो दियो, वदै सती इम वाय।
कागद दिरावो मो भणी, तो काढूं वींदणी ताय॥

१. वैलो द्वारा खींची जाने वाली जनाना सवारी गाड़ी, जिसे कपड़े तानकर ऊपर से वद कर दिया जाता है।
२. देखने का।

७. जनक कहै दै वीदणी, वीकाणा थी आय।
काग‍द दिरासां तो भणी, जद सूपे दीधी ताय॥

८. विहाव करी बीकाण थी, सघला आया सोय।
जनक रह्यो वीकाणपुर, चुरू नायो कोय॥

९. जनक बीकाण गया पछै, कागद नावै हाथ।
ज्यां लग तप दशम-दशम, पारण आंबिल विख्यात॥

१०. भ्रात जनक बोलावियो, म्हेल कासीद जिवार।
कागद कर आंयां विनां, सती पचख्या च्यारूं आहार॥

११. उष्ण काल अति आकरो, च्यार आहार पच्चखाण।
दिवस पंच इम नीकल्या, कंपै कायर प्राण॥

*सरस सुहामणी हो, गुण निधि, सतियां शिर सिरदार॥ ध्रुपदं॥

१२. तात भ्रात कहै घर मध्ये हो, गुण निधि, पंच वर्ष रहो एथ।
पछै संजम लीजो सही हो, गुण निधि, इम लिख दीधो तेथ॥

१३. ऋषिराय हेम मुनि जीतनां, इक - इक वर्ष मझार।
दर्श कराय देसां अम्हे, रहो पंच वर्ष सुविचार॥

१४. थांरी आज्ञा नही चलै, इह विध सतिय विचार।
खंच न कीधी तिण समै, कागद लेवा सार॥

१५. कागद तब सूपी दियो, सती भणी सुखकार।
धवलो वेस उतारियो, जीमै घर नो आहार॥

१६. आसरै दिवस बे त्रिण पछै, वदै भ्रात इम वाय।
अबै पंच वर्षा लगै, बाई रहो घर मांय॥

१७. सती कहै ए लिखत थी, पंच घड़ी पिण माण।
घर में रही जाणो मती, थांरी न चलै आण॥

१८. आज्ञा सासरियां तणी, ते कागद मुझ हाथ।
मन मानै तिहां जाय नै, लेसू चरण विख्यात॥

१९. जीत तणां दर्शण विना, तप छठ - छठ सुचंग।
करणो इम धारचो सती, आणी अति उचरंग॥

*लय—सुण सुण साधजी हो मुनिवर मन चलियो तूं घेर

२०. वीच 'तेर'[1] फुन 'सत'[2] किया, 'दशम'[3] 'पंचोलो'[4] देख।
दर्श करावो हेम ना, कहै जनक नें पेख ॥

२१. तव कहै जीत को सांभल्यो, उदियापुर चउमास।
ते चउमासो ऊतर्यां, दर्शण कीजो तास ॥

२२. हेम अनें ऋपराय ना, पहिला दर्श पुनीत।
करो भलांइ इम कही, म्हेली जनक सुरीत ॥

२३. वहिल विषै वैसाण नै, वहु 'करहादिक'[5] साथ।
दर्शण करवा मोकली, सती भणी निज तात ॥

२४. वीदासर चत्रू सती, दर्शण किया तिवार।
पछै सुजाणगढ आवी किया, मधू सतीना सार ॥

२५. दीपांजी ना लाडणूं, करै दर्शण सुविमास।
वोरावड आवी सती, स्वाम सरूप रै पास ॥

२६. वहिल करहादिक नर भणी, दीधी सीख जिवार।
सरूपनी सेवा करी, पनर दिवस धर प्यार ॥

२७. जनक तणां मामा तणो, सुत पनराज विमास।
तेड्यो कुचामण थी तदा, जाति लूणिया जास ॥

२८. हेम तणां दर्शण करां, इम कही तसुं संग लीध।
ग्राम वाजोली आय नै, दर्श 'भीम' ना कीध ॥

२९. पहिला भीम कह्यो हुंतो, जो तूं चारित्र लेह।
तो हूं पांना पांचसै, लिखिया तुज नैं देह ॥

३०. चारित्र लेवा कारणे, हूं जावूं सुविचार।
लिख्या पत्र वर पांच सौ, आप करी राख जो त्यार ॥

३१. तिहां दोय दिवस सेवा करी, आवी सैहर पीपार।
दर्शण जोतांजी तणां, उभय दिवस अवधार ॥

३२. पाली सुखां सती तणी, तीन दिवस करि सेव।
श्रावक ने वहु श्राविका, साथ हुवा स्वयमेव ॥

३३. हेम तणा दर्शण भणी, सेहर सिरयारी आय।
सती तीन दिवस सेवा करी, तन मन सूं चित ल्याय ॥

---

१. तेरह दिन का तप।
२ सात दिन का तप।
३. चोला-चार दिन का तप।
४. पाच दिन का तप।
५. ऊट आदि।

३४. पनराज लूणिया नै कह्यो, थे पाछा जावो ताय।
हूं दर्शण कर सू जीत नां, उदियापुर में जाय ॥

३५. पनराज कहै हूं आवसू, तुज साथे अवलोय।
सतिय कहै हूं तो हिवै, पाछी नावू कोय ॥

३६. दै ओलंभो थां भणी, जनक भ्रात परिवार।
एम कही पनराज नैं, दीधी शीख जिवार ॥

३७ श्रावक पाली नो तिहां, रामकृष्ण कहै एम।
हूं तुज साथे आवसू, उदियापुर धर प्रेम ॥

३८. श्रीजीदुवारा थी तदा, हेम दर्श रैं हेत।
भागचंद टुकल्यो तिहां, आयो त्रिया समेत ॥

३९. त्यां साथे आवै सती, सेहर देवगढ मांय।
भगजी स्वामी रा भला, दर्शण करि हरपाय ॥

४०. जवान ऋषि कर्मचंद नां, दर्श आमेट सुहेज।
तिहां रहितो जगात ऊपरे, ढढां नो भाणेज ॥

४१. जाति काछवा जेहनी, नाम सामजी सार।
सतिय तणै साथे हुवो, आया श्रीजीदुवार ॥

४२. फोजमल जी आदि दे, श्रावक मिलिया आय।
त्यां सतीय भणी अति हित धरी, उदियापुर पोहचाय ॥

४३. पुन्यवान नै जिन कहै, प्रगट हुवै निधान।
सुखे - सुखे आवी सती, उदियापुर शुभ स्थान ॥

४४. चौथ कृष्ण कार्त्तिक तणी हो, दर्श जीतना कीध।
हद तन मन हिय हूलस्यो हो, हिव सकल मनोरथ सिद्ध ॥

४५. ढाल भली ए आठमी हो, सुखे - सुखे सुविचार।
उदियापुर आवी सती हो, पाम्यो तन मन प्यार ॥

४६. सतिय पास सुणियो हुतो, तिम जोड्यो अवलोय।
अधिक ऊंण आयो ह्वै तो, मिच्छामि दुक्कड मोय ॥

ढाल ९

दोहा

१. समाचार सहु जीत नैं, संभलाया तिणवार।
कागद आज्ञा नो तिको, सूंपे दीधो सार॥

२. सूत्रां नैं काजे सखर, हुंडी दीधी हाथ।
गैहणो लियो संभाल नैं, वलि कही मुख सूं बात॥

३. म्हारै भावे तो तुम्है, जयपुर उदयपुर जाय।
साधुपणो लीजो सखर, फिर पाछा मति आय॥

४. रह्यो मास पट आसरै, पहिरण धवलो वेश।
दोय लोच फुन कष्ट बहु, सह्यो अधिक सुविशेष॥

५. समाचार सुणियां थकां, चित्त पामै चिमत्कार।
कहै जीत ऋषि हिव तुम्हें, लीजै संजम भार॥

६. उदियापुर आयां पछै, एक मास लग जोय।
चरण जीत दीधो नथी, हिव दीक्षा महोत्सव होय॥

७. एक मास लग नित्य प्रति, अधिक-अधिक मनुहार।
घर-घर प्रति जीमावता, हरप धरी नर नार॥

८. चंदणा समणी नो हुंतो, गोघूंदे चउमास।
सती दर्श करिवे 'अज्जा,'[1], आणी अधिक हुलास॥

९. जीत विचारै ए सती, काल अनागत मांहि।
जबर भाग्य भारी दिशां, हुंती दीसै ताहि॥

१०. तिण कारण निज हस्त करि, लै पोते शिर केश।
सती भणी समझाय दी, वारू रीत विशेप॥

११. आया श्रीजीदुवार थी, फोजमलजी आदि।
अन्य ग्राम ना जन बहू, आया धर अह्लाद॥

१२. ऋपभदास तलेसरा, तसु घर थकी सुजाण।
दीक्षा ना महोत्सव तणो, मंडियो बहु मडाण॥

१३. इक निशि मांहे पालखी, त्यार करी धर खंत।
तिण मांहे बैठी सती, वर लूंबा लटकंत॥

१. साध्वियां।

*वारू महासती ना, दीक्षा महोत्सव अति दीपता ।। ध्रुपदं ।।

१४. हांरे लाला आगल कोतल हालता, हांरे लाला, वलि गज उभय उदार ।
हांरे लाला विविध वाजंत्र वाजे रह्या, हांरे लाला चाल्या है मझ बाजार ।।

१५. पलटण साथे परवरी, श्रावक हरष अपार ।
अन्यमति स्वमति तेहनै, वोलाया कर मनुहार ।।

१६. दीक्षा महोत्सव में पधारियै, इम कही हाटो हाट ।
प्रथम वोलाय लीया हुता, होय रह्यो गहगाट ।।

१७. सखर सुहागण सोभती, सुदर कर शृंगार ।
पूठे सुस्वर कंठे करी, हां गावती गीत धूंकार ।।

१८. माणकचंद भंडारी ऋषभदासजी, फोजमलजी आदि धर कोड ।
उभय पास वर सती तणै, चामर वीजै होडा-होड ।।

१९. लोक हजारां रै आसरै, मुख-मुख सुजग जंपेण ।
इह विधि आया पुर वाहिरै, सखर आंवा नी समश्रेण ।।

२०. दश सहस्र मेवाड रे आसरै, तसु न्याय नो काम करेह ।
संजम लेती सती भणी, देखी आश्चर्य पाम्या जेह ।।

२१. जीत ऋषी तिण अवसरे, तरु अंव तल आनन्द ।
चरित्र सामायक उच्चरावियो, सतीय भणी सुखकंद ।।

२२. संवत अठारै सत्ताणूअे, मृगसिर विद चौथ न्हाल ।
सतिय सिरदारां संजम आदर्यो, मिट गया सर्व जंजाल ।।

२३. लाडू पतासी बहु वाटियां, वांटचा वहु नालेर ।
ए सावज्ज काम संसारना, ज्ञान नेत्रे करि देखो हेर ।।

२४. जैसा परिणाम दीक्षा तणी, वात काढी मुख वार ।
तिम हिज दृढ परिणाम सू, आज्ञा ले लीध संजम भार ।।

२५. जीत ऋषि तिण अवसरे, तीनूं सत्या नें तिणवार ।
गोगूदे चंदणा अछै, तिण दिशि करायो विहार ।।

२६. जीत चदेरे आवी करी, 'लालजी'[1] नै तिणवार ।
तिथ चरण समापियो, सती पग छेहडै जय-जयकार ।।

२७. हेम चक्षु निजलो हुंतो, ते रह्यो आसरै चिहुं वास ।
सतिय चारित्र लीधां पछै, नेत्र खुल्या छठै मास ।।

---

*लय—एसी जोगणी री जोग लीला जाणी नहीं ।

१. मुनि लालजी (१२२) ।

२८. ढाल नवमी विषै कह्यो, संजम लीयो सिरदार।
धर्म उद्योत हुओ घणो, पाम्या है जन अति प्यार॥

ढाल १०

दोहा

१. जीत गोघूंदे आय नें, दिवस आठमें देख।
चारित्र छेदोपस्थापनिक, उचरायो सुविसेख॥

२. गोघूदा थी विहार करि, सुखे-सुखे विचरंत।
मारवाड आवी सती, पूज्य दर्श मन खंत॥

३. रूपकुंवर दीक्षा लीयै, नागोरे तिह वार।
तिहां ऋषिराय पधारिया, वहु संत सत्यां परिवार॥

४. जीत सुणी आयो तिहां, पूज्य तणो धर प्रेम।
दर्शण करि हरप्यो घणो, हिवडो होय गयो हेम॥

५. पूछयो सिरदारां किहां, जीत कहै जिह वार।
एक मजल लारै अछै, हरप्या पूज्य तिवार॥

६. दूजै दिन आवी सती, पूज्य दर्श कर प्रेम।
पाम्यो अति वाध्यो उमंग, कैहणी आवै केम॥

७. रूपकुंवर नै तिण समय, स्वाम संजम दै सार।
डीडवांणे पउधारिया, संत सत्यां परिवार॥

*सती गुणवंतीजी, प्रवल पुन्यवंती जी।
होजी ज्यांरी भाग्य दिशा भरपूर।
कीर्त्ति महिकंती जी, सुगुण दीपंती जी॥ ध्रुपदं॥

८. स्वहस्त पूज्य कियो तदा कांइ, सतिय सिंघाडो[1] सार।
सुखां कनां थी इक अज्जा कांई, सूपी 'ऋधू' तिवार।

९. जेतांजी नांमे भली कांइ, अज्जा एक उदार।
दीपांजी रा कनांथ की, पूज्य सूंपी धर प्यार॥

१०. निशीथ न भणै ज्यां लगै, 'टोलो" कल्पै नाहि।
तिण कारण ऋधू तणै, नांमे स्थाप्यो ताहि॥

---

*लय—पायल वाली पदमणी।

१. सिंघाड़ा।

११. कह्यो सूत्र ववहार में, जोग्य आचार्य जेह।
सूत्र भणै छै ज्यां लगै, अन्य नामे स्थापेह ॥

१२. पदवी आचार्य तणी, इम 'पाडियारी कही जेह।
तिम पदवी टोला तणी, ऋधू रै नामेह ॥

१३. मर्याद सूत्र भणवा तणी, कही सूत्र व्यवहार।
कल्पै नसीत वाचवू, तृतीय वर्ष सुविचार ॥

१४. कल्पै चौथा वर्ष में, सूयगडांग सुखकार।
दशाश्रुतखंध वर्ष पंचमें, वृहत्कल्प ववहार ॥

१५. कल्पै अष्टम वर्ष में, ठाणांग समवायंग।
दश वर्षे वर भगवती, ए जिन वचन सुचंग ॥

१६. तिण सू नशीत वाचवो, ज्यां लग नही कल्पेह।
त्यां लग टोलो थापियो, ऋधू रै नामेह ॥

१७. सती भणी भलावियो, डीडवाणे चउमास।
पूज पधारया लाडणू, चउमासो सुखवास ॥

सोरठा

१८. प्रथम चौमासो पेख, समत अठार अठाणुअे।
डीडवाणे सुविसेख, त्यां धर्म उद्योत कियो घणो ॥

१९. आसरै चउथ इकतीस, बे छठ इक अठम कियो।
एक दशम सुजगीस, वखाण नित्य वाचै सती ॥

२०. जयपुर म्हेल्यो जीत नै, चउमासा रै माय।
तिहां नवला त्यारी थई, चरण लेण सुखदाय ॥

२१. चउमासो ऊतरियां सती, दर्श पूज्य नां कीध।
दीपांजी तिण अवसरे, जेतांजी नै लीध ॥

२२. जयपुर चौमासा मझै, पूज्य दर्शण रो पेख।
भागचद जवरी भणी, दै उपदेश विसेख ॥

२३. त्यां दर्शण कीधा पूज्य ना, करी वीनती सार।
जयपुर स्वाम पधारिया, बहु संत सत्यां परिवार ॥

२४. सांगानेर थी आय नै, दर्शण कीधा जीत।
पूज्य तणो मुख पेखतां, पाम्यो तन मन प्रीत ॥

२५. अति महोत्सव नवलां भणी, संजम दीधो स्वाम।
सती सिरदारांजी भणी, सूंपी ते गुण ठाम॥

२६. विहार करी जयपुर थकी, स्थली देश रै मांहि।
बहु संत सत्यां परिवार सूं, पूज्य पधारचा ताहि॥

२७ संवत् अठार निनाणूंअे, बीदासर चउमास।
कियो पूज्य ऋषिरायजी, जीत संग सुखवास॥

२८. पनां रंगूजी सती, सिरदारांजी सार।
पूज्य कनै चउमास में, अज्जा आठ उदार॥

२९. कन्या हरखूजी भणी, संजय दीधो स्वाम।
सतिय सिरदारां जी भणी, आयी ते अभिराम॥

३०. हिव चउमासो ऊतरचो, तीजा वर्ष मभ्कार।
इक दिन में वाच्यो सती, सूत्र निशीत उदार॥

३१. वलि आचारंग वाचियो, आयो कल्प जिवार।
सूंपी सुखांजी भणी, ऋष्वू नै तिह वार॥

३२. माता हरखूजी तणी, सिणगारा नैं स्वाम।
संजम दै सूंपी सही, सती भणी तिण ठाम॥

३३. हिव च्यारूं ही अज्जिका, प्रथम सती सिरदार।
नवलां सिणगारा सती, हरखू अति हितकार॥

३४. सैहर लाडणूं नै विषै, सती तणै तनु मांहि।
कारण अधिको ऊपनो, रह्या मास पट ताहि॥

३५. निकट चौमासो आवियो, दूर जाणी आयो नाहि।
सईके चउमासो कियो, चाडवास रै माहि॥

३६. दोढ मास रै आसरै, तप छठ - छठ उदार।
इक चोलो कीधो सती, एक पंचोलो सार॥

३७. एक सात रो थोकडो, आसरै पनर उपवास।
पछै कारण वलि ऊपनो, अति तनु मांहै तास॥

३८. हिव चउमासो ऊतरचो, शेषाकाल मभ्कार।
अमरू नें कुंनणा वली, अज्जा थई तिवार॥

३९. उगणीसै एके समै, बोरावड चउमास।
कीधो पट अज्जा थकी, सती दिन-दिन अधिक उजास॥

सोरठा

४०. आसरै चौथं पैंतीस, त्रिण छठ ने बलि दशम इक।
सती किया सुजगीस, बोरावड उपगार अति ।।

४१. पछै फलवधी जाय नै, वर ढढां घर नार।
सती अमेदा नै तदा, दीधो संजम भार ।।

४२. विहार करी नैं आविया, कृष्णगढ रैं मांय।
जीत , ऋषि पिण त्यां हुंतो, दर्शण करि हरषाय ।।

४३. बाजोली थी आय नै, बीजराज मां साथ।
दीक्षा लीधी दीपती, जीत ऋषि रैं हाथ ।।

४४. वीजराज ऋषि जीत पै, सती पास सिणगार।
पूज्य तणी आज्ञा थकी, रहै अधिक धर प्यार ।।

४५. लिछमां बली संजम लियो, इम अठ अज्जा हेर।
उगणीसै बीये समै, चउमासो अजमेर ।।

सोरठा

४६. आसरै चौथ चउतीसरे, बे छठ इक अठम वली।
इक चोलो फुन दीस, किया सती अजमेर में ।।

४७. रायकुवर चलियां छतां, बे अज्जा आई तास।
इम दश अज्जा थी तीये, कियो गोघूदे चउमास ।।

सोरठा

४८. आसरै चौथ पैंतीस, वे छठ इक अठम कियो।
एक दशम सुजगीस, गोघूदे चउमास में ।।

४९. कृष्णगढ चौके वर्ष, वे छठ दशम इक जास।
इकतीस चौथ रै आसरै, ए सप्तम चउमास ।।

५०. पांचे श्रीजीदुवार में, आसरै चौथ इकतीस।
त्रिण छठ इक अठम कियो, एक दशम तप दीस ।।

५१. देशणोक छके कियो, आसरै चउथ इकतीस।
बे छठ इक अठम कियो, दशम एक फुन दीस ।।

५२. सिरदारगढ साते कियो, आसरै चउथ इकतीस।
चिहुं छठ इक अठम कियो, एक दशम फुन दीस ॥

५३. आठे रतनगढ दश अज्जा, आसरै चउथ इकतीस।
चिहुं छठ इक अठम कियो, दशम एक फुन दीस ॥

५४. दशमी ढाले दाखिया, एकदश चउमास।
पूज्य ऋषिराय तणी आज्ञा थकी, विचरंती सुखवास ॥

ढाल ११

दोहा

१. जीत ऋषि तिण अवसरे, वीदासर चउमास।
उगणीसै आठे वर्ष, अधिको धर्म उजास ॥

२. त्यार कियो मघराज नै, दीक्षा नै तिण वार।
मृगसर विद बारस चरण, सैहर लाडणू सार ॥

३. माघ मास फुन आवियो, जीत वीदासर मांय।
इह अवसर मेवाड थी, समाचार इम आय ॥

४. रायऋषि परभव गया, लघु रावलियां मांय।
सुण दोहरी लागी घणी, जांणै श्री जिनराय ॥

५. भिक्षु नै पद तीसरे, वर शासण सिर मोड।
मोटा आचारज हुंता, पिण काल थकी नहीं जोर ॥

६. महासुदि पूनम पुष्य गुरु, पट्ट महोत्सव ऋषि जीत।
थट्ट चिहुं तीर्थ सुहामणा, वीदासर सुवदीत ॥

७. दिवस सात में छठ तिथि, मघ भगणी मा साथ।
हस्तू तीजी ए त्रिहुं, चरण लियो जय हाथ ॥

८. महासती सिरदार नै, सूंपी तेह सुजाण।
बैशाखे फुन चिहुं दीक्षा, इक साथे पहिछाण ॥

९. इम धर्म वृद्धि उद्योत अति, च्यार तीर्थ सुखकार।
शासण कार्य करै भला, सतियां सिर सिरदार ॥

१०. उगणीसै नवके समै, जयपुर जीत चौमास।
द्वादश अज्जा सूं सती, जोबनेर सुखवास ॥

११. छठ भक्त पंच अठम इक, आसरै चउथ बतीस।
एक पचोलो महासती, जोबनेर सुजगीस ।।

१२. दश का वर्ष थकी सहु, गणपति पै चउमास।
सुजश अधिक चिहुं तीर्थ मे, पूरण पुन्य प्रकाश ।।

१३. शासण कार्य भलावियो, सती भणी गणि जीत।
देश-देश में विस्तरी, कीरति अधिक पुनीत ।।

१४. गणपति रै मुख आगले, अधिक सती नो तोल।
संत सती पिण कार्य बहु, पूछी करै अमोल ।।

१५. प्रबल पुन्य भारी दिशा, इह अवसर रै मांय।
कवण प्रकार थयो तदा, सांभलजो चित्त ल्याय ।।

*सतिय सरोमणि रे, समणी वर सिरदार।
पुन्य प्रबल अरु भाग्य दिशा अति, च्यार तीर्थ हितकार ।। ध्रुपदं ।।

१६. संवत उगणीसै वर्ष चवदे, लघु नवलां सुखदाय।
जीत भणी कहै म्है चिहुं अज्जा, सतीय तणी नेश्राय ।।

१७. जीत कहै तुम मुझ आज्ञा थी, विचरो सुखे सुहायो।
तुज टोलो मुख आगल अज्जा, क्यूं रहो पर नेश्रायो ।।

१८. पर नेश्राय बीज पांती रो, बलि पांती रो काम।
गोचर्यादिक कार्य करणां, 'निज छांदो'[1] रुंधी ताम ।।

१९. जेह तणी नेश्राय रहै तसुं, पालणी आण असेख।
आहार पाणी ओषध वस्त्रादिक, बलि अवर हो बोल अनेक ।।

२०. उठवूं बैसवूं सयन करेवूं, आज्ञा सूं अवधार।
पर छंदे रहिवूं अति दोहिलो, छै अति खड्गनी धार ।।

२१. बे कर जोडी नवल कहै इम, मुज मन अधिक उमेद।
आण प्रमाण करि हूं चालिस, मेटी मन नी 'खेद'[2] ।।

२२. नवमी विद वैशाख आथण रा, इम बहु हठ दिल सोध।
सतिय तणी नेश्राय हुवा ए, आणी अधिक प्रमोद ।।

२३. पोथ्यां सर्व अज्जा सूंपी तब, मन नो छांदो मेट।
प्रबल पुन्य पोते अधिकेरा, प्रथम नवल आई भेट।

***लय—कुंथु जिनवर रे।**

१. स्वाभिप्राय।

२. रज।

२४. चोदस तिथि मगदू सप्त ठाणे, पनांवर त्रिण अज्जा ।।
वर त्रिण ठाणा थकी मयाजी, ए तेरै समणी सुलज्जा ।।

२५. जेम नवल तिम बहु हठ करि नै, अति उच्चरंग सवायो ।
समणी पोथ्यां सर्व सूंप थइ, सतिय तणी नेश्रायो ।।

२६. कहै सिरदार महासती म्हारा, भाव नहीं छै लिगार ।
तो पिण ए नेश्राय हुइ छै, तीर्थ च्यार मझार ।।

२७. शुक्ल वैशाख अष्टमी पुष्य दिन, वड नंदू अठ ठाण ।
सेरां सिणगारां चिहुं-चिहुं फुन, ए सोलै पहिछाण ।।

२८. जेम नवल तिम बहु हठ कर नै, धर दिल हरष सवायो ।
समणी पोथ्यां सर्व सूंप थइ, सतिय तणी नेश्रायो ।।

२९. काम वोज पांती रो द्यो तो, मुज नटवारा त्याग ।
अंगीकार इम करी गोचरी, आणी हर्ष अथाग ।।

३०. सुदि नवमीं वैशाख दिने, फुन समणी जीऊ पट अज्जा ।
जेम नवले तिम वहु हठ करि थई, सती नेश्राय 'सकज्जा'[1] ।।

३१. प्रथम जेठ विद छठ लघु नंदू, पंच ठाणे कहिवाय ।
जेम नवल तिम वहु हठ करि थइ, सतिय तणी नेश्राय ।।

३२. उगणीसै पनरै पोह विद एकम, वलि मैहताव कुवार ।
त्रिण ठाणे नेश्राय सती रै, नवल जेम अवधार ।।

३३. पोह विद तीज कंकु चिहुं ठांणे, आणी हरष सवायो ।
जेम नवल तिम वहु हठ करि थइ, सतिय तणी नेश्रायो ।।

३४. पोह सुदि एकम सप्त ठाणा सूं, मोतांजी सुखदायो ।
जेम नवल तिम वहु हठ करि थइ, सतिय तणी नेश्रायो ।।

३५. तिण हिज दिन अठ ठांणे चंदणा, अलग वैठी पिण ताह्यो ।
ऋधू साथ कहिवायो म्हे पिण, सतीय तणी नेश्रायो ।।

३६. सती दीपांजी म्हेली सतियां, दर्शण करवा ताह्यो ।
मगनां आदि वहु हठ करि थइ, सतिय तणी नेश्रायो ।।

३७. रंगू आदि अज्जा कारण सूं, रही मेवाड रै मांह्यो ।
हरष ऋषी पै बहु हठ करि थइ, सतिय तणी नेश्रायो ।।

३८. आप-आप रा मन सूं इह विधि, रूंधी अपणो छंदो ।
सतिय तणी नेश्राय थई छै, आणी अधिक आनंदो ।।

---

१. कार्य—प्रयोजन सहित ।

३९. प्रवर्त्तिनी सम प्रत्यक्ष पेखो, पंचम काल मझारो।
संत तिके तिण तोल सती नो, राखै अधिक उदारो॥

४०. समणी संत भणी अति तीखो, पोष सती नो भारी।
बहु जन भाखै कुडब इसो पिण, गर्व न दीसै लिगारी॥

४१. क्षमा धर्म निरलोभ सरलता, निरहंकार उदारू।
लाघव सत्य बलि संजम तप, दान ब्रह्म अति वारू॥

४२. च्यार तीर्थ में निज स्वार्थ नी, गणपति पास जिवारं।
करणी नावै अचरज तिके सती, पास करावै सारं॥

४३. एकादशमीं ढाल विषै सती, च्यार तीर्थ सुखकारं।
सतियां जे नेश्राय थई तसु, आख्यो वर अधिकारं॥

ढाल १२

दोहा

१. शिख्या वर आपै सती, च्यार तीर्थ में सार।
तेहनो तो वर्णन बहू, पिण संक्षेप विचार॥

*धिन सिरदारां महासती॥ ध्रुपदं॥

२. निशि पडिकमणो किया पछै, पोहर रात्रि तांई पेख।
समणी नै श्रावकां भणी, आपै शीख असेख (अशेष)॥

३. वर वैराग्य नी वारता, दानादिक गुण देख।
अधिक शासण री आसता, एहवी शीख संपेख॥

४. हाण ह्वै राग द्वेष नी, मिटै कलेश कषाय।
एहवी शीख समापती, बली कला विविध ओलखाय॥

५. सुगणी समणी श्राविका, हरष अधिक धर 'हूस'[1]।
धारै शीख सुहामणी, लाधी जांणै 'लूस'[2]।

६. बीदासर ने लाडणू, सुजानगढ चउमास।
अधिक बधाया ओपता, वर गुण बहु विश्वास॥

---

*लय—वेग पधारो म्हेला थी

१. उमग।

२. सार वस्तु।

७. गुण गिरवा उद्यमी घणां, च्यार तीर्थ चित चंग।
सुमति समापै महासती, वचनामृत जल गंग ।।

८. प्रर्वातनी ना जिन कह्या, गुण आगम अधिकाय।
ते गुण प्रत्यक्ष पेखियै, सांप्रत काल रै मांय ।।

९. शासण भार धुरंधरू, जननी जिम कहे जन्न।
मुनि पिण 'चंदणबाल' नी, दै ओपम कहै धन्न ।।

१०. ढाल भणी ए बारमी, सतियां शिर सिरदार।
गुण तेहना देखी करी, पांमै जन बहु प्यार ।।

ढाल १३

दोहा

१. आज्ञा जय गुणपति तणी, सती भणी सुखदाय।
संत अनें सतियां भणी, दीजै तुज चित्त चाय ।।

२. दान धर्म नवमो कह्यो, जती धर्म रे मांय।
ते गुण अधिक सती मझै, देख्यां आश्चर्य पाय ।।

३. असनादिक वस्त्रादि फुन, अण मांग्यां ही देह।
बलि मांगै तो पिण तसुं, 'उलट धरी आपेह'[1] ।।

*कांई प्रवर्तनी सम प्रत्यक्ष पेखो सतियां शिर सिरदारो ।।

४. कोई कहै महासतियां जी मुझ, पांती थयांज पहिली जी।
रोटी 'वजन'[2] वा 'रंध'[3] आपो, भूख लागै छै 'बहिली'[4] जी ।।

५. कोई कहै औषधिया लाडू, मेथी प्रमुख केरा जी।
लवंग सूंठ ने जवहरडै दो, देवै सती सुमेरा जी ।।

६. कुली धाणां री काली मिरचां, मिश्री मांगै कोई जी।
सरदी मेटण काजे मुझ दो, दीयै सती अवलोई जी ।।

---

१. खुले दिल से देती।
*लय—स्वर्थ सिद्ध रे चन्द्रवे
२. साग।
३. खिचड़ी आदि।
४. जल्दी।

७ कोई कहै द्यो गोली चूरण, 'खंड'[1] आवलां मांगै जी।
त्रिफला आदि औषध कोई मांगै, दीयै सती चित्त चंगै जी॥

८. कोई कहै मुझ 'वाय'[2] आई छै, तनु वेदन अधिकाई जी।
मटियादिक नो तेल समापो, देवै तुरत मंगाई जी॥

९. कोई कहै मुझ पेट दुखै छै, कोई कहै शिर भारो जी।
कोई कहै मुझ दसतां लागै, करो आप उपचारो जी॥

१०. कोई कहै मुझ तृषा लागी, कोई कहै मुझ भूखो जी।
कोई कहै मुझ देवो चीगटो, कोई कहै द्यो लूखो जी॥

११. कोई कहै मुझ रजोहरण दो, मांगै पूंजणी कोई जी।
नसीतीया नें बली नांगला, दीयै सती अवलोई जी॥

१२. कांटो काढण सूलां देवो, वली चीपियो ताजो जी।
कोई कहै मुझ पूठो देवो, देवै सती समाजो जी॥

१३. कोई कहै मुझ पटडी देवो, कोई कहै द्यो पाटी जी।
कोई कहै लेखण कांमी दो, कोई कहै द्यो काटी जी॥

१४. लेखणां रो घर मांगै कोई, मांगै टोपसी कोई जी।
हरियाल हीगलू स्याही पीछी, देवै सती सुजोई जी॥

१५. कोई कहै मुझ पात्रो फूटो, एह करावो साजो जी।
कोई कहै ए तो थे लेवो, मुज नैं देवो ताजो जी॥

१६. कोई कहै छोटी पात्रो द्यो, कोई कहै द्यो लोटो जी।
कोई कहै लघु पात्रो लेवो, मुझ नैं देवो मोटो जी॥

१७. कोई कहै मुझ पात्रो पात्री, रगावो गुण खांनो जी।
कोई कहै पोतै रंग लेइस, द्यो मुझ रंग रोगानो जी॥

१८. कोई कहै मुझ चोलपटो द्यो, पिछेवडी बलि आपो जी।
कोई कहै ए सीवावी द्यो, वलि लुकार समापो जी॥

१९. कोई कहै मुझ वासठियो द्यो, बलि द्यो तेरै दुवारो जी।
कोई मांगै चरचा रा पांना, देवै सती उदारो जी॥

२०. कोई कहै मुझ पडिकमणो द्यो, यन्त्र थोकडा देवो जी।
वली उपदेश तणां पाना दो, दीयै सती ततखेवो जी॥

२१. कोई कहै मुझ लघु दण्डक द्यो, मांगै कोई चित्रामो जी।
कोई कहै कोरा पाना दो, देवै सती तमामो जी॥

---

१. खाड (चीनी)।
२. वायु (वात-विकार)।

२२. चउमासो करवा जावै ते, मांगै अनेक वखांणो जी।
छोटा मोटा सिद्धान्त मांगै, दीयै सती गुण खांणो जी॥

२३. कोई कहै द्यो झोली पडला, लूंहणा ने रसतांनो जी।
मुहपोत्तिया गलणो मांगै, देवै सती सुजानो जी॥

२४. कोई कहै द्यो डोरा-डोरी, इत्यादिक अवधारो जी।
जे जे मुनि अज्जा मांगै तसुं, दीयै सतीर धर प्यारो जी॥

२५. कोस अनेक आंतरे अज्जा, कारण वाली भावै जी।
संत सत्यां रै हाथ देइ नै, प्रवर वस्त्र पोहंचावै जी॥

२६. मुनि पिण के बहु कोस आंतरे, कारण वाला ताह्यो जी।
पिछेवडी चोलपटा सीवाडी, पोहचावै चित ल्यायो जी॥

२७. ते पिण रोगन पात्र मंगावै, संत सती कर म्हेलै जी।
इह विध सार संभाल करंती, इसो कार्य कुण झेलै जी॥

२८. लघु वृद्ध प्रमुख मुनि अज्जा, सगलां नैं आधारो जी।
दान धर्म नो लाभ इसी विधि, लेवै सती उदारो जी॥

२९. विनयवंत सतगुरु नीं वारू, आण अखंडत पालै जी।
पूर्ण प्रीत प्रतीत सती रै, जिनमार्ग उजवालै जी॥

३०. इह विधि गणपति ना मुख आगल, शासण में शोभंती जी।
शील सिरोमण झूल रही छै, प्रबल भाग्य पुन्यवंती जी॥

३१. ढाल तेरमी मांहि सती नो, दांन धर्म दीपायो जी।
साधू साध्वी श्रावक श्राविका, सगलां नैं सुखदायो जी॥

ढाल १४

दोहा

१. उगणीसै पणवीस में, सती तणां तनुं मांय।
कारण अधिक समुपनो, शक्ति घटी अधिकाय॥

२. इह अवसर जोधाण थी, बादर पचाणदास।
भंडारी सुत कृष्णमल, लछमणदास हुलास॥

३. बीदासर दर्शण करी, सखर वींनती सार।
पुर जोधाण पधारियै, मांनी जीत जीवार॥

४. विनयवंत बादर युगल, दर्शण देवा तास ।
तुरत जीत त्यांरी थयो, जाणी धर्म उजास ।।

५. विनयवंत वारू सती, झेल्यो हुकम जिवार ।
नाकारो मुख नां कियो, ततक्षिण होय गई त्यार ।।

६. विहार कियो जोधाण दिशि, कारण में मन मोड ।
इम चित्त अनुकूल चालती, कवण करै तसु होड ।।

७. अनुक्रम विचरत आविया, सैहर पीपाड मझार ।
भंडारी दर्शण किया, लोक सइकडां लार ।।

८. चौमासो जोधाणपुर, पणवीसे पहिछाण ।
धर्म उद्योत थयो घणो, मंडियो जबर मंडाण ।।

९. मुरधर नें मेवाड ना, थली देश ना थाट ।
दर्श किया गुजरात नां, होय रह्यो गहगाट ।।

१०. भंडारी बादर वली, सेव करी तन मन्न ।
गणपति नैं रीझाविया, जबर मसूदी जन्न ।।

११. सती तणां गुण देखनैं, बादर थयो प्रसन्न ।
देश-देश ना जन कहै, धन्य सती तू धन्न ।।

१२. 'दीक्षा देबे मुनि भणि', सैहर लाडणू आय ।
दर्शण सरूप नां किया, सरूप अति हरषाय ।।

१३. षटवीसे चउमास में, बीदासर गहगट्ट ।
त्यां नव दीक्षा दीपती, इक मुनि अज्जा अट्ठ ।।

१४. विचरत आया लाडणू, गणपति सती जिवार ।
इह अवसर हुई वारता, सांभलजो धर प्यार ।।

*भवि जीवां रे, सतिय सिरे सिरदार ।। ध्रुपदं ।।

१५. फागुण शुक्ल सुहामणो रे लाल, ग्यारस आथण ताय ।
सिरदारां जी नैं तदा रे लाल, जय गणपति कहैवाय ।।

१६. थेइज थांरा हाथ सू रे लाल, वर समणी समुदाय ।
प्रवर सिघाडा कीजियै रे लाल, थे प्रकृति जाणो छो ताय ।।

१७. पुन्यवांन ना हाथ सू रे लाल, कार्य हुवै पुनीत ।
पछै मेहनत पिण ह्वै नहीं रे लाल, गुण इत्यादि संगीत ।।

१. मुनि जुहारजी (२०९) लाडनू, मुनि भोपजी (२१०) लाटोती।
*लय—सफल द्वीप सिरोमणू रे ।

१८. सती कहै किण-किण तणां रे लाल, करूं सिंघाडा सार।
चित्त अनुकूल इम चालती रे लाल, विनयवंत सुविचार॥

१९. तब जयगणी वताविया रे लाल, समणी नाम सुजात।
झट निशि में कार्य करी रे लाल, आज्ञा सूंपो प्रात॥

२०. तिण काले भिक्षू तणां रे, गण समुदाय मझार।
समणी इक सौ ऊपरै रे लाल, चीमंतर हितकार॥

२१. वर तेपन अज्जा तणां रे लाल, दश सिंघाडा देख।
ते तो आगे ई हुंता रे लाल, इक सौ इकवीस सेख (शेष)॥

वार्त्तिका

नंदूजी आदि टोला वंध आर्य्यां नेश्राय में थई। तिण में नवलांजी तो टोलो राख्यो नथी, सिरदारांजी कनै आर्य्यां भेलो चउमासो करवा लागा। अनें वीजी नेश्राय छता टोला यूं का यूं राख्या, त्यांनै चउमासो न्यारो करावता। अनें केइक टोलावंध चलगी ते कनली आर्य्या जुदो चोमासो करै जिसी कोइ नही तिके, अनें नवी प्रिण दीक्षा लीधी तिके पिण, अनें केइक टोला छतां चौमासा करै त्यां कनली आर्य्या, केइक प्रकृतादिक ना जोग सूं उणां कनै रही तिके पिण, केईक नै न्यारा चौमासा तो करावता पिण तेहना सिंघाडा वणाया न हुंता, तिणसूं जयाचार्य हुकम दीयो—एहनां सिंघाडा थांरा हाथ सूं थेइज करो। तेहनां सिंघाडा केतला थया ते कहै छै।

२२. तेह अज्जा नां सोभता रे लाल, सिंघाडा तेवीस।
वर उपयोग विचारणां रे लाल, सती तणी सुजगीस॥

२३ वहु 'अद्धा'[1] थी पिण इसो रे लाल, मन समणी ना मेल।
दुक्कर ए कार्य तिको रे लाल, सती तुरत कियो वच झेल॥

२४. कहै गुलावां नैं सती रे लाल, मन मांनै ते लेह।
मांगी ते सूंपी तसु रे लाल, सती सप्त गुण गेह॥

२५. शेष सिंघाडा नै विषै रे लाल, किहां च्यार किहां पंच।
प्रकृति कारण वाली किहां रे लाल, म्हेली अधिक सुसंच॥

२६. पूर्व भव अति आकरी रे लाल, करणी कीधी सार।
प्रबल पुन्य वंध्या वली रे लाल हद हीमत हुसीयार॥

२७. चिमत्कार चित्त में लह्या रे लाल, तीर्थ च्यार सुचंग।
गुण गावै मुख सूं घणां रे लाल, गुण निर्मल जल गंग॥

---

१ समय।

२८. ढाल भली ए चवदमीं रे लाल, सतियां ना सुविचार।
कीया सिंघाडा सोभता रे लाल, जबर दिशा जयकार।।

ढाल १५

दोहा

१. सप्त वीस वर्ष लाडणूं, सखर कियो चउमास।
सोल संत जयगणि प्रमुख, समणी वर पच्चास।।

२. अति वेदन कार्तिक मझै, सती तणा तनु मांय।
अधिक 'अरुचिता'[1] अन्न नीं, शक्ति घटी अधिकाय।।

३. हिव चौमासो ऊतर्‍यो, गणपति सहित विहार।
आवी खानपुरे रही, सुजाणगढ मझार।।

४. गढ सुजाण दिन पनर रही, रह्या गुलेरचा रात।
पगां विहार कर आविया, चाडवास विख्यात।।

५. मृगसिर सुदि पंचम तिथि, सैहर बीदासर मांय।
गणपति जयवर आविया, सती छठ तिथ आय।।

६. अति 'हीमत' मन बल थकी, विहार कियो इण रीत।
दिन-दिन शक्ति घटै घणी, फुन अन्न अरुचि संगीत।।

७. पोह विद चउदश तिथ लगै, नित्य आवै गणि स्थान।
आपै असणादिक वली, संत सत्यां प्रति जान।।

८. तिथि अमावस्य आवतां, घटी शक्ति अधिकाय।
सतिया तब गणी स्थान के, आंण्या तिहां उठाय।।

९. अल्प अन्न एकम लगै, पछै अन्न नहीं लिद्ध।
पिण बोलै प्रगट पणै, सती शिख्या विविध प्रसिद्ध।।

१०. शिख्या दै सतियां भणी, कोय म कीजो चिंत।
सेवा कीजो स्वामनी, इम विविध वचन उच्चरंत।।

*जप लै महासती सिरदार।। ध्रुपदं।।

११. आलोवण आछी विध सेती, जीत कराई जाण।
वार-वार मिच्छामि दुक्कडं, सतिय वदै वर वाण।।

---

१ अरुचिपन।

*लय—सीता आवै धरे र राग।

१२. मुरड़ माटी प्रमुख पृथ्वी नीं, विराधना अवलोय।
करी कराई अनुमोदी हुवै, मिच्छामि दुक्कडं जोय ॥

१३. इम अपजावत पंचेंद्रिय ना, नाम जुजुआ लेह।
विराधना हुइ हुवै तेह नो, मिच्छामि दुक्कडं देह ॥

१४. इर्या गमन करंतां वोल्या, वलि चिंतवणा कीध।
इत्यादिक जे खांमी तिण रो, मिच्छामि दुक्कडं सार ॥

१५. इम भाषादिक पंच समति में, खामी तणो विचार।
नाम जुजुआ लेइ नै दै, मिच्छामि दुक्कडं सार ॥

१६. दोपण लागो मनोगुप्ति में, सावद्य मन अवलोय।
विपय कपायादिक में वर्त्यो, मिच्छामि दुक्कडं जोय ॥

१७. वचन गुप्त सावद्य विकथादिक, काय अजेणा होय।
इत्यादिक खामी हुइ तेहनो, मिच्छामि दुक्कडं जोय ॥

१८. हिंसा जाण अजाणे कीधी, तथा कराई होय।
अनुमोदी हुवै तिणरो पिण, मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥

१९. इमज झूठ नें अदत्त मैथुन, ममता कीधी होय।
सचित्त अचित मिश्र वस्तु ऊपरे, तो मिच्छामि दुक्कडं जोय ॥

२०. आखो रवि ऊगां पहिली वा, कोर दव्यां थी जोय।
असणादिक वहिरयो भोगवियो, तो मिच्छामि दुक्कडं होय ॥

२१. गया काल में पांचू आश्रव, अथवा पाप अठार।
सेव्या सेवाया अनुमोद्या तो, मिच्छामि दुक्कडं सार ॥

२२. काल अनागत पांचूं आश्रव, पाप अठारै जाण।
त्रिविध-त्रिविध करि कै सेवण रा, जावजीव पच्चखाण।

२३. लक्ष चउरासी वलि अन्य मति, फुन जे तीरथ च्यार ॥
खमत खामणा किया सर्व सूं, केइक नाम उच्चार।

२४. पंच महाव्रत आरोपाया, सुद्ध हुआ जिम न्हाय ॥
ठांम-ठांम मिच्छामि दुक्कडं, सतिय दीयै सुखदाय।

२५. पंडित-मरण तणी वहु गाथा, पंचम उत्तराध्येन।
अर्थ सहित संभलाया पांम्या, चित्त में अधिको चैन ॥

२६. पहिला सुद्ध भाव तिम छेहडे, राखै निमल अत्यंत।
वांछै तनु नो भेद तथापि, मरण तणी नही चिंत ॥

२७. दुःख सेज्जा सुख सेज्जा ना फुन, सूत्र अर्थ संभलाय।
कष्ट सहै समभाव महामुनि, नाणैं चिंता काय ॥

२८. काय निरोगी 'अर्हंत'[1] ते पिण, लेवै कष्ट उदीर।
(इतरो) दुख रोगादिक किम हूं न सहूं, इम चिंतै गुण हीर।।

२९. जो समभावे न सहुं तो मुझ, एकंत पापज हुंत।
ते समभाव करी नै सहियां, ह्वै निर्जरा एकंत।।

३०. पंचमांग वेदन सह्यां मुनि नै, कर्म निर्जरा थाय।
तप्त तवे विंदु जिम विणसै, तिम अघ दूर पलाय।।

३१. सूको तृण पूलक अग्नी में, घाल्यां भस्मज होय।
तिम वेदन समभाव सह्यां मुनि, खिण में अघ दै खोय।।

३२. तीक्ष्ण कुहाडा थकी तरुण जिम, करै एरंड ना खंड।
तिम वेदन समभाव सही मुनि, तौडै पाप प्रचंड।।

३३. मृगापुत्र तणी बहु गाथा, अर्थ सहित संभलाय।
उत्तराध्येन अध्येन गुनी सम, दाखी श्री जिनराय।।

३४. लाभ-अलाभ वलि सुख-दुख जे, मृत्यु-जीवतव्य जाण।
समचित रहै निंदा-स्तुति में, तिमज मान-अपमान।।

३५. इत्यादिक गाथा सूत्रां नीं, संभलाई बहु सार।
धनो मेघ तुर्य चक्री फुन, गजसुखमाल कुमार।।

३६. षट मास लगै अति उज्जल, कर्कश वेदन सही महावीर।
उवसग्ग सुर नर तिरिख तणा फुन, प्रभु सुरगिरि जिम धीर।।

३७. अनंत भूख नें तृषा अनंती, अनंत शीत फुन ताप।
अनंत 'दाघ'[2] भय शीत अनंतो, सह्यो नरक मे आप।।

३८. ते दुख देखंता ए वेदन, तुच्छ मात्र अवधार।
कर्म तणा बहु वृंद कटै है, होवै लाभ अपार।।

३९. अल्प काल नो एह कष्ट है, भारी सुखां मझार।
जाय वैसता दीसो छो इम, जीत सुणावै सार।।

४०. बीज तिथ पच्चखाण आहारना, औषधि जल उपरंत।
इमज तीज तिथि त्याग सुद्ध चित्त, निर्मल ध्यान अत्यंत।।

४१. चौथ गई निशि पहर आसरै, तिण वेला सुविचार।
औषध जल उपरंत करायो, सागारी संथार।।

४२. अधिक सचेत पणै करि धारयो, सागारी संथार।
पहिलां तथा पछै पिण पूछ्यां, कह्यू सचेत उच्चार।।

---

१. अरिहंत।
२. दाह।

४३. तिथि पंचम्यादिक धाम्यो पिण, औषधि नटिया सोय।
उदक सूंठ नो सतियां दीधो, अवर न लीधो कोय ॥

४४. सैन करी नै बहुल पणैं इम, सतियां नें समभाय।
कदेयक अल्प वचन उच्चरता, ते पिण धीरै ताहि ॥

४५. दिन-दिन शक्ति घटै निशि अष्टम, सवा पैहर उनमान।
दिवस रह्यो तब जावजीव, अणसण उच्चरायो जान ॥

४६. अणसण में वा पहिलां पाछै, वारू विविध प्रकार।
वर वैराग्य तणी बहु वतका, संभलाई सुविचार ॥

४७. गजसुखमाल प्रमुख मुनिवर नै, दुख नरकादिक धार।
याद कराया वच संभलाया, वलि दीधा सरणा च्यार ॥

४८. सतिया नै आधारे बैठा, अष्टम निशि अवधार।
वे महुर्त्त आसरै रात्रि रही जब, पोहता परलोक मझार ॥

४९. बहुल पणै कर अधिक वेदना, दीसै नहीं तनु मांय।
शक्ति घटतां घटतां परभव, पोहता छोड़ी काय ॥

५०. चिहुं लोगस्सना किया काउसग्ग, सतियां तनु वोसिराय।
ग्राम-ग्राम चिहुं तीर्थ नैं अति, दोहरी लागी ताय ॥

५१. जिण परिणामा चारित्र लीधो, तिम हिज पाल्यो सार।
तिम हिज लाभ लियो अधिकेरो, तिम हिज पाम्या पार ॥

५२. प्रवर्त्तिनी सम पंचम आरे, महासती सिरदार।
हिवडां तो दीसै नही एहवी, याद करै नरनार ॥

५३. चिमत्कार कीधो इण आरे, वारू धर्म उद्योत।
वाह्य अभ्यंतर द्रव्य भाव करि, 'घणघट'[1] घाली जोत ॥

५४. गुणवंती नें महिमावंती, जशवंती फुन जोय।
पुन्यवंती नें विनयवंती अति, लजवंती अवलोय ॥

५५. सर्व भणी अति साताकारी, भारी बुद्धि भंडार।
गण हितकारी सील सुधारी, शासण री सिणगार ॥

५६. महासती देखी छै तिण नै, याद घणी आवंत।
संत सत्या नै दान धर्म नो, लीधो लाभ अत्यंत ॥

५७. संत सत्या नै अन्न पान, वस्त्रादिक नो दे दान।
अधिक 'खेद'[2] मेटी गणपति नी, सखर रीत सुविधान ॥

---

१. अनेक व्यक्तियों के हृदय में।

२. मेहनत।

५८. शासण रा वहु कार्य कीधा, शासण में जिम स्थंभ।
आज्ञाकारी अति ही भारी, गणपति प्रीत 'अदंभ'[1] ॥

५९. नवमीं तिथि कार्य संसारिक, कीधी जन बहु जाण।
तीन तीस खंडी वर मंढी, जाणक देव विमाण ॥

६०. फूल उछाल्या सुवर्ण ना फुन, रूपाना जे फूल।
तास बादला तुररी, फररी, दीसै अधिक अतूल ॥

६१. आगल कोतल छड़ीदार फुन, 'ढोल आरबी'[2] जाण।
'सरणांइ'[3] प्रमुख वाजंता, बले नगारा नीसांण ॥

६२. ए कार्य संसार तणा छै, धर्म नही इण मांहि।
वतका हुई जिसी वर्णवियां, दोष नही छै ताहि ॥

६३. अरिहंत देव सुद्ध साधु, धर्म जिन आज्ञा मांहि।
सावद्य कार्य ग्रहस्थ करै पिण, धर्म न जाणै ताहि ॥

६४. सतियां नेऊ पंच आसरै, मुनिवर फुन चौबीस।
जय जयकार थयो बीदासर, सती प्रसाद जगीस ॥

६५. सैहर लाडणूं सुजाणगढ़ ना, नर नारयां रा वृंद।
सती तणा दर्शण करिवा नै, आया धर आनंद ॥

६६. भैरूलाल जवहरी ते पिण, जयपुर थकीज आय।
सती तणी सेवा दश दिन लग, कीधी हरष सवाय ॥

६७. संवत् अठारै वर्ष सत्ताणूंअे, लीधो संजम भार।
उगणीसै सतवीसे पोह सुदि, अष्टम पाम्या पार ॥

६८. चर्म ढाल ए करी सतीनीं, उगणीसै सत्तवीस।
माह विद इग्यारस बीदासर, जय-जश हरख जगीस ॥

६९. पवर पनरमीं ढाले आख्यो, महासती सिरदार।
पंडित-मरण तणुं तसु वर्णन, आणी हरष अपार ॥

७०. ए पनरै ढाल में आघो पाछो, इधको ओछो कोय।
विरुध वचन आयो ह्वै कोई, मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥
जपलै महासती सिरदार ॥

१. स्वाभाविक।
२. अरब देश मे बना हुआ ढोल।
३. शहनाई।

गीतक छंद

१. इम महासती सिरदार सुजश, सुचंग पंकज गुण कह्या ।
जन भृंग अंग उमंग धर वर, वास लेवा ऊमह्या ।
गुरु भिक्षु भारीमाल 'नृपति-शशांक'[1] परम प्रसाद ही ।
वर जोड जय-जश करण संपति, वरण शिव आह्लाद ही ।।

---

१. रायचंदजी ।

परिशिष्ट

१
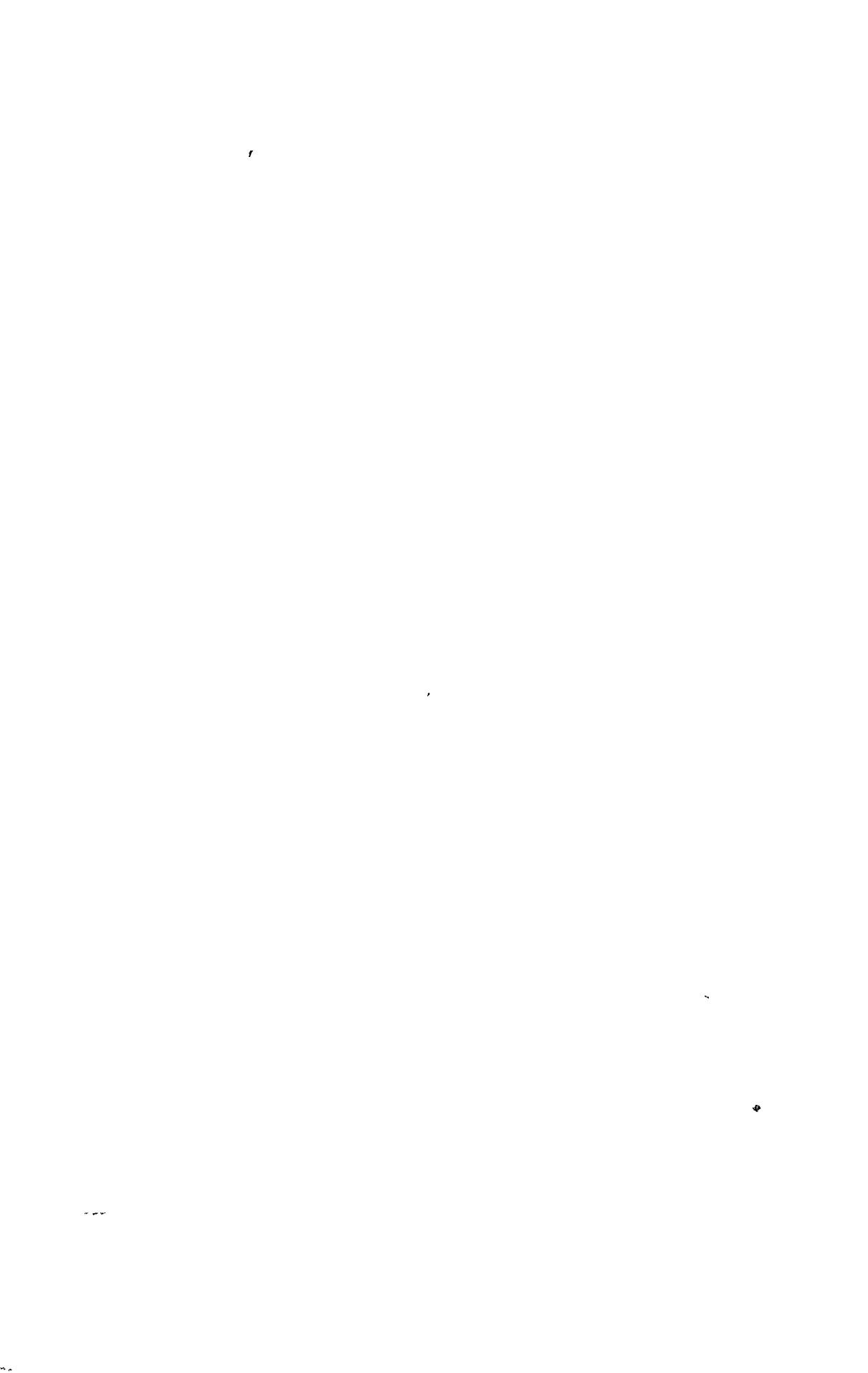
सतजुगी रो पंचढालियो

ढाल १

दोहा

१. श्री आदिनाथ आदे करी, वांदूं सीस नमाय ।
चर्म जिणंद चौवीसमा, वर्धमान जिणराय ।।

२. भीखू गुर भारीमालजी, जग प्रगटिया जांम ।
मार्ग बतायो मोखरो, सुधगति पोहता सांम ।।

३. सिष तेहना अति सोभता, खेतसीजी गुण खांण ।
विनयवंत वखांणियै, वारू अमृत वांण ।।

४. सकल संघनै सतजुगी, साताकारी सोय ।
इसा पुरष इण जगत में, केइक विरला जोय ।।

५. दिख्या श्रीजीदुवार में, परभव पोहता पीपार ।
बताऊं थोरी सी वारता, निसुणो थे नरनार ।।

*सुणज्यो सतजुगी री वारता रे लाल ।।ध्रुपदं।।

६. 'श्रीजीदुवारा' सैहर में रे, भोपोसाह ओसवाल रे । सोभागी ।
गोत सोलंकी गुणनिला रे लाल, नार हरू सुकमाल रे । सोभागी ।

७. 'मोसाल'[1] राजनगर मझै, जनम हुवो तिण जाग ।
नाम 'खेतसीजी' निरमला, पुनवंत पूरण भाग ।।

८. सुखे समाधे मोटा हुवा, दोय परणीया नार ।
तीजी री त्यारी करी, जब सील आदरियो श्रीकार ।।

९. संजम लेवा री मन में भावना, पिण न्यातीलां सूं अति नेह ।
आग्या मांगण री आसंग[2] परै नही, जांणै किण विध देऊं यांनै छेह ।।

१०. भीखू गुर मिलिया भला, मात पिता समज्या धर्म मांय ।
ओर न्यातीला पिण समज्या घणा, दिन - दिन इधक ओछाय ।।

११. उपवास पोसा एकंतर करै, नव पोसा लगता दीया ठाय ।
वैराग वधै दिन - दिन घणो, आग्या मांगण री आसंग न कांय ।।

---

*लय—धीज करै सीता सती

१. ननिहाल ।

२. हिम्मत ।

१२. त्यां रंगूजी संजम लेवै रंग सूं, श्रीजीदुवारा में सोय।
भोपोसाह कहै खेतसी भणी, संजम लेवै तो आग्या मोय॥

१३. खेतसीजी हरष्या घणा, संजम लीयो सांमीजी रे हाथ।
विहार करीं आया चालिया, लारै चल गयो त्यांरो तात॥

१४. सतजुगी सुण मन चिंतवै, मोनै गुर मिलिया तात समान।
हूं सोच करूं किण कारणे, ध्यावूं निरमल ध्यान॥

१५. समत अठारै अडतीसे समै, चैत सुध पूनम दिन जांण।
सर्व सावज त्यागे दिया, ए दिख्या किल्यांण पिछांण॥

१६. भीखू गुर समीपे भण्या, सूत्र सिद्धन्त चरचा बोल।
विनै विवेक जस वहु वध्यो, तीखो तोल अमोल॥

१७. गांमां नगरां विचरचा घणा, 'अंतेवासी'[1] 'गुरां रै गोड'[2]।
काम भलायां कर जोडता, हरष सहीत धर कोड॥

१८. व्रत इव्रत मांड बतावतां, चरचा वतावण घणी 'चूंप'[3]।
उदमी घणा नही आलसू, तारण भव जल कूप॥

ढाल २

दोहा

१. भगता गुर भीखू तणा, सेवा करत सुजांण।
इमहीज भारीमाल सूं, पूरण प्रीत पिछांण॥

२. ओर साध नें साधवी, सगलां नै सुखकार।
सतजुगी सोभे रह्या, दीपै ज्यूं दिनकार॥

३. वनीत सीष आवी मिल्यां, सांमी नै सुख होय।
दिन-दिन मारग दीपतो, धर्म वधंतो जोय॥

४. विनय गुण वखांणियै, खेतसीजी गुण खांण।
पूरण गुण बहु प्रगटचा, सुणज्यो चतुर सुजांण॥

१. शिष्य।
२. समीप।
३. लगन।

*लगी बहु प्रीत सतजुगी सूं ।।ध्रुपदं।।

५. उत्तराधेने आखियो रे, विनै अधेन वखांण ।
गुण ग्यांन संपत बहु रे, दिन - दिन वधतां जांण ।।

६. इहलोक वनीत जग मांहि सोभत, तेतो सावज कांम ।
ए सोभ रह्या संघ मांहि सूरा, निरवद कांम 'अमाम'[1] ।।

७. मिटै मिथ्यात मलिन जेह नो, समकित पामै सार ।
सतगुर रा वनीत सुधरै, पामै मुगत दुवार ।।

८. अवनीत अजोग भमत जग में, दिन - दिन दुख दो भाग ।
छोड अविनौ जैहर जांणी, लाग मुगत पंथ लाग ।।

९. 'वृख'[2] नों मूल रहत सैंठो, तो दिन - दिन बधत विसेख ।
धर्म विनौ सुध धार लीज्यो, सुखमुक्त फल देख ।।

१०. 'दसवीकालिक देख लीजो, विनै अधेन निवास'[3] ।
अवनीतां अवगुण घणा रे, सुवनीतां सिव वास ।।

११. खरे मते रिष खेतसीजी, गुर भगता गुणवंत ।
विनय विवेक विचार वधता, मेलै तंतोतंत ।।

१२. च्यार तीर्थ मांहि सोभत, दिन - दिन महिमा देख ।
साताकारी सोभता रे, नही बहु राग नें धेख ।।

१३. सीख देता सरध लेता, तैहत वचन कर तेह ।
कर्म कटता दुख मिटता, जाझा गुणवंत जेह ।।

१४. सीख एहवी अवर साधू, धारै मन में धीर ।
विनै भगत इण रीत वरतै, वखांणी जै वीर ।।

१५. जिण मारग जग मांहे रूड़ो, विनै मूल वखांण ।
आगम साखी प्रभू भाखी, सुण विनय निरवांण ।।

१६. अविनय दोष सर्व न्हाख अलगा, ए नरक तणा दातार ।
विनय गुण मन धार धीर्य, सीख सुण लो सार ।।

१७. बडबडा संत आय मिलिया, सिष मिल्या बहु सोय ।
साताकारी सतजुगी सू, हर्ष घणो मन होय ।।

---

*लय—लगी लौ नाभिनंदण सू (अथवा कपि रे प्रिया) .. ।

१. श्रेष्ठ ।

२. वृक्ष ।

३. दशवैकालिक अध्ययन ९ उ० ऊ० २ ।

ढाल ३

दोहा

१. सतजुगी रा साहज सूं, ओर हुवो उपगार।
साध साधवी सोभता, श्रावक श्रावका सार॥

२. दोनूं वहिनां दीपती, छोडी निज भरतार।
कुसालांजी रूपांजी कही, पूज उतारी पार॥

३. भांणेजो भल भाव सूं, वय वालक वयराग।
दस वरसां रै आसरै, रायचंद वड़भाग॥

४. समत अठारै सतावने, चेती पूनम सोय।
मा बेटा दोनूं जणां, संजय लीधो जोय॥

५. रावलियां मे रंग सूं, आछो थयो उपगार।
भीखू रिष साथे लगा, विहार कियो तिण वार॥

*सतजुगी संत सुहामणा॥ ध्रुपदं॥

६. घणां वरसां लग सतजुगी, रह्या भीखू गुर रै हजूर रे।
सेवा भगत करता थका, दिन-दिन चढते 'नूर'[1] रे॥

७. तपस्या करवा तीखा घणा, 'चौथ छठ अठम दसम दुवाल।'[2]
उंनाले लीयै आतापना, सरीर दाजै सुकमाल॥

८. एक पोंहर के आसरै, उभा रहिवा री तपस्या अमांम।
ते पिण कीधी घणा दिन आसरै, त्यांरै कर्म काटण री 'हांम'[3]॥

९. दस पचखांण कीधा दीपता, ते पिण वारूं वार।
उतकृष्टा अठारै दिन लगै, एक वार पांणी आधार॥

१०. पांच-पांच तणा वहू थोकडा, वले आठ किया उपवास।
सीयाले सी खमता थका, काटण कर्मा ना पास॥

११. वावीस वरसां रै आसरै, भीखू गुर री सेवा भाल।
अंतेवासी उजल आतम, आंणी भाव रसाल॥

१२. समत अठारै साठा समै, संथारा कियो भीखू सांम।
अंतेवासी रिष खेतसी, सेवा कीधी अमांम॥

---

*लय—वीछिया नी

१. तेज (प्रभाव)।

२. उपवास, वेला, तेला, चोला, पंचोला।

३. अभिलाषा।

१३. सगला चौमासा सांमीजी कनै, 'एक चौमासो'[1] अलगो कीध।
वैणीरामजी काज वगडी मझै, त्यां पाली में दिख्या लीध।।

१४. वले भगत कीधी भारमाल री, वरस अठारै उनमांन।
साताकारी सोभता, खेतसीजी विनै गुणखान।।

१५. अणसण भारीमाल अठंतरे, राजनगर में रूडी रीत।
सतजुगी सेवा साचवी, राखी चौथा आरा री रीत।।

१६. गुण्यासीये चौमासो पाली कियो, जठै हुओ घणो उपगार।
छेहला दरसण दे सतजुगी, विहार कियो तिणवार।।

१७. कांयक असाता नाक री, पिण लांवी गिणत न काय।
सूरवीर विचरता थका, न बेठा किहां 'ठांणो'[2] ठाय।।

१८. विचरत आया वेग सूं, जैपुर सैहर जरूर।
असीये वरस आछीतरै, चौमासो ठायो बड सूर।।

ढाल ४

दोहा

१. छेहलो उपगार चौमासा मझै, जैपुर सैहरे जोय।
नव ठाणां नीकी 'परै'[3], हरष घणो मन होय।।

२. मुरधर मेवाड नें मालवो, हाडोती ढूंढार।
यां पांच देस ना 'परवरा'[4], आया घणा नरनार।।

३. दरसण कर वांणी सुणै, चरचा पूछै सोय।
जांणक मेलो मंडियो, हरष घणो मन होय।।

४. चौमासो सुख चैन सूं, उपगार हुवो अथाग।
नरनारी बहु समजिया, लागा मुगतरै माग।।

५. जैपुर सैहरे जुगत सूं, आछो कियो उपगार।
हिवै चौमासो ऊतरयो, मुनिवर कियो विहार।।

---

१. स० १८४४ का।
२. स्थिरवास।
३. अच्छी तरह।
४. प्रमुख।

*मार्ग पाल लीधो मुक्त रो ।। ध्रुपदं ।।

६. मिगसर मारग मोकलो, मुंनी कीधो हो त्यांसूं उग्र विहार कै ।
जिण मारग नै जमावता, किम लोपै हो प्रभूजी नी कार कै ।।

७. काचै कारण कल्प लोपै नही, संत मोटा ए भीखू ना साध ।
आछो आहार देखी नही अटकता, सदा वरतै हो त्यांरै सुख समाध ।।

८. रिष रायचंदजी आदि साध सोभता, सेवा करता हे विचरै छै सोय ।
किस्नगढ दिन केतायक रह्या, रूपनगर होय बोरावर जोय ।।

९. सैहर बोरावर में साध साधवी, वंदणा काजै ए वहु आया विचार ।
चौपन ठाणां रै आसरै, दरसण करनै हे वेगो कीयो विहार ।।

१०. वले वाजोली गांम पधारिया, सतजुगी ए घणा साध समेत ।
'मै'[1] दरसण करचा घणा हरष सूं, हद चरचा ए कीधी बहु हेत ।।

११. मिलिया चौवीस ठांणा साधजी, साधवियां ए मिली बहु आय ।
त्यां दरसण कीधा दीपता, घणा हरषत ए थया मन माय ।।

ढाल ५

दोहा

१. एक मास के आसरै, दरसण कीधा सोय ।
विहार करण त्यारी हुवा, कारण न मिट्यो कोय ।।

२. *वाजोली सूं कियो विहार, सूरपणो मन धार, आछी लाल ।
छेहला दरसण देइ सतजुगी ।।

३. पादू पोहता ईडवे होय, वलूंदा सुधी जोय आछी लाल ।
पीपाड़ सैहर पधारिया ।।

४. त्यां मांडी सलेखणा सार, परभव सांमो न्हाल ।
उपवास सूं लेइं चोला लगै ।।

५. असाढ विद नवमी दिन जांण, चोला रो पारणो पिछांण ।
तिण में आहार लियो अल्प सो ।।

---

*लय—नोंदडली ए वेरण हो······

१ हेममुनि ।

*लय—आछै लाल

६. बेलो कीयो दसम इग्यार, बारस पारणो अल्प आहार।
तेरह चौदस बेलो पचखियो ॥

७. बेला में पचख्यो संथार, सूरपणो मन धार।
परिणांम त्यांरा पका घणा ॥

८. जिण धर्म रो मंडियो उछाय, च्यार तीर्थ मन चाय।
साध सेवा में बहु घणा।

९. आसरै दोय पोहर संथार, सीज्यो चवदस तिथ सार।
आसरै पोहर रात गयां थकां ॥

१०. वैराग वधियो विसेख, 'सूस'[1] 'आखडी'[2] देख।
पीपाड सैहर में जांणज्यो ॥

११. खेतसीजी नांमे सांम, परभव पोहता तांम।
वैराग में मन आंणजो ॥

१२. लारै मांडी नो बहु मंडाण, गुणतीस खंडी जाण।
ए किरतब संसार तणा किया ॥

१३. दाग दीयो चंदण रै मांय, रोकड लागा कहै तीन सौ ताय।
सोना रूपा ना फूल उछालिया ॥

१४. ए तो संसार ना कांम, नही संवर निरजरा तांम।
धर्म तिहां जिण आगन्या ॥

१५. तेतीस वरस आसरै ग्रहवास, चारित बयालीस बरस हुलास।
सर्व आउखो पिचंतर वरस आसरै ॥

१६. संथारो कीयो सैहर पीपाड, असाढ विद चोदस सनिवार।
समत अठारै अस्सीये ॥

१७. सतजुगी था मोटा अणगार, त्यांरो नाम लीया निस्तार।
ए गुण गाया कर्म घसिया ॥

१८. 'जोड कीधी जैपुर सैहर जांण, समत अठारै इक्यासे पिछांण।
भाद्रवा विध तीजवार गुर भलो'[3] ॥

---

१. नियम।

२. अन्तिम।

३. यद्यपि इस आख्यान के अत मे रचनाकार का नाम नही है, पर स० १८८१ में मुनि श्री हेमराजजी का चातुर्मास जयपुर मे था। इससे प्रमाणित होता है कि यह उनके द्वारा रचित है।
इसकी चौथी ढाल गा० ५ मे है कि 'मैं दरसण कर्‌या घणा हरष सूं' यहा 'मैं' शब्द मुनि हेमराजजी का द्योतक है।
जयाचार्य ने अपने द्वारा रचित सतजुगी चरित्र ढाल. ११ गा.१० मे इसी प्रसंग का उल्लेख करते हुए लिखा है .—
'हेम जीत दिल खोल हो' ·······। इससे भी उक्त कथन की पुष्टि होती है।

१९. आगो पाछो आखर आयो होय, तो मिछामि दुकडं मोय।
सतजुगी सांमी था गुणनिला ।।

२०. इसडा सुवनीत साध श्रीकार, दुलभ ह्वेणा इण आर।
विनय विवेक विचार में ।।

२

वेणीरामजी रो चोढालियो

ढाल १

दोहा

१. वेणीरामजी स्वामी री वारता, सुणतां अति सुख पाय।
गावता सुख पावै घणो, कमी रहै नही काय॥

*सुणज्यो वेणीरामजी स्वामी नी वारता रे लाल॥ ध्रुपदं॥

२. पूज भीखणजी जन्म्या कंटालीये रे, वेणीरामजी वगडी मांय रे, सुगण नर।
संजम आवै त्यांनेकिण विधै रे, ते सुणज्यो चित ल्याय रे, सुगण नर॥

३. बाल ब्रह्मचारी पनरै वर्ष आसरै, पूरो लागो धर्म स्यू प्रेम।
भीखू गुर भल भेटिया, त्यांनें नीका लाग्या नेम।

४. ते हाथ जोड करे वीनती, म्हारै लेणो संजम भार॥
कृपा करो मुज ऊपरै, चौमासो करावौ वगडी शहर मजार।

५. प्रतीत आई श्री पूज नै, राख्या सतजुगी नैं चौमास॥
पूज चौमासो पाली कियो, पिण मन में मोटी आस।

६. तेरा द्वार चरचा बोल सीखनैं, काढी दिख्या लेवा री वात॥
न्यातिला बँधो कियो घणो, कह्यो कठा लग जात॥

ढाल २

दोहा

१. जातां नै मरतां थकां, राख सकै नही कोय।
जो मन 'भाप'[1] न काढियै, तो मन 'डीभो'[2] होय॥

---

*लय—बोज करै सीता सती रे लाल।

१. बफारा।

२. भारी।

*वेणीरामजी स्वांमी री सुणज्यो वारता रे ।। ध्रुपदं ।।

२. न्यातीला 'भेजर'[१] कियो घणो रे, वेणीरामजी अधिक वैराग ।
आग्या लीधी घणा हर्ष स्यूं रे, ज्यांरै पूरो धर्म स्यूं राग ।।

३. वेणीरामजी आया पाली सैहर में, पूज भीखणजी रे पास ।
वनणां कीधी घणा हर्ष स्यूं, संजम लेणो आण हुलास ।।

४. भाई आग्या दीधी भली भांत स्यूं, लीधो संजम भार ।
समत अठारै चमालीसे समै, पूज कियो तिहां थी विहार ।।

५. भण गुण ग्यान सीख पका हुवा, बाल अभ्यासी ताम ।
बखाण वाणी देवा में तीखा घणा, त्यांरी महिमा घणी गाम-गाम ।।

६, सुखरामजी स्वामी नान्हजी वेणीरामजी, तीनूंइ विचर्‌या तांहि ।
घणा वर्षा लग जाणज्यो, त्यांरै हेत घणो माहोमांहि ।।

ढाल ३

दोहा

१. सुखरामजी स्वामी संथारो कियो, पिसांगण शहर मजार ।
आयो पचीस दिन आसरै, सुद्ध साधू श्रीकार ।।

२. *ताराचंदजी डूंगरसी धर्म प्यासी, गंगापुर नां वासी ।
त्यां संजम लियो छै हो, वेणीरामजी स्वामी कनें ।।

३. बाप ने बेंटो वैरागी, दोनूं छती ऋध नां त्यागी ।
चेला हुवा छै हो, भीखू ऋष ना भल भाव स्यूं ।।

४. दोनूं वेणीरामजी कनें साधु व्रत लीधा, त्यां भणाय नें पका कीधा ।
त्यारे हीज साथे हो, विचरचा छै भले भाव स्यूं ।।

५. डूंगरसिंहजी आमेट संथारो, आयो दिन दस सुविचारो ।
बालपणे सुधारचो हो, आतम कार्य आछी तरै ।।

६. आया वेणीरांमजी आघा, नगर उजेणी लागा ।
त्यां स्यूं भेषधारी केई भागा हो, छोडी नें श्रावक-श्रावका ।।

---

*लय—कांमणगारी छै कामणी रे ।

१. झगड़ा ।

*लय—आवूजी तीर्थ तारण

ढाल ४

दोहा

१. नगर उजेणी शहर में, आछो कियो उपगार।
रांमेजी संजम लियो, पछै कियो तिहां थी विहार ।।

*भविक वांदो मुनि मोटका ।। ध्रुपदं ।।

२. झालरापाटण शहर में, ताराचंदजी हो अणसण कियो अमाम।
दिन इकतालीस में सीझियो, मुनि राख्या ही रूडा सुद्ध परिणाम ।।

३. नान्हजी स्वामी वेणीरांमजी, आद देई हो साधू सात विचार।
विचरत-विचरत आविया, पूज दर्शण हो माधोपुर शहर मजार ।।

४. त्यां दर्शण किया श्रीपूज नां, भेला हुवा हो त्यां ठाणा इकवीस।
त्यां स्यूं विहार कियो रूडी रीत स्यूं, आगेवांणी हो पूज भारीमालजी जगीस ।।

५. वली जैपुर शहर में भेला हुवा, स्वामी दीधा हो त्यां चौमासा भोलाय।
वेणीरामजी नैं जयपुर राख नै, मुरधर देसे हो न्हाल्या मुनिराय ।।

६. चौमासा आडा दिन घणा जाण नैं, वेणीरामजी हो पांच साधां सहीत।
विहार कियो जयपुर थकी, विचरत-विचरत हो कारण उठ्यो अणचीत ।।

७, चासटू सहर में आविया, जेठ सुदि में हो दसम दिन जाण।
समत अठारै सत्तरे, वेणीरामजी हो छोड्या चट दे प्राण ।।

८. नान्हजी स्वामी सिरियारी मझै, एकोतरे हो माह महीना रे मांय।
चोला में चलता रह्या, वेणीरामजी हो सहीत पांच मुनिराय ।।

९. ए पांच ऋषी री वारता, सांभल नै हो उत्तम नर-नार।
वेरागै व्रत आदरो, ज्यूं पामो हो वेगा भव-जल पार ।।

१०. वेणीरामजी स्वामी री वारता, जोडी हो गोघूंदा शहर मजार।
समत अठारै चिमंतरे, भाद्रवा विद हो छठ मंगलवार[1] ।।

---

*लय—वीर सुणो मोरी वीनती।

१ यद्यपि इस आख्यान के अन्त मे रचयिता का नाम नहीं है, पर स० १८७४ में मुनि श्री हेमराजजी का चातुर्मास गोगुंदा मे था। इससे प्रमाणित होता है कि यह उनके द्वारा रचित है।